रवीन्द्र कालिया का प्रथम उपन्यास

ख़ुदा सही सलामत है

(भाग दो)

रवीन्द्र कालिया
खुदा सही सलामत है

डॉ॰ इन्द्रनाथ मदान
को सादर

ख़ुदा सही सलामत है

• •

एक दिन पंडित शिवनारायण ने महसूस किया कि उसकी ख्याति सिविल लाइन्स में दूर-दूर तक फैल गयी है तो उसे अचानक अपनी बीवी और बच्चों का ध्यान आया। उसने सोचा कि अब वक्त आ गया है जब वह अपनी धर्म-पत्नी और एकमात्र बच्चों को देहात से बुला लाये। मगर पण्डित के पास आवास की उचित व्यवस्था नहीं थी। ले-देकर एक कोठरी थी, जिसमें न तो कोई किवाड़ था, न रोशनदान। पण्डिताइन खुली हवा में रहने की आदी थी, यहाँ तो उसका दम घुट जायेगा। दूसरे वह पंडिताइन को विश्व-सुन्दरी से कम नहीं समझता था और मुहल्ले के लौंडों लपाड़ों के बारे में उसकी राय अच्छी नहीं थी। पंडिताइन आ गयी तो उसे दिन भर कोठरी में कैद रहना पड़ेगा, पंडित की ड्यूटी का कोई भरोसा नहीं था, जाने कब किस अफसर के यहाँ से बुलौआ आ जाए कि नल बिगड़ गया है। हाते में ले दे कर एक हजरी बी ही थीं, जिनसे पंडित की कभी-कभी दुआ-सलाम हो जाती थी। सच तो यह है कि हजरी बी न होतीं तो पंडित कभी का कोठरी छोड़ गया होता।

पंडित और हजरी बी की कोठरियां एक ही हाते में थीं। पंडित अगर कभी सिविल लाइन्स में ही पड़ा रह जाता, तो हजरी बी अगले रोज उस पर जोर से बिगड़तीं। पंडित को यह सब बहुत अच्छा लगता—कोई तो है इस संसार में, जो कम-से-कम उसकी खोज खबर रखता है। पंडित ने हजरी बी से अपने नेक इरादे का जिक्र किया तो हजरी बी बेहद खुश हो गयी, बोली, 'मुझे तो पंडित जी आपकी मर्दानगी पर ही शुबहा होने लगा था। तुम भी कैसे मर्द हो कि बरसों अपनी मर्दानगी पर लगाम लगाये रहते हो। सुभान अल्लाह, तुम्हें अकल तो आयी। पंडिताइन बेचारी पर क्या गुजरती होगी। कान में भी खुजली उठती है तो आदमी झाड़ी-वाड़ी ढूंढ़ने लगता है।' पंडित को खोदते खोदते हजरी को जाने क्या हुआ कि सहसा ही रोने लगी, 'हमारे कमिश्नर साहब तो एक बेलगाम घोड़े की तरह थे। अल्लाह उनकी रूह को अमन अता करे।'

हजरी के कमिश्नर साहब कौन थे। कोई नहीं जानता, न उन्हें किसी ने आज तक देखा ही था। कमिश्नर साहब का जिक्र आते ही वह रोने का बहाना जरूर ढूँढ़ लेती। भादों की बरसात की तरह उसके आँसू अचानक उमड़ आते और अचानक गायब भी हो जाते। दरअसल उसने सम रहना सीखा ही न था। मजलिस में मातम पर उतर आती तो बड़ी-बड़ी पेशेवर रोनेवालियाँ ताकती रह जातीं। वह मन की मौज पर चलती थी। मन में आता तो आधी रात को, जब सारी दुनियाँ सो रही होती, हजरी बुरका ओढ़ गली में निकल आती और कुछ ऐसा विलाप करती, कोई इतना कारुणिक मर्सिया पढ़ती कि रजाई में दुबके हिन्दुओं तक की आँखें नम हो जातीं।

उसूल के मुताबिक पंडित को जमुनीपुर रवाना हो जाना चाहिए था, मगर हजरी ने शाम को पंडित के यहाँ ढिबरी जलते हुए देखी तो उसका पारा चढ़ता ही चला गया, 'क्या हुआ पंडित जी ? नहीं पड़ा न हौसला बेगम साहिबा को बुलाने का। ऐसी ही कोई बात है तो जाकर हकीम रामकिशन से मशविरा क्यों नहीं कर लेते।'

हजरी बी पंडित की हालत का अनुमान न लगा पा रही थी। पंडित खयालों में चुपचाप रजाई ओढ़े पंडिताइन के साथ ही लेटा हुआ था। हजरी बी ने ऐसा व्यवधान पैदा किया कि उसने पाया पंडिताइन नहीं है। वह अकेला है। बोला, 'हजरी बी, हकीम से तो मुझे कुछ दूसर ही दवा दिलाइ देव, अब का बताई। मुहल्ले में देख ही रही हो क्या हो रहा है सुनते हैं तवायफों ने गुनावदेई का फुसला लिया था।'

'जहाँ घी और आंच साथ-साथ रहेंगे, वहाँ यह सब तो होवै करी। चमेली को मुझसे बेहतर भला कौन जानवै ? जब सब तवायफों ने खसम कर लिये, वह टस से मस न हुई। हमारे यहाँ खानदानी तवायफें हैं ही कितनी ? अजीजन को तो हम लोग बिरादरी में ही नहीं लेतीं, पैसा कमाकर उसे इतना गरूर चढ़ गया है कि सीधे मुँह बात नहीं करती। ले-दे कर चमेली, नोननी और मुरशीद ही बचती हैं। इन पर कोई उंगली उठा देगा तो सीधा जहन्नुम में जायेगा। मैं अभी मुहल्ले में जाकर स्यापा शुरू कर दूंगी, अगर चमेली पर किसी ने उंगली उठायी। एक गरीब और बदनसीब औरत को अपने घर में पनाह देना कहाँ की बुराई है।' हजरी बी अपने को दफ़ा आठ लगने के बाद भी किसी खानदानी तवायफ़ से कम न मानती थी और इस पर उसे बहुत गुमान था कि उसने दफ़ा आठ लगने के बाद [illegible] फ़ों की तरह यका-यक शादी नहीं रचा ली।

'हजरी बी जमाना बहुत नड़ आया [illegible]

बुलाना मुनासिब होगा ?'

'तू निरा हरामी का पिल्ला है।' हजरी बोली,—'दो दिन के अन्दर अगर पंडिताइन नजर न आई तो तुम्हारा भी बोरिया-बिस्तर गोल करवा दूँगी समझे।'

पंडित बीवी-बच्चों को लेकर शहर पहुँचा तो दोपहर बीत चुकी थी। पीछे से हजरी बी ने कोठरी को लीप पोत कर जहाँ तक हो सकता था, सँवार रखा था। कोठरी में पहुँचते ही पंडिताइन का उत्साह भंग हो गया। वह डरी हुई बकरी की तरह सहम कर कोने में दुबक गयी। यह भी कैसा घर है, जहाँ दिन में भी अँधेरा रहता है। जहाँ न किवाड़ है, न हवा आने का कोई दूसरा उपाय। सीलन की दमघोटू बदबू से पंडिताइन को उबकाई आने लगी। बच्ची पंडित की गोद में अलग से कुहराम मचाये थी। पंडित सेठ भैरूलाल के यहाँ से कुछ टाट माँग लाया था, चारों तरफ उन्हीं की बहार थी। कुछ टाट दरवाजे पर लटक रहे थे और कुछ फर्श पर बिछे थे। पंडित खटिया का भी जुगाड़ करना चाहता था, मगर यह संभव नहीं हो पाया। पंडित का एक सहकर्मी महीने भर की छुट्टी पर जा रहा था, पंडित को पूरा विश्वास था कि वह जाते-जाते खटिया उधार दे जायेगा, मगर वह चुपके से खिसक गया।

पंडिताइन एक पीपे में अपना सामान भरके लायी थी, घर में पीपा रखने की भी जगह नहीं थी। कोठरी में ही एक जगह कोने में ईंटें जोड़ कर पंडित ने चूल्हा बना रखा था और रसोई के सामान के नाम पर एक हल्का-सा तवा, एक अल्युमीनियम का पतीला और एक गिलास था। एक सन्दूकनुमा चीज थी, जिसका कुन्दा टूटा हुआ था। पंडित का सारा सामान उसी में ठुँसा रहता था।

पंडिताइन और बच्ची के आ जाने से पंडित बहुत उत्तेजित हो रहा था। बार-बार बच्ची को उठा कर चूमने की कोशिश करता, मगर वह छूते ही छिटक कर चिल्लाने लगती। पंडित भाग कर सड़क से एक चाय का कुल्हड़ और एक दो बिस्कुट ले आया। पंडिताइन ने बड़ी बेरुखी से चाय के दो घूँट लिये और मुँह कर वहीं रख दी, बच्ची ने भी बिस्कुट में कोई दिलचस्पी न दिखायी। पंडित बची हुई चाय पीने लगा।

पंडित ने शाम तक का समय किसी तरह बिताया और पाँच बजे अपनी बीवी की माँग में दस ग्राम सिन्दूर डलवा कर और बच्ची को गोद में उठाकर सिविल लाइन्स की ओर पैदल चल दिया।

हजरी के कमिश्नर साहब कौन थे। कोई नहीं जानता, न उन्हें किसी ने आज तक देखा ही था। कमिश्नर साहब का जिक्र आते ही वह रोने का बहाना जरूर ढूंढ़ लेती। भादों की बरसात की तरह उसके आँसू अचानक उमड़ आते और अचानक गायब भी हो जाते। दरअसल उसने सम रहना सीखा ही न था। मजलिस में मातम पर उतर आती तो बड़ी-बड़ी पेशेवर रोनेवालियाँ ताकती रह जातीं। वह मन की मौज पर चलती थी। मन में आता तो आधी रात को, जब सारी दुनियाँ सो रही होती, हजरी बुरका ओढ़ गली में निकल आती और कुछ ऐसा विलाप करती, कोई इतना कारुणिक मर्सिया पढ़ती कि रजाई में दुबके हिन्दुओं तक की आँखें नम हो जातीं।

उसूल के मुताबिक पंडित को जमुनीपुर रवाना हो जाना चाहिए था, मगर हजरी ने शाम को पंडित के यहाँ ढिबरी जलते हुए देखी तो उसका पारा चढ़ता ही चला गया, 'क्या हुआ पंडित जी? नहीं पड़ा न हौसला बेगम साहिबा को बुलाने का। ऐसी ही कोई बात है तो जाकर हकीम रामकिशन से मशविरा क्यों नहीं कर लेते।'

हजरी बी पंडित की हालत का अनुमान न लगा पा रही थी। पंडित खयालों में चुपचाप रजाई ओढ़े पंडिताइन के साथ ही लेटा हुआ था। हजरी बी ने ऐसा व्यवधान पैदा किया कि उसने पाया पंडिताइन नहीं है। वह अकेला है। बोला, 'हजरी बी, हकीम से तो मुझे कुछ दूसर ही दवा दिलाइ देव, अब का बताई। मुहल्ले में देख ही रही हो क्या हो रहा है सुनते हैं तवायफों ने गुलाबदेई का फुसला लिया था।'

'जहाँ घी और आंच साथ-साथ रहेंगे, वहाँ यह सब तो होवै करी। चमेली को मुझसे बेहतर भला कौन जानवै? जब सब तवायफों ने खसम कर लिये, वह टस से मस न हुई। हमारे यहाँ खानदानी तवायफें हैं ही कितनी? अजीजन को तो हम लोग बिरादरी में ही नहीं लेतीं, पैसा कमाकर उसे इतना गुरूर चढ़ गया है कि सीधे मुँह बात नहीं करती। ले-दे कर चमेली, नोननी और खुरशीद ही बचती हैं। इन पर कोई उंगली उठा देगा तो सीधा जहन्नुम में जायेगा। मैं अभी मुहल्ले में जाकर स्यापा शुरू कर दूंगी, अगर चमेली पर किसी ने उंगली उठायी। एक गरीब और बदनसीब औरत को अपने घर में पनाह देना कहाँ की बुराई है।' हजरी बी अपने को दफ़ा आठ लगने के बाद भी किसी खानदानी तवायफ़ से कम न मानती थी और इस पर उसे बहुत गुमान था कि उसने दफ़ा आठ लगने के बाद बाजारू तवायफ़ों की तरह यकायक शादी नहीं रचा ली।

'हजरी बी जमाना बहुत चढ़ आया है। ऐसे माहौल में पंडिताइन को

बुलाना मुनासिब होगा ?'

'तू निरा हरामी का पिल्ला है।' हजरी बोली,—'दो दिन के अन्दर अगर पंडिताइन नजर न आई तो तुम्हारा भी बोरिया-बिस्तर गोल करवा दूँगी समझे।'

पंडित बीवी-बच्चों को लेकर शहर पहुँचा तो दोपहर बीत चुकी थी। पीछे से हजरी बी ने कोठरी को लीप पोत कर जहाँ तक हो सकता था, सँवार रखा था। कोठरी में पहुँचते ही पंडिताइन का उत्साह भंग हो गया। वह डरी हुई बकरी की तरह सहम कर कोने में दुबक गयी। यह भी कैसा घर है, जहाँ दिन में भी अँधेरा रहता है। जहाँ न किवाड़ है, न हवा आने का कोई दूसरा उपाय। सीलन की दमघोटू बदबू से पंडिताइन को उबकाई आने लगी। बच्ची पंडित की गोद में अलग से कुहराम मचाये थी। पंडित सेठ भैरूलाल के यहाँ से कुछ टाट माँग लाया था, चारों तरफ उन्ही की बहार थी। कुछ टाट दरवाजे पर लटक रहे थे और कुछ फर्श पर बिछे थे। पंडित खटिया का भी जुगाड़ करना चाहता था, मगर वह संभव नहीं हो पाया। पंडित का एक सहकर्मी महीने भर की छुट्टी पर जा रहा था, पंडित को पूरा विश्वास था कि वह जाते-जाते खटिया उधार दे जायेगा, मगर वह चुपके से खिसक गया।

पंडिताइन एक पीपे में अपना सामान भरके लायी थी, घर मे पीपा रखने की भी जगह नही थी। कोठरी मे ही एक जगह कोने में ईंटें जोड़ कर पंडित ने चूल्हा बना रखा था और रसोई के सामान के नाम पर एक हल्का-सा तवा, एक अल्युमीनियम का पतीला और एक गिलास था। एक सन्दूकनुमा चीज थी, जिसका कुन्दा टूटा हुआ था। पंडित का सारा सामान उसी मे ठुँसा रहता था।

पंडिताइन और बच्ची के आ जाने से पंडित बहुत उत्तेजित हो रहा था। बार-बार बच्ची को उठा कर चूमने की कोशिश करता, मगर वह छूते ही छिटक कर चिल्लाने लगती। पंडित भाग कर सडक से एक चाय का कुल्हड़ और एक ठो बिस्कुट ले आया। पंडिताइन ने बड़ी बेरुखी से चाय के दो घूँट लिये और सूँघ कर वही रख दी, बच्ची ने भी बिस्कुट में कोई दिलचस्पी न दिखायी। पंडित बची हुई चाय पीने लगा।

पंडित ने शाम तक का समय किसी तरह बिताया और पाँच बजे अपनी बीवी की माँग में दस ग्राम सिन्दूर डलवा कर और बच्ची को गोद में उठाकर सिविल लाइन्स की ओर पैदल चल दिया।

वह आज पंडिताइन को अपना जलवा दिखा देना चाहता था कि वह समाज का कितना प्रतिष्ठित नागरिक है। न हुआ ढंग का मकान, मगर उसके कब्जे में पाँच लाख का फव्वारा है। पंडिताइन शहर में नयी-नयी आयी थी इसलिए बार-बार हाथ पल्लू पर ले जाती। पंडित बहुत तेज कदमों से पंडिताइन के आगे आगे चल रहा था। पंडिताइन चलने में कमजोर नहीं थी, मगर उसने अपनी शादी की साड़ी पहन रखी थी और वह नहीं चाहती थी कि साड़ी पर कोई दाग लग जाये। पंडित अगर खेतों में उसके साथ दौड़ता तो वह उसे निश्चित रूप से पीछे छोड़ देती। मगर इस समय पंडित पंडिताइन से बहुत आगे था। वह कंधों पर बिटिया को उठाये लगभग दौड़ते हुए चल रहा था। यकायक पंडित ने पीछे मुड़ कर देखा तो उसे पंडिताइन कहीं नजर न आयी। वह मुड़ा और उसी रफ्तार से वापिस भागा। उसका कलेजा जोर-जोर से धड़कने लगा, कहीं पंडिताइन खो ही न जाए। कोई गुण्डा-बदमाश ही पीछे न लग गया हो। मगर पंडिताइन घूँघट काढ़े मटकती हुई इत्तमीनान से चली आ रही थी। पंडित को यों दौड़ते देख उसे विचित्र लगा। उसने सोचा अब सड़क पर क्या विवाद करे, घर लौट कर ही पूछेंगे कि यह कैसा शहराती तरीका है।

पंडिताइन को देख कर पंडित आश्वस्त हो गया। अपनी बिटिया को छाती से चिपटाते हुए बोला—का नाम है तुम्हारा ? ही ही ही।" वह शायद भूल चुका था यह उसी की बिटिया है। वह दरअसल अब तक यही समझ रहा था कि किसी अफ़सर की बिटिया को फव्वारा दिखाने ले जा रहा है। ऐसा वह अक्सर किया करता था। खुशामद करने का यह एक निष्कलुष ढंग था कि अफ़सरों के बच्चों को फव्वारा दिखाया जाये।

पंडिताइन कुढ़ते हुए पंडित के पीछे चल रही थी। उसे सुबह से एक ही शिकायत हो रही थी कि पंडित मुसलमानों के मुहल्ले में रहता है और कोठरी में किवाड़ तक नहीं। वह कहाँ तो नहायेगी और कहाँ सोयेगी ? कोठरी भी क्या थी उसे काल कोठरी कहना ही वाजिब लगता। घर में खटिया तक नहीं थी। उसी सीलनभरी कोठरी में दो-चार टाट बिछा कर पंडित ने अपना बिछौना बना रखा था। पंडिताइन को आश्चर्य हो रहा था कि यह आदमी देहात की खुली हवा छोड़ कर शहर में क्यों सड़ रहा है ? पंडित पंडिताइन के मनोभावों को भाँप गया था। पहले उसने सोचा पंडिताइन को खुश करने के लिए सिविल लाइन तक का रिक्शा कर ले, मगर यह एक ऐसी फ़िजूलखर्ची थी, जो उसने आज तक न की थी। इससे अच्छा तो यह होगा, इन पैसों से सिविल लाइन्स में चाट खायी जाये। इस इंतजार में वह भागा जा रहा था

कि पंडिताइन किसी तरह सिविल लाइन्स पहुँच कर उसका रुतबा देख ले। मगर पंडिताइन बहुत धीमे-धीमे चल रही थी। बसों का धुआँ सीधा उसके दिमाग में घुस रहा था। पंडित गर्दन घुमा कर बार-बार पंडिताइन को देखता और उसकी इच्छा होती कि पंडिताइन को भी बच्ची की तरह कंधे पर बैठा कर ले भागे। चौराहे के पास पहुँच कर वह खड़ा हो गया और अपनी बच्ची को गा-गा कर समझाने लगा .

लाल बत्ती देखो, तो मोटर को रोको
हरी बत्ती देखो तो मोटर चलाओ

बच्चों का यह गीत वह चतुर्वेदी जी के बच्चों को गाते हुए सुन चुका था। हरी बत्ती हुई तो पंडित ट्रैफ़िक के साथ-साथ भागा। पंडिताइन ने पंडित को अचानक भागते हुए देखा तो वह भी उसके पीछे भागी। चप्पल उतार कर पंडिताइन ने हाथ में थाम ली और किसी तरह अपनी जान बचा कर चौराहा पार किया। पंडित ही ही कर हँसा। उसके बड़े-बड़े दाँत ऐसे लग रहे थे जैसे मुँह के भीतर सींग उग आये हों।

"यह सहर है सहर! यहाँ सुस्ती से काम नहीं चलता। एक मिनट की भी कोताही हुई नहीं कि बन्दा सीधा भगवान जी के पास', पंडित ने सामने सिनेमा-घर देखा तो बोला, "तुमको एक दिन सिनेमा भी दिखाऊँगा। वह देखो सामने, कभी देखा है सिनेमा? धर्मेन्द्र और शर्मीला टैगोर। और ऊपर देखो सामने। रेल का पुल। नीचे से बसें गुजर रही हैं और ऊपर से रेल गाड़ियाँ। अब सिविल लाइन दूर नहीं। बस पुल पार किया और बत्तियाँ देखते-देखते पहुँच गये।"

सिविल लाइन तक पहुँचते-पहुँचते पंडित की साँस फूल गयी थी। वैसे वह रोज ही पैदल आता जाता था मगर आज मारे उत्तेजना के उसके पैर जमीन पर नहीं पड रहे थे। उसने दूर से ही पंडिताइन को दिखाया—वह देखो फव्वारा। पंडिताइन की समझ में कुछ न आया। वह अपनी पुरानी रफ्तार से उसी प्रकार चलती रही। कोठरी पर पहुँचते ही पंडित ने चाबी लगा कर कोठरी खोली, बत्ती जलाई और ज्योंही पंडिताइन ने कोठरी में कदम रखा पंडित ने स्विच ऑन कर दिया। पंडिताइन ने पलट कर देखा, चौराहे पर फव्वारे की नन्हीं-नन्हीं बूँदें छोटे-छोटे बल्बों के रंग में रँग गयी थीं। पंडिताइन हल्के से मुस्करायी। उसे यह सब बहुत अच्छा लगा, जादुई। बोली, 'एक बार बन्द करके फिर से चलाओ।"

पंडित ने फौरन आज्ञा का पालन किया। पानी की फ़ुहार एकदम बैठ गयी। चौराहे पर सन्नाटा खिंच गया। पंडित हे-हे-हे करके हँसा और उसने

पुनः फव्वारा चला दिया।

पंडित आश्वस्त हो गया था कि पंडिताइन पर धाक जम रही है। कोठरी के बाहर गर्दन निकाल कर अपनी बहुत रौबदार आवाज में उसने किसी को पुकारा "ओ घीनू !"

घीनू ने पंडित को आज तक इतनी रौबदार आवाज नहीं सुनी थी, बोला, "हुजूर।"

"जाकर जरा चुन्नीलाल को बोल आओ कि कुछ मिठाई बनी हो तो भिजवा दे। घोड़े की रफ्तार से जरा जल्दी कह आओ। और देखो अगर गर्म-गर्म गुलाब जामुन मिलें तो लेते आना।"

घीनू के पास अभी बहुत काम था। दुकान उठाने का समय भी हो रहा था। उसने स्थिति की नजाकत को समझते हुए पंडित का काम कर देना ही मुनासिब समझा। वह नहीं चाहता था, पंडित उसके सामान का सन्दूक कोठरी में रखने से इनकार कर दे।

"रे कान्हा, मेरा सामान जरा देखते रहियो, मैं अभी आता हूँ।" घीसू ने कहा और चुन्नीलाल की दुकान की ओर लपका। पंडित ने घीसू पर अपना प्रभाव होते देख एक ठेले वाले को दो गिलास सन्तरे का ताजा रस बनाने का भी आदेश दे डाला। फलवाले ने पंडित की बगल में एक औरत को देखा तो पंडिताइन के लिए सड़े हुए सन्तरे छाँटने लगा।

● ०

इसे संयोग ही कहा जायेगा कि पंडिताइन उन दिनों शहर आयी जब सरकार ने बिजली में भयंकर कटौती कर दी। फव्वारा भी बन्द करना पड़ा। अब पण्डित के पास बहुत-सा खाली समय था। वह दो-एक घण्टा दफ्तर में बाबुओं को चाय-पानी पिलाने का काम करता, फिर किसी अफसर का नल ठीक करने के बहाने घर खिसक जाता। फव्वारे पर उसे कोई काम नहीं था। वह दिन भर पंडिताइन के आस-पास ही मँडराता रहता। पंडिताइन सीधे मुँह बात न करती तो लाला भैरूलाल के बण्डल छुड़ाने मालगोदाम चला जाता। इस काम में वह रुपये-दो रुपये कमा लेता। कभी बाबू को चाय पिलाने के हिसाब में, कभी ठेले वाले से कमीशन तय करके।

पंडित एक दिन मालगोदाम से माल छुड़ा कर लौटा तो लाला भैरूलाल ने उसे अपने पास बुलाया, 'देखिए पंडित, जमाना मँहगाई का है। आपको नौकरी से पूरा नहीं पड़ता, इसलिए मेरे यहाँ थोड़ा-बहुत काम कर लेते हैं। क्यों नहीं बहू को भी काम पर लगवा देते? पच्चीस-तीस कुछ तो लायेगी? तुम्हारी भाभी कई दिनों से शिकायत कर रही हैं कि अब उनसे घर का काम नहीं होता। पंडिताइन अगर बर्तन मल देगी या पोछा लगा देगी तो उसे कुछ राहत मिल जायेगी।'

पंडित ने इस पहलू से कभी विचार ही नहीं किया था। एक-एक पैसा दाँत से पकड़ते उसका जीवन बीत रहा था। अपने पाँव पर उसे इतना भरोसा था कि पहली बार रिक्शा में भी पत्नी के आने पर ही चढ़ा था। कभी दातौन तक नहीं खरीदी थी। समय न कटता तो पेड़ पर चढ़ कर दातौन तोड़ लाता और कोठरी के बाहर बैठा घण्टों चबाता रहता। इधर उसने सन्तोषी माँ का स्मरण करके दाढ़ी बढ़ा ली थी और तय कर लिया था कि जब तक घर में बाल-गोपाल नहीं आते, वह दाढ़ी नहीं मुड़ायेगा।'

पंडिताइन वहुत कम वोलती थी। कई दिन तक पंडित का भी हौसला नहीं पड़ा कि वह सेठ जी का सुझाव पत्नी के सामने रखे। पंडित तमाम जद्दोजहद के वाद वमुश्किल सौ-सवा सौ रुपये घर लाता था। इतने रुपयों में नोन-तेल-लकड़ी का भी पूरा न पड़ता, पंडिताइन जिन कपड़ों में आयी थी, उन्हीं में गुजर कर रही थी। वच्ची भी यतीमों की तरह अधनंगी घूमती। आश्चर्य की वात तो यह थी कि इन समस्त अभावों के वीच भी पंडित अपने को एक सफल आदमी मानता था। उसके पास वीसियों किस्से थे—अपने शौर्य के, वीरता के, लोकप्रियता के...। वह कुछ ऐसे सोचता कि नगरपालिका उसी के चलाये चल रही है। पंडिताइन का ध्यान अभावों की तरफ़ न जाये—यह सोच कर वह अक्सर उसकी खुशामद में लगा रहता। वहुत खुश होता तो घोड़ा वन कर, वच्ची को पीठ पर ही दिल्ली-वम्वई-कलकत्ता की सैर करा देता। पण्डिताइन देखती तो वच्ची के साथ-साथ पंडित पर भी उसे प्यार उमड़ने लगता। एक दिन पंडिताइन को इतना प्यार उमड़ा कि वह भी उस खेल में शामिल हो गयी और पंडित पर बैठने का अभिनय करते हुए चिमटे से उसे हाँकने लगी। वच्ची पंडित की चोटी लगाम की तरह थामे हुए थी और पंडिताइन छोटी-सी कोठरी में उसे हाँके चली जा रही थी। यह दूसरी वात है कि थोड़ी देर में इस घटना से उत्साहित हो पंडित ने पंडिताइन की लगाम थाम ली...।

पण्डित ने पत्ता फेंक दिया, वहुत दिनों वाद सुनहरा मौका हाथ में आया था। विना चूके वोला 'सव दिन एक समान नाय रहत। सन्तोषीमाई की किरपा से पलमामेंट होइ जाइ और घर में वाल गोपाल आइ जाइ, फिर हमको कौनो चिन्ता न रही। क्वाटर भी मिल जाइ और मंहगाई भत्ता भी!' अपनी वात का असर होते देख उसने वात जारी रखी, 'भैरूलाल सेठ जी के सेठाइन कहत रही कि मदद के खातिर पंडिताइन को भेज दीहा करा, वैसे एहमें कौनो हरज नांय वा, अपने जजमान हैं।'

'उहाँ का करै परी ?'

'चालीस-पचास रुपये तो देवै करिहैं। मुला काम उहै होइ जौन न हम करै चाहव, न तू।'

पंडिताइन मुंह वाये सुनती रही।

'जैसे घर कै सफाई, कपड़े पछाड़ना, वरतन मलना।'

'खाना वनवावैं तौ चली जाव।'

'खाना तौ सेठानी खुद वनावनहिं।'

पंडिताइन सोच में पड़ गयी। अगर किसी पड़ोसी को पता चल गया कि पंडिताइन दूसरों के घरों में बरतन मलती है तो सारी इज्जत खाक में मिल जायेगी। दूसरी तरफ चालिस-पचास रुपये भी कम नहीं होते। महीने-के-महीने मिलेंगे। बच्चों का नया जोड़ा खरीदा जा सकता है, साबुन, क्रीम, नयी चप्पल, पाँव के लिए लच्छे...।'

पंडित ने भाँप लिया कि पंडिताइन को सुझाव पसन्द आया है। उसे पण्डिताइन से ऐसी आशा न थी। पण्डित को बहुत सदमा लगा। साली जेल से निकलना चाहती है। यकायक उसके विचारों में क्रान्ति आ गयी। सोचने लगा, औरत से काम करवाना मर्द के लिए डूब मरने की बात है। बोला, 'सुनो जी, हम ठहरे बामन। हम दुसरे कै घरें कै गन्दगी साफ करी, हमरे सास्तर में एकर कौनो नियम नाय न। रूखी-सूखी खाइ कै पड़ा रहा, मुला अपने धरम पै दरिढ रहा। न जाने पूरब जनम कै कौनो पुन्य का फल रहा कि ब्राह्मण कुल में जनम पाय...।'

'ई तो ठीक है। मुला ई धोतियौ जो फटि जाइ तौ का करब ?'

'सिलाई।' पंडित दृढ़ता से बोला, 'सुदामा कै पतनी केतना-केतना दुख उठाइ होइ, तनि ओनके बारे में सोचा। अगर सुदामा गरीबी में रहि सकत तो हम काहे नाही ! हमरे कमीच देखा, केतनी जागा प्योंना लाग बा।'

पण्डित की बातों से पंडिताइन को ऊब होने लगी। वह उठ कर चूल्हा फूंकने लगी। पण्डित को लगा पण्डिताइन ऐंठ रही है। पंडिताइन के सामने उसने खुद ही सुझाव रखा था और अब खुद ही तर्क-वितर्क में उलझता जा रहा था। जबकि पंडिताइन से बात करने से पूर्व अपने को यहाँ तक तैयार कर चुका था कि पडिताइन बर्तन भी मल ले तो कोई बुराई नहीं। आदमी को हर तरह का बखत देखना पड़ता है। अब तो उसे विश्वास हो गया था कि ऊपर से देखने पर सेठ भला आदमी लगता है, अन्दर उसके खोट ही खोट भरी है। थुल-थुल सेठाइन से ऊब कर अब पंडिताइन पर डोरे डालना चाहता है। पंडिताइन तो साली मूर्ख है। सेठ ने एक धोती कपड़ा दिलवा दिया तो उसी पर रीझ जायेगी। पंडित के दिमाग में अकस्मात् ऐसा अंधड़ उठा कि उसे लगा, सब कुछ पेड़-पौधों की तरह उखड़ कर नष्ट-भ्रष्ट हो जायेगा। पंडित ने उचित समझा कि अभी जाकर सेठ भैरूलाल को बता आये कि उसने पंडिताइन को काम के लिए बहुत कहा, मगर वह तैयार न हुई।

आखिर एक दिन पंडित सेठ जी को जवाब देने उनके यहाँ जा पहुँचा। उसने कई बहाने सोच रखे थे। जैसे : पंडिताइन जल्दी ही घर लौट रही है या बच्चों के चलते वह अपने घर का ही काम नहीं कर पाती, वगैरह-वगैरह।

इससे पहले कि पंडित कुछ कहता, सेठ भैरूलाल ने कहा कि उन्हें नौकरानी मिल गयी है। पंडित जैसे आसमान से गिरा। उसे लगा, जैसे यकायक किसी ने दिमाग का फव्वारा बन्द कर दिया हो। उसे पंडिताइन पर क्रोध आने लगा, 'सारी दुनिया में वही एक परी है! साली! हरामजादी! बना-बनाया काम बिगाड़ दिया। चालीस-पचास रुपये उसे काटते थे। भूखे-नंगे रहना अच्छा लगता है, काम के नाम से मौत आती है।'

सेठ भैरूलाल कुछ घबराये हुए थे। उनकी सेल्सटैक्स की तारीख लगी थी और उन्हें कुछ कागज़ात नहीं मिल रहे थे। उन्होंने पंडित को जल्दी ही विदा कर दिया।

पंडित लौटा तो पंडिताइन कोठरी में नहा रही थी। सेठ के यहाँ से पंडित दुखी और निराश लौटा था। चालीस-पचास रुपये माहवार खो देने का उसे नाकाबिले बर्दाश्त अफसोस हो रहा था। पंडित को भूख भी लगी हुई थी और सेठ भैरूलाल ने चाय-नाश्ते के लिए भी नहीं पूछा था। दीन-दुनिया से बेखबर पंडिताइन को यों इतमीनान से सिल पर एड़ी रगड़ते देख पंडित का पारा चढ़ने लगा। उसे धक्का-सा लगा कि पंडिताइन उसकी अनुपस्थिति में पूरे वस्त्र उतार कर नहाती है। कोई भी गुण्डा-मुस्टण्डा टाट में से झाँक सकता है।

पण्डित की अप्रत्याशित उपस्थिति से पण्डिताइन अचकचा कर रह गयी। उसके पास बदन पोंछने तक के लिए कपड़ा नहीं था और भय भी लग रहा था कि अगर धोती उठाने के लिए खड़ी हो गयी तो पंडित जान से मार डालेगा। उसे नहाते देख पंडित को खुद ही बाहर चले जाना चाहिए था, मगर वह बेशर्मी से अड़ कर वहीं खड़ा हो गया। पंडिताइन ने सोचा पण्डित उसे एकान्त में यों नहाते देख कर मज़ा ले रहा है। मगर पंडित के तेवर बदले हुए थे, बोला, 'ई नहाइ कै टैम है?'

'सुबह नल पर कितनी भीड़ होत है, तू जनतै हया।'

'साली! हरामजादी! छिनाल!' पंडित के नथुने फड़कने लगे, 'ऐसे तो अच्छा था कि तैं सड़क पर नहावा कर!'

शीघ्र ही पण्डित क्रोध, थकान, भूख, खेद से हाँफने लगा। पंडिताइन ने पंडित का यह भयंकर रूप देखा तो जमीन पर लेट कर गीली धोती खींच ली और गीले बदन पर लपेटने लगी। टाट पर एक कोने में बच्ची सो रही थी, आवाज सुनकर वह भी रोने लगी। पंडिताइन ने बच्ची को उठा लिया।

'बच्ची को मत छुओ, पहले मेरी बात सुनो!' उत्तेजना में पण्डित खड़ी बोली पर उतर आया था।

'तोहरे पेट से निकरी रही जौन वहै रहे देई!'

'ज्यादा बक-बक किया तो उठा कर पटक दूंगा। बाहर सड़क पर नहाना अच्छा लगता है और सेठ भैरूलाल के यहाँ काम करने में इज्जत जाती थी। तुम्हें पर लग गये हैं शहर के! मैं तुम्हारे पर नहीं काटूंगा, तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े करके चुपचाप गंगा जी में बहा आऊंगा! जिसे नहाने की फिकर रहती है, वह मुंह-अँधेरे उठ कर नहा लेता है. तुम्हारी तरह बदन की नुमाइश लगा कर पूरे कुल की इज्जत मिट्टी में नहीं मिलाता।'

पंडिताइन सुबकने लगी, 'तोहरे जैसन राक्षस के साथ गुजर न होए। बच्ची कँ लै कँ हम भियान हियाँ से चली जाब!'

पंडित के जी में आया, पंडिताइन के सामने बैठ कर अपनी दाढ़ी मूंड़ डाले और पंडिताइन को बता दे कि अब उसका उससे कोई सम्बन्ध नहीं रहा मगर वह सिर थाम कर बैठ गया। उसने बड़े चाव से पंडिताइन को शहर बुलाया था। अब उसे लग रहा था, यह उसकी भारी भूल थी। जितना टैम उसने पंडिताइन की चाकरी में खिलाया है, किसी अफसर की सेवा की होती तो अब तक 'पलमामेन्ट' हो गया होता। वह उठा और पंडिताइन की तरफ कुछ रेजगारी फेंक कर ड्यूटी के लिए रवाना हो गया।

पंडिताइन बच्ची को गोद में लिये दूध पिलाती रही। घर में न आटा था, न नोन। उसकी इच्छा नहीं हुई कि पंडित के फेंके पैसों को उठा कर सामान ले आए।

'ब्याहता औरत हूँ, भिखारिन नहीं। मजूरी कर लूंगी, भीख नहीं उठाऊँगी!'

वह भूखी प्यासी पड़ी रही।

कई रोज तक पंडिताइन का बाहर नल पर नहाने का हौसला नहीं पड़ा। कोठरी में पहले से ही इतनी सीलन थी कि वह नहा कर उसे और सीलन से नहीं भरना चाहती थी। पंडित से उसकी बोल-चाल बन्द थी। पंडित आता तो वह चुपचाप थाली परोस देती। एक-दो बार पंडित ने कोई किस्सा सुना कर बातचीत जीवित करनी चाही मगर पंडिताइन उठ कर बाहर चली गयी। एक दिन रात को पंडित ने धीरे से पंडिताइन को छूने की कोशिश की तो वह ऐसे बिदक कर उठ बैठी जैसे पंडित के हाथ न हो कोई साँप हो।

हजरी कई दिनों से पंडित और पंडाइन दोनों को उखड़े-उखड़े देख रही थी। एक दिन उसने पंडिताइन के बालों में तेल डालते समय पूछा, 'का बात है बेहू। पंडित जी से झगड़ा हो गया है का?'

पंडिताइन रोने लगी, 'सहर में तो तुम्हीं रहि सकत हो। न खाने का कोई परबन्ध न पहरने का। ऊपर से हर बखत बदमिजाज आदमी की घुड़की

सुनो। मैं तो लौट जाऊँगी। देहात में कम से कम दो जून रोटी तो मिल जात है इज्जत के साथ।'

हजरी एक दिन भैरूलाल के यहाँ काम करने की बात पर दोनों में तकरार सुन चुकी थी। बोली, 'तुम पंडित की बात पर न जाओ। चुपचाप नौकरी कर लो, जहाँ वह कहता है। घर में दो पैसे आयेंगे और जी का क्लेश भी कम होगा।'

'नौकरी करने भी देवें। पहले खुद ही कहत रहे कि नौकरी कर लो। जब मैं तैयार हो गयी तो लगे अनाप-सनाप बकन।'

'मरद ऐसे ही होते हैं। आदमी वह बहुत अच्छा है, इस बात को गाँठ बाँध लो। इतने बरस यहाँ रहा है मजाल है किसी की बहू-बेटी की तरफ बुरी आँख से देखा हो।'

इस बात से पंडिताइन को हल्की-सी खुशी हुई। दूसरे हजरी बी ने सर इतना हल्का कर दिया था कि उसे पंडित की ज्यादतियों पर लाड़ आने लगा।

'मेरी मानो तो एक कहूँ। यहाँ बगल में मास्टर सीताराम जी रहते हैं, कई बार किसी काम करै वाली को ढूंढ़ने के लिए कह चुके हैं। चलो तुम्हें मिलवा लाऊँ।'

'उनसे पूछ ल्यों तब तो।'

'मैं पूछ लूंगी।' हजरी ने कहा और पंडिताइन को लगभग घसीटते हुए मास्टर जी के यहाँ खींच ले गयी।

• •

मास्टर जी थोड़ी दूर पर ही रहते थे। लगभग रिटायर होने को आये थे। एक लड़का ए० जी० के दफ्तर में बाबू था और दूसरा किताबों का धन्धा करता था।

मास्टर जी बाहर चौतरे पर बैठे अखबार पढ़ रहे थे। दूर से ही हजरी की आवाज सुन कर चौकन्ने हो गये।

'सलामालैकुम मास्टर साव।' हजरी दस मीटर दूर से ही चिल्लाई।

'वालैकुम हजरी।' मास्टर साहब ने चश्मा उतार कर हाथ में पकड़ लिया और हजरी के साथ घूंघट में किसी औरत को देख कर समझ गये कि हजरी महरी का इंतजाम करने में सफ़ल हो गयी है।

'अभी देहात से आयी है, इसलिए शर्मा रही है। ऐसी नेक महराजिन आपको न मिलेगी मास्टर साव।' हजरी बोली। 'दिन में दो बार तो स्नान करती है। हर दूसरे दिन तो इसका व्रत रहता है।'

'जाओ अन्दर बहू से मिलवा दो।' मास्टर साहब ने कहा और फिर अखबार में डूब गये। मगर अखबार में उनका मन नहीं लग रहा था, दिन में कई बार वही-वही समाचार पढ़ चुके थे।

मास्टर जी हाथ में चश्मा थामे अन्दर दालान में चले गये। मास्टरनी पंडिताइन से एक ही बात पर उलझ रही थी कि उसे बर्तन भी मलने होंगे। पंडिताइन इसके लिए तैयार न थी। वह खाना बनाने को तो तैयार थी, चालीस रुपये भी उसने मंजूर कर लिये, मगर बर्तन के नाम पर वह घूंघट काढ़ लेती थी।

मास्टर जी ने पंडिताइन का चेहरा देखा तो समझ गये कि बेचारी कोई मुसीबत की मारी ब्राह्मणी है। बोले, 'मैं कहता हूँ चलो बर्तन का काम नहीं करना चाहती तो न सही। तुम्हारा काम कुछ तो हल्का होगा।'

मास्टरनी भड़क गयी, हाथ नचाकर वोली, 'ठीक है, खाना तो यह नवाब-जादी वनाये और वर्तन वैठ कर हम मलें। इस बुढ़ौती में मेरी यही गति लिखी थी।' मास्टरनी अचानक रूठ गयी।

मास्टर जी उठ कर वाहर चले आये और चौतरे पर वैठ कर पुनः वही-वही खवरें पढ़ने लगे।

पंडिताइन सदाशिव औरत थी, मास्टरनी की वात से पिघल गयी। हज़री से वोली, 'वर्तन भी हम मल दें मगर पंडित जी सुनेंगे तो घर से निकाल देंगे।'

'पंडित को वताना ही मत।' हज़री ने कहा और अन्दर जाकर मास्टरनी के पैर दवाने लगी, 'वेचारी मुसीवत की मारी है। आदमी ले-दे कर सौ रुपल्ली कमाता है। आज के ज़माने में इतने रुपयों से होता ही क्या है। यह भली औरत तो वर्तन भी मल लेती, मगर पंडित सुनेगा तो पगला जायेगा।'

मास्टरनी सुवह रोज गंगा-स्नान के लिए पैदल जाती थी, और इस समय हज़री से पैर दववा कर उसे वहुत भला लग रहा था, वोली, 'हज़री तुम ही सोचो। मैं तो वर्तन मलूँ और यह राजकुमारी खाना पकाये।'

'मैंने हल निकाल लिया है।' हज़री ने कहा, 'अगर पंडित को खवर न लगे तो यह चुपचाप सव काम कर लेगी।'

'एक और वात है हज़री।' मास्टरनी ने कहा, 'घर में दो-दो जवान वेटे हैं। ऐसी जवान औरत को रखते हुए मुझे डर भी लग रहा है।'

'आपके जैसे वेटे किसके होंगे।' हज़री वोली, 'अव तो शादी रचा ही दो अम्मां जी। एक-से-एक रिश्ते आते होंगे।'

मास्टरनी अपने वेटों की वड़ाई सुन कर वहुत खुश हो गयी, जवकि मन-ही-मन वह वेटों से इतनी खुश न थी। अभी से वे लोग अपनी आमदनी छिपाने लगे थे। वहुएँ आ जायेंगी तो एक कौड़ी भी मास्टरनी के हाथ पर न धरने देंगी।

'ठीक है हज़री वी, अगर तुम कहती हो तो पंडिताइन को काम पर लगा दो। मगर यह उसे समझा देना कि यह मास्टर सीताराम का घर है। यहाँ किसी तरह की गन्दगी वह न फैलाये।'

अगले रोज सुवह छह वजे पंडिताइन मास्टर सीताराम के घर की साँकल वजा रही थी। मास्टर जी ही ने दरवाज़ा खोला। उन्होंने दरवाज़ा खोला और वोले, 'विटिया इतनी जल्दी क्यों चली आयी। अभी तो घर में सव लोग सो रहे हैं।'

'जव तक वे जगेंगे वर्तन मल लूँगी।' पंडिताइन ने कहा।

'ठीक है, ठीक है।' मास्टर जी ने दरवाज़ा वन्द किया और पंडिताइन को

रसोईघर तक ले गये । कल रात लड़कों के कुछ दोस्त आये थे । घर के तमाम बर्तन नल के पास पड़े थे । बर्तनों पर बहुत चिकनाई थी । पंडिताइन ने सोचा सम्पन्न लोगों का घर है । उसके यहाँ तो जूठे बर्तन नल के नीचे रख दो तो धुल जाते हैं ।

मास्टर ने बड़े इतमीनान से पंडिताइन के गाल थपथपा दिये, 'मुझे दुःख है तुम्हें बर्तन भी मलने पड़ रहे हैं ।'

पंडिताइन ने अपनी धोती को ठीक किया, एक नजर मास्टर जी की तरफ देखा और बर्तन मलने बैठ गयी । घर में मास्टर जी के अलावा सब लोग सो रहे थे । मास्टरनी गंगास्नान के लिए जा चुकी थी ।

मास्टर जी पंडिताइन के पास खड़े होकर चाय बनाने लगे । उन्होंने दो कप पानी अंगीठी पर उबलने को रख दिया, 'चाय पी लेती हो ?'

पंडिताइन ने नज़र उठा कर मास्टर जी की तरफ देखा और बोली, 'देहात मे तो कोई चाय का नाम नही लेता । मगर देखती हूँ सहर के लोगों को इसका चस्का लग गया है ।'

मास्टर जी हँसे और एक गिलास मे चाय बना कर पंडिताइन को थमा दी, 'लो महराजिन तुम भी पीकर देख लो ।'

'न, न । हम चाय न पीब ।' पंडिताइन बोली ।

'अरे पी लो । एकदम तबीयत अच्छी हो जाएगी ।'

'मास्टर जी, मेरी तबीयत खूब अच्छी है ।' पंडिताइन कड़ाई से बोली ।

मास्टर जी चाय का प्याला थामे उसके पास खड़े रहे । पंडिताइन ने साड़ी भीगने के भय से जांघों में खोस ली थी । पंडिताइन ने देखा मास्टर जी उसकी पिण्डलियों को बड़ी तन्मयता, दिलचस्पी और उत्सुकता से देख रहे थे । उसने झट से पिण्डलियों पर धोती ओढ़ ली और बर्तन मलने मे जुट गयी ।

मास्टर जी के हाथ में चाय का गिलास काँप रहा था ।

'मैंने तो बड़ी मोहब्बत से चाय बनायी थी ।' मास्टर जी बोले और गिलास पंडिताइन के पास ज़मीन पर रख दिया ।

पण्डिताइन ने इसकी तरफ कोई ध्यान न दिया । वह चुपचाप बर्तन मलती रही । वह मास्टर जी से इतनी बेन्याज़ थी कि उसे पता भी न चला, कब मास्टरजी अपना गिलास लिए राम राम करते वहाँ से अप्रगट हो गये ।

जब तक मास्टरनी गंगा स्नान से लौटती, पण्डिताइन बर्तन मल चुकी थी और कमरों मे पोंछा लगा कर आलू छील रही थी ।

'अब दोपहर को आना ।' मास्टर जी ने कहा, 'हमारे यहाँ बारह एक से पहले कोई खाना नही खाता । और देखो तुम्हारा ब्लाउज़ बगल पर से उधड़

गया है, इसे सी लेना।'

पंडिताइन ने धोती बदन पर कम्बल की तरह ओढ़ ली और चलने के लिए उठ खड़ी हुई।

'तुम्हारी चप्पलें कहाँ हैं?'

'चप्पल हम नहीं पहनत।' पंडिताइन बोली।

पंडिताइन नंगे पाँव थी। उसने पैरों पर लाल आलता मल रखा था और चाँदी के पाजेब पहन रखे थे। वह छम छम करती चली गयी तो मास्टरजी को बहुत अकेला लगा। सुबह के अधिकांश काम वह निबटा गयी थी। मास्टरनी गंगा स्नान से लौटी तो उसने सबसे पहले डिब्बा खोल कर देखा कि पंडिताइन क्या-क्या चीज़ चुरा कर ले गयी है। मास्टर जी ऊपर आये तो मास्टरनी ने कहा, 'आप माने या न मानें, मगर वह एक चोर औरत है। देखिए चीनी और चायपत्ती कितनी कम रह गयी है।'

इस मौके पर मास्टरजी ने यह बताना उचित न समझा कि उन्होंने सुबह दो प्याला चाय बनायी थी। मास्टर जी को हतप्रभ देख कर मास्टरनी ने दूध का बर्तन उघाड़ कर देखा, उसकी अनुभवी आँखें आश्वस्त हो गयीं कि दूध की भी गड़बड़ी की गयी थी।

मास्टर जी बाहर धूप में बैठ कर अखबार पढ़ने लगे।

मास्टरनी देर तक कुढ़ती रही, 'लगता है यह चुड़ैल पूरा घर बर्बाद कर देगी।'

पंडिताइन मास्टर जी के यहाँ से लौटी तो पंडित धूप में बिटिया को खिला रहा था। पंडिताइन ने पंडित से बात करने की कोई कोशिश न की और कोठरी में घुस गयी। काम से लौटने के बाद उसमें बेहद आत्मविश्वास आ गया था।

थोड़ी देर बाद पंडित सिसियाता हुआ आया और बोला, 'मास्टरजी बहुत भले आदमी हैं। मैं उन्हें बरसों से जानता हूँ।'

'हुआ करें।' पंडिताइन बोली, 'मुझे अपने काम से मतलब है।'

पंडिताइन का वेतन जानने के लिए पंडित की जान निकल रही थी, बोला, 'काम तो कोई ज्यादा न होगा?'

पंडिताइन चुपचाप अंगीठी सुलगाती रही।

'दरअसल कल मेरा मूड बिगड़ा हुआ था। ये जो नये प्रसाशक जी आये हैं हर किसी को वजह-बेवजह लताड़ देते हैं।'

पंडिताइन पंडित के स्वभाव से परिचित थी कि ऐसे समय में वह अक्सर कहानियाँ गढ़ कर सुलह-सफाई का रास्ता निकाला करता है, बोली, 'बिटिया

को कुछ खाने को दिया था या यों ही खाली पेट बहला रहे हो।'

पंडित ने सचमुच बिटिया को अब तक भूखे रखा था। पंडिताइन की बात पर अब वह झूठ ही बोल सकता था, बोला, 'अब तुम मानोगी नहीं, अभी लखन के यहाँ से दो बिस्कुट लाया था, बकरी की तरह चर गयी।'

'तुमने कुछ खाया ?'

'मैं तो, तुम जानती हो, बहुत सुबह खाने का आदी नहीं हूँ। जेब में दो रुपये थे। थोड़ा घी और दो मूलियाँ ले आया हूँ, आज परेठा खिला दो।'

पंडिताइन का मन भी आज पराठा पर चल रहा था। मास्टरजी के यहाँ बर्तन मलते हुए उसने हर तश्तरी में आलू के पराठों के टुकड़े देखे थे। पंडित का सुझाव मान कर वह जल्दी-जल्दी पराठा बनाने में लग गयी।

'*देहात में किसी को यह बताने की क्या ज़रूरत है कि तुम काम-वाम पर* जाती हो। वक्त बहुत तेजी से बदल रहा है, यह बात देहात वाले क्या जानें ?'

'मैं तो क्या बताऊँगी, तुम खुद ही ढिंढोरा पीट दोगे। मैं जैसे तुम्हारे स्वभाव को जानूँ नहीं।'

पंडित हीं-हीं कर हँसने लगा, बोला, 'चालीस से कम तो क्या देंगे ?'

'चालीस ही देंगे।' पंडिताइन ने बहुत छिपाना चाहा, मगर उसके मुँह से निकल ही गया। बर्तन भी मजबाही।'

'तुमने बर्तन माँजे ?' पंडित ने जरा तैश से पूछा।

'यही कहा कि तुमसे पूछ कर बतायेंगे।' पंडिताइन ने पंडित का मन भी जान लेना चाहा।

पंडित गहरी चिन्ता में डूब गया। उसे लगा उसके सामने कोई समस्या खड़ी हो गयी है। ठीक अपने प्रशासक जी की मुद्रा में चटाई पर बैठ गया और थोड़ी देर बाद बोला, 'समस्या तो गंभीर है। मेरे एक अफसर त्रिपाठी थे, जो कहा करते थे कि जो इन्सान वक्त के साथ नहीं बदलता नष्ट हो जाता है।' अपनी बात को ज्यादा प्रभावोत्पादक बनाने के लिए उसने कहा, 'अब इस कलियुग में कौन ब्राह्मण और कौन शूद्र। शहर में रहना है तो शहर के कायदे-कानून को मानना ही पड़ेगा।'

'तो हाँ कर दूँ ?' पंडिताइन ने पूछा।

'तुम्हारी आत्मा गवाही दे तो कर दो।'

'मेरी आत्मा तो कभी इसकी गवाही नहीं देगी कि लोगों को जूठन साफ करूँ।'

पंडित को पंडिताइन पर बहुत तेज गुस्सा आ गया मगर वह किसी तरह अपने पर काबू पाये रहा। साली सारा दोष मेरे ऊपर धर कर ही जूठन

मलना चाहती है। मेरा वस चले तो पूरी औरत जात को शूद्रों की श्रेणी में रख दूं।

'का कहत हो ?'

'तुम चाहती हो मैं तुमसे कहूँ कि जाओ पंडिताइन दूसरों के घर जाकर जूठन साफ करो। यही कहलवाना चाहती हो न ? राँड कहीं की।' पंडित बोला, 'ये परेठा तू ही खाना। समझी।' आदमी हूँ, ब्राह्मण हूँ। अभी किसी जजमान के यहाँ देशी घी के पराठे खा लूंगा। सहर में तुम्हारे जैसे जन नहीं खप पायेंगे। देहात की गाड़ी पर वैठा दूंगा, जाकर उपले बनाओ और उन्हीं की सड़ांध में सो जाओ।'

'यहाँ कम सडांध नहीं है।' पंडिताइन वोली, 'इसी कोठरी में खाओ और यहीं मूतो। ऐसा सहर तुम्हें ही मुवारक हो।'

क्रोध, आवेश और भूख से पंडित का चेहरा लाल हो गया। वह उठा और नंगे पाँव ही घर से निकल गया।

'साला हरामी।' पंडिताइन ने फर्श पर एड़ी रगड़ते हुए कहा, 'सिर्फ दुम हिलाना या जीभ चलाना ही जानता है।'

अगले रोज अभी पंडिताइन ने दरवाज़ा भी नहीं खटकाया था कि मास्टर जी ने दरवाज़ा खोल दिया, 'राम-राम विटिया। मास्टरनी अभी-अभी नहाने गयी हैं। मैंने सोचा महराजिन को दरवाज़ा खोल कर ही अन्दर जाऊँ। दूसरे अखवार भी इसी समय आता है।'

पंडिताइन अपने को समेटती हुई अन्दर आ गयी। मास्टर जी ने दरवाज़ा वन्द किया और तेज चलते हुए पंडिताइन के वरावर पहुँच गये। मास्टर जी ने कम्वल ओढ़ा हुआ था और अपना एक हाथ निकाल कर पंडिताइन की पीठ थपथपाते हुए वोले, 'अरे महराजिन तुम्हें जाड़ा भी नहीं लगता ? माघ महीने में भी तुम विना गर्म कपड़ों के हो।'

पंडिताइन ने धोती के अन्दर ही अपनी दोनों वाहें छिपा रखी थीं। मास्टर जी के कम्वल से निकले गर्म हाथ उसने अपनी ठण्डी पीठ पर महसूस किये और जल्दी से जीना चढ़ गयी। मास्टर जी का आज भी चाय पीने का इरादा हो रहा था। मगर जिस घर में चायपत्ती, चीनी इस तरह तौल-नाप कर रखी जाये, वहाँ कोई चाय भी क्या पी सकता है। उन्हें मास्टरनी पर वहुत क्रोध आया, यह मैं ही था कि इतने वरस निभा ले गया। दस-दस घण्टे ट्यूशनें कीं, मगर कभी एक पैसा भी जेवखर्च के लिए न वचाया। यह औरत है कि इसे चीनी दूध मुझसे भी प्रिय हैं।

मास्टर जी का मूड ऑफ होता चला गया। मास्टर जी अपना मूड तभी

तक ऐसा रखना चाहते थे जब तक बच्चे न जग जायें और मास्टरनी स्नान से न लौट आये। आखिर जब उनसे और न सहा गया तो कमरे में टहलने लगे और कुछ ही देर बाद वह अच्छी तरह से कम्बल ओढ़े पंडिताइन के पास आ खड़े हुए। इतना पास खड़े हो गये कि जैसे पंडित ने पंडिताइन के बैठने के लिए पटरा भिजवा दिया हो। मास्टर जी ने गर्म मोजे पाँव से टाँग तक चढ़ा रखे थे। पंडिताइन को लगा मास्टर जी के पैर सुलग रहे हैं। उसने मन ही मन सोचा कि मास्टर जी को कोई रोग है और वे अच्छे आदमी नहीं हैं।

'मैंने अपनी जिन्दगी के बयालीस बरस इस घर को खड़ा करने में लगा दिये। अब जाकर इत्मीनान हुआ है। दोनों बच्चे पढ़-लिख कर जवान हो गये। मकान खरीद लिया। अब चिन्ता है बहुओं की। न जाने कैसी आती हैं। आजकल की लड़कियों से तो भगवान ही बचाये।' मास्टर जी पटरा हिलाते हुए बोले।

मास्टर जी के पैर लगातार जुम्बिश ले रहे थे। पंडिताइन लगातार आगे सरक रही थी। उसी गति से लगभग कच्चे धागे से बँधे मास्टर जी के पाँव भी। आखिर पंडिताइन से बर्दाश्त न हुआ, उसने बहुत तीखी नजर से मास्टर जी की तरफ देखा और पटरे से उतर कर दूसरी तरफ सरक गयी। मास्टर जी ने अनुमान लगाया कि पंडिताइन शायद पहलू बदलना चाहती है। उन्होंने दुबारा पटरे की भूमिका निभानी चाही तो पंडिताइन उठ खड़ी हुई, 'यह का करत हो मास्टर जी।'

'कुछ नहीं कुछ नहीं।' मास्टर जी ने कहा, 'अब टाँगें भी साथ नहीं दे रही है। खड़ा होता हूँ तो पैर काँपने लगते है। बैठता हूँ तो सुन्न पड़ जाते है।'

'आप भी गंगा स्नान किया करो।' पंडिताइन ने कहा, 'हमने जिन्दगी मे कभी दूसरे का जूठन नहीं मला। पंडित जी को भनक भी मिल गयी तो कान पकड़ कर देहात रवाना कर देंगे।'

मास्टर जी को कुछ न सूझा, बोले, 'नीचे जाकर देखता हूँ कि अखबार आ गया है कि नहीं।'

पंडिताइन ने उनकी बात की तरफ कोई ध्यान न दिया। कुछ बर्तनों में उसे हड्डियाँ-सी दिखायी दी। उसने चिमटे से बर्तन नाली की तरफ ठेल दिये और खूब साबुन मल-मल कर हाथ धोये।

पंडिताइन कपड़े धो रही थी कि मास्टर जी का बड़ा लड़का भागता हुआ आया और बोला, 'देखो मिसरानी कहीं हमारी जेब में कुछ रुपये तो नहीं छूट गये?'

इससे पहले कि पंडिताइन कुछ जवाब दे लड़के ने झट से अपनी एक अधभीगी बुश्शर्ट उठा ली और जेब से नोट निकालते हुए लौट गया, 'अब अगर रेज़गारी भी है तो वह तुम्हारी।' उसमें रेजगारी भी थी, लगभग ड़ेढ़ रुपये की। पंडिताइन ने यह सोचते हुए धोती के पल्लू में गठिया ली कि हलाल की कमाई है, चोरी की नहीं हे।

पंडिताइन कपड़े फैला रही थी जब मास्टरनी गंगा जी से लौटीं। लौटते ही उन्होंने बहुत तीखी नजरों से पंडिताइन का ऊपर से नीचे तक जायजा लिया और रसोई में जाकर चायपत्ती, चीनी, दूध आदि की पड़ताल की और बाहर तख्त पर पसर कर बैठ गयी।

पंडिताइन तार पर कपड़े फैला रही थी। तार जरा ऊँचा टंगा था। जितनी बार वह कपड़ा फैलाती उसका वक्ष ब्लाउज के नीचे से उभर आता। मास्टरनी ने दो-तीन बार तो बरदाश्त किया। फिर जब अपने वक्ष से तुलना की तो भड़क गयी, 'हम लोगों के घरों में यह सब न चलेगा बहू।'

पण्डिताइन ने मास्टरनी जी की तरफ मुड़ कर देखा और पूछा, 'का ?'

'यह दूध की नुमाइश यहाँ नहीं चलेगी। दो-दो जवान बेटे हैं घर में। कल को कुछ हो गया तो ?'

पण्डिताइन की समझ में बात आ गयी और बोली, 'हम गरीबन को ऐसी नजर से न देखो अम्मा जी। भूखे रह लेंगे। बुरी बात न सुनेंगे।'

'बड़ा घमण्ड है पण्डिताइन।'

'गरीब आदमी क्या खाकर घमण्ड करेगा अम्मा जी। मैं तो सहर आ कर पछता रही हूँ, मेरी ही मति फिर गयी थी।'

तभी मास्टर जी का लड़का अन्दर से आया और बोला, 'अम्मा आज दो सौ रुपये कमीज में ही धुल जाते। महराजिन ने लौटा दिये।'

'दो सौ ही थे ?'

'हाँ हाँ, दो सौ ही थे।' लड़का बोला, 'लगता है यह औरत बेहद ईमान-दार है।'

मास्टरनी जी को यह बात अच्छी न लगी। पैसे मिल ही गये थे तो नौकरों-चाकरों के सामने इसका बखान करने का क्या तुक। मास्टरनी को बुढ़ापे में पहली बार नौकर से काम लेने का अवसर मिला था।

'अच्छा, अच्छा जाओ अन्दर जाकर काम करो। तुम्हारा यहाँ कोई काम नहीं।' दरअसल बहुत संभालते हुए भी पण्डिताइन का दूध पुनः ब्लाउज के बाहर झांक रहा था। मास्टरनी नहीं चाहती थी, उनके बेटे की नज़र से वह छू भी जाये।

मास्टरनी ने सोचा अपना कोई पुराना लम्बा ब्लाउज जल्दी ही इस औरत को दान में देना पड़ेगा।

शाम को मास्टरजी के यहाँ बर्तन मलने में बहुत उलझन होती थी। सुबह मास्टर जी लगातार मंडराते रहते और संध्या को मास्टरनी। एक राहू था तो दूसरा केतु। मास्टरनी के तो लहजे और आवाज से ही पंडिताइन को नफ़रत हो गयी थी। वह हर वक्त सर पर काउँ-काउँ करती रहती। पंडिताइन कपड़े धोती तो मास्टरनी को लगता वह साबुन बहा रही है, बर्तन मलती जो लगता बर्तन घिस रही है। वह चाहती थी कचरा भी साफ़ हो जाए और झाड़ू भी न घिसे। पंडिताइन को पण्डित पर बहुत क्रोध आया, उसने उसे किस नरक में धकेल दिया है।

आज पंडिताइन का काम पर जाने को मन नहीं था। सुबह एक ऐसा काण्ड हो गया था कि मास्टर जी के घर की तरफ़ ताकने की भी उसकी इच्छा न हो रही थी। गली में से चेहल्लुम का जुलूस गुजर रहा था और बीच में से निकलने की जगह भी न मिल रही थी। अभी कुछ रोज पहले ही हजरी ने उसे चेहल्लुम के बारे में बताया था कि इस्लाम के मुताबिक किसी व्यक्ति की वफात के ४० दिन के भीतर एक विशेष दिन निश्चित करके मृतक के लिए दुआ करते हैं। इमाम हुसैन व उनके साथियों की मृत्यु पर रोने नहीं दिया गया था और चेहल्लुम की इजाजत भी न दी गयी थी। अत. उनके प्रेमी इस दिन ताजिये उठाते हैं। इसके लिए चेहल्लुम के दिन हुसैन के पश्चात् महिलाओं पर क्या-क्या जुल्म हुए, उनको कौन-कौन-सी तकलीफ़ें दी गयी, इसका पाठ होता है। दिल को हिला देने वाले मर्सिए पढे जाते हैं।

हुसैन ! हुसैन ! हुसैन ! की ध्वनियों के बीच छाती पीटते हुए सैकड़ों लोगो का जुलूस निकल रहा था। जुलूस में बच्चे-बूढे जवान सब थे। जिसमे जितनी कुव्वत थी वह उसी के अनुसार छाती पीट रहा था। मगर सब हाथ एक साथ उठते थे और एक साथ लौटते थे। पंडिताइन को बहुत भय हुआ जब उसने देखा कुछ लोग छोटी-छोटी छुरियों से छाती पीट रहे थे। कुछेक की छाती पर खून के दाग़ साफ उभर रहे थे, मगर उनका हाथ वहीं पड रहा था, जहाँ टकोर की जरूरत थी। वह देर तक खडी जुलूस को देखती रही। जब उसे रास्ता न मिला तो घर की तरफ़ लौट गयी।

दरअसल सुबह पंडिताइन ने मास्टर जी के छोटे लडके को बाँह पर इतनी जोर से काट लिया था कि उसे उनके यहाँ जाने मे दहशत हो रही थी। सुबह

मास्टरजी ने दरवाज़ा नहीं खोला था। उनका लड़का सुनील आया और वह अभी ज़ीने तक भी न पहुँची थी कि लड़के ने उसे पीछे से इस तरह बाँहों में भींच लिया कि पंडिताइन का वक्ष बुरी तरह भिंच गया। पंडिताइन ने पीछे मुड़ कर उसकी तरफ़ देखा और उल्टे हाथ से एक ऐसा झापड़ रसीद किया कि वह अपना नाक थाम कर वहीं ज़ीने पर बैठ गया। उसकी नाक से खून बहने लगा और पंडिताइन ने बिना वहाँ ठहरे रसोई की तरफ़ कदम बढ़ा लिए जहाँ पहले से मास्टर जी खड़े थे, 'मुझे तो रात भर नींद न आयी', मास्टर जी ने कहा, 'कल रातभर आस-पास मजलिसें हो रही थीं। मेरी नींद जो खुली तो दोबारा न लगी। मैं रातभर जागता रहा और इतने जाड़े में तुम कैसे रात काटती होगी, यही सोचता रहा। तुम्हारा बच्चा तो अभी छोटा है?

पंडिताइन ने मास्टर जी की बात की तरफ़ कोई ध्यान न दिया। पटरा उठाया और बैठ कर बर्तन मलने लगी।

मास्टर जी ने उसकी पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा, 'बहू, बिना गर्म कपड़े के तुम बीमार पड़ जाओगी।'

पंडिताइन गुस्से में थी, बोली, 'अभी मास्टरनी आती होंगी, उनकी पीठ छुइएगा मास्टर जी। हम ऐसी-वैसी औरत नहीं हैं। यह सब आप लोग करेंगे तो हमें यहाँ न पाइएगा।'

मास्टरजी चाय में चम्मच हिलाने लगे। हिलाते रह गये देर तक।

पंडिताइन को यह घर कसाइयों का घर लग रहा था। उसे अफ़सोस हो रहा था कि बबुआ के इतनी ज़ोर से चोट लग गयी कि नाक से खून बहने लगा।

पंडिताइन चाहती तो जुलूस में से राह बनाती मास्टरनी के घर तक पहुँच सकती थी, मगर उसे नौहे की एक पंक्ति बाँध रही थी :

कहाँ से चले आओ
मेरे भैया अली अकबर

वह भी होंठों ही होंठों में लोगों के साथ गाने लगी।

कहाँ से चले आओ।

देखते-देखते लोग इतने ज़ोर से छातियाँ पीटने लगे कि पंडिताइन दहशत में आ गयी। उन पर जैसे कोई जुनून सवार हो गया हो। एक लय और एक गति से सैकड़ों हाथ उठ रहे थे। लग रहा था छाती पीट-पीट कर लोग यहीं जान दे देंगे। मगर तभी जैसे तूफ़ान थम गया और 'हुसैन' 'हुसैन' के साथ लोग धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगे। एक आवाज़ लहरा रही थी :

कहीं से चले आओ...

इससे पहले पंडिताइन ने दस साल मुहर्रम का जुलूस देखा था। दशहरे की झांकियाँ भी देखी थीं। मुहर्रम के जुलूस—ताजिए, अलम, मशक, ताबूतो,दुलदुल और गरवारा जो इमाम हुसैन के दूधपीते बच्चे की याद ताजा करता। मुहर्रम और दशहरे के जुलूसों में भी उसे साम्यता लगी थी। दशहरे के जुलूस की भीड़ मे उसने रात देर तक मुसलमान औरतों को झांकियों के इन्तजार में खड़े देखा था। वे अपने चेहरे पर से बुर्का उठा कर भगवान का श्रद्धापूर्वक दर्शन करतीं। यही नहीं, उसने देखा था, उसकी कोठरी के पास ही धर्मशाला मे मुसलमान कारीगर रात-रात भर जागकर झांकियाँ तैयार करते। भगवान जी का रथ तो कई दिनो की मेहनत से तैयार होता। और अब जब मुहर्रम के जुलूस के इन्तजार में उसने हिन्दू स्त्रियों को प्रतीक्षा करते देखा तो उसे बहुत अच्छा लगा। हिन्दू स्त्रियाँ भी बच्चों को श्रद्धापूर्वक ताजिए के नीचे से गुजारतीं और श्रद्धा से नत हो जातीं। जिस तरह से गली-गली में घुमा कर भगवान की झाँकी के दर्शन कराये जाते, ऐसे ही उसने ताजिए को देखा। दो त्योहार दो अलग-अलग नदियों की तरह थे, जिनका संगम-स्थल कहीं एक ही था। एक दिन उसने सुना मास्टर जी किसी को बता रहे थे कि वास्तव में हुसैन का बलिदान अन्याय, घृणा, शोषण, क्रूरता और हिंसा का मुकाबला करने का सन्देश देता है, अत्याचारियों के खिलाफ़ आवाज उठाता है। सच्ची मानवता का यही सन्देश हो सकता है। ठीक उसी प्रकार दशहरा भी असत् पर सत् की विजय का सन्देश लेकर आता है। पंडिताइन ने हजरी बी से हुसैन की कुर्बानी की दास्तान सुनी तो सचमुच उसकी आँखें भीग गयी। हजरी का सुनाने का ढंग भी ऐसा था कि कोई भी संवेदनशील प्राणी रो देता। कोई बाल-बच्चेदार आदमी क्रूरताओं के बीच सपरिवार जूझते हुसैन की कथा सुन कर विचलित हुए बिना न रहता। मुहर्रम पर पूरी गली दुलहिन की तरह सजी थी। नगाड़े की आवाज दूर-दूर तक वातावरण में जोश पैदा कर रही थी। सड़क के दोनों ओर चूने का छिड़काव किया गया था। गलियाँ साफ़ की जा रही थीं, मगर पुलिस का भी खूब बन्दोबस्त था। जुलूस के आगे-पीछे, दायें-बायें सिर्फ़ पुलिस।

पंडिताइन घर की तरफ़ मुड़ी मगर घर जाने की इच्छा न हुई। वह हजरी को ढूँढती हुई एक घर मे घुस गयी जहाँ औरतों की मजलिस हो रही थी। पहले तो पंडिताइन का अन्दर जाने का साहस न हुआ, मगर एक औरत पंडिताइन को संकोच मे देख उसे पकड़ कर अन्दर ले गयी। अन्दर जाकर पंडिताइन ने देखा औरतें रो-रो कर बेहाल हो रही थीं। पंडिताइन ने सुना मजलिस करने वाली स्त्री कह रही थी :

'यह खुसूसियत सिर्फ़ हुसैन को ही हासिल है कि मुसलिम और ग़ैर-मुस्लिम दोनों ही शहीदे आज़म की दरगाह में अक़ीकत मन्दाना ख़ैराज पेश करते हैं। यह मसानियत सिर्फ़ शहीदे क़र्बला को ही हासिल है कि उनकी यादगार मनने में न सिर्फ़ मुसलमान ही शामिल हैं बल्कि हिन्दू, सिक्ख, जैन, बौद्ध, ईसाई सभी शरीक हैं।'

उस औरत ने पंडिताइन की तरफ़ देखते हुए अपना भाषण ज़ारी रखा, 'यह जरूर है कि सियासी बेचैनियों और मज़हब पर ग़लत ख़याल आराइयों ने इसमें किसी हद तक कमी कर दी है।'

औरतें इसी बात पर रोने लगीं।

'हुसैन ! हुसैन !' पूरी हवेली मातम की बाज़गश्त से गूंजने लगी।

'हुसैन ! हुसैन !' पंडिताइन ने भी छाती पीटते हुए धीरे से कहा।

'हुसैन ! हुसैन !' हजरी बी की आवाज सबसे बुलन्द थी। खिड़कियों, दरवाजों और छतों पर लटक रहे मकड़ी के जाले धमक से लरज रहे थे, जैसे कह रहे हों, 'हुसैन ! हुसैन !'

मजलिस सुन कर औरतें बेहाल हो रही थीं। सुनाने वाली का लहजा भी इतना दर्दनाक था कि हर शब्द पंडिताइन के अन्दर तक बिंध जाता। लगा स्त्रियाँ छाती पीट-पीट कर दम निकाल देंगी। छाती पीटने में एक आध्यात्मिक लय थी, एक रवानी, एक ताल। पंडिताइन उठने को हुई कि एक स्त्री ने खड़े होकर हाथ फैलाते हुए गाना शुरू किया····

दौरे हयात आयेगा ज़ालिम क़ज़ा के बाद।
है इब्तिदा हमारी तेरी इन्तेहाँ के बाद।

पंडित ने सुना कि पंडिताइन बिना काम किये लौट आयी है तो उसने बहुत बुरा माना। उसने हमेशा नौकरी में पाबन्दी को बहुत महत्व दिया था। वह चाहता था पंडिताइन भी मन लगा कर काम करे। इधर वह यह महसूस करने लगा था कि उसकी नौकरी से तो पंडिताइन की नौकरी ही अच्छी है। इतने वर्षों की अथक मेहनत, खुशामद और संघर्ष से उसे क्या प्राप्त हुआ था?

'देखो पंड़ाइन, यह शहर है, देहात नहीं। काम पर नहीं जाओगी तो कल मास्साब को तुमसे भी सुन्दर बीसियों महाराजिन मिल जायेंगी।'

'का बकत हो।' पंडिताइन भड़क गयी, 'उन्हें खूबसूरत महाराजिनें चाहिएँ तो मैं अब कभी न जाऊँगी हाँ।'

पंडित को अपनी ग़लती का तुरंत एहसास हो गया। वह दरअसल 'मेहनती'

विशेषण इस्तेमाल करना चाहता था—मगर उसके मुँह से गलत शब्द निकल गया।

'मेरा तो महापालिका ने दिमाग ही फ्रेल कर दिया है।' पंडित सुलह-सफ़ाई में ही रहना चाहता था, बोला, 'मेरा मतलब था कि लोग दर-दर नौकरी के लिए भटकते हैं और नौकरी नहीं मिलती।'

पंडिताइन ने कहा, 'नौकरी करने और पेशा करने में फ़र्क होता है।'

पंडित को लगा, पंडिताइन बुरा मान गयी है, बोला, 'सुनो पड़ाइन। यह दाढ़ी देख रही हो न? यह तभी कटेगी जिस दिन तुम एक लड़का पैदा कर दिखाओगी।'

पंडिताइन को लगा, कैसे अजब बेवकूफ़ से शादी हो गयी है। वह चाहती थी कल की घटना पंडित को बता कर हल्की हो जाती मगर पंडित इतनी बेवकूफ़ी की बात कर रहा था कि उसकी हिम्मत ही न हुई। उसने सोचा कि जाकर हज़री बी के सामने ही अपना रोना रो आये, मगर हज़री बी ने तो बहुत प्यार से यह काम दिलाया था, अब यह सब बता कर वह हज़री बी को दुखी नहीं करना चाहती थी।

मास्टर जी का घर उसे एक विचित्र घर लग रहा था। मास्टरनी घर में हर समय एक गुस्सैल बिल्ले की तरह घूमा करती थी। मास्टर जी गली में निकल जाते तो सब तरफ़ से आदाब, सलाम अलैकुम की आवाज़ें आने लगतीं, लड़के थे कि शक्ल से ही आवारा दिखते थे और माँ उन सब पर पाउडर की तरह जान छिड़कती थी। मास्टर जी सहित घर के सब सदस्यों ने पंडिताइन का जीना दूभर कर रखा था। कोई पैरों से, कोई हाथों से, कोई नज़रों से, कोई भाषा से, गर्ज़ यह कि हर कोई उसे परेशान कर रहा था।

अगले रोज़ काम से लौट कर पंडिताइन ने हज़री बी को पूरा क़िस्सा सुना ही दिया। हज़री आग-बबूला हो गयी। उसने चुन-चुन कर मास्टर जी के पूरे परिवार को गालियाँ दीं और पंडिताइन से बोली—'यह मरद की ज़ात ही ऐसी होती है। ऊपर से देखने पर कितना खानदानी लगता है और भला सोचो ज़िन्दगी भर उसने बच्चों को क्या तालीम दी होगी?'

पंडिताइन सर झुका कर सुबक रही थी, 'मैंने पंडित जी को भी इस बारे में कुछ नहीं बताया। वह तो मुझे ही बुरा बतायेंगे।'

'तुम जी उदास मत करो।' हज़री ने सुझाया, हज़ारों औरतें घर में बैठ कर बीड़ी बनाती हैं। मन लगाकर बीड़ी बनाओगी तो इससे ज़्यादा पैसे मिल जायेंगे। मैं सामान ला दूँगी और सब सिखा भी दूँगी।'

'मुझे तो तमाखू से बहुत बास आती है।' पंडिताइन ने कहा, ''मुझसे यह सब न होगा। मैं देहात लौट जाऊँगी।'

'तुम इस कदर उदास न हो।' हजरी ने कहा, 'देखो आज शाम को ही कोई दूसरा इन्तज़ाम करूँगी।'

शाम को पंडिताइन काम पर नहीं गयी। अगले रोज़ भी नहीं गयी। उसकी अनुपस्थिति से मास्टरजी सशंकित हो गये। ज़रूर हरामजादी ने कहानी गढ़कर हजरी को बता दी होगी। वे हजरी के स्वभाव से परिचित थे। उसे किसी का लिहाज़ नहीं था। वह बड़बोली औरत उनकी बुढ़ौती खाक में मिला देगी। और फिर उन्होंने ऐसा किया ही क्या था कि पंडिताइन भड़क जाती। छिनाल कहीं की। मास्टर जी बाहर चौतरे पर टहलने लगे। उन्होंने टहलते हुए ही तय किया कि वे हजरी से मिलते ही ऊँची आवाज़ में चिल्लाकर कहेंगे, 'किस छिनाल को हमारे घर रखवा दिया। आते ही बबुआ पर डोरे डालने लगी। नारायण। नारायण!!'

मगर हजरी ने मास्टर जी की तरफ़ कभी न देखा।

एक दिन उन्होंने हजरी को सड़क पर से गुज़रते देखा तो वह आक्रमण की तैयारी करने लगे। हजरी ने बड़ी नफ़रत से उनकी तरफ़ देखा और 'आक् थू' करके पास से निकल गयी। मास्टर जी मक्खियों के छत्ते को छूना नहीं चाहते थे। चुपचाप गर्दन झुका ली। मास्टर जी को मालूम था कि अगर हजरी उन्हें अपमानित करने पर आमादा हो गयी तो फिर मास्टर जी की एक न चलेगी। मगर हजरी चुपचाप निकल गयी—जैसे एक तूफ़ान चुपचाप मास्टर जी के सर के ऊपर से गुज़र गया। हजरी पंडिताइन के लिए कोई जुगाड़ करती इधर-उधर घूम रही थी।

श्यामसुन्दर जी मुख्यमंत्री तो न होने पाये, अपनी पार्टी की राज्य शाखा के अध्यक्ष हो गये। नगर में उनके स्वागत के भव्य प्रबन्ध होने लगे। जगह जगह स्वागत द्वार तैयार किए गये। शहर में उनके मार्ग को दुलहन की तरह सजा दिया गया। हर खम्भे पर उनके बड़े-बड़े चित्र लटका दिए गये। तीन किलोमीटर लम्बे मार्ग पर लाउडस्पीकरों पर राष्ट्रीय भावना में ओत-प्रोत सस्ते फिल्मी रेकार्ड बजने लगे।

ज्योंही उन्होंने प्लेटफार्म पर कदम रखा, लोगों ने फूलमालाओं से उन्हें लाद दिया। नगर के लिए गौरव की बात थी कि वे पूरे प्रदेश के अध्यक्ष निर्वाचित हुए थे। बाद में खुली जीप पर उन्हें गद्देदार आसन पर बैठाया गया। कौतूहलवश ही सड़क के दोनों तरफ दर्शनार्थियों की भीड़ लग गयी। उनके स्वागत को देखकर लगता था कि भारत को जैसे इन्होंने ही आजादी दिलायी थी।

सिद्दीकी साहब ने भी अपनी जीप कारों के काफिले के पीछे लगा दी। आज उन्होंने शहर के बीडीविंग की जीप मँगवायी थी। बीडीविंग को एक एक्साइज इन्सपेक्टर परेशान कर रहा था। सिद्दीकी साहब की एक्साइज आयुक्त से मित्रता थी। एक ही फोन में मामला रफा दफा हो गया। सिद्दीकी साहब ने इसी मद में पाँच सौ रुपये भी प्राप्त कर लिए कि जल्दी ही वह टिकट प्राप्त करके चुनाव लड़ेंगे। बीडीविंग ने आश्वासन दिया कि वे टिकट पाएँगे तो उनके चुनाव में जी खोल कर मदद करेंगे। सिद्दीकी साहब आज जमीन से कुछ इंच ऊपर ही चल रहे थे। सर पर कश्मीरी टोपी पहनने से उनका व्यक्तित्व और बुलन्द नजर आ रहा था।

कारों का काफ़िला श्यामसुन्दर जी के बँगले तक पहुँचा। इस बीच बँगले की पुताई हो गयी थी और पूरे घर को रंगीन बल्बों के हार पहना दिए गये

थे। घर पहुँचते ही श्यामसुन्दर जी के लिए मंच तैयार था। उन्होंने अत्यन्त भावपूर्ण भाषण दिया जिसका आशय था कि वे हमेशा दीन दलितों हरिजनों और समाज के कमज़ोर पक्ष के पक्षधर रहे हैं। बचपन में ही उन्होंने महात्मा गांधी के प्रभाव में आकर शिक्षा बीच में ही छोड़ दी थी और उस दिन से आज तक लगातार देश और समाज की सेवा में रत रहे हैं।

बाद में जिन छुटभैये नेताओं को बोलने का अवसर मिला, उनमें सिद्दीकी मियाँ भी थे। सिद्दीकी मियाँ का श्यामसुन्दर से कोई परिचय भी न था, मगर उन्होंने बताया कि जब से उन्होंने होश संभाला है, श्यामसुन्दर जी को समाज की सेवा में ही रत पाया है।

'मैं तो पार्टी का एक अदना सिपाही हूँ। इस वक्त श्यामसुन्दर जी का इस्तकबाल करने और उन्हें यकीन दिलाने के लिए आप से मुखातिब हूँ कि अकलियत यानी कि अल्पसंख्यक मुसलमान तहेदिल से श्यामसुन्दर जी के साथ हैं। उनके अध्यक्ष होने से पूरे प्रदेश में साम्प्रदायिक सद्‌भाव पैदा होगा और मुसलमानों में सुरक्षा की भावना पैदा होगी।'

श्यामसुन्दर जी सिद्दीकी साहब के भाषण से बेहद मुतअसिर हुए। उनके कंधों पर बहुत बड़ी जिम्मेदारी आ गयी थी। उन्हें समाज के हर वर्ग के व्यक्ति का सहयोग दरकार था। यहाँ तक कि शहर के छँटे हुए बदमाश, गुण्डे और जरायमपेशा लोगों की भी उन्हें ज़रूरत थी। एक एक कर मंच पर सब लोग आए। उनमें कालाबाज़ारिए थे, समाज सेवक थे, डाकू थे, हिन्दू थे, मुसलमान थे। ग़र्ज़ यह कि कोई भी वर्ग ऐसा नहीं था, जिसका प्रतिनिधित्व न हो।

श्यामसुन्दर जी के घर पर एक मेला लग गया था। भीड़ देख कर खोंमचे वाले, गुब्बारे वाले, चाट वाले भी जम कर बिक्री करने लगे। देखते ही देखते चौराहे पर पुलिस के लोग तैनात हो गये। भीड़ कम होते ही जिलाधिकारी और आयुक्त महोदय भी बधाई देने चले आए।

मगर श्यामसुन्दर जी से भी अधिक सिद्दीकी साहब प्रसन्न थे। उन्होंने लौटते हुए अपने समर्थकों को शहर के सबसे अच्छे रेस्तराँ में कॉफ़ी पिलाई, शहर के सबसे समृद्ध पान वाले के यहाँ पान खिलाए और एक बढ़िया ब्रांड के सिगरेट का पैकेट खरीद कर उनको भेंट कर दिया।

'आप की तकरीर सबसे अच्छी थी।' असरार बोला।

नेता जी ने एक लम्बा कश लिया, धुआँ छोड़ा और बोले, 'देखते रहो। एक दिन मन्त्री होकर दिखाऊँगा। श्यामसुन्दर जी ने इतनी गर्मजोशी से हाथ मिलाया कि मेरी तो हथेली चटक गयी।'

'शहर के ढाई लाख मुसलमानों का नेतृत्व आप ही कर रहे थे।' ताहिर

ने कहा, 'श्यामसुन्दर आपको जितने गौर से सुन रहे थे, उतने गौर से तो उन्होंने एमलो (एम० एल० ए० लोगों) को भी नहीं सुना।'

सिद्दीकी साहब इस बात से बेहद उत्साहित हुए, बोले, 'ये एमले लोग अब देखते रह जाएँगे मेरा करिश्मा।'

घर पहुँच कर सिद्दीकी साहब सबसे पहले अज़ीज़न के यहाँ गये। वे आज अज़ीज़न का लोहा मान गये थे। पूरा शहर जिस शख्स की जयजयकार करता है, वह अज़ीज़न के घर पर नाक रगड़ता है।

'अज़ीज़न बी ! आज से मैं आपका ज़रख़रीद गुलाम।' सिद्दीकी साहब ने कुर्सी पर बैठते हुए कहा, 'पूरा शहर जिस शख्स का जयजयकार कर रहा था, वह आपके मुरीदों में से एक है।'

अज़ीज़न बी ने पानदान मँगवाया और अपने हाथ से पान लगा कर सिद्दीकी साहब को भेंट किया।

'अब अगर आप की इनायत हो गयी तो मुझे टिकट मिल ही जायेगा। इसमें कोई शुबहा नहीं रह गया। श्यामसुन्दर जी आज मुझ से मुतआसिर भी नज़र आ रहे थे।'

'आप इन लोगों को मरते दम तक न समझ पायेंगे, सही मानों में नटवर लाल होते हैं।' अज़ीज़न ने कहा, 'कई बार कामयाबी इन लोगों को हमारे दर पर लाती है और कई बार कामयाबी हमसे दूर भगाती है।'

'ऐसा न कहें अज़ीज़न बी।' नेता जी को लगा अज़ीज़न बी सिद्दीकी साहब की सम्भावित कामयाबी पर तंज कर रही हैं, 'मैं एमले हो जाऊँ तब दिखाऊँगा आपको अपना किरदार।'

'मैं श्यामसुन्दर जी की बात कर रही थी।' अज़ीज़न ने कहा, 'उस रोज़ वह यही देखने आए थे, मेरे ग़रीबखाने में उनका माज़ी तो नहीं छिपा।'

'हर शख्स श्यामसुन्दर नहीं होता अज़ीज़न बी।' सिद्दीकी साहब ने दार्शनिक अन्दाज़ से कहा और यह दिखाने के लिए कि अज़ीज़न बी उनको बिलकुल ग़लत समझ रही हैं, कुर्सी पर पसर गये। जैसे इस निष्कर्ष से बेहद निराश हो गये हों।

'हर कामयाब आदमी श्यामसुन्दर होता है।' अज़ीज़न ने कहा, 'और आदमी कामयाब भी तभी हो सकता है जब वह श्यामसुन्दर हो।'

नेता जी फ़क़त खुशामद के मूड में आये थे, इस तरह की बेसिरपैर की बातें सुनने नहीं। अज़ीज़न की फिलासफी से वे मुत्तफ़िक़ हो ही नहीं सकते थे। उनकी मानसिक स्थिति तो यह थी कि अगर अज़ीज़न बी इजाज़त देतीं तो तलुए चाटने में भी गुरेज न करते।

'आप के अन्दर एक महान फ़िलासफ़र बैठा है।' नेताजी ने कहा, 'और फ़िलासफ़र लोग दुनियादार नहीं होते। आप चाहें तो श्यामसुन्दर के इमेज को फ़ना कर सकती हैं। वह अगर डरता है तो सिर्फ़ आप से।'

'अपने चाहने वालों के साथ मैंने कभी ऐसा नहीं किया, न मेरी फ़ितरत में है। सच कहूँ तो हमारे पेशे में इसकी मुमानियत है।'

सिद्दीकी साहब जो बात करते, पिट जाती। उनकी समझ में न आ रहा था, अज़ीज़न बी को कैसे अपने अनुकूल करें। आखिर उन्होंने गुल का सहारा लिया, 'गुल कैसी है?'

'मज़े में है।' अज़ीज़न ने संक्षिप्त सा उत्तर दिया।

अब सिद्दीकी साहब क्या कहें। कुछ देर सोच कर बोले, 'कहाँ है?'

'अपनी स्टडी में होगी।'

'बहुत अच्छी लड़की है।'

'शुक्रिया।'

'मेरे लायक कोई ख़िदमत हो तो बताइएगा।'

'ज़रूर बताऊँगी।' अज़ीज़न ने मुँह में पान रखते हुए कहा, 'और किसको बताऊँगी।'

अगले रोज़ सिद्दीकी साहब दल बल के साथ श्यामसुन्दरजी के बँगले पर पुनः पहुँचे। श्यामसुन्दरजी पूजा कक्ष में थे। बाहर मिलने वालों की भीड़ बढ़ती जा रही थी। श्यामसुन्दरजी के यहाँ इतनी कुर्सियाँ भी न थीं कि सब लोग समा जाते। सिद्दीकी साहब ने उसी समय अपने साथ आए अच्छन मियाँ को रवाना कर दिया कि अपने चचा के यहाँ से दस बारह कुर्सियाँ और दरी ले आओ।

अच्छन मियाँ के चचा किराये पर फर्नीचर और क्राकरी का सामान देते थे। गाँव में ज़मीन भी थी। ट्यूबवेल था। पम्प के लिए बिजली की सप्लाई वे कट्टा लगा कर मेनलाइन से लेते थे। बिजली कम्पनी वालों के उड़न दस्ते ने बिजली की चोरी पकड़ ली और पाँच हज़ार रुपये का बिल भी भेज दिया। उस वक्त मामला हज़ार पाँच सौ में तय हो जाता मगर चचा जान ने परवाह न की। बिजली की सप्लाई कट गयी और बिजली कंपनी वाले कट-आउट निकाल ले गये। आलू सूखने लगे तो चचा ने अच्छन की मार्फ़त सिद्दीकी साहब से सम्पर्क किया। अब तक चचा सिद्दीकी साहब पर पाँच सौ खर्च कर चुके थे। अच्छन कुर्सियों की फरमाइश लेकर पहुँचा तो चचा का माथा ठनका, 'ये तुम्हारा नेता हज़ारों का खर्च बता देगा और काम नहीं करेगा।'

अच्छन बिगड़ गये, 'तो ठीक है, सड़ने दो आलुओं को। मैं कोई अपने

आप तो गया नहीं था नेता जी के पास। कुर्सियाँ अपने लिए तो मँगवा नहीं रहे। अध्यक्षजी के घर के लिए हैं। लगता है उन्हीं की मार्फ़त काम कराना चाहते हैं।'

बचा ने तय किया था कि कबाड़ में से निकाल कर कुछ कुर्सियाँ भिजवा देंगे। अब अध्यक्षजी के यहाँ जानी हैं तो जिम्मेदारी बढ़ गयी। उन्होंने छह कुर्सियाँ और एक छोटी दरी ठेले पर लदवा दी।

ठेला बँगले में घुसा तो नेताजी का चेहरा खिल गया। वे बरामदे में श्याममुन्दरजी के साथ खड़े थे, बोले, 'लीजिए कुर्सियाँ आ गयीं।'

अच्छन ने डिलिवरी वाउचर पकड़ाया तो नेताजी ने बगैर देखे जेब के हवाले कर दिया। जब तक श्यामसुन्दरजी दूसरे लोगों को निपटाते, नेता जी ने दालान में दरी बिछा दी। छहों कुर्सियाँ सलीके से लगा दीं।

'बाकी कुर्सियाँ कहाँ हैं?'

'इस तरह की इस वक्त छह कुर्सियाँ ही थीं।' अच्छन ने कहा।

श्याममुन्दरजी का बरामदा सज गया। इन कुर्सियों के सामने उनकी घरेलू कुर्सियाँ फीकी पड़ गयीं।

'आप में बहुत अच्छी आर्गेनाइजिंग कैपेसिटी है।' श्याममुन्दरजी ने नेताजी की पीठ ठोंक दी।

'मैं आप के पास एक काम से आया था।' सिद्दीकी साहब ने कहा 'अक़्लीयत की तरफ़ से अपने मुहल्ले में आप का रिसेप्शन रखना चाहता हूँ।'

'कौन मुहल्ला है?'

'इकबाल गंज।' सिद्दीकी साहब ने कहा।

श्यामसुन्दरजी के जेहन में फ़ौरन अर्जीजन बी कौंध गयीं, बोले, 'क्या अब भी वहाँ तवायफ़ें रहती हैं?'

'तवायफ़ें जरूर हैं, मगर महफ़िल उठ चुकी हैं। कुछ तो भूखों मर रही हैं।' नेताजी ने कहा, 'मगर इकबाल गंज बड़ा इलाका है। तवायफ़ें तो एक महदूद क्षेत्र में रहती हैं। आप का इस्तिकबाल दूसरे छोर पर होगा।'

श्यामसुन्दरजी सोच में पड़ गये। अजीजन बी की बिटिया उन्हें इस बीच कई बार याद आई थी। उस दिन तो उससे बातचीत का भी ज्यादा मौका न मिल पाया था। मगर अब उनके कंधों पर सुदेश की ऐसी जिम्मेदारी आ पड़ी थी कि उधर मुँह भी नहीं कर सकते थे।

'इधर तो शेड्यूल बहुत टाइट है।' श्यामसुन्दरजी ने कहा, 'मगर पहली फ़ुरसत में आप को वक्त दूँगा।'

'आप की बहुत इनायत होगी।' सिद्दीकी साहब ने आदरपूर्वक अ विजिटिंग कार्ड उन्हें थमा दिया।

पड़ोस का टेलीफ़ोन नम्बर उन्होंने अपने कार्ड पर छाप रखा था।

'इधर मिलने वालों की तादाद भी बढ़ जाएगी, आप इजाज़त दें तो मैं सुबह आ जाया करूँ। कोई ऐसा आदमी होना चाहिए, जो तमीज़ कर सके कि किसको पहले मिलवाना है, किसको यों ही टरकाना है। भीड़ देख कर लगता है इस तरह तो आप कुछ ही दिनों में परेशान हो जाएँगे।'

'मेरा सेक्रेटरी है।' श्यामसुन्दरजी बोले, 'मगर उसमें 'इमेजिनेशन' नहीं। आप न आये होते तो लोग बरामदे में खड़े रहते।'

'आप मुझे सेवा का मौका दें।' नेता जी ने कहा, 'मैं सब कुछ आर्गेनाइज़ कर लूँगा।'

श्यामसुन्दरजी का बूढ़ा सेक्रेटरी एक कोने में खड़ा पूरी बातचीत सुन रहा था। वह पिछले बीस बरसों से श्यामसुन्दरजी के साथ था। जब से श्यामसुन्दरजी अध्यक्ष हुए थे, उसका खाना-पीना-सोना हराम हो गया था। वह सुबह से शाम तक श्यामसुन्दरजी की चक्की पीस रहा था और उनका ख़याल था कि उसमें इमेजिनेशन नहीं। सिद्दीकी साहब के जाते ही उसने श्याम सुन्दरजी से कहा, 'गर्दिश के दिनों में तो आप को प्यारेलाल बहुत एफ़ीशेंट लगता था। अब टुकड़िए नेता मुझसे ज्यादा इमेजिनेटिव हो गये।'

'प्यारेलालजी आप भी भोले ब्राह्मण हैं।' श्यामसुन्दरजी ने कहा, 'मैं इन नेताओं की नस नस पहचानता हूँ।'

प्यारेलालजी खुश हो गये और मन में तय कर लिया कि सिद्दीकी को पाठ पढ़ा कर ही छोड़ेंगे। अगले रोज़ सिद्दीकी साहब बँगले पर पहुँचे तो देखा, उनकी दरी और कुर्सियाँ एक कोने में पड़ी थीं और उनके स्थान पर केन की नयी चमचमाती डेढ़ दर्जन कुर्सियाँ बरामदे में बिछ गयी थीं।

'कुर्सियों के लिए शुक्रिया।' प्यारेलाल जी ने कहा, 'इन्हें वापिस भिजवा दीजिए और बिल दे दीजिए।'

सिद्दीकी साहब के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं। उन्हें लगा किसी ने पैर की ठोकर से उनके सपनों का महल गिरा दिया है। प्यारेलाल जी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा में इधर उधर टहल रहे थे। वे कल से अधिक सक्रिय नज़र आ रहे थे। हर आने वाले व्यक्ति को कायदे से कुर्सी पर बैठाते। दरवाज़े पर काग़ज़ की स्लिपें और पेंसिल रस्सी से बाँध कर लटका दी गयी थी ताकि ऐसे आगन्तुक जिनके पास विज़िटिंग कार्ड न हो, उनका इस्तेमाल कर सकें। सिद्दीकी साहब ने सिगरेट सुलगाया और लोगों की तरफ़ एक उड़ती हुई नज़र से देखा। भीड़ में उन्हें एक विधायक नज़र आये। सिद्दीकी साहब तपाक से उनकी तरफ़ बढ़े। गर्मजोशी से हाथ मिलाया, 'अरे यादवजी आप। आप को यहाँ किसने

बैठा दिया ?' सिद्दीकी साहब ने उनका हाथ पकड़ा और लगभग घसीटते हुए चिक उठा कर अन्दर घुस गये, 'यादवजी, आजमगढ़ के विधायक हैं और देखिए बाहर लाइन में लगे थे।' सिद्दीकी साहब ने कहा, 'मुझे ज़रा आने में देर हो गयी। कल मैंने इसीलिए अर्ज किया था कि आपको एक सियासी किस्म के आदमी की ज़रूरत है।'

श्याममुन्दरजी ने विधायकजी से हाथ मिलाया। विधायकजी विधान परिषद के सदस्य थे। अगले माह उनका कार्यकाल समाप्त हो रहा था। यह सोच सोच कर उनकी नींद हराम हो गयी थी कि न मालूम अगली बार उनका नाम प्रस्तावित होगा कि नहीं। उनके मित्र श्यामानन्दजी यादव पिछले बरस ही चल बसे थे, जो तत्कालीन मुख्यमंत्री के मित्र थे। श्यामानन्दजी की कृपा न हुई होती तो वे अभी तक आजमगढ़ मे अध्यापकी कर रहे होते। श्याममुन्दरजी का नाम अखबार में पढ़कर वे तुरत उनसे मिलने चले आये थे।

'बधाई देने चला आया हूँ। जबसे सुना कि आप अध्यक्ष हो गये हैं खून में एक नया उत्साह आ गया। आजमगढ से प्रधानमन्त्रीजी के पास बीसियों तार भिजवाए हैं कि प्रदेश के लिए श्याममुन्दरजी से बढ़िया कोई आदमी न हो सकता था। ज़िला कमेटी से भी प्रस्ताव पारित करा के भेजा है।' विधायकजी ने फाइल से तार की रसीदों के बीच से प्रस्ताव की प्रतिलिपि अध्यक्षजी को भेंट की, 'आपका आजमगढ़ कब आना होगा ?'

श्याममुन्दरजी सिर खुजाने लगे। अब तक तेरह जिलों से निमन्त्रण आ चुका था। यह चौदहवाँ प्रस्ताव था, बोले, 'आऊँगा, जरूर आऊँगा। आप जा कर अपने जिले में काम कीजिए। मैं देख रहा हूँ, कार्यकर्ताओं में इस बीच उदासीनता आ गयी थी। उन्हें सक्रिय बनाइए।'

'ज़रूर ज़रूर।' विधायकजी ने कहा, 'सक्रियता तभी आती है जब नेतृत्व सही हाथों में होता है।'

'मैं आजमगढ़ पहुँच कर आप को पत्र दूंगा।' यादवजी ने उठते हुए कहा, 'ज़िला कमेटी में कुछ भ्रष्ट लोग हैं। आप आएँगे तो बात होगी।'

'बहुत खुशी हुई आप से मिलकर। आप इतनी दूर से आए हैं।' श्याममुन्दर जी सिद्दीकी साहब का नाम भूल गये थे वरना कहते कि सिद्दीकी साहब आप इन्हें भोजन कराइए और गाड़ी में आरक्षण का प्रबन्ध कीजिए। सिद्दीकी साहब श्याममुन्दरजी का चेहरा पढ़ गये, बोले, 'आप इत्मीनान रखिए। सिद्दीकी आपकी नज़रों की ज़ुबान समझता है।'

श्याममुन्दरजी ने बहुत लाड़ से सिद्दीकी साहब की तरफ देखा। सिद्दीकी

साहब के लिए इतना पर्याप्त था। उनके पास तीन चार पासपोर्ट के फार्म पड़े थे, जो किसी विधायक से सत्यापित कराने थे। अब विधायक उनकी चंगुल में था। तीन फार्म तो आज सत्यापित हो ही जाएँगे। उनमें एक फार्म ही ज़रा कठिन था। सिद्दीकी साहब के एक परिचित विधायक ने सत्यापित करने से इन्कार कर दिया था कि यह आदमी तो दस नम्बरी है। आज यादवजी बुरे फँसे थे। अतीक़ के ऊपर कई केस थे, मगर नेताजी को विश्वास था कि वह बेकसूर है। ऐसी स्थिति में बगैर कानूनी उलझनों पर ध्यान दिए, वे अकसर स्वयं ही न्यायमूर्ति बन जाते थे। उनका विश्वास सामाजिक न्याय पर अधिक था, कानूनी न्याय पर कम।

'मैं विधायक होता तो मर मिटता तुम्हारे केस को लेकर।' सिद्दीकी साहब ने अतीक़ से कहा था, 'मगर मैं तुम्हारा काम करवाऊँगा। थोड़ा दंद फंद करना होगा, रुपया कुछ ज्यादा खर्च होगा, मगर तुम दुबई जाओगे।'

'आप पैसे की चिन्ता न करें।' अतीक़ ने कहा था, मेरा पासपोर्ट बनना चाहिए।'

'बनेगा। तुम्हारा पासपोर्ट बनेगा।' आँखें बन्द कर के नेताजी ने एक नजूमी के अन्दाज में कहा था।

यादवजी के साथ बाहर आते समय सिद्दीकी साहब को अतीक़ के संवाद याद आ गये। आज उसे पकड़ना होगा ताकि किसी अच्छे रेस्तराँ में लंच और एक टैक्सी का इन्तज़ाम हो सके।

नेताजी विधायकजी के साथ बाहर आए तो दो आदमियों पर उनकी नज़र पड़ी। प्यारेलाल बहुत खीझ और निराशा में बरामदे में टहल रहा था और अच्छन मियाँ बरामदे के बाहर टहल रहे थे। नेताजी ने तुरंत प्यारेलालजी से विधायकजी को मिलवाया और बोले, 'जाने किस गुस्ताख आदमी ने इन्हें लाइन में लगा दिया।'

गुस्ताखी प्यारेलालजी से ही हो गयी थी। उन्होंने सिद्दीकी साहब की तरफ़ बहुत व्यंग्य से देखा और बोले, 'विधायकजी ने अपना परिचय ही न दिया और जा कर बैठ गये पब्लिक में।'

'मैं पब्लिक का आदमी हूँ।' विधायक जी ने कहा, 'ऐसर्ट' करना मुझे पसंद नहीं।'

'कुछ विधायकों को सिर्फ़ 'एसर्ट' करना आता है।' प्यारेलाल ने दिल का पूरा गुब्बार निकाल दिया, 'आजकल तो दुकडिया नेता और विधायक के बीच अन्तर करना मुश्किल हो गया है।'

'आप ठीक फरमा रहे हैं।' यादवजी ने कहा, ' छुटभैये नेताओं का यही

रोजगार है।'

प्यारेलाल बहुत खुश हुए। यह तो गनीमत थी कि उस समय सिद्दीकी साहब अच्छन मियाँ को यह हिदायत देते नीचे उतर गये थे कि अतीक को लेकर फौरन कमरे में पहुँचो, जो चचा के तानों से आजिज आ कर दरी और कुर्सियाँ वापिस लेने आया था।

'ज्यादा बक बक न करो।' सिद्दीकी साहब को उसके चचा पर गुस्सा आ गया। बोले, 'मैं उस कमीने को जानता हूँ। यही वजह थी कि मैंने आज सुबह आते ही नयी कुर्सियाँ खरीद लीं। यह लो पाँच रुपये टाँगेभाड़ा और चचा से बोल देना कि बिजली की चोरी में वारंट निकलने वाला है। इतना कह देना और जाओ जल्दी से अतीक को तलाश करो। उसे बता देना कि कुछ रुपये लेता आए। आज काम हो जाएगा।'

अच्छन पाँच रुपये पा कर बेहद खुश हुआ। अब टाँगे भाड़ा तो चचा ही देंगे। वह अतीक की तलाश में जाने से पहले बोलता जाएगा कि सामान बंगले पर रखा है, किसी को भेज कर मंगवा लो। अच्छन ने बाहर निकलते ही पान का बीड़ा मुँह में दबाया, सिगरेट सुलगाई और अतीक को पैट्रोल पम्प से, जो हरी कोठी में अतीक का स्थायी ठिकाना था, फ़ोन कर दिया कि नेताजी के यहाँ फौरन पहुँचो। हरी कोठी में जम कर जुआ होता था और अतीक का नाल निकालने में पचास प्रतिशत का हिस्सा था। फ़ोन पाते ही अतीक ने जेब में कुछ नोट रखे और नेताजी के दौलतखाने की तरफ चल दिया।

सिद्दीकी साहब विधायक को लेकर पहुँचते, इससे पूर्व ही वह कुर्सी पर धँस गया। दुबई जाने की उसकी इच्छा पुनर्जागृत हो गयी थी। क्योंकि वह मन ही मन इस निर्णय पर पहुँच चुका था कि अब इस देश से बाहर निकलना उसके लिए बहुत मुश्किल हो चुका है।

सिद्दीकी साहब ने आते ही यादवजी को कोच पर बैठाया और अतीक को अपने साथ बाहर चौतरे पर ले गये। गम्भीर से बोले, 'देखो, तुम्हारे लिए विधायकजी को तैयार किया है। फौरन पाँच सौ रुपये और एक बीयर का इन्तजाम करो।'

अतीक ने जेब से सौ सौ के छह नोट निकाल कर थमा दिए और बोला, 'इसमें बीयर भी हो जाएगी।'

सिद्दीकी साहब ने नोट थाम लिए। बीयर का इन्तजाम उनके लिए मुश्किल नहीं था। चार दिन आर० टी० ओ० साहब से बोतलें की मुफ्त कराते थे। बोले, 'जाते हुए उस अकमल को भेज देना।'

सिद्दीकी साहब ने यादवजी के लिए शहर के सब से अच्छे रेस्तराँ में

लंच की व्यवस्था की । वे लोग अभी आज़मगढ़ की राजनीतिक स्थिति पर विचार कर रहे थे कि उनके दरवाज़े पर नयी फिएट गाड़ी 'हार्न' करने लगी ।

सिद्दीकी साहब बहुत नज़ाकत और गर्व से कार में जा बैठे । यादवजी सुबह से भूखे थे, पेट में चूहे कुहराम मचाये थे । बेयरे ने बताया कि बटर चिकन की तैयारी में विलम्ब है तो उन्होंने रोगनजोश पर उँगली रख दी । चिकन सूप तो मुँह पर प्लेट लगा कर पी गये । सिद्दीकी साहब चाहते थे, यादवजी पूर्ण सन्तुष्ट हो कर जायँ । उन्होंने सूप की एक और प्लेट मँगवा दी, जो विधायकजी ने प्रदेश की राजनीतिक स्थिति पर विचार करते हुए चम्मच की सहायता से समाप्त की ।

विधायकजी सिगरेट नहीं पीते थे, मगर इतना भरपेट भोजन किया कि नेता जी के पैकेट से सिगरेट निकालकर होंठों में दाब ली । फ़िल्टर वाला हिस्सा बाहर था । सिद्दीकी साहब ने उनके होंठों से सिगरेट निकाल कर पलट दी और सुलगा दी ।

'सिद्दीकी साहब आप कब से पालिटिक्स में हैं ?' उन्होंने पूछा ।

'बचपन से हूँ । इसीलिए तालीम पूरी न कर पाया । बी० ए० के बाद से सियासत में हूँ ।' सिद्दीकी साहब ने बताया, 'इस बीच नौकरी के अनेक प्रस्ताव आये, मग़र सियासत एक जुनून है, आप तो जानते ही हैं ।'

'सियासत के चक्कर में मैं पोस्ट ग्रेजुएशन न कर पाया ।' विधायकजी ने आधी सिगरेट गीली कर ली थी, जिससे धुआँ न निकल पा रहा था । बिना धुएँ के ही उन्होंने मुँह में धुआँ खारिज करते हुए कहा, 'इस सियासत ने न जाने कितनी जिन्दगियाँ तबाह की हैं । सन '४२ में मैं अभी बच्चा था, मगर देश प्रेम ने मजबूर कर दिया कि पढ़ाई छोड़ दूँ, शहर छोड़ दूँ ।'

'थोड़ी बियर चलेगी ?' सिद्दीकी साहब देर से पूछना चाह रहे थे ।

'चल सकती है ।' विधायकजी ने अत्यन्त उदासीनता से कहा, 'आज़मगढ़ में तो छूने का सवाल नहीं उठता ।'

सिद्दीकी साहब ने तुरत बियर की व्यवस्था कर दी और मैनेजर के कक्ष में जाकर विधायकजी के सामने काँच का बड़ा सा गिलास रख दिया, 'मैं खुद तो नहीं पीता, आप मुआफ़ करेंगे ।'

यादव जी बेहद प्यासे थे । कुछ ही मिनट में बोतल ख़ाली कर दी, 'इस मामले में मेरी बीवी बहुत कड़ा रुख अपनाती है !'

'बहुत बचपन में आपकी शादी हो गयी थी ?' सिद्दीकी साहब ने पूछा ।

'बहुत बचपन में । सच तो यह है बीवी ने मुझे गोद में खिलाकर पाला । मुझ से वह पंद्रह बरस बड़ी थी ।' यादवजी ने सिगरेट ऐश ट्रे में मसल दिया

और नया सुलगा लिया, 'अब आपसे क्या छिपाना। आप तो अपनी ही पार्टी के आदमी हैं। उस औरत के मेरे पिता से अवैध सम्बन्ध हो गये। मैं असहाय सा देखता कि वह मुझे सुलाकर खुद पिता के साथ जा कर सो जाती।'

सिद्दीकी साहब ने इसकी कल्पना भी न की थी कि बियर की एक ही बोतल से विधायकजी इस कदर उनके साथ खुल जाएँगे। उनकी बातचीत में एक पूर्वीय निश्छलता थी। सिद्दीकी साहब आनन्द लेने की बजाय सचमुच द्रवित होने लगे।

'जब तक मैं होश संभालता, उस औरत ने दो बच्चे पैदा कर दिखाए। मैं नौकरों की तरह बच्चों की देखभाल करता और सोचता, ईश्वर कितना अच्छा है कि उसने मुझे दो लड़के दे दिए।' यादवजी ने बताया, 'होश आने मैंने घर बार सब कुछ छोड़ दिया और देशसेवा के काम में जुट गया। जेल गया। पुलिस की लाठियाँ बरदाश्त कीं। मगर लौट कर घर नहीं गया।'

'तब से घर ही नहीं गये?'

'नहीं।''

'तब तो आप बहुत अकेले होंगे।' सिद्दीकी साहब ने कहा।

'अब अकेला नहीं हूँ। दो बच्चे हैं। बँगला है। भैंसें हैं। काश्त के लिए तीस एकड़ ज़मीन है। चार बरसों की यही कमाई है।'

सिद्दीकी साहब यह सब सुनकर बहुत उत्साहित हुए। वे खुद तैंतीस के हो रहे थे और अभी घर था न परिवार। एक बूढ़ा बाप था, जो हमेशा के लिए बिस्तर पर लग चुका था। सौतेली माँ थी जो हमेशा आँख लड़ाने के चक्कर में रहती।

'आपने दूसरी शादी कब की?'

'विधायक होने के तुरत बाद। मैं देखता हूं, विधायक होने के बाद शादी की समस्या नहीं रह जाती, दूसरी समस्याएँ हो जाती हैं।'

'जैसे?'

'जैसे कि लोग बाग जीना हराम कर देते हैं। उन्हें इसका भी लिहाज़ नहीं रहता कि विधायक का भी कोई पारिवारिक जीवन है।' विधायकजी ने कहा, 'सिद्दीकी साहब आप शादीशुदा हैं या अभी विधायक होने के इन्तज़ार में हैं।'

सिद्दीकी साहब पर मायूसी का दौरा पड़ गया। बोले, 'यह सियासत बहुत बेरहम दिल चीज़ है। अब आप से क्या बताऊँ। इस बार टिकट मिल गया था। हमने मियाँ आ कर रोने लगे लगे तो मैंने अपना टिकट उन्हें दिलवा-[illegible]

'आप मुझसे भी भोले हैं।' विधायक जी ने कहा, 'अपने बि[illegible]

भी दे दो, मगर अपना टिकट न दो।'

'इसका एहसास तो मुझे अब हो रहा है। चुनाव में जीतते ही हसन मियाँ ने तो तीसरी शादी कर ली और हम आज भी गर्दिश में हैं।'

'ईश्वर ने मेरे ऊपर बहुत कृपा की। बीवी ने आते ही पूरा काम सँभाल लिया। पब्लिक से वही मिलती है। वह तो कल साथ चलने की ज़िद कर रही थी, मैं ही आश्वस्त नहीं था। मालूम होता कि श्यामसुन्दरजी इतने भले आदमी हैं तो उसे साथ लिवा लाता।'

'अगली बार ज़रूर लाइएगा।' सिद्दीकी साहब ने बैरे से बिल लाने को कहा और बोले, "भाभी से कहिए मेरे लिए कोई लड़की तलाश करें।'

'आपको तो अब आजमगढ़ आना ही पड़ेगा। अपनी भाभी से ख़ुद ही सब बातें कहिए। भाभी देवर के बीच मैं दीवार नहीं बनना चाहता।'

'आप का प्रेम विवाह हुआ है?'

विधायकजी हँसते-हँसते लोटपोट हो गये इस सवाल पर। बोले, 'यह लड़की मुझे बस में बहुत सताती थी। पार्टी दफ़्तर उसके स्कूल के ही रूट पर था। मुझे रास्ते भर चिढ़ाती। मज़ाक उड़ाती। इसी बीच उसके पिता का निधन हो गया। एक स्कूल में पढ़ाने लगी। संयोग से वह स्कूल भी उसी रूट पर था। बस में अचानक वह एक सभ्य लड़की की तरह व्यवहार करने लगी तो मुझे आश्चर्य हुआ। पूछने पर मालूम हुआ कि उसके साथ ट्रेजेडी हो गयी है। मुझे बहुत दुःख हुआ। नौकरी करते हुए उसने अपनी दो बहनों की शादी कर दी, ख़ुद इन्तज़ार करती रही।'

'आपकी सफलता का।'

'ऐसा कह सकते हैं।' विधायकजी ने कहा, 'मैं विधायक हुआ तो सबसे पहले वही बधाई देने आई। मैंने कहा, कुछ ऐसा करो कि हम भी तुम्हें बधाई दें। उसने कहा, ऐसा तो आप ही कर सकते हैं। मैंने वैसे ही किया। शादी हो गयी। शादी होते ही स्कूल की कमेटी ने उसे मुख्याध्यापिका बना दिया। अब तो वह कमेटी की चेयरमैन है। कमेटी की ही नहीं, पूरे ट्रस्ट की। आठ स्कूल उसके अधिकार में हैं। कोई ज़रूरतमंद ट्रेण्ड ग्रेजुएट हो, आपके सम्पर्क में तो फ़ौरन नौकरी मिल जाएगी।'

नेताजी विधायकजी से बात करके कृतकृत्य हो गये थे। फ़िलहाल उन्हें छोटा सा काम था। उन्होंने फाइल खोल दी, पासपोर्ट के तमाम प्रार्थना पत्र उनसे सत्यापित कराने के लिए। बैरा केवल पचासी रुपये का बिल लाया था। पंद्रह रुपये नेताजी ने बख़्शीश में दे दिए।

नेताजी ने विधायकजी से टिकट के कूपन लिए और गाड़ी में आरक्षण

करवाने एक लड़का रवाना कर दिया। रेलवे में उनके अनेक परिचित थे। काउंटर पर जा कर ए० सी० एम० साहब को फ़ोन कर दिया कि विधायकजी को आरक्षण मिलना ही चाहिए। चाहे डी० एस० कोटे से दिलवाइए।

विधायकजी सिद्दीकी साहब की तत्परता से बहुत प्रभावित हुए। अपने शहर में उनका इतना भी प्रभाव नहीं था कि किसी को रेल का आरक्षण दिलवा दें। जबकि उनकी पत्नी सुषमा यादव तेज थी। वह फ़ोन पर भिड़ जाती तो काम करवा लेती। एक तरह से वह विधायकजी की निजी सचिव थी। जिलाधिकारी या पुलिस अधीक्षक से वही काम करवाती थी। यादवजी शांत स्वभाव के व्यक्ति थे, बहुत फूंक फूंक कर कदम उठाते थे।

नेताजी ने जब पासपोर्ट के कागजात उनके सामने रखे तो वे चिंतित हो गये। टूथपिक उठा कर दाँत कुरेदने लगे। इतनी खातिरदारी के बाद छोटे से काम के लिए मना करना भी बुरा लग रहा था, बोले, 'अरे भाई मैं तो अपनी मोहर भी नहीं लाया।'

'मोहर अभी आध घण्टे मे बन जाएगी। बीसियों विधायकों की मोहरें मैंने बनवायी हैं।' सिद्दीकी साहब ने तुरन्त एक आदमी मोहर बनवाने घण्टाघर रवाना कर दिया

'आप दस्तख़त कीजिए। चारों मुहल्ले के मोतबर लोग हैं।' सिद्दीकी साहब ने कलम उनके हाथ मे थमा दी और एक एक पन्ना पलटने लगे। विधायकजी बहुत बेमन से अपने नाम की चिड़िया बैठाते चले गये।

'आप कॉफ़ी लीजिएगा या आईसक्रीम ?'

'आईसक्रीम अगर अच्छी मिल जाए।'

सिद्दीकी साहब ने कसाटा आईसक्रीम का आर्डर दिया और बोले, 'पब्लिक लाईफ़ में यह सब तो करना ही पड़ता है। इस बार किस्मत ने साथ दिया तो टिकट पा जाऊँगा। श्यामसुन्दरजी तो बहुत मानते हैं।'

'कुछ हमारी सिफ़ारिश भी कीजिए।'

'आप लौटते ही अपना बायोडेटा भिजवा दीजिए। मैं आपके लिए कोशिश करूँगा।' सिद्दीकी साहब ने कहा, 'ख़ुदा ने चाहा तो आप से दोस्ती का यह रिश्ता ताजिन्दगी निभाऊँगा।'

सिद्दीकी साहब शाम तक विधायकजी के साथ रहे। तहसीलदार से कह कर सर्किट हाउस में शाम तक का इन्तजाम करा दिया। विधायकजी के मन में धुकधुकी लगी रही कि सिद्दीकी साहब ने जाने किन गुण्डों की अर्ज़ी पर दस्तख़त करवा लिए हैं। गाड़ी में बैठते ही उन्होंने अपनी शंका प्रकट कर दी, 'सिद्दीकी साहब आप ने किसी हिस्ट्री शीटर की अर्ज़ी पर तो दस्तख़त

नहीं करवा लिए ?'

'आप तो बहुत नर्वस टाइप आदमी हैं। आपको शुबहा हो तो मैं पूरे कागज़ात फाड़ डालता हूँ।'

'मेरा मतलब यह नहीं था।' विधायक जी बोले, 'ज़माना बहुत खराब आ गया है।'

'आप बिलकुल चिन्ता न करें। नये फ़ार्म खरीद कर मैं किसी दूसरे विधायक से सत्यापित करवा लूंगा।'

'मेरा मतलब यह नहीं था।' विधायकजी बोले, 'दरअसल मेरा उसूल है कि मैं उसी आदमी का फार्म अग्रेषित करता हूँ, जिससे परिचय हो।'

'जाओ अच्छन। सब फार्म लाकर विधायकजी को लौटा दो।' सिद्दीकी साहब ने कहा।

'आप बुरा मान गये।'

'कत्तई नहीं।' सिद्दीकी साहब ने अच्छन को ललकारा, 'जाओ दौड़कर जाओ। बाहर गाड़ी में फाइल रखी है।'

'आप कैसी बात कर रहे हैं सिद्दीकी साहब।' गाड़ी की सीटी सुनकर विधायकजी बोले, 'मैं तो अपना शुबहा ज़ाहिर कर रहा था। आप फार्म फाड़िए नहीं। फिर मुलाकात होगी। मेरी वजह से आपने आज बहुत ज़हमत उठायी।'

'श्यामसुन्दर जी का आदेश था। आप उन्हीं का शुक्रिया अदा कीजिएगा।' नेता जी ने गाड़ी के साथ साथ चलते हुए कहा, 'खुदा हाफिज़।'

• •

चुनाव नजदीक आ रहे थे।

सत्तारूढ़ दल के कार्यालयों के पास शामियाने लग गये। पूरे प्रदेश से टिकटार्थियों की भीड़ राजधानी में जुड़ने लगी। नेता लोग व्यस्त हो गये। श्यामसुन्दरजी का घर और बँगला लोगों से अटा रहने लगा। उन्हें गुसल-खाने तक जाने की फ़ुर्सत न थी, जबकि सुनने को यही मिलता था कि 'साहब टायलट में हैं।' दिन भर टेलीफोन की घण्टियाँ टनटनाती। वह घर से निकलते तो भीड़ पीछे हो लेती। एक-एक सीट के लिए सौ सौ प्रत्याशी थे। डाक से उन्हें हर रोज सैकड़ों पत्र-रजिस्टर्ड पत्र मिल रहे थे। एक प्रत्याशी का दस लोग समर्थन करते तो पचास विरोध में खड़े हो जाते।

श्यामसुन्दरजी ने स्थिति को देखते हुए बड़ा अच्छा रवैया अपना लिया। वे हर वक्त जेब में दो चार डायरियाँ रखते। प्रत्येक पृष्ठ पर जिले का नाम लिखा रहता। प्रत्याशी का मन रखने के लिए वे जेब से डायरी निकालते और किसी पर लाल कलम से, किसी पर नीली और किसी पर हरी कलम से नाम लिख लेते और कोष्ठक में सिफारिश करने वाला का नाम। वे अत्यन्त स्नेह से हाथ जोड़ देते, 'आप इतमीनान से जाइए, मैं अपनी तरफ़ से पूरी कोशिश करूँगा।'

प्रत्याशी इतना मूर्ख नहीं था कि अध्यक्षजी की बात मान कर लौट जाता। वह मुख्यमन्त्री के यहाँ धावा बोल देता। मुख्यमन्त्री की स्थिति और भी दयनीय थी। उनके पान जिस पान वाले से आते, लोग पान वाले की चिरौरी करने लगते, 'सुना है मुख्यमन्त्री जी आपको बहुत मानते हैं। यह हमारा 'बायो डेटा' अपनी सिफ़ारिश के साथ उन तक पहुँचा देना।'

इस भीड़ में सिद्दीकी साहब भी थे। प्यारे लाल अपने को ऐसा तीसमार खाँ समझने लगा था कि सिद्दीकी साहब का कार्ड तक अन्दर न पहुँचाता। एक दिन वहीं भीड़ में आजमगढ़ के यादवजी दिख गये तो सिद्दीकी साहब बगलें झाँकने लगे। मगर सिद्दीकी साहब ने मात खाना तो सीखा न था, तपाक से

उन्हें बुलाया। गले मिले।

'आइए आप को पान खिला लाएँ।'

'मगर मैंने कार्ड भेज रखा है, जाने कब बुलौआ आ जाए।'

'इतनी जल्दी बुलौआ न आएगा। दो तीन घण्टे तो मामूली बात है।' सिद्दीकी साहब ने कहा। दर असल सिद्दीकी साहब ने सुबह साढ़े नौ बजे अपनी चिट भिजवायी थी और अब तक पुकार न हुई थी।

'किसी चेले को भेजकर यहीं पान मँगवा लीजिए।' यादवजी ने कहा, 'बाहर तो मैं अब अध्यक्षजी मिलकर ही जाऊँगा।'

तभी यादव जी के नाम की पुकार हुई। वे भागते हुए अन्दर घुस गये। सिद्दीकी साहब को बेहद क्रोध आया, लगता है बुड्ढे को किसी ने भड़का दिया है। वे बड़ी बेतावी से टहल कदमी करने लगे। एक-एक कर सब को बुलाया जा रहा था, मगर उनकी कोई पूछ न थी। पिछले आठ नौ महीने सिद्दीकी साहब ने श्यामसुन्दरजी की सेवा में लगा दिये थे। अब ऐन वक्त उन्होंने आँखें फेर ली थीं। इतना समय उन्होंने किसी केन्द्र के नेता पर लगाया होता तो काम बन जाता। वे अपनी नादानी पर कई सिगरेट फूँक चुके थे कि अचानक यादवजी प्रसन्न मुद्रा में अध्यक्षजी के कमरे से बाहर आए, 'श्यामसुन्दरजी ने लाल डायरी में नाम लिखा है।'

सिद्दीकी साहब को यह भी न मालूम था कि श्यामसुन्दरजी के पास और कितने रंग की डायरियाँ हैं। फिर भी उन्होंने तपाक से कहा, 'तब तो आपका काम हो गया।'

'अब चलिए पान खिलाइए।' यादवजी ने अपनी बात पलट दी, 'आइए हम आपको पान खिलाते हैं। आप कहाँ के लिए कोशिश कर रहे हैं?'

सिद्दीकी साहब ने एक लम्बी आह भरी और बोले, 'चार छः जिलों में मेरा प्रभाव है, मगर यह तो श्यामसुन्दरजी ही तय करेंगे कि मुझे कहाँ जगह दिलवाते हैं।'

'जिला तो आपको तय कर ही लेना चाहिए।'

'वही तय करेंगे।' सिद्दीकी साहब ने कहा और यादवजी के साथ बाहर निकल गये। उन्हें आशा न रही थी कि श्यामसुन्दरजी उनके लिए कुछ करेंगे। श्यामसुन्दरजी की बेरुखी और बेन्याजी ने उन्हें अन्दर तक घायल कर दिया था। अब रह-रहकर अजीजन बी का चेहरा सिद्दीकी साहब के जेहन में कौंध रहा था, अब उसी का सहारा है।

'मेरी और आपकी स्थिति में थोड़ा अन्तर है।' सिद्दीकी साहब आत्मालाप करते हुए बोले, 'आप मैजोरिटी के प्रत्याशी हैं और मैं माइनोरिटी का

...के प्रतिद्वन्द्वी ज्यादा हैं, हमारे कम। ले दे कर पूरे प्रदेश में भी।'

'पेड़ पौधे तक हमारे प्रतिद्वंद्वी हो गये हैं। हमारे जिले से तीन सौ कटार्थी आए हैं। मुझे तो काउंसल में रहना ज्यादा पसन्द है पर बीबी ने ...क में दम कर रखा है कि असेम्बली में जाओ। काउंसल में रहोगे तो कभी मिनिस्टर न होंगे।'

सिद्दीकी साहब को एक और सदमा लगा। वह आदमी जो कल तक श्याम-सुन्दरजी से मिलने के लिए लाइन लगाता था, आज मिनिस्ट्री के सपने लेने लगा है। यादव जी से विदा होते ही उन्होंने इकबाल गंज की टिकट कटा ली और चुपचाप पैसेन्जर गाड़ी में जा बैठे। थोड़ी देर में लेट गये।

सिद्दीकी साहब का एक खालाजाद भाई इंगलिस्तान में डाक्टर था। पिछले बरस उसने सिद्दीकी साहब के लिए कुछ डेडोरेण्ट्स, मैंट्स और लोशन भेजे थे। अगले रोज़ सुबह उठते ही सिद्दीकी साहब ने वह पैकेट उठाया और नहा धोकर अज़ीजन बी का ज़ीना चढ़ गये।

'कहिए नेताजी टिकट पा रहे हैं?' अज़ीजन ने सिद्दीकी साहब को देखते ही पूछा।

'श्यामसुन्दरजी ने निगाहें फेर ली हैं।' सिद्दीकी साहब ने एक गहरी सांस खींचते हुए कहा, 'दरअसल उनका पी० ए० प्यारे लाल मुझ से बहुत भड़कता है।'

'उसके भड़कने से क्या होता है। उसे तो टिकट बांटने नहीं।'

'आप दुरुस्त फरमा रही हैं। मगर वह मुझे मिलने का मौका ही नहीं देता। कल सब लोग मिल लिए; मेरी पुकार आख़िर तक न हुई।'

'मैं श्याम सुन्दर जी को ख़त लिखूंगी।'

'ख़त से कुछ न होगा। आपको ख़ुद चलना होगा।'

'मैं तो आज तक किसी के दर पर नहीं गयी, किसी काम से। मेरे ख़... का असर होगा, आप देखेंगे।'

'मगर ख़त भी तो प्यारे लाल ही खोलता है। वही पेश करता है।'

'मेरा ख़त पेश न करेगा तो नौकरी से हाथ धो बैठेगा।' अज़ीज़... कहा, 'मैं कल ख़त लिखूंगी।'

'आप ख़त मुझे दे दीजिए। मैं किसी तरह कोशिश करके मिल लूंगा... ख़त दे दूंगा।'

'यह भी ठीक है। आप कल आ कर ख़त ले जाइए।'

सिद्दीकी साहब की व्यग्रता कुछ कम हुई। उन्होंने बड़े चाव से ... का पैकेट अज़ीजन को भेंट किया।

'क्या है इसमें ?'

'मेरे एक ख़ालाज़ाद भाई ने इंगलिस्तान से डैडोरेण्ट और कुछ सेंट वगैरह भेजे हैं। आपके लिए लेते आया।'

'मैं तो विदेशी सामान इस्तेमाल ही नहीं करती। जो बात अपने इत्र में है, वह भला इसमें कहाँ ?'

'आप रखिए, गुल के काम आएँगी।'

'गुल तो मुझसे भी दो क़दम आगे है। शैम्पू से ज्यादा आँवले या रीठे से बाल धोना उसे ज्यादा पसन्द है।'

सिद्दीकी साहब असमंजस में पड़ गये। उन्होंने बहुत ही अनुरोध से कहा, 'आप यह पैकेट रख लीजिए, किसी को तोहफ़ा दे दीजिए।'

'आप तकल्लुफ़ में पड़ रहे हैं। आप इन्हें वापिस ले जाइए। चिट्ठी मैं आपको कल सुबह जरूर दे दूंगी।'

सिद्दीकी साहब ने किसी तरह रात काटी और सुबह-सुबह अज़ीज़न बी के दरबार में हाज़िर हो गये। नफ़ीस ने उन्हें देखते ही खूबसूरत बन्द लिफ़ाफ़ा थमा दिया। नेताजी अज़ीज़न का शुक्रिया अदा करना चाहते थे, मगर वह शायद ग़ुसल में थीं। उन्होंने नफ़ीस से पत्र लेकर माथे पर रखा और ज़ीना उतर गये।

सिद्दीकी साहब से प्रेम जौनपुरी ने कई बार एक नजूमी की चर्चा सुनी थी। लखनऊ जाने से पहले वे नजूमी से मिल लेना चाहते थे। नजूमी ऊँचाहार के पास जंगल में एक पेड़ के नीचे रहता था। रात भर आसमान को देखता था। प्रेम उससे बहुत मुतआसिर था। मुट्ठी खोलते ही उसके हाथ में न जाने कहाँ से मिठाई आ जाती थी। अपनी अंगुली से छू देता तो इत्र की खुशबू आने लगती।

अज़ीज़न का पत्र पाकर सिद्दीकी साहब ने तुरन्त अपने मित्र आबकार आयुक्त को फ़ोन किया कि अपने स्थानांतरण को लेकर परेशान न हों, वे आज लखनऊ जा रहे हैं, एक अदद गाड़ी का इन्तजाम कर दें। आबकर आयुक्त ने अपने सहायक से कहा, जिसने शहर के शराब के सबसे बड़े व्यवसायी को फोन कर दिया। घण्टे भर में कार नेताजी के दरवाज़े पर आ गयी।

नेताजी ने प्रेम जौनपुरी को साथ लिया और शुभ यात्रा पर रवाना हो गये।

प्रेम जौनपुरी नजूमी के व्यक्तित्व से आक्रान्त था, बोला, 'उनकी इनायत हो गयी तो आपका टिकट पक्का। मैंने बीसियों बार आजमाया है। शुरू में मेरी ग़ज़लें सब रिसालों से लौट आती थीं, नजूमी ने बताया कि जुम्मे के

दिन ग़ज़ल भेजोगे तो छपेगी। वही हुआ। अब कौन रिसाला है जिसमें मेरी ग़ज़लें नही छपती। पिछली बार उसने मुझे आधी रात को एक सितारा दिखाया था। इस वक्त मैं उस सितारे का नाम भूल रहा हूँ। नेताजी मैं बयान नही कर सकता, उसमें कितनी चमक थी। इससे पहले मैंने इतना चमकदार सितारा नही देखा था। जिन्दगी मे इतनी बार आसमान की तरफ देखा था, कभी उस सितारे पर निगाह नही गयी। हाँ याद आया, उस सितारे का नाम सुरैया है।

'इसे बहुत कम लोग देख पाते हैं।' जौनपुरी ने कहा था, 'कोई फकीर या संत ही इससे मार्फत करा सकता है। 'साद' की हालत मे मार्फत करने पर इन्सान बुलन्दी पर पहुँचता है। 'नहस' मे मार्फत होने पर इन्सान तकलीफ पाता है। यह रात बारह बजे के करीब थोड़ी देर के लिए उरूज होता है। इसका दीदार करने वालों मे हजरत जिगर मुरादाबादी, मजरूह सुल्तानपुरी और खाकसार का नाम लिया जा सकता है।'

'देखें हमारे बारे में क्या बताते हैं।' नेताजी ने कहा। नेताजी के भीतर कोलाहल मचा था, आत्मा कसमसा रही थी और दिमाग में इतना तनाव था कि बार बार आँखें मिचमिचा रहे थे।

संयोग से नजूमी पेड़ के नीचे मिल गये। ऊँचा लम्बा शरीर, इकहरा बदन, कालर बोन को छूती दाढ़ी, बड़ी बड़ी मर्मभेदी आँखें।

प्रेम जौनपुरी और सिद्दीकी साहब को देख कर उसके चेहरे पर कोई भाव नही आया। पेड़ के पास ही छोटी सी कुटिया थी। पेड़ के नीचे एक कुत्ता बैठा अपनी पिछली टाँग से बदन पर खुजली कर रहा था।

'सलाम अलैकुम।' प्रेम जौनपुरी ने कहा, 'नेता जी आये हैं आप से मिलने।'

नजूमी महोदय उस वक्त पेड़ की तरफ टकटकी लगा कर देख रहे थे, बोले, 'यह तो मिनिस्टर होगा।'

सिद्दीकी साहब का जीवन सार्थक हो गया, बोले, 'फिलहाल बहुत गर्दिश में हूँ।'

'तुम मिनिस्टर होकर रहोगे।'

नेताजी में थोड़ा आत्म विश्वास आया। प्रेम जौनपुरी अन्दर से खटिया उठा लाए। नेताजी खटिया पर बैठ गये और नजूमी एक बड़े पत्थर पर।

'नेताजी को इत्र बहुत पसन्द हैं।' प्रेम जौनपुरी बोला, 'गुलाब का इत्र लगाइए।'

नजूमी ने एक अँगुली फैला दी। देखते-देखते वह तर होने लगी। नजूमी ने नेताजी की कलाई पर इत्र लगा दिया। नेताजी ने सूँघ कर देखा, सच

मुच गुलाव की गंध आ रही थी ।

'तुम एक दिन मिनिस्टर हो कर रहोगे ।' नजूमी ने फिर कहा ।

'नेता जी को मिठाई खिलाइए ।' प्रेम जौनपुरी ने कहा ।

नजूमी ने मुट्ठी वन्द कर ली । कुछ देर टकटकी लगाकर मुट्ठी की तरफ़ देखता रहा । थोड़ी देर वाद मुट्ठी खोली तो उसमें गर्म-गर्म कलाकंद था । दोनों ने मिठाई खायी ।

'लखनऊ का सफ़र कामयाव होगा ?'

'तुम एक दिन मिनिस्टर होकर रहोगे ।'

नजूमी की वात सुनते ही नेताजी के भीतर जैसे कोई रासायनिक क्रिया होने लगी । देखते ही देखते वे एक साधारण नेता से सहसा मन्त्री वन गये । एक मिनिस्टर के लहजे में ही वोले, 'आप मेरी वात का जवाव नहीं दे रहे कि मेरा लखनऊ का सफर कामयाव होगा कि नहीं ।'

नजूमी ने वही वाक्य दुहरा दिया, 'तुम एक दिन मिनिस्टर होकर रहोगे ।'

'एक सिगरेट पिलाइये ।' नजूमी ने कहा ।

'आप यह पैकेट रखिये ।' नेताजी ने कहा और घड़ी की तरफ देखा ।

'अव चलना चाहिए ।'

'मैं तो यहीं रुकूँगा ।' प्रेम जौनपुरी ने कहा ।

'ठीक है ।' नेता जी ने कहा, 'मैं चलता हूँ ।'

'रुको ।' नजूमी वोला । उसने एक कागज़ के टुकड़े पर पेंसिल से कुछ लिखा । तहाते-तहाते कागज़ को तावीज़ के आकार का वनाया और अपने कुर्ते की जेव से नन्हा सा धागा निकाल कर उस कागज़ को गठिया दिया, 'इसे लेते जाओ । अपनी दाहिनी वाँह पर वाँध लेना । सव दिन खुश रहोगे ।'

नेताजी ने तावीज़ जेव के हवाले किया और ड्राइवर से वोले, 'चलो ।'

ड्राइवर भी अपनी किस्मत के वारे में पूछना चाहता था, नेताजी ने कहा, 'लौटते समय देखेंगे ।'

'यह गाड़ी किसकी है ?' नेताजी ने जानना चाहा ।

'आप ही की है हुज़ूर ।' ड्राइवर वोला ।

'इसे मैंने पहले कहीं देखा है ।'

'जरूर देखा होगा ।'

'किसकी है ?'

'आप ही लोगों की सेवा में रहती है । जो भी नेता इस कार में वैठा मिनिस्टर हो गया ।' ड्राइवर ने वताया, 'कौशल जी इसमें वैठ चुके

कमरे उन्होंने अपने लिए विशेष रूप से तैयार करवाये थे। एयरकंडीशनर था, रेफ्रीजरेटर था, खानसामा था।

सिद्दीकी साहब ने ताला खोला। फ्लैट में मुद्दत से झाड़ू नहीं लगी थी। धूल, मकड़ी के जाले, सिगरेट के टुकड़े, मच्छर, तिलचिट्टे, पक्षियों के घोंसले, कबूतरों की बीटें, क्या नहीं था जो उस कमरे में न हो। फरनीचर के नाम पर एक लंगड़ी मेज, दो कुबड़ी कुरसियाँ और एक तख्त। मेज के ऊपर दो ऐशट्रे पड़ी थीं, दोनों सिगरेट के टुकड़ों से लबालब भरी थीं।

शाम हो गयी थी, जमादार को भी बुलाना सम्भव न था। ड्राइवर साथ में न होता तो वे बाज़ार से झाड़ू खरीद लाते और कमरे की सफाई में जुट जाते। ड्राइवर संकोच में बाहर ही खड़ा था। सिद्दीकी साहब ने उसे बुलाया और कहा, 'देख लो हमारे फ्लैट की क्या हालत हो रही है। क्या बताएँ वक्त ही नहीं मिलता कि इसे ढंग से सजाएँ। कहने को तो तीन तीन कमरे हैं मगर सब से बढ़िया कमरा यही है।'

ड्राइवर ने खिड़की खोल दी, अन्दर बेहद घुटन थी। खिड़की खोलने के बाद भी कमरे से बदबू न गयी तो वह टहलता हुआ बाहर चला गया। पंखे के ऊपर इतनी गर्द थी कि चलाया जाता तो नेताजी के तख्त पर और गन्दगी हो जाती।

'दूसरे कमरे में भी एक तख्त है। आँगन की तरफ़ दरवाजा खुलता है। तुम इतमीनान से वहीं सो रहना। अब सुबह सफ़ाई कराएँगे।'

'मैं अपनी गाड़ी में सो जाऊँगा।' ड्राइवर ने कहा।

'तुम्हें तकलीफ़ तो होगी, मगर सोचता हूँ, वह ठीक रहेगा। यह लो दस रुपये, कहीं खाना आना खा आओ।'

'नहीं साहब, रुपये तो हम न लेंगे। हमें हिदायत है। मालिक खुद ही जी भर कर पैसा देते हैं, अगर किसी वी. आई पी. के साथ चलना होता है। अब आप कल मिनिस्टर हो गये तो कहीं सरकारी नौकरी दिला दीजिएगा। वादा तो कइयों ने किया, मगर बाद में आँख तक नहीं मिलायी।'

'हम उन लोगों में से नहीं हैं। मैं तो जनता का आदमी हूँ। उस नजूमी के बारे में क्या राय है?'

'साहब आदमी तो पहुँचा हुआ लगता है।' ड्राइवर ने कहा, 'भला बताइए, जंगल में कहाँ से ताजा कलाकन्द चला आया?'

सिद्दीकी साहब को नजूमी की तारीफ़ सुनना अच्छा लगा, बोले, 'मिनिस्टर कोई आसमान से तो गिरते नहीं। हमारे तुम्हारे बीच से ही पैदा होते हैं। आज इस कूड़े में रहने को मजबूर हूँ, तकदीर ने साथ दिया तो कल कुछ

सहूलियतें मिल जाएँगी। मैं फ़कीर आदमी हूँ, किसी भी हालत में खुश रहता हूँ।'

'यह तो मैं देख रहा हूँ।'

'तो जाओ, खाना खा आओ। हम थोड़ी देर आराम करेंगे।'

सिद्दीकी साहब को बहुत आलस आ रहा था। चादर तक झाड़ने की इच्छा न हुई। वहीं तख्त पर फैल गये। दिन भर इतनी चिन्ता और तनाव रहा था कि भूख मर गयी। सिगरेट भी बेतहाशा फूंके थे। मुंह में अभी तक इत्र का स्वाद बसा था। उन्होंने जेब से तावीज निकाला, अपनी दाहिनी बाँह से छुआया और दुबारा जेब में रख लिया। उसके बाद वे सचमुच एक मन्त्री की तरह सो गये। जूते तक नहीं उतारे। रात भर उनके कानों में मच्छर भिनभिनाते रहे, तिलचट्टे फ़र्श पर कबड्डी खेलते रहे, मगर सिद्दीकी साहब जो सोये तो सुबह ही उठे।

श्यामसुन्दरजी सुबह की फ्लाइट से नहीं आये। मालूम हुआ शाम की फ्लाइट से आने की सम्भावना है। सिद्दीकी साहब ने एक दिन के लिए कार मँगवायी थी, कार को और अधिक रोकना मुनासिब न था। इस विषय पर ड्राइवर बहुत तटस्थ था, "आप कहिएगा तो रुका रहूँगा, आप कहेंगे तो चला जाऊँगा। यह आप ही को तय करना है।"

सिद्दीकी साहब कुछ भी तय नहीं कर पा रहे थे। पेट्रोल भी नपा तुला था। हवाई अड्डे तक जाने की भी ज्यादा गुंजाइश न थी। जेब में पैसा भी कम था कि दस पाँच लीटर पेट्रोल डलवा लेते।

"ऐसा करते हैं कि शाम को हवाई अड्डे चलें। श्यामसुन्दरजी आ गये तो ठीक वरना तुम हमें छोड़ते हुए लौट जाना।"

"आप जैसा हुक्म दें।" ड्राइवर ने कहा।

शाम को नहा धोकर सिद्दीकी साहब हवाई अड्डे के लिए रवाना हो गये। किस्मत अच्छी थी कि श्यामसुन्दरजी आते हुए दिखायी दिये। उनके साथ प्यारेलाल भी नहीं था। सिद्दीकी साहब की तरह दस पाँच लोग ही हवाई अड्डे पर पहुँच पाये थे। श्यामसुन्दरजी ने सिद्दीकी साहब की तरफ़ पहचान की नजरों से देखा, मुस्कराये, "आज कल कहाँ गायब रहते हैं?"

"मैं तो आप ही के बंगले पर रहता हूँ दिन भर, आप से मुलाकात नहीं हो पाती।"

"ज़िन्दगी ही कुछ ऐसी हो गयी है मियाँ। कल सुबह आठ बजे आइए तो जम कर बातें होंगी।"

श्यामसुन्दरजी ने सिद्दीकी साहब के ड्राइवर को भी पहचान लिया था, उसके भी कंधे थपथपा दिए, "मजे में हो न। किस के साथ आए हो?" ड्राइवर ने सिद्दीकी साहब की तरफ़ इशारा किया तो श्यामसुन्दरजी बहुत रहस्यात्मक तरीके से मुस्कराये। ड्राइवर इतनी सी बात से प्रसन्न हो गया। सिद्दीकी साहब ने राहत की साँस ली और नजूमी की बात पर ग़ौर करते हुए गाड़ी में जा बैठे। उन्होंने श्यामसुन्दरजी की गाड़ी के पीछे अपनी गाड़ी लगा दी।

"कल आठ बजे का वक्त दिए हैं। मेरा ख़याल है आज रुक जाओ। कल नौ दस बजे तक रवाना हो जाएँगे। सचिवालय में ज़रा सा काम है। उसे भी निपटाते चलेंगे।"

"जैसा हुक्म!"

अगले रोज़ सुबह पौने आठ बजे सिद्दीकी साहब श्यामसुन्दरजी के बंगले पर पहुँच गये। ड्राइवर ने उतर कर दरवाज़ा खोला तो वे एक मन्त्री की तरह ही कार से उतरे। प्यारेलाल ने उन्हें दूर से ही देख लिया था। कार भी पहचान ली थी। सिद्दीकी साहब ने जाते ही प्यारेलाल से कहा, "श्यामसुन्दरजी ने सुबह आठ का वक्त दिया था, ज़रा सा अन्दर कहलवा दीजिएगा।'

"अभी तो वे सो रहे हैं। उठकर नहायेंगे, पूजा करेंगे, तब कहीं मिल पायेंगे।"

सिद्दीकी साहब लोगों के बीच कुर्सी पर बैठ गये। आठ, नौ, दस बज गये, मगर श्यामसुन्दरजी का कहीं पता नहीं था। वे कई बार उठे, उठकर टहलते हुए पान खा आए, सिगरेट का पूरा पैकेट फूंक डाला, मगर कहीं कोई सुनवायी नहीं थी। भीड़ बढ़ती जा रही थी। प्यारेलाल भी वहाँ से ग़ायब हो गये थे।

"मुख्यमन्त्रीजी के यहाँ गये हैं।" किसी ने बताया।

"हमने तो उन्हें निकलते नहीं देखा।" सिद्दीकी साहब ने कहा, "हम सुबह आठ बजे से यहाँ हैं।"

"बंगले के पिछवाड़े से भी रास्ता है।" एक टिकटार्थी, जो सुबह सात बजे से बैठा था अत्यन्त शान्त भाव से बोला।

अब सिद्दीकी साहब की बेचैनी बढ़ने लगी। माँगे की गाड़ी थी। आयुक्तजी

नाराज हो गये तो भविष्य में कार भी न दिलायेंगे। वे पीछे जा कर एक कुर्सी पर बैठकर मुस्काने लगे। तभी अचानक भीड़ में हलचल हुई। एक कार अन्दर घुसी थी। श्यामसुन्दरजी ही थे। साथ में एक मन्त्री और उनकी पार्टी के सचिव। लोगों के साथ-साथ सिद्दीकी साहब भी खड़े हो गये। श्यामसुन्दरजी बगैर किसी की तरफ़ देखे अन्दर कमरे में घुस गये। सिद्दीकी साहब ने माथा पीट लिया। प्यारेलाल न जाने कहाँ से नमूदार हो गया था।

"प्यारेलालजी, लगता है आप मुझसे बहुत ख़फ़ा हैं।" सिद्दीकी साहब ने जाकर प्यारेलालजी का हाथ थाम लिया, "आप बुजुर्ग आदमी हैं। मैं आप की तहे-दिल से इज्जत करता हूँ। आप इतनी बेरुख़ी न दिखाइए। सुबह से भूखा प्यासा पड़ा हूँ। सच पूछिए तो कल से कुछ नहीं खाया।"

"नाश्ते के लिए कुछ मँगवाऊँ! आपने पहले बताया होता ?"

"आप जल्दी से मुलाकात करवा दीजिए।"

"सबसे पहले आपकी ही मुलाकात करवाऊँगा।" प्यारेलाल ने कहा। सिद्दीकी साहब ने घुटने टेक दिये थे और प्यारेलाल का लोहा मान गये थे। प्यारेलाल यही चाहते थे।

मन्त्रीजी के जाते ही सिद्दीकी साहब का बुलौआ आ गया। सिद्दीकी साहब उठे, एक निगाह भीड़ पर डाली कि देख लो मेरा रुतबा और अन्दर चले गये।

"आइए, आइए जनाब।" श्यामसुन्दरजी को सिद्दीकी साहब का नाम याद न आया।

"दो दिन से भूखा प्यासा आप के दर पर पड़ा हूँ। आपने कुछ देर और न बुलवाया होता तो ग़श खाकर गिर जाता।"

"कहिए मैं क्या ख़िदमत कर सकता हूँ ?"

"मेरा बायोडेटा आप के पास है। प्रार्थना पत्र आपके पास है। याद दिलाने चला आया।" सिद्दीकी साहब ने अत्यन्त विनम्रतापूर्वक अजीजन बी का लिफ़ाफ़ा श्यामसुन्दरजी को थमा दिया, "आप के लिए एक सिफ़ारिशी चिट्ठी भी लाया हूँ।"

श्यामसुन्दरजी ने लिफ़ाफ़ा खोला। वे चिट्ठी पढ़ते जा रहे थे और उनका चेहरा गम्भीर होता जा रहा था। चिट्ठी पढ़ कर उन्होंने मेज पर रख दी, चश्मा उतार कर उसके ऊपर रख दिया और आँखें मलते हुए बोले, "यह किसकी चिट्ठी है ?"

"अज़ीज़न बी की।"

"कौन अज़ीज़न बी ?"

नेताजी परेशान हो उठे। समझते देर न लगी कि बुड्ढा जानबूझ कर कर अनजान बन रहा है।

"आप अज़ीज़न बी को नहीं जानते ?"

उन्होंने ओंठ बिचका दिये, "न, मैं तो इस औरत का नाम पहली बार सुन रहा हूँ। क्या करती है यह ?"

"अपने वक्त की मशहूर तवायफ़ रही है। आज भी इनके संगीत की दूर-दूर तक धूम है।"

"न भाई, मुझे इल्म नहीं।"

"अज़ीज़न बी तो कह रही थीं कि आप उनकी बात न टालेंगे।"

"मैं किसी बी-बी को नहीं जानता, मेरी ज़िन्दगी इतनी संघर्षपूर्ण रही है कि इन खुराफातों के लिए कभी वक्त ही न मिला। आप जवान आदमी हैं, यह आप का क्षेत्र है।"

श्यामसुन्दरजी ने घण्टी टनटना दी। मतलब था कि आप जाइए, दूसरे लोग भी इन्तजार कर रहे हैं।

"आपने मेरे बारे में क्या सोचा ?"

"मुआफ़ कीजिए, मैं आपके लिए कुछ न कर पाऊंगा। आप बहुत ग़ैर-ज़िम्मेदार आदमी हैं। मेरी पार्टी में ऐसे लोगों के लिए कोई जगह नहीं, जो तवायफ़ों के चक्कर में रहे और ऐसे-वैसे लोगों की कार में घूमे।'

"कैसे लोगों का कार में ?"

"अब आप जाइए। आपने मुझे समझ क्या रखा है जो एक तवायफ़ के ख़त लिए चले आए। आपकी हिम्मत कैसे हुई।" श्यामसुन्दरजी गुस्से में कुर्सी से उठ गये, "आप जाइए और किसी दूसरी पार्टी के टिकट का जुगाड़ कीजिए। मैं तो आप को एक ज़िम्मेदार आदमी समझता था।"

श्यामसुन्दरजी ने बहुत ग़ुस्से में अजीजन बी की चिट्ठी चिंदी-चिंदी कर दी और रद्दी की टोकरी में फेंक दी।

सिद्दीकी साहब एक मन्त्री के रूप में कमरे में दाखिल हुए थे और एक फ़राश की हैसियत से बाहर निकल रहे थे। उन्होंने जेब से तावीज़ निकाला और कूड़ेदान में फेंक दिया। प्रेम जौनपुरी को एक भद्दी गाली दी। श्यामसुन्दरजी का ख़याल आते ही थूकने लगे।

ही साहब लखनऊ से बेहद मायूस लौटे थे। रातभर गाड़ी में बेचैन
यामसुन्दर ने ऐसी पटखनी दी थी कि सिद्दीकी साहब ज़िन्दगी भर न
। पहले तो वे योजना बनाते रहे कि अज़ीज़न से श्यामसुन्दर का
लेकर प्रेस में दे दें। तमाम समाचार पत्रों में अज़ीज़न के संस्मरण
दें। मगर अज़ीज़न के चेहरे पर हर वक्त एक ऐसी सौम्यता रहती थी
भावना यही बनती थी कि वह श्यामसुन्दर की हरकत के बारे में सुन
ोत रहे। अज़ीज़न के व्यक्तित्व में उन्होंने जो सम्भावना देखी थी, वह
दूध के झाग की तरह शांत हो गयी।
इकबालगंज पहुँच कर सिद्दीकी साहब ने अपने को घर में कैद कर लिया।
बिस्तर पर करवटें बदलते, सोते और शून्य में टकटकी लगा कर देखते
। उन्हें पूरी कायनात फिजूल और प्रयोजनहीन दिखायी देती। आसमान
तारे उनके नजदीक किरासिन के अभाव में टिमटिमाते दिये होकर रह गये।
ौर फुटपाथ और सूरज तन्दूर। गोया कि दुनिया उनके लिए बेहद सीमित
हो गयी। अपने पेशे से वे बेहद ऊब चुके थे। उनकी आधी ज़िन्दगी अफ़सरों,
मन्त्रियों, विधायकों और सांसदों की ख़ुशामद में बीत गयी थी। अब जब उनके
विधायक होने का वक्त आया था, दुनिया ने निगाहें फेर ली। बिस्तर पर लेटे
लेटे वे शून्य में घूरते रहते। अपने किसी भी राजनीतिक मित्र का ख़याल आता
तो मुँह में ढेर सा थूक जमा हो जाता। श्यामसुन्दरजी का ख़याल आते ही वह
खाट से उठ कर बैठ जाते और थूकने के साथ साथ नाक भी सिनक देते।
उनकी खाट के पास थूक और बलगम के अलावा कुछ नहीं था। दीवारें थीं
जिनका प्लास्टर झड़ चुका था। वर्षों से पुताई न हुई थी। कुर्सियाँ थीं और
उनका बेंत कुर्सियों के नीचे नाड़ों की तरह लटक रहा था।

दो तीन रोज इस तरह मातम, क्षोभ और आत्मपीड़ा में बिता कर उन्हें
यकायक लगा कि ऐसी कायरतापूर्ण ज़िन्दगी जीने से बड़ी कोई लानत नहीं।
उन्होंने तीन दिन से मोज़े पहन रखे थे। इस बार मोजों के भीतर पसीना
महसूस हुआ तो उन्होंने मोज़े उतार कर फेंक दिये। पैर धोने की इच्छा भी
हुई। सिद्दीकी साहब उठे और साबुन ले कर नल के नीचे बैठ गये। पैरों पर
मैल की पपड़ियाँ जम गयी थी। वे देर तक नहाते रहे। नहा धो कर उनके

ज़ेहन में अचानक नसीम भाई का ख़याल उभरा। वे तुरत तैयार होकर नसीम भाई को फोन मिलाने पोस्ट आफ़िस की ओर चल दिये।

मालूल हुआ नसीम भाई दिल्लीमें हुए उत्तरप्रदेश निवास में ठहरे हुए हैं। उत्तरप्रदेश निवास सिद्दीकी साहब की पहचानी हुई जगह थी। उन्होंने तुरन्त दिल्ली चलने का कार्यक्रम बना डाला। अतीक़ का काम हो चुका था। उससे दो चार सौ रुपये और झटके जा सकते थे। सिद्दीकी साहब ने जब बताया कि वे टिकट पाने के लिए दिल्ली जा रहे हैं तो अतीक़ ने न सिर्फ पाँच सौ रुपये दिये, अपने साथ खाना भी खिलाया। खाना लज़ीज़ था, पेट भरते ही सिद्दीकी साहब के भीतर और अधिक आत्मविश्वास जग गया। खाना खाकर उन्होंने सिगरेट सुलगाया, उसी काड़ी से कान कुरेदा और काड़ी ऐशट्रे में फेंकते हुए बोले, "अतीक़ भाई, इस बार तो मुझे टिकट मिलना ही चाहिए। दौड़ते-दौड़ते पैरों में छाले पड़ गये हैं। अबकी टिकट न मिला तो हमेशा-हमेशा के लिए सियासत छोड़ दूंगा।"

"अल्ला ताला ने चाहा तो इस बार आपको ज़रूर टिकट मिलेगा। टिकट मिल गया तो मैं आपके साथ अजमेर शरीफ़ जाऊँगा।" अतीक़ ने कहा, "आप दिल्ली जाकर भरपूर ज़ोर लगाइए, माशा अल्लाह कामयाबी आपके कदम चूमेगी।"

नयी दिल्ली पहुँच कर सिद्दीकी साहब ने उत्तर प्रदेश निवास के लिये टैक्सी की। उन्हें विश्वास था कि वे दिल्ली की सड़कों से अच्छी तरह वाकिफ़ हैं मगर जब टैक्सी वाला नेताजी को दिल्ली दर्शन कराने लगा तो वे चौंके। उनकी टैक्सी उस वक्त किसी शांत, निर्जन और ख़ूबसूरत सड़क पर विचरण कर रही थी। सड़क का नाम पूछ कर वह अपनी अभिज्ञता का परिचय नहीं देना चाहते थे। टैक्सी में बैठे चुपचाप खिड़की से धुआँ छोड़ते रहे।

"क्यों भाई कहाँ भटक गये!" नेताजी से और अधिक बरदाश्त न हुआ तो निहायत लापरवाही से पूछ बैठे।

"अशोका होटल के पास पहुँच गये हैं।" टैक्सी वाले ने कहा, "यहाँ से खाली लौटना पड़ेगा।"

"आजकल बहुत भीड़ है उत्तर प्रदेश निवास में।" नेताजी ने कहा, "टिकट बँट रहे हैं। आजकल तो सवारी की कोई कमी नहीं।"

नेताजी की बात से टैक्सी वाला उत्साहित हुआ। उसने ठीक उ० प्र० निवास के बाहर गाड़ी रोक दी। कई एक लोग टैक्सी की तरफ लपके। नेताजी ने अपना सूटकेस निकाला और झुक कर मीटर देखने लगे। इधर उनकी आँख भी कमज़ोर हो गयी थी। बहुत चाह कर भी वह मीटर न पढ़ पाये। आखिर

उन्होंने बीस का नोट टैक्सी वाले को दिया और पैसा लौटाये जाने की इन्तजार में सिगरेट सुलगाने लगे। इस बीच टैक्सी वाले ने सवारी बैठायी और एक नन्हा-सा हार्न बजा कर चलता बना। तभी जाने कहाँ से अचानक मूसलाधार बारिश होने लगी। नेताजी सूटकेस उठाकर बरामदे की तरफ लपके।

नसीम साहब के नाम से कमरा दर्ज था, मगर नसीम साहब नहीं थे। नेताजी ने बहुत कोशिश की कि 'रिसेप्शन' से नसीम साहब के कमरे की चाभी प्राप्त कर लें, मगर वे सफल न हो पाये। उन्होंने सिलसिलेवार दीगर कई विधायकों और सांसदों के नाम लिए मगर स्टाफ पर उसका कोई असर न पड़ा।

"सब सालों से निपट लूंगा।" नेताजी निराश होकर लाउंज में बैठ गये और दूरदर्शन का कार्यक्रम देखने लगे। कार्यक्रम में उनका मन नहीं लग रहा था। बाहर बारिश तेज हो गई थी। नसीम साहब का कुछ पता न था। सिगरेट पी-पीकर उनकी भूख भी मर गयी थी, मगर इस अन्देशे से वे किचन की ओर चल दिये कि रात को भूख लगी तो यहाँ कई किलोमीटर तक सस्ता खाना नहीं मिलेगा।

किचन में खाना लगभग समाप्त था। किसी तरह दाल-रोटी का इन्तजाम हो पाया। दस बज चुके थे। सिद्दीकी साहब ने किसी तरह दो-चार चपातियाँ निगली और कुल्ला करके दोबारा बाहर लाउंज में आकर बैठ गये। अपना सूटकेस उन्होंने कोच से सटा कर रख लिया था और बीच-बीच में छूकर देख लेते थे कि अपनी जगह पर है या नदारद हो चुका है। प्रधानमन्त्री के किसी उद्घाटन समारोह की डाक्यूमेण्टरी चल रही थी। वे बड़ी तल्लीनता से प्रधानमन्त्री का चेहरा देख रहे थे। प्रधानमन्त्री को इतनी तत्परता से काम निपटाते देख उनकी विपदा के प्रति उदासीनता बढ़ गयी। टिकट लेंगे तो सवा दस का ही।

"आदाब अर्ज है सिद्दीकी साहब।" किसी ने सिद्दीकी साहब की एकाग्रता भंग कर दी। सिद्दीकी साहब ने मुड़कर देखा, आजमगढ़ के विधायक यादवजी खड़े थे। बगल में एक अत्यन्त रूपसी बाला खड़ी थी। उसने भी हाथ जोड़ दिए।

"नमस्कार! नमस्कार!!" सिद्दीकी साहब ने उठते हुए कहा, "बहुत हसीन बिटिया है। किस क्लास में पढ़ती हो।"

बिटिया ने मुँह पर साड़ी का पल्लू दाब लिया और हँसते-हँसते सोफ़े पर लुढ़क गयी।

"बिटिया नहीं, यह आपकी भाभी है।" यादवजी ने संशोधन किया।

ज़ेहन में अचानक नसीम भाई का ख़याल उभरा। वे तुरत तैयार होकर नसीम भाई को फोन मिलाने पोस्ट आफ़िस की ओर चल दिये।

मालूम हुआ नसीम भाई दिल्लीमें हुए उत्तरप्रदेश निवास में ठहरे हुए हैं। उत्तरप्रदेश निवास सिद्दीकी साहब की पहचानी हुई जगह थी। उन्होंने तुरन्त दिल्ली चलने का कार्यक्रम बना डाला। अतीक़ का काम हो चुका था। उससे दो चार सौ रुपये और झटके जा सकते थे। सिद्दीकी साहब ने जब बताया कि वे टिकट पाने के लिए दिल्ली जा रहे हैं तो अतीक़ ने न सिर्फ पाँच सौ रुपये दिये, अपने साथ खाना भी खिलाया। खाना लज़ीज़ था, पेट भरते ही सिद्दीकी साहब के भीतर और अधिक आत्मविश्वास जग गया। खाना खाकर उन्होंने सिगरेट सुलगाया, उसी काड़ी से कान कुरेदा और काड़ी ऐशट्रे में फेंकते हुए बोले, "अतीक़ भाई, इस बार तो मुझे टिकट मिलना ही चाहिए। दौड़ते-दौड़ते पैरों में छाले पड़ गये हैं। अबकी टिकट न मिला तो हमेशा-हमेशा के लिए सियासत छोड़ दूंगा।"

"अल्ला ताला ने चाहा तो इस बार आपको जरूर टिकट मिलेगा। टिकट मिल गया तो मैं आपके साथ अजमेर शरीफ़ जाऊँगा।" अतीक़ ने कहा, "आप दिल्ली जाकर भरपूर ज़ोर लगाइए, माशा अल्लाह कामयाबी आपके कदम चूमेगी।"

नयी दिल्ली पहुँच कर सिद्दीकी साहब ने उत्तर प्रदेश निवास के लिये टैक्सी की। उन्हें विश्वास था कि वे दिल्ली की सड़कों से अच्छी तरह वाकिफ़ हैं मगर जब टैक्सी वाला नेताजी को दिल्ली दर्शन कराने लगा तो वे चौंके। उनकी टैक्सी उस वक्त किसी शांत, निर्जन और ख़ूबसूरत सड़क पर विचरण कर रही थी। सड़क का नाम पूछ कर वह अपनी अभिज्ञता का परिचय नहीं देना चाहते थे। टैक्सी में बैठे चुपचाप खिड़की से धुआं छोड़ते रहे।

"क्यों भाई कहाँ भटक गये!" नेताजी से और अधिक बरदाश्त न हुआ तो निहायत लापरवाही से पूछ बैठे।

"अशोका होटल के पास पहुँच गये हैं।" टैक्सी वाले ने कहा, "यहाँ से खाली लौटना पड़ेगा।"

"आजकल बहुत भीड़ है उत्तर प्रदेश निवास में।" नेताजी ने कहा, "टिकट बँट रहे हैं। आजकल तो सवारी की कोई कमी नहीं।"

नेताजी की बात से टैक्सी वाला उत्साहित हुआ। उसने ठीक उ० प्र० निवास के बाहर गाड़ी रोक दी। कई एक लोग टैक्सी की तरफ लपके। नेताजी ने अपना सूटकेस निकाला और झुक कर मीटर देखने लगे। इधर उनकी आँख भी कमजोर हो गयी थी। बहुत चाह कर भी वह मीटर न पढ पाये। आखिर

उन्होंने बीस का नोट टैक्सी वाले को दिया और पैसा लौटाये जाने की इन्तजार में सिगरेट सुलगाने लगे। इस बीच टैक्सी वाले ने सवारी बैठायी और एक नगाड़ा-सा हार्न बजा कर चलता बना। तभी जाने कहाँ से अचानक मूसलाधार बारिश होने लगी। नेताजी सूटकेस उठाकर बरामदे की तरफ लपके।

नसीम साहब के नाम से कमरा दर्ज था, मगर नसीम साहब नहीं थे। नेताजी ने बहुत कोशिश की कि 'रिसेप्शन' से नसीम साहब के कमरे की चाबी प्राप्त कर लें, मगर वे सफल न हो पाये। उन्होंने एकेबाद दीगरे कई विधायकों और सांसदों के नाम लिए मगर स्टाफ पर उसका कोई असर न पड़ा।

"सब सालों से निपट लूँगा।" नेताजी निराश होकर लाउंज में बैठ गये और दूरदर्शन का कार्यक्रम देखने लगे। कार्यक्रम में उनका मन नहीं लग रहा था। बाहर बारिश तेज हो गई थी। नसीम साहब का कुछ पता न था। सिगरेट पी-पीकर उनकी भूख भी मर गयी थी, मगर इस अन्देशे से वे किचन की ओर चल दिये कि रात को भूख लगी तो यहाँ कई किलोमीटर तक सस्ता खाना नहीं मिलेगा।

किचन में खाना लगभग समाप्त था। किसी तरह दाल-रोटी का इन्तजाम हो पाया। दस बज चुके थे। सिद्दीकी साहब ने किसी तरह दो-चार चपातियाँ निगलीं और कुल्ला करके दोबारा बाहर लाउंज में आकर बैठ गये। अपना सूटकेस उन्होंने कौच से सटा कर रख लिया था और बीच-बीच में छूकर देख लेते थे कि अपनी जगह पर है या नदारद हो चुका है। प्रधानमन्त्री के किसी उद्घाटन समारोह की डाक्यूमेण्टरी चल रही थी। वे बड़ी तल्लीनता से प्रधानमन्त्री का चेहरा देख रहे थे। प्रधानमन्त्री को इतनी तत्परता से काम निपटाते देख उनकी विपक्ष के प्रति उदासीनता बढ़ गयी। टिकट लेंगे तो सत्तारूढ़ दल का ही।

"आदाब अर्ज है सिद्दीकी साहब।" किसी ने सिद्दीकी साहब की एकाग्रता भंग कर दी। सिद्दीकी साहब ने मुड़कर देखा, आजमगढ़ के विधायक यादवजी खड़े थे। बगल में एक अत्यन्त रूपसी बाला खड़ी थी। उसने भी हाथ जोड़ दिए।

"नमस्कार! नमस्कार!!" सिद्दीकी साहब ने उठते हुए कहा। "बहुत बढ़ीन बिटिया है। किस क्लास में पढ़ती हो।"

बिटिया ने मुँह पर साड़ी का पल्लू दाब लिया और हँस पर मुड़ गयी।

"बिटिया नहीं, यह आपकी भाभी है।" यादवजी ने संकोच

"आप बहुत खुशकिस्मत हैं यादवजी।" सिद्दीकी ने अपनी भाभी की तरफ़ ध्यान से देखा। भाभी अब तक संभल गयी थी, बोली, "यह तो आज तय हो गया, मैं इनकी बिटिया की तरह दिखती हूँ, मगर ये मेरे पिता की तरह दिखते हैं कि नहीं ?"

"आज हम लोग जहाँ-जहाँ गये, आपकी भाभी की ही चर्चा रही। पी० एम० हाउस तक इनका जलवा रहा।" यादवजी ने पूछा, "आप किस कमरे में हैं ?"

सिद्दीकी साहब पर निराशा का गहरा दौरा पड़ा था, बोले, "नसीम साहब के साथ रुका था, मगर वे चाबी लेकर अब तक गायब हैं।"

"चलिए आप हमारे कमरे में।" यादवजी की पत्नी ने सिद्दीकी साहब का सूटकेस उठा लिया, "आपके बारे में विधायकजी ने बताया था। आप तो श्यामसुन्दरजी के घर के आदमी हैं।"

सिद्दीकी साहब ने भाभी को सूटकेस उठाते हुए देखा तो उसकी तरफ़ लपके, "अरे आप क्या ग़ज़ब ढा रही हैं। मुझे क्यों दोज़ख का दरवाज़ा दिखा रही हैं।"

भाभी तब तक तितली की तरह सीढ़ियों पर उड़ रही थी, सिद्दीकी साहब का सूटकेस लिए। सूटकेस हल्का था। दो जोड़ी कपड़े थे और शेव का सामान।

"आप लोग तो खुलूस में मेरी जान ले लेंगे।" सिद्दीकी साहब ने यादवजी के साथ चलते हुए कहा, "आप नाहक परेशान हो रहे हैं। आपकी प्राइवेसी मैं खत्म नहीं करना चाहता। आप भी सोचेंगे, कबाब में हड्डी कहाँ से आ गयी।"

"हा-हा-हा।" यादव जी ने ठहाका लगाया, बिखरी हुई हैं।"

सिद्दीकी साहब इन लोगों के आतिथ्य से गद्‌गद् हो गये। उन्होंने मन ही मन श्यामसुन्दर को एक भद्दी गाली दी और तय किया कि कि उन्हें टिकट मिले या नहीं, वे श्यामसुन्दर की कब्र खोद कर रहेंगे। वे सोच रहे थे कि पति-पत्नी के बीच वे रात कैसे बितायेंगे, मगर कमरे में पहुँचकर देखा तो अनेक टिकटार्थी कमरे में टिड्डी दल की तरह छाये हुए थे। कोई दरी पर चादर ओढ़ कर सो रहा था, कोई मेज पर आराम से बैठा था। रेल के डिब्बे की तरह यादवजी उनका कमरा ठसाठस भरा था। यहाँ तक कि पाखाने के रास्ते में भी लोग बैठे थे।

"यह क्या हालत कर रखी है, आपने अपने कमरे की।" सिद्दीकी साहब ने कहा, "भाभी कहाँ सोएँगी ?"

"हम लोगों ने एक होटल में कमरा ले रखा है। मेरे मेहमानों को तकलीफ न होनी चाहिए।" यादव जी ने कहा, "सुषमा को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग में कई काम हैं। होटल का बिल वही चुकाएगी।"

"विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का सचिव मेरा दोस्त है—कुलभूषण।" नेताजी ने बताया।

"सचिव से काम न होगा।" सुषमाजी ने आँखें नचायीं, "काम हो जायगा।"

"आपका काम न होगा तो किसका होगा।" सिद्दीकी साहब ने कहा, "आपने मुझे जिन्दगी भर के लिए गुलाम बना लिया है। टिकट तो आपको मिलना चाहिए।"

"लगता है इस बार दोनों को मिलेगा।" मेज पर पालथी लगा कर बैठे घनी मूँछों वाले आदमी ने सुषमाजी को आँख मारी और बोला, 'पत्नी सांसद होंगी और पति विधायक, क्यों मैंने गलत कहा ?"

"बिलकुल ठीक कहा।" सिद्दीकी साहब बोले, "आपने भी क्या मेरे दिल की बात कही। सुषमाजी तो केन्द्र में मन्त्री होंगी। आने वाले वक्तों में।"

घनी मूँछों वाला आदमी कुछ बोलता कि सुषमाजी ने जाकर उसके मुँह पर अपना हाथ रख दिया। सुषमाजी के झुकने से उनके सुडौल वक्ष पर सिद्दीकी साहब की निगाह पड़ी। वे जैसे पागल हो गये। पीठ के नीचे जैसे किसी ने गुदगुदी कर दी। सुषमाजी ने आधी बाँहों का ब्लाउज पहना था, मगर वह इतना कसा था कि बगलों से फट गया था। बगलों के बीच जैसे सावन के सुर्मई बादल घुमड़ रहे थे। नेताजी ने तुरन्त सिगरेट सुलगा ली और खिड़की की तरफ मुँह करके एक लम्बी साँस भरी, "या खुदा, मेरा कब तक इम्तिहान लोगे ?"

उन लोगों को बातों में मशगूल देख सिद्दीकी साहब चुपचाप कमरे के बाहर निकल आये। इस बीच नसीम साहब का कमरा खुल गया था। कमरे से तभी बैरा निकला। बरामदे में जगह-जगह शराब की बोतलों के खाली डिब्बे नाजायज बच्चों की तरह पड़े थे, बैरा उन्हें उठा कर ट्रे में रख रहा था।

नसीम साहब बिस्तर पर इत्मीनान से बैठे थे। मेज पर गिलास था, ठसाठस भरी ऐशट्रे थी। ऐशट्रे के नीचे सौ-सौ के आठ-दस नोट। नसीम साहब की घड़ी। नसीम साहब का डेंचर और दो एक पत्रिकाएँ रखी थीं। उनकी शक्ल देख कर ही लग रहा था कि उनका टिकट पक्का हो चुका है।

"आओ बरखुरदार आओ।" नसीम साहब ने सिगरेट सुलगाई और बोले, "कहो कहाँ पहुँचे ?"

"जहाँ से चला था नसीम भाई वहीं खड़ा हूँ।" सि

आधी रात का वक्त हो रहा था। जरूर कोई जरूरी काल होगी।

'हैलो।" सुषमाजी ने अत्यन्त अलसाये स्वर में कहा।

"आप किस कमरे से बोल रही हैं ?"

"दो सौ पाँच से।" सुषमाजी को कमरे का नम्बर याद रह गया।

"आप यहाँ क्या कर रही हैं ?

"चाँदनी देख रही हूँ। बहुत खूबसूरत चाँदनी है बाहर।"

"सिद्दीकी कहाँ है ?"

"सिद्दीकी साहब अभी अभी सोये हैं।"

"आप उन्हें फ़ोन दे दीजिए।"

"मगर वे सो रहे हैं। अभी अभी सोये हैं। कच्ची नींद में जगाना मुनासिब न होगा। आप मैसेज दे दीजिए। मैं उन्हें दे दूँगी।"

"उसे फौरन जगाइए।" उधर से आवाज़ आई।

"सिद्दीकी साहब, सिद्दीकी साहब।" मगर सिद्दीकी साहब घोड़े बेचकर सोये थे। सुषमाजी ने रिसीवर रखा और जाकर सिद्दीकी साहब को हिलाने लगी। सिद्दीकी साहब का चेहरा सुषमा को अचानक बहुत आकर्षक लगा, वह उनके गाल पर चपत लगाते हुए बोली, "सिद्दीकी साहब आप का फ़ोन है।"

सिद्दीकी साहब सुषमाजी के स्पर्श से अचानक उठ बैठे। पर्दा हटा देने से कमरा चाँदनी से जगमगा रहा था। अपने सामने आधी रात को सुषमाजी को देख कर वह सकपका गये। उनकी समझ में यह पहेली न आ रही थी।

"आपका फ़ोन है !"

"मेरा फ़ोन है ?"

"हाँ आप ही का है।'

सिद्दीकी साहब ने एक लम्बी आह भरी, आँखें मलीं, बत्ती जलाई और बहुत संयत स्वर में कहा, "हैलो !"

"सिद्दीकी तुम निहायत गैरजिम्मेदार आदमी हो।" उधर से गुस्से से छलछलाती आवाज आई, 'मैंने तुम्हें रात काटने के लिए कमरा दिया था, रंगरेलियाँ मनाने के लिए नहीं। तुम्हारा तो कुछ होना नहीं, तुम मेरा टिकट भी कटवाओगे। तुम मेरे लखनऊ वाले फ्लैट पर भी चकला चलाते हो, मुझे सब खबर है। फ़ौरन मेरा कमरा खाली कर दो वरना मैं अभी मैनेजर को फ़ोन कराता हूँ कि तुम्हारा सामान बाहर फेंक दे।"

सिद्दीकी साहब नींद में थे और कानों पर फोन लिए बेसुध से सब सुन रहे थे। सुषमाजी की उपस्थिति में कुछ भी कहना उन्हें मुनासिब न लग रहा था। उन्होंने तो बहुत आत्मीयता और चाव से इन लोगों को अपने यहाँ ठहराया था।

"आप कितनी देर में कमरा खाली कर रहे हैं?"

"नसीम भाई, आप कैसी बातें कर रहे हैं?"

"मैं अभी मैनेजर को फोन करता हूँ। आप शराफ़त से कमरा खाली कर दीजिए और तवायफ़ को ले कर जहन्नुम में चले जाइए।"

नसीम भाई ने फोन काट दिया। सिद्दीकी साहब ने रिसीवर रख दिया और माथा पकड़ कर बैठ गये।

"क्या हुआ सिद्दीकी साहब?"

"क्या बताऊँ भाभी। किसी ने नसीम भाई को फ़ोन कर दिया कि मैं कमरे का नजायज इस्तेमाल कर रहा हूँ।"

"क्या मतलब?"

"यानि कि मैं किसी तवायफ़ को कमरे में लेकर पड़ा हूँ। आप मुझे मुआफ़ कीजिएगा। मेरी वजह से आपको ज़लील होना पड़ा।"

सुषमाजी यह सुन कर हँसते हँसते बेहाल हो गयीं। पेट थाम कर हँसती रहीं।

"यह शरारत जरूर सिंगी ठाकुर ने की है। अब समझ में आ गया, कमरे में आपने एक मूँछों वाला आदमी देखा होगा, अमरपाल सिंह, यह सब उसी की करामात है। मैंने बीसियों बार विधायकजी को समझाया है कि ऐसे लोगों को साथ में न रखा करो, मगर ये मानें तब तो।"

सुषमाजी अचानक यादवजी के पास गयीं और बहुत ज़ोर से उन्हें झंझोड़ दिया, "सुन लो अपने अमरपाल सिंह की करामात।" सुषमाजी बोलीं, "इस तरह दिल्ली आ कर नींद लोगे तो सोते रह जाओगे और सब टिकट ठाकुर लोग पा जाएँगे।"

टिकट का ज़िक्र सुन कर यादवजी अचानक उठ बैठे "क्या बात है?"

सिद्दीकी साहब ने पूरी बात बताई।

"नसीम साहब मेरे भी दोस्त हैं। मैं अभी उनसे बात कर लेता हूँ। वे ठीक-ठीक बता देंगे कि किसने यह शरारत की है।"

तभी कालबेल सुनाई दी। मैनेजर साहब दरवाज़े पर खड़े थे।

"आइए आइए श्रीवास्तव जी।" सुषमाजी ने कहा, "आपके भवन का तो बहुत बुरा हाल है। जाने कितने गुण्डा ऐलिमेंट आ कर टिके हुए हैं। मैं मुख्यमन्त्रीजी से बात करूँगी।"

मैनेजर स्तब्ध सा खड़ा था। वह इसी आशा में आया था कि जरूर कोई तवायफ़ मिलेगी, सामने यादवजी और सुषम— उत्साह भंग हो गया। बात समझते देर न लगी, बोला

फ़हमी हो जाया करती है। कोई बात नहीं, मैं नसीम साहब से बात कर लूंगा।"

"अभी कीजिए बात उनसे।" सुषमाजी ने कहा, "क्या उत्तर प्रदेश में वही एक शरीफ़ बचे हैं।"

यादवजी ने रिसीवर उठाया और पूछा, "आपके पास नसीम साहब का नम्बर है?"

सिद्दीकी साहब ने बताया कि इस वक्त वे सिक्स नाइन फोर टू ज़ीरो टू पर होंगे। यादव जी ने फ़ोन घुमाया। उधर से किसी ने फौरन रिसीवर उठाया।"

"नसीम साहब होंगे?"

"मैं बोल रहा हूँ।"

"आदाब अर्ज़ है। मैं यादव बोल रहा हूँ? बात यह है कि विधान सभा के सदस्य विधान परिषद के सदस्यों को आसानी से पहचानते नहीं।"

"आप भी कैसी बात कर रहे हैं हुज़ूर। यह बताइए भाभी कैसी है, कहाँ है और इस वक्त कैसे याद किया!"

"बस बधाई देने के लिए। आपका टिकट पक्का हो गया।"

"सच?"

"जी हाँ। अभी शाम को धर साहब के यहाँ डिनर था। आप का नाम आया तो सोचा बधाई दे दूँ।"

"भाभी कहाँ है?"

"अभी बात कराता हूँ।"

नसीम साहब बेहद अच्छे मूड में आ गये थे। इन दिनों धर साहब की बहुत पूछ थी, उन्होंने ज़िक्र किया होगा तो बात सही होगी।

"मैं बोल रही हूँ सिद्दीकी साहब की गर्ल फ्रैंड।" सुषमाजी ने रिसीवर कान पर रखते ही कहा, "आपके बारे में खुशखबरी सुनकर सिद्दीकी साहब हम लोगों को आपके कमरे में ले आये, जबकि हमारा कमरा एक सौ नौ बुक है, वहाँ अन्य टिकटार्थी जमे हैं। यह बताइए, आप को किसने इतनी बेहूदा ख़बर दी कि आपके कमरे में चकला चल रहा है। रिसीवर तो मैंने ही उठाया था, आपने मुझसे ही पूछ लिया होता कि मैं हुस्ना बाई हूँ या सुषमा बाई।"

"भाभी आप तो शर्मिंदा कर रही हैं।"

"मैं तो आपको अब हमेशा शर्मिंदा करूँगी। बोलिए मेरा मुजरा देखेंगे?"

"मुझे माफ़ करो भाभी। मुझसे खता हुई। मैं अभी मैनेजर साहब को फ़ोन करता हूँ।"

"आप कत्तई फ़ोन न कीजिए। हम लोग अपने कमरे में लौट रहे हैं।"

गुप्ताजी ने फ़ोन रख दिया और विजय भाव से तमाम दीवारों की तरफ़ देखा।

टेलिफ़ोन की घण्टी बजी। गुप्ताजी ने उठाने से इन्कार कर दिया। सिद्दीकी साहब ने इन्कार कर दिया। यादवजी की हिम्मत हो न पड़ी। घण्टी देर तक बजती रही तो मैनेजर साहब ने रिसीवर उठा लिया, 'सर, मैं श्रीवास्तव बोल रहा हूँ।"

"सिद्दीकी कहाँ है ?"

"बाथ रूम में है सर।"

"उससे कहिए, बाथरूम से निकल कर मुझसे बात कर ले।"

"यस सर।"

सिद्दीकी साहब बाथ रूम से निकले तो आँखों में लाल डोरे खिंच गये थे। लग रहा था, जमकर रोये हैं। गुप्ता ने उठकर देखा तो गाल थपथपा दिए, "पालिटिक्स करना मांगता तो रोना बन्द करो। क्या औरतों की तरह रोता है।"

"भाभी मुझे आज तक किसी ने इतना ज़लील न किया था।"

'चलो इसका कमरा छोड़कर अभी होटल चलते हैं। इससे तो बेहतर ही है मेरा कमरा। चलो उठो। उठिए विधायकजी।'

तभी फिर घण्टी बजी, गुप्ता ने रिसीवर उठाया और बोली, 'हम लोग अभी आप का कमरा खाली कर रहे हैं। सिद्दीकी पहले ही जा चुका है। चाबी श्रीवास्तव से ले लीजिएगा।"

गुप्ताजी ने अपनी बात कही और रिसीवर रख दिया।

नीचे टैक्सियाँ उपलब्ध थीं। तीनों टैक्सी में बैठ कर अशोका की ओर चल दिये। श्रीवास्तव चाय का निमन्त्रण देता रह गया।

शनिवार की शाम को शर्मा घर के लिए रवाना हो गया। गाड़ी करी
दो घण्टे लेट थी। दरवाज़ा अम्मा ने खोला। प्रोफ़ेसर ने देखा अम्मा ने र
पर शाल ओढ़ रखा था, उनकी आवाज़ से लगा अम्मा को बहुत तेज़ ज़ुका
है। उसने झुक कर अम्मा के पाँव छुए।

"ज़ुकाम हो रहा अम्मा?" शर्मा ने पूछा।

"हाँ।" रुकी हुई नाक से अम्मा ने जवाब दिया, "मगर तुम्हारे बाबू व
तबीयत ज्यादा खराब है।"

'उन्हें क्या हो गया है?" कहते हुए शर्मा कमरे की तरफ़ लपका। पित
ने भी सिर पर मफ़लर बाँध रखा था और कमरे में बहुत कम रोशनी थी
पिता एक तख्त पर लेटे थे। पास ही बुझी हुई सिगड़ी रखी थी।

"कैसी तबीयत है बाबूजी।" शर्मा ने पूछा।

बाबूजी ने आँखें खोलीं, शर्मा की तरफ देखा और पुनः आँखें मूंद लीं

"क्या तकलीफ़ है बाबूजी?"

बाबूजी ने पुनः आँखें खोलीं। हाथ से इशारा किया कि सर घूम रहा है
फिर उंगलियों से आँखें दबा लीं। शायद आँखें में भी दर्द था।

घर में अजीब किस्म का सन्नाटा था। बाबूजी के कमरे में व रसोई
शायद ज़ीरो पावर का बल्ब जल रहा था। अम्माँ ने शर्मा के हाथ में चा
का एक गिलास थमा दिया और खुद पास बिछी खटिया पर कम्बल ओ
कर लेट गयीं। कम्बल से कभी खाँसी और कभी नाक भरने की आवा
आती।

"शीला कहाँ है माँ?" शर्मा ने पूछा।

अम्माँ को खाँसी का दौरा पड़ा। बाबूजी ने आँखों में गहरे तक उंगलि
दबा लीं।

शर्मा ने एक लम्बी साँस ली। क्या शर्मा का पत्र पाकर ही ये दो
बीमार पड़ गये हैं। बीमार तो ये लोग पहले भी हुआ करते थे मगर बीम
पड़ने पर इस तरह की मनहूसियत कभी न होती थी। इन लोगों को इस स
बातचीत करना भी गवारा नहीं हो रहा था।

शर्मा उठा और बिना बताए अपने फैमिली डाक्टर की तरफ़ चल दिया। फैमिली डाक्टर बहुत बूढ़ा हो चुका था। उसके यहाँ कुछ बूढ़े लोग ही इलाज के लिए आते थे। डॉ० हुकुमचन्द का आज भी फार्मेसी के मिक्सचर में बहुत विश्वास था। अस्सी साल की उम्र में भी वह भला चंगा था। मगर उसका लालच इस उम्र में भी कम नहीं हुआ था। शहर में उसके कई मकान थे, मगर संतान एक भी न थी।

शर्मा ने अपने माता-पिता के बारे में बताया तो डाक्टर ने कहा कि वे तो पिछले कई महीनों से इलाज के लिए नहीं आये।

शर्मा भी अपने माता-पिता के स्वभाव से बखूबी परिचित था। उसके पिता ब्लडप्रेशर बढ़ने पर केवल नमक छोड़ देते थे और माँ जुकाम होने पर रात को जोशान्दा पीना शुरू कर देती थी।

"डाक्टर साहब मैं चाहता हूँ आप एक बार चल कर उन्हें देख लें।"

डाक्टर ने घड़ी देखी और बोले, "नौ बजे विज़िट का समय, है। आप कुछ देर रुकें तो साथ ही चल सकता हूँ।"

"ठीक है, डाक्टर साहब!" शर्मा ने कहा और दवाई की विभिन्न कम्पनियों के रंगीन फोल्डर पढ़ने लगा।

डाक्टर साहब की दीवार घड़ी ने नौ का घंटा बजाया तो वह छड़ी के सहारे खड़े हो गये, "शर्मा साहब आप शादी कब कर रहे हैं?"

"डाक्टर साहब आप तो आर्यसमाजी विचारों के रहे हैं। एक बात बताइए मुझे कैसी लड़की से शादी करनी चाहिए।"

डाक्टर जोर से हंसा, बोला, 'मैंने उस ज़माने में भी बाल विधवा से शादी की थी।'

शर्मा उत्साहित हुआ और बोला, 'मगर मैं एक तवायफ़ की लड़की से शादी करना चाहता हूँ।'

'वाह वाह!' डाक्टर के मुँह से अनायास निकल गया, 'बरख़ुरदार, तुम तो मुझसे भी दो क़दम आगे निकले।'

'मगर मेरे माँ-बाप को यह प्रस्ताव मंज़ूर नहीं। उन्होंने जब से यह सुना है, बीमार पड़े हैं।'

डाक्टर का कम्पाउण्डर ही उनका ड्राइवर था। दोनों गाड़ी में बैठ गये तो डाक्टर ने कहा, 'लेकिन बरख़ुरदार एक बात है, लड़की संस्कारहीन नहीं होनी चाहिए।'

'क्या मतलब?'

'एक तवायफ़ की लड़की के कैसे संस्कार हो सकते हैं, तुम खुद ही अन-

५

मान लगा सकते हो।'

'डाक्टर साँब लड़की बेहद तहज़ीबयाफ़्ता है। मेरी कक्षा में ऊँचे घरानों की कई लड़कियाँ हैं, मगर तहज़ीब के नाम पर सिफ़र हैं।'

डाक्टर साहब को भी बातचीत में आनन्द आने लगा, पूछा, 'अपनी माँ के पेशे को वह किस निगाह से देखती है ?'

'बेहद इज्जत से।' प्रोफ़ेसर ने कहा, 'उनका यह खानदानी पेशा है।'

'मुआफ़ करना बरखु़रदार।' डाक्टर ने धीरे से कहा, 'अगर माँ के पेशे को वह इतनी ही इज्जत से देखती है तो उसने खुद वह पेशा अख्तियार क्यों नहीं किया ?'

'उसकी मां की ऐसी ही इच्छा थी। दूसरे इस पेशे का अब भविष्य ही क्या है ? यह पेशा राजाओं-रजवाड़ों के बल पर चलता था, अब वे ही ख़त्म हो गये।' प्रोफ़ेसर के मुँह से अनायास निकल गया। उसने अपने को तुरन्त दुरुस्त किया, 'शायद बदले माहौल में इस पेशे की प्रासंगिकता ख़त्म हो चुकी है। आपने नोट किया होगा, बहुत-सी गानेवालियाँ अब रेडियो, टी० वी० और सिनेमा के लिए गाना अधिक पसन्द करती हैं।'

डाक्टर कार में एकदम सीधे देख रहे थे। प्रोफ़ेसर भी चुप था। उसे लग रहा था कि एक कड़वे मिक्सचर की तरह डाक्टर के गले के नीचे यह बात उतर नहीं रही थी।

'तुम एक पढ़े-लिखे नौजवान हो।' घर के सामने कार रुकी तो डाक्टर ने कहा, 'कोई भी बोल्ड कदम उठाने से पहले हर पक्ष से विचार कर लेना चाहिए। जज़्बाती आदमी अक्सर ऐसा नहीं करते।' 'नटशेल' में कहूँ तो मेरी यही राय है।' कार शर्मा के घर के सामने रुक गयी।

प्रोफ़ेसर ने बढ़ कर दरवाज़ा खोला। रसोईघर में हलचल थी। उसने देखा उसके माता-पिता दोनों आमने-सामने बैठे एक थाली में खाना खा रहे थे। दोनों के चेहरों पर अब बीमारी के वैसे लक्षण भी न थे। प्रोफ़ेसर ने डाक्टर साहब को कमरे में बैठाया और जाकर खबर दी कि वह डाक्टर साहब को बुला लाया है।

'है बेवकूफ़।' उसके पिता बोले, 'डाक्टर को बुलाने के लिए किसने कहा था ?'

दोनों ने जल्दी से खाना ख़त्म करके हाथ धोये और चेहरे पर बीमारी ओढ़ते हुए दूसरे कमरे की तरफ़ सरकने लगे !

'कहिए शर्माजी, क्या हुआ ?' डाक्टर ने पूछा।

प्रोफ़ेसर के पिता ने हाथ जोड़ दिये और बोले, 'लगता है ब्लडप्रेशर बहुत बढ़ गया है। आँखों में भी बेहद तकलीफ़ है, खड़ा होता हूँ तो घर घूमने लगता है।'

डाक्टर ने ब्लडप्रेशर का आला निकाला और ब्लडप्रेशर नापने लगे, दुबारा लिया और बोला, 'ब्लडप्रेशर इतना ज्यादा नहीं। ८०/१४० है। आपकी उम्र में इतना जायज है। बहरहाल आधी टिकिया ऐडलफ़ीन एसो-ड्रेक्स सुबह-शाम लीजिए। नमक कम खाइए और दिमाग में कोई परेशानी न पालिये।'

डाक्टर साहब अम्मा को देखते इससे पहले ही अम्मा ने कहा, 'डाक्टरजी हम मिक्सचर नहीं पियेंगे।'

'हम जानते थे तुम यही कहोगी।' डाक्टर ने कहा, 'मगर तुम्हें हमेशा मिक्सचर से आराम मिला है।'

'डाक्टर जी हमको कै हो जायेगी।'

'हम उसमें हाजमे की दवा भी मिला देंगे।'

अम्मा ने बहुत क्रोध से बेटे की तरफ़ देखा। बेटा भी हैरान था कि जो अम्मा कड़वे से कड़वा जोशांदा पी सकती है, मिक्सचर पीने से क्यों गुरेज करती है। बहरहाल, डाक्टर ने दो-एक सवाल किये, फ़ीस ली और शर्मा से बोले, 'मैं आपको फार्मेसी पर छोड़ दूंगा आप दवा बनवा लीजिए।'

शर्मा बिना कुछ कहे डाक्टर के साथ हो लिया। वह जब से आया था, मा-बाप से कोई बात न हो पायी थी। यह पहली बार हुआ था कि उन लोगों ने बिना उसका इन्तजार किये खाना खा लिया। शर्मा ने यही उचित समझा कि वह रास्ते में कहीं खाना खाता चले। बचपन में शर्मा 'केसरी' में खाना खाया करता था। 'केसरी' डाक्टर की दुकान से ज्यादा दूर नहीं था। शर्मा बड़े चाव से केसरी में घुसा। केसरी का मालिक जयरत्न नहीं था। उसी की शक्ल का उसका लड़का था। शर्मा ने एक बैरे से पूछा तो उसने बताया कि जयरत्न तो पिछले वर्ष चल बसा था, अब उसका लड़का अमयरत्न ढाबा चलाता है और अपने बाप से भी ज्यादा हरामी है।

शर्मा ने इस जगह बहुत अच्छे दिन बिताये थे। जयरत्न दिन भर गोश्त भूनता रहता था। गोश्त भूनते हुए ही वह ढाबा चलाता था। शर्मा ने कालेज के दिनों में बिना पैसे के कई बार जयरत्न के यहाँ खाना खाया था। शर्मा की यह जानने की इच्छा हो रही थी कि जयरत्न की मृत्यु कैसे हुई, मगर उसका लड़का अमयरत्न जिस बेफ़िक्री से टहल रहा था, शर्मा की उस से बात करने की इच्छा न हुई। उसने किसी तरह खाना खाया और एक हाथ में डाक्

का मिक्सचर और दूसरे से सिगरेट पीते हुए घर की तरफ़ रवाना हो गया।

घर की सांकल बजाते हुए उसे बड़ा संकोच हुआ। उसे लग रहा था, उसे देर हो गयी है और माता-पिता उसके इस समय आने का बुरा मान रहे होंगे। उसने किसी तरह साहस बटोर कर सांकल बजायी तो उसने देखा रसोई की तरफ़ से उसकी माँ दरवाजा खोलने चली आ रही है। शर्मा का कलेजा धक् से रह गया, यह देख कर कि उसकी माँ उसके लिए खाने के इंतज़ार में, नाक सुड़कती हुई, अभी तक रसोई में ही जमी है।

'डाक्टर ने मिक्सचर ही दिया है।' शर्मा बोला, 'उसने कहा कि दो दिन में ठीक हो जाओगी।'

अम्मा ने उसकी बात का जवाब नहीं दिया। मिक्सचर थाम कर रसोई में रखे बर्तनों के बीच रख दिया और बोली, 'मेरे सर में भयंकर दर्द हो रहा है। जल्दी से खाना खा लो।'

'खाना मैंने खा लिया है।' शर्मा ने कहा, 'तुम्हारी तबीयत ठीक न थी, सोचा खाते चलूं।'

अम्मां ने शर्मा की बात सुन कर दवा की शीशी उठा कर बाहर आँगन में फेंक दी और लगी ज़ोर-ज़ोर से रोने, 'हाय एक रंडी की बेटी ने मेरा घर तबाह कर दिया। हाय एक रंडी की बेटी ने.....'

शर्मा की समझ में कुछ न आ रहा था कि यह सब एकाएक कैसे हो गया। मगर एक बात उसके भेजे में तुरन्त स्पष्ट हो गयी कि गुल इस घर में एक दिन के लिए भी न रह पायेगी।

शर्मा चुपचाप पिछवाड़े के कमरे की ओर चल दिया, जहाँ अक्सर मेहमान लोग ठहरते थे। उसने जूते उतारे और खटिया पर लेट गया। उसके कानों में उसकी मां की आवाज़ गूंज रही थी—'मेरा बेटा तो बहुत अच्छा था, कैसे रंडियों के चक्कर में पड़ गया। हे ईश्वर तूने किस जन्म का बदला लिया। मेरी जवान बिटिया का अब क्या होगा। मैंने कितनी सुन्दर बहू का सपना देखा था। हाय रे मैं तो लुट गयी। मेरा कुछ न रहा। हे ईश्वर मुझे मौत दे दो।'

अम्मा की आवाज़ के बीच में बाबू की एक अस्पष्ट बुदबुदाहट सुनायी देती थी। शर्मा को सुनायी न पड़ रहा था कि बाबू अम्मां को डाँट रहे हैं या उसकी बात की ताईद कर रहे हैं। उसे ताज्जुब हो रहा था कि अम्मां इतने भयंकर सरदर्द के बीच कैसे इतना चिल्ला सकती है। पहले तो उसकी

इच्छा हुई कि जाकर अम्मा को शान्त करने की चेष्टा करे, मगर वह अम्मा के स्वभाव से परिचित था कि वह जितना ही अम्मा को मनाने का प्रयत्न करेगा, अम्मा का उत्साह उतना ही बढ़ता जायेगा। आखिर उसने यही तय किया कि चुपचाप करवट बदलता रहे और 'काम्पोज' की एक टिकिया निगल कर एक शव की तरह निश्चेष्ट लेटा रहे।

शर्मा के दिमाग में एक शब्द 'रंडी' बार-बार टकरा रहा था। उसे लग रहा था, इस घर में उसकी हैसियत एक भडुए से ज्यादा नहीं रह गयी है। अम्मा ने पूरा माहौल कुछ ऐसा कर दिया कि अब वह इस विषय में अपने माता-पिता से कोई भी बात करने की स्थिति में नहीं रह गया था। उसकी इच्छा हो रही थी खाट से उठ कर सीधा स्टेशन चला जाये और किसी भी दिशा में जाने वाली किसी भी गाड़ी में बैठ जाए।

'जो काम उस रंडी को घर में आकर करना था, हाय रे उसने पहले ही कर दिखाया। मेरा बेटा होटलों और चकलों में खाना खाने लगा।'

अम्मां लगातार विलाप कर रही थी।

शर्मा अम्मां से बहस में नहीं पड़ना चाहता था। उसे इस माहौल से अजीब तरह की वितृष्णा हो गयी। उसे आश्चर्य हो रहा था कि वह इस घर में पैदा कैसे हो गया। इससे कहीं अच्छा और सुखद होता कि वह एक वेश्या के यहाँ ही जन्म लिये होता। उसे लग रहा था वह और उसके माता-पिता अलग-अलग दुनिया के लोग हैं। उसने किसी तरह अपने चारों ओर कम्बल ओढ़ लिया और अम्मा की आवाज को अनसुना करते हुए सोने का उपक्रम करने लगा। उसने तय किया कि वह सुबह उठते ही पहली गाड़ी से लौट जायेगा। इस माहौल में किसी भी नाजुक विषय पर बात करना उसे अश्लील और बेकार लग रहा था।

• •

शर्मा घर से वेहद उदास लौटा था। रास्ते भर वस में भी उसने किसी से वात नहीं की। उसके भीतर जैसे कोई मौत हो गयी थी ! अपने माता-पिता के व्यवहार से उसे क्रोध आ रहा था और ग्लानि हो रही थी ! इस वुढ़ापे में उन लोगों ने अपना जीवन कितना दयनीय वना लिया था। वे लोग अपनी संतान की स्थिति समझने का प्रयत्न नहीं कर रहे थे। इस प्रक्रिया में खुद भी कष्ट पा रहे थे और शर्मा का जीना भी दूभर किए थे। शर्मा अपने माता-पिता के स्वभाव से परिचित था। अगर शर्मा ने गुल से शादी कर ली तो वे उससे कोई ताल्लुक न रखेंगे। रो-रो कर ख़त्म हो जायेंगे मगर शर्मा का मुंह न देखेंगे। घर में दूसरा कोई भाई भी नहीं था जो उनकी देखभाल कर ले। आर्थिक परेशानी उन लोगों को नहीं थी, मगर भावनात्मक स्तर पर वे निपट अकेले थे।

ऐसी परिस्थिति में उसे गुल की अपेक्षाएँ नहीं जगानी चाहिए थीं। वह उसी तरह गुल का कद्रदां हो जाता, जैसे माली गुलशन का कद्रदां होता है। मगर क्या वह गुल के वगैर या गुल के अलावा जिन्दगी की कल्पना कर सकता है ? शायद नहीं। शर्मा के दिमाग की नसें फड़कने लगीं।

घर लौट कर वह कम्वल ओढ़ कर लेट गया। भोजन की इच्छा न हुई।

सुवह शर्मा गर्दन झुकाये एक पिटे हुई खिलाड़ी की तरह वहुत ही मरियल चाल से अपनी कक्षा की तरफ़ चल पड़ा। उसने वहुत ही उदास नज़रों से गुल को भी लगभग उसी समय विभाग के पास रिक्शा से उतरते देखा। शर्मा ने गुल की तरफ़ देखा मगर उसकी चाल में कोई तेज़ी न आयी। जवकि यह तय है कि वह सिर्फ़ गुल को देखने कक्षा में आया था वर्ना वह छुट्टी ले लेता।

शर्मा ने विना किसी प्रेरणा से अत्यन्त निष्प्राण तरीके से क्लास ली। वह एक घिसे रिकार्ड की तरह वोलता रहा और पीरियड समाप्त होने पर वरामदे में खड़ा होकर सिगरेट फूंकने लगा।

'सर आपकी तवीयत ठीक है ?'

शर्मा ने मुड़ कर देखा, गुल खड़ी थी। चेहरे पर वही उत्साह, ताज़गी और जीवन। गुल गरारा पहन कर वहुत कम विश्वविद्यालय आती थी।

आज उसने गहरा गरारा पहना था और उस पर ढीला-ढाला कुर्ता। प्रोफ़ेसर मुग्ध नज़रों से उसकी ओर देखता रहा।

'आपको क्या हो गया है सर?'

'मुझे 'गुल' हो गया है।' शर्मा ने कहा और फीकी-सी हँसी हँसा, 'और यह एक ऐसा रोग है, जिसका सिर्फ़ एक ही इलाज है।'

'सर अम्मा ने आपको याद किया है।'

'मैं जल्दी आऊँगा।' शर्मा बोला, 'इसी हफ़्ते।'

गुल अपनी कक्षा की तरफ़ बढ़ गयी, शर्मा जड़-सा वहीं खड़ा रहा गया। किसी लड़की के खिलखिलाने की आवाज़ से वह चौंका। शर्मा ने मुड़ कर देखा, शुमा थी।

'क्या कह रही थी, चुड़ैल?' उसने पूछा।

'चुड़ैल, तुम्हें क्या कहना है?' शर्मा ने पूछा।

शुमा का इस सम्बोधन से जैसे जीना सार्थक हो गया। वह इतराते हुए बोली, 'हम आपसे नहीं बोलेंगे।'

'अच्छा साथ रहा, हम भी न बोलेंगे।'

'मम्मी-पापा आपके यहाँ आना बोलने वाले हैं। कई दिनों से कह रहे हैं। लगता है पहली फ़ुर्सत में जायेंगे।'

'मैं भी बहुत दिनों से आने की सोच रहा था।' शर्मा ने कहा, 'मगर इधर कहीं भी नहीं गया।'

'आज आइए।' शुमा ने कहा, 'अम्मा भी बहुत याद करती हैं।'

'मेरा नमस्कार कहना। मैं किसी छुट्टी के रोज़ आऊँगा।' कह कर शर्मा बिना उसकी ओर देखे आगे बढ़ गया।

बाकी के पीरियड प्रोफ़ेसर ने छोड़ दिये। माता-पिता किसी प्रेतात्मा की तरह उसकी चेतना से चिपक गये थे। एक ख़ास तरह की उदासी उसके पूरे अस्तित्व पर तारी थी। उसे लग रहा था जब तक वह गुल से इस विषय पर विचार विमर्श न कर लेगा, उसकी आत्मा इसी तरह संतप्त रहेगी। हो सकता है उसकी समस्या सुनकर गुल उससे भी अधिक उदास हो जाए। उसने चपरासी से कहा कि वह गुल को बुला लाये।

कोई पन्द्रह-बीस मिनट के बाद गुल उसके सामने खड़ी थी।

'नफ़ीस कहाँ है?'

'मैंने उसे तीन बजे बुलाया है।'

'अभी क्या बजा है?'

'एक बज रहा है।'

शर्मा खड़ा हो गया और गुल के साथ-साथ बरामदे तक चला आया, 'गुल मुझे तुमसे कुछ ज़रूरी बातें करनी हैं।'

गुल चुपचाप सर झुकाये खड़ी रही।

'हमें एकान्त में चलना होगा। अभी इसी समय।' शर्मा बोला, 'वरना मैं पागल हो जाऊँगा।'

'मैं कैम्पस के बाहर नहीं जा सकती।' गुल बोली।

एक लड़का पास से गुज़रा, ज़रा दूर हट कर खड़ा हो गया। शर्मा ने बात बदली, 'तुमने टेम्पेस्ट पढ़ा है?'

'न।'

'जूलियस सीज़र?'

'न!' गुल ने कहा, 'मेकबेथ पढ़ा था।'

लड़का वहाँ से सरक गया तो शर्मा ने कहा, 'तुम्हें अभी इसी समय चलना होगा। मैं बैंक के सामने रिक्शे में तुम्हारा इन्तजार करूँगा।' शर्मा ने कहा और तेज-तेज कदम उठाते हुए बैंक के पास पहुँच गया। उसने नदी तक के लिए रिक्शा किया। रिक्शा में बैठ कर वह सिगरेट फूँकने लगा।

रिक्शा में बैठे-बैठे लगभग आधा घण्टा बीत गया, मगर गुल नहीं आयी। शर्मा बहुत उत्तेजित था, गुल से बात करने के लिए। गुल की उपेक्षा ने उसे पुनः ज़मीन पर ला पटका। गुल नहीं आई तो उसने रिक्शे वाले को पैसे दिये और उदास कदमों से घर की ओर लौट पड़ा।

घर के बाहर थोड़ी ही दूर पर नफ़ीस टहलकदमी कर रहा था। शर्मा थोड़ा डर गया। नफ़ीस की जहालत के कई किस्से विश्वविद्यालय में प्रसिद्ध थे। नफ़ीस अनेक छात्रों पर अपना बल-प्रदर्शन कर चुका था। कहीं यह गूँगा शर्मा से ही तो नाराज नहीं हो गया। आगे बढ़ने पर नफ़ीस ने अदब से शर्मा को आदाब किया तो आश्वस्त हुआ।

शर्मा घर के अन्दर घुसा तो सामने गुल बैठी थी—सकुची-सिमटी। शर्मा गुल से बहुत खफ़ा था। कैसा मूर्खों की तरह वह देर तक रिक्शा में इन्तजार करता रहा था और ये बेगम साहिबा इत्मीनान से यहाँ बैठी हैं।

शर्मा को देखते ही गुल खड़ी हो गयी।

'बैठो, बैठो,' शर्मा बोला, 'तुम बेहद परेशान कर रहो हो।'

गुल हमेशा की तरह खामोश।

'मैं रिक्शे में बैठा-बैठा ऊँघता रहा।'

गुल मुस्करायी, 'आप आज क्लास में भी ऊँघ रहे थे।'

शर्मा फीकी हँसी हँसा और बोला, 'तुम यक़ीन नहीं करोगी, मैं आजकल किस मानसिक स्थिति में से गुज़र रहा हूँ।'

'मैं क्या मदद कर सकती हूँ ?'

'तुम मुझे ज़िन्दगी बख्श सकती हो।' शर्मा बोला, 'मैं तुम्हारे साथ कल कहीं दूर जाना चाहता हूँ। कल नफ़ीस को न लाना, मैं खुद तुम्हें घर छोड़ आऊँगा।'

'अम्मा से इजाज़त लेनी होगी।' गुल बोली, 'अम्मा मुझे लेकर हमेशा चिन्तित रहती हैं।'

'मेरी तरफ़ से पूछ लेना। अम्मा इजाज़त दें तो बताना।'

गुल खड़ी हो गयी। शर्मा अभी गुल से कोई बात भी ठीक से नहीं कर पाया था। मगर उसने उसे जाने दिया। वह उसे फाटक तक छोड़ कर वापस कमरे में लौट आया।

अगले रोज़ गुल सचमुच अकेली चली आयी। शर्मा रात भर बिस्तर में पड़ा यही सोचता रहा कि गुल आयेगी अथवा नहीं। उसे विश्वास हो गया था कि वह नहीं आयेगी। अब तक उसका यही अनुभव था।

मगर गुल आयी। अकेली। शर्मा का बुझा हुआ चेहरा खिल गया। जैसे अचानक कोई खज़ाना मिल गया हो। शर्मा की इच्छा हुई कि वह गुल को एक बार छू ले, चूम ले। वह किसी बहाने उसे दूर ले जाना चाहता था। वह उसकी बाँह को, उसके गाल को, उसकी कमर को छूना चाहता था, उसके बालों को सूँघना चाहता था, उसकी ऐड़ी एक बार फिर देखना चाहता था।

एक बजे दोनों का रिक्शा कछार की तरफ़ बढ़ने लगा। गुल के इतना निकट बैठ कर शर्मा के पूरे शरीर में झुरझुरी-सी दौड़ गयी। वह कुछ इस मुद्रा में बैठा था कि दोनों के कूल्हे सटे रहें। गुल के कूल्हों की गर्मी उसके सारे शरीर का प्रवाह तेज़ कर रही थी।

'तुम्हारे मन में अपनी माँ के पेशे को लेकर कोई कुण्ठा तो नहीं?' शर्मा ने पूछा।

'कतान नहीं। एक कुण्ठा है, उसे जुबान तक नहीं ला पा रही। मगर आपसे छिपाऊँगी नहीं।' गुल बोली, 'मगर जो तहज़ीब कोठेवालियों के यहाँ है वह अन्यत्र नहीं। हमारी ही क्लास में एक से एक फूहड़ लड़कियाँ हैं।'

'मगर यह पेशा इज़्ज़त से तो नहीं देखा जाता।'

'नहीं देखा जाता होगा।' गुल बोली, 'पहले तो बड़े-बड़े राजा और विद्वान् वेश्याओं से विवाह करते थे। वेश्याएँ राजसभा और शाही जुलूसों का आवश्यक अंग समझी जाती थीं। यहाँ तक कि सन्धि वगैरह के काम

में भी उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रहती थी। शोपनहार ने तो यहाँ तक कहा है कि एकपत्नीवाद की वेदी पर वेश्याएँ मानवीय समिधा हैं।'

'तुम भूत में जीती हो। मैं वर्तमान की बात कर रहा हूँ।' शर्मा बोला।

'सच बात कहूँ, मैं इतिहास में ही ज़िन्दा रहना चाहती हूँ।' गुल ने कहा।

'मैं वर्तमान में ज़िन्दा रहना चाहता हूँ, तुम्हारे साथ।' शर्मा ने उसके कन्धे पर अपनी बाँह टिका दी, 'कैसे हो?'

गुल के दोनों गाल एक खास स्थान पर सुर्ख हो गये।

रिक्शा शर्मा ने नदी से कुछ दूर पर छोड़ दिया और रिक्शे से उतर कर भी अपनी बांह गुल के कन्धों से नहीं हटायी। गुल ने प्रतिरोध नहीं किया और कन्धे से झूलता शर्मा का हाथ अपने बायें हाथ में थाम लिया। गुल की हथेली गदराई हुई थी। शर्मा ने महसूस किया गुल का हाथ उसके हाथ से अधिक गर्म और गुदाज़ है।

नदी किनारे एक मुर्दे का शव रखा था और अन्तिम क्रिया का प्रबन्ध किया जा रहा था। दोनों उससे बचते हुए एक बालू के टीले के पीछे चले गये। बालू के ढूह के बीच में एक गलियारा-सा बन गया था। एक-दो सूअर अपना थूथन बालू पर सहला रहे थे। शर्मा ने गुल को अपनी दोनों बाहों में भर लिया। गुल के मुँह से हल्की-सी चीख निकल गयी। शर्मा ने दो-एक क्षण तक अपना चेहरा गुल के चेहरे से रगड़ा और फिर अपने होंठ गुल के होंठों पर टिका दिये। गुल का नीचे का सुर्ख होंठ अपने दांतों में दबोच लिया, दोनों कुछ इस तरह से बालू के ऊपर ढह गये जैसे पांव तले से ज़मीन खिसक गयी हो।

'नहीं, नहीं।' गुल बुदबुदायी।

'मैं तुम्हें खा जाऊंगा।' शर्मा बोला।

'नहीं, नहीं।' गुल ने कहा, 'हमारे होंठ में जलन हो रही है।'

शर्मा ने देखा सचमुच गुल का होंठ एक जगह से छिल गया था सन्तरे की फांक की तरह और खून का एक नन्हा-सा क़तरा उभर आया था। शर्मा ने बहुत कोमलता से उस क़तरे को अपनी जीभ से चूस लिया।

'मैं अब कभी आपके साथ न आऊंगी।'

शर्मा मुस्कराया, 'देखो तुम्हारा होंठ घायल हो गया है।"

'हाय रे,' गुल बोली, 'अम्मा देखेंगी तो जिन्दा चबा लेंगी।'

'हम अब तुम्हें अम्मा के पास नहीं रहने देंगे।' शर्मा बोला, 'हम तुम्हें भगा ले जायेंगे।'

'हम अम्मा को कभी नहीं छोड़ेंगे।'

शर्मा एकाएक उदास हो गया, बोला, 'लगता है हमारी अम्मां तो हमें छोड़ ही देंगी। अम्मा ही नहीं, बाबू भी।' वह सहसा जमीन पर उतर आया था।

रेत पर धूप खिली थी। गुल उससे हट कर बैठी थी। एक बूढ़ा मल्लाह पास से गुजरा और बोला, 'बाबू साब, यह बैठने के लिए अच्छी जगह नहीं। यहाँ दिन भर गुजर हगते हैं।'

गुल एकदम खड़ी हो गयी। शर्मा बालू पर पीठ के बल लेट गया।

'मुझे यह जगह अच्छी लग रही है।' वह बोला, 'कितनी अच्छी बालू है और कितनी अच्छी धूप है और कितनी अच्छी चीज मेरे पास है।'

'आपका घर वालों से कोई झगड़ा हो गया है?' गुल ने पूछा।

'हाँ।' शर्मा बोला, 'हो ही गया है। तुम्हारे लिए अच्छा हुआ है, शादी के बाद झगड़ा होता तो तुम भी तकलीफ़ पाती।'

'क्यों?'

'वे लोग चाहते हैं कि मैं अपनी जाति में ही शादी करूं।'

'तो क्यों नहीं कर लेते?'

'मुझे एक ऐसी लड़की पसन्द है जो दूसरी जाति की है।'

'कौन है वह?'

शर्मा ने हाथ बढ़ा कर गुल को अपने ऊपर गिरा लिया और बोला, 'यह है।'

गुल ने शर्मा की छाती में मुंह छिपा लिया। शर्मा ने सूंघा गुल के बालों में शैम्पू की ताज़ा महक उठ रही थी। अपने लड़कपन में उसने मुहल्ले की एक लड़की के बाल यों ही भावुकता में चूम लिये थे, उसे दिन भर मितली आती रही थी।

'एक बात बताऊँ गुल?'

'बताइए।'

'तुम अण्डे का शैम्पू और टर्मरिक क्रीम इस्तेमाल करती हो।'

गुल ज़ोर से हँस पड़ी। हँसते-हँसते बालू से खेलने लगी।

'आपके माता-पिता राज़ी नहीं, हो भी नहीं सकते थे। अम्मा की ज़िद के बारे में सुनेंगे तो और भड़केंगे।'

'क्या?'

'मेरी अम्मा के सपने ही ऐसे हैं।' गुल हँसी, 'अम्मा की दिली इच्छा है कि बारात उनके द्वार तक आवे। लड़के के माता-पिता की मंजूरी हो। लड़का सरकारी नौकरी में हो। लड़के का कद छह फीट से कम न हो। उसका

उच्चारण शुद्ध हो।'

'शर्मा हँसा, 'एक स्टेज तक सब अम्माएँ ऐसा ही सोचती हैं।'

'मगर मेरी अम्मा बहुत ज़िद्दी हैं। राय बहादुर पन्ना लाल शादी के लिए अपनी कोठी कभी भी दे सकते हैं, मगर अम्मां के सोचने का अपना तरीका है।'

'अम्मा ने ज़िन्दगी देखी हुई है। शायद ऐसा सोचने के पीछे कोई तर्क हो।' शर्मा बोला, 'मगर हर माँ-बाप यही चाहते हैं कि उनकी सन्तान उन्हीं के तजुर्बे से काम ले। खुद तजुर्बे न करे।'

गुल बालू से खेल रही थी, एक अबोध बच्चे की तरह।

'गुल तुम मुझे चाहती हो?' निहायत सादगी से शर्मा ने पूछा।

'न।' उसने कहा। उसने शर्मा की तरफ बिना देखे कहा।

शर्मा विचलित हो गया, 'अगर यही सच है तो इस बात को मेरे कन्धे पर सर रख कर या मेरी आँखों में झाँकते हुए एक बार फिर कहो।'

गुल ने शर्मा के कन्धे पर सर पटक दिया और उसकी आँखों में आँखें डाल कर फिर से बोली, 'न।'

'तुम बहुत पाजी लड़की हो।' शर्मा ने कनपटी चूमते हुए कहा, 'तुम निहायत पाजी लड़की हो।'

'हूँ।' गुल बोली।

'तुम्हारी यह 'हूँ' मुझे मार डालेगी।'

'हूँ।' गुल ने कहा।

'तुम ज़िन्दगी से क्या चाहती हो?'

'शर्मा।' गुल बोली, 'मगर.....'

'यह अगर मगर क्या करती रहती हो।'

'मगर.....'

'मगर क्या?'

गुल ने एक लम्बी साँस भरी।

'बोलो।'

'नहीं बोलूंगी। एक दिन तुम खुद ही जान जाओगे।'

'क्या जान जाऊँगा।'

'हक़ीक़त।'

'हक़ीक़त क्या है?'

'जो दिखाई नहीं जा सकती।'

'तुम पहेलियाँ बुझाती हो।'

'हूँ।' गुल ने कहा, 'अब चलना चाहिए।'

शर्मा खुश हुआ और दुखी भी। पहली बार गुल ने उसके नाम के साथ न सर लगाया था न जनाब। अचानक तुम पर उतर आयी थी।

शर्मा हँसा, 'लगता है, समाज हम दोनों के बीच में एक दीवार खड़ी कर रहा है।'

'जैसे?'

'जैसे तुम्हारी अम्मा, मेरी अम्मा, मेरे बाबू।' शर्मा ने एक गहरी साँस ली।

'मेरी अम्मा? वह कैसे?'

'लग रहा है तुम्हारी अम्मा कुछ ऐसी कठिन शर्तें रखेंगी कि चीजें मुश्किल होती चली जायेंगी। मेरे माँ-बाप तो बिल्कुल असंभव हो गये हैं। यह बताओ अगर हम दोनों तमाम लोगों को भूल कर चुपचाप कचहरी में जाकर शादी कर लें तो कैसा रहे?'

'मैं कचहरी कभी नहीं जाऊँगी।'

'मन्दिर में?'

'न।'

'मस्जिद में?'

'न।'

'गुरुद्वारे में, चर्च में?'

'न, न।' गुल बोली, 'मैं वही करूँगी जो मेरी अम्मा कहेंगी।'

'अगर मैं भी तुम्हारी तरह सोचने लगूँ तो कुछ भी न हो सके। तुम कचहरी क्यों नहीं जाना चाहती।'

'मेरी अम्मा कभी कचहरी जाना पसन्द न करेंगी।'

'अजीब समस्या है।' शर्मा बोला, 'एक तरफ़ मेरे माता-पिता भूख हड़ताल किये हैं और दूसरी तरफ़ तुम्हारी अम्मा ने ज़िद पकड़ ली है।'

गुल ने शर्मा के कन्धे पर सर टिका दिया, 'मैं अम्मा के बगैर ज़िन्दा नहीं नहीं रह सकती।'

शर्मा ने जेब से एक बहुत पुरानी-सी पत्रिका निकाली और गुल को देते हुए बोला, 'घर से लौट कर सामान देखा तो उसमें बाबू जी ने १९२४ में छपी यह 'भारत भगिनी' नाम की पत्रिका रख दी थी और साथ में यह पुर्ज़ा।'

गुल ने पुर्ज़ा पढ़ा, लिखा था :

'बरखुरदार, तुम्हारे मुतालये के लिए श्रीमती गोपी देवी पुत्री ला० नत्थू-मल (स्वर्गवासी) सरकारी वकील गाज़ियाबाद का लेख रख रहा हूँ। यह लेख पढ़ लो। इसके अलावा मुझे कुछ नहीं कहना।'

गुल ने पढ़ा, लेख का शीर्षक था—'नाच'। वह अपनी कलाई का टिकिया

बना कर वहीं बालू पर लेट गयी और पढ़ने लगी। शर्मा ने गुल के पेट को अपना तकिया बना लिया और टकटकी लगा कर गुल को पढ़ने लगा। गुल खुले पढ़ रही थी :

'अव्वल इन वेश्याओं का पेशा कैसी बेशरमी और बेहयाई है कि जो रईस साहूकार इनके दांव फरेब में फँस जाता है उनकी रिहाई बहुत मुश्किल है और उस तरफ़ तबियत लग जाने से इन्सान इन्सानी दर्द, औरत, औलाद की परवरिश, तालीम और तरबीयत करने से जो इनका ऐन फ़र्ज है ग़ाफ़िल किनाराकश और अलहिदा हो जाता है। आखिर को उसकी बुरी नौबत होती है। हजारहों रुपये उनके बर्बाद हो जाने के बाद उसके साथ जो सुलूक किया जाता है वह भी जाहिर ही है। जो लोग इस मर्ज़ में मुबतला हो जाते हैं वह अपनी ख्वाहिश पूरी करने में क्या-क्या बुराइयां नहीं करते। बड़े आदिल हुकमरान मुनसिफ़ मिजाज़ हाकिम इस फन्दे में आकर नामुन्सिफ़ हो जाते हैं। न्याय को हाथ से दे देते हैं, करजदार हो जाते हैं; रियासत को ख़ाक में मिला बैठते हैं; और मज़हब ईमान तक तबदील कर लेते हैं। गफ़लत और सुस्ती से इन्तज़ाम की चाल ढीली पड़ जाती है जिससे मुफ़लिसी जल्द पकड़ लेती है।

'नाच की महफ़िलें नौजवानों, नौ-उमरों, नौ-खेजों के फँस जाने और सबक सीखने से गोया इबतदाई मकतबखाने हैं। अक्सर अमीर और साहूकारों के लड़कों को ऐसी ही महफ़िलों में लाशा लगा कर फँसाया जाता है। ऐसी महफिलों में बड़े और छोटे सब ही शामिल होते हैं। वहां न बड़े छोटों का कुछ ख़याल रखते हैं, और छोटे न बड़ों का कुछ अदब और परवाह करते हैं। अक्सर देखने में आया है कि उसी जगह लड़के वाले मौजूद हैं और बाज लोग बीच महफिल में तमाम के रोबरू रंडी को अपने सामने बिठा लेते हैं और मजाक की गुफ़्त-गू करते हैं। रंडियों का तो पेशा ही यह है कि वह खुद ही ऐसों की मुतलाशी रहती हैं। दूसरे अपनी मेहनत बचाने को एक बार कहने पर बार-बार बैठी रहती हैं। कहिए जब बड़ों की यह कैफ़ियत है तो नौजवानों को उससे नफ़रत क्यों कर पैदा हो सकती है? इसके इलावा बाजे वक्त रंडियां बरमला फ़ोहश राग महफ़िल में गाती हैं—क्या इन कार्रवाइयों से कोई कह सकता है कि नौजवानों की तबीयत खराब नहीं होती और उनके दिलों पर असर नहीं पड़ता? अगर बग़ौर जांच की जावे इन्हीं महफ़िलों की बदौलत हर एक कसबा और शहर में आये साल दस-पांच मालदार साहुकार नाचबाज़ पैदा हो जाते हैं और मौरूसी तरका बापदादे के अन्दोखते को दो-चार साल में स्वाहा कर देते हैं—इसी दरयाये अमीक के

अन्दर नेकनामी के जहाज को गारत कर देते हैं । जीते जी बीवियों को रांड, बाल-बच्चों को यतीम बना देते हैं । घर में चाहे रोजा रहे, पर रंडियों के यहाँ रोज ईद मनाते हैं ! भला कहिए इससे ज़ियादा दुनिया में कोई नुकसान पहुँचानेवाली दूसरी चीज भी होगी ?'

'बाज दफ़ा तो यह भी देखा गया है कि बाजे साहब दूर अंदेशी को बलाये-ताक रख मस्तूरातों को भी उसी जलसे महफ़िल का दिखाना जरूरी ख्याल करते हैं। गृहस्थ और कुनबे में जवान-बुढ़िया, बेवा, सुहागिन, नौउमर, बच्चे, बहिन, बेटी, मां, बहू भी शामिल होती हैं और दूसरी जगह से महफ़िल की रौनक को बराबर देखती रहती हैं । अब कहिए हमारा बरसरे महफ़िल रण्डियों की इज्जत करना उनकी तबीयतों पर कैसा बुरा असर पैदा करता होगा ? अक्लमन्द को इशारा काफी है । सत्य व न्याय धर्म का मूल है । रण्डियों के शौक में गिरफ्तार होकर सत्य व न्याय का मूल काटने को मुस्तैद और तैयार हो जाता है । नौजवान लड़के मिसाल पौदे के होते हैं । उनकी तबीयतों ो चाहे जिस तरफ चाहो फेर लो । जवान होकर जब वह किसी दिलरुबा पर शैदा हो जाते है, तो यह आदत उनके अनवसरों में शामिल हो जाती है और फिर उनको कोई नसीहत कारगर नहीं होती ।'

गुन ने लेख पढ़ा और शर्मा को थमा दिया ।

'कैसा है ?'

'वाहियात है ।' गुल बोली, 'लगता है किसी जाहिल औरत ने लिखा है। उसे यह भी नहीं मालूम कि वेश्याएँ न होतीं तो हिन्दुस्तान के पारम्परिक संगीत, कला और नृत्य का विनाश हो गया होता। शायद यह भी नहीं जानती कि समाज में वेश्याएँ न होतीं तो पूरा समाज विषय-वासना का पंक बन जाता । नाली को बन्द कर दो तो देखो कितनी बू पैदा होती है । समाज के तथाकथित ठीकेदार इसी भाषा में सोचा करते है । उनके भीतर सड़ाध भरी है । बड़े बड़े समाज सुधारकों को मैंने अँधेरे में कोठों की सीढ़ियाँ चढ़ते देखा है । जिस शख्स में इतिहास को समझने की बुद्धि न होगी, वह इसी प्रकार की बाजारू टिप्पणियाँ करेगा । मैं तवायफ़ों के पेशे को बहुत इज्जत से देखती हूँ । मैं उन औरतों की बात नहीं कर रही जो जिस्म का सौदा करतीं हैं । मेरा आशय उन खानदानी तवायफों से है जिनके यहाँ आज भी शास्त्रीय संगीत, नृत्य और वादन का सम्मान है । जिनकी पूरी जिन्दगी इन कलाओं को समर्पित है । जो आठ-आठ दस दस घण्टे आज भी रियाज करती हैं ।'

'मैं नहीं चाहता तुम उस दुनियां के बारे में अब और अधिक सोचो । मुझे अच्छा नहीं लगता ।'

'मगर यह हक़ीकत है। मैं उसी दुनिया में रहती हूँ और मेरी ू
उस दुनिया के साथ है।'

'हमदर्दी होना एक बात है और दुनियाँ का अंग बनना दूसरी ब

'इस दुनिया में भी उतनी गन्दगी है जितनी दूसरी दुनिया मे
दुनिया में भी ईर्ष्या-द्वेष है मगर वह मक्कारी नहीं जो तथाकथित स
में है।'

'तुम इतनी जल्दी तुलना पर क्यों उतर आती हो?'

'मुझे यही सोच कर दुःख होता है कि लोग हमारे बारे में बहुत
शनाप बोलते हैं। अखबारों में अनाप-शनाप लिखते हैं।' गुल बोली,
यह है कि कुरआन की हूरें हमीं हैं, हिन्दू ग्रन्थों में बताया गया है कि
और अप्सराओं की उत्पत्ति नर और नारायण के तपोबल से हुई थी
नहीं, अंग्रेजी, अरबी, फारसी साहित्य की परियाँ भी हमीं है।'

'हाय रे।' शर्मा को गुल पर प्यार उमड़ आया। उसने गुल का ह
हाथों में पकड़ा और अपने मुँह के पास लाकर चूम लिया, 'अच्छा यह
हूर कैसी होती है?'

'बतायें?' गुल ने कहा और सचमुच बताने लगी, 'हूर को केसर-
अम्बर और काफूर की बनी हुई बतलाते हैं। उसका जिस्म बिल्लौरी हो
वह रेशम की सत्तर ओढ़नियाँ भी ओढ़ ले तो भी उसके आर-पार दे
सकता है।'

'लगता है, अल्लाह मियाँ ने मुझे भी एक हूर देने का फैसला कर लि

'क्यों नहीं। नेक काम करने से जो लोग बहिश्त में जाते हैं, उन्हें
मिलती है।'

'मैंने तो अभी तक कोई नेक काम नहीं किया!'

'शायद इसी वजह से दिक्कतें पेश आ रही हैं।' गुल बोली।

'ठीक कह रही हो।' लगता है मुझे भी अब कुछ नेक काम करने प

गुल खड़ी हो गयी, 'अम्मा आज इतना डाँटेंगी कि महीनों घर से
न निकल पाऊँगी।'

शर्मा भी खड़ा हो गया। गुल ने मुट्ठियों में बालू ली और शर्मा की
जेबें भर दीं। गुल ने जो बालू जेब में भर दी शर्मा उसे घर ले जाना
था। आज का यही प्रसाद था। शर्मा के पीछे की जेब खाली थी। गुल
मुट्ठी बालू उसकी पीछे की जेब में भी भर दी। अब शर्मा की कोई जेब
नहीं थी।

यह संयोग ही था कि अगले रोज़ विश्वविद्यालय से छूटते ही शर्मा सीधा गुल के यहाँ पहुँचा। गुल के साथ बिताये क्षण भुलाए न भूलते थे। वह कल्पना में तब से गुल के साथ बालू पर पड़ा था। गुल ने जो बालू उसकी जेब में भर दी थी, वह उसने चीनी मिट्टी की एक ख़ूबसूरत तश्तरी में कार्निस पर सजा दी थी।

शर्मा के सेवक ने बालू देखी तो बहुत हैरान हुआ, बोला, 'बैठक में यह बालू क्यों रख दिया है?'

'बालू आग बुझाने के काम आती है।' शर्मा बोला, 'कभी सिनेमा देखने गये हो तो देखा होगा वहाँ बालू की बाल्टियाँ लटकी रहती हैं।'

सेवक असमंजस में पड़ गया, 'मगर इतनी बालू क्या होगा?'

'आग बुझाएँगे।' शर्मा बोला, 'यह बालू मुझे एक तांत्रिक ने दी है। श्मशान घाट की बालू है। इसके बहुत फ़ायदे हैं।'

शर्मा दिन भर गुल को देखने के लिए विश्वविद्यालय में भटकता रहा था, मगर हर बार नफ़ीस ही दिखायी दिया था। गुल के यहाँ पहुँचा तो वहाँ भी सब से पहले नफ़ीस से ही मुलाकात हुई। शर्मा को देखकर वह मुस्कराया और शर्मा के आगे आगे चल दिया। उसने आदरपूर्वक शर्मा को बैठक में बैठाया। कमरा शर्मा का पहचाना हुआ था। इस बीच पुताई हो गयी थी, पर्दे बदले गये थे और फ़र्श पर नया क़ालीन बिछा था। कुर्सियों की गद्दियों में रुई की जगह फ़ोम था। एक चीज़ नहीं बदली थी। कमरे में लटक रही तस्वीरें। वे हटा दी जातीं तो कमरा किसी सम्भ्रान्त परिवार का आभास देता। मेज़ पर दो एक पत्रिकाएँ पड़ी थीं। शर्मा पन्ने पलटने लगा। उसने पत्रिकाओं में साप्ताहिक भविष्य पढ़ा और मेज़ पर रख दी। भविष्य उत्साहजनक नहीं था। दोनों पत्रिकाओं ने जल्दबाज़ी में निर्णय न लेने का परामर्श दिया था। मगर शर्मा ने तय कर रखा था, आज बग़ैर किसी संकोच के अज़ीज़न से दो टूक बात कर लेगा।

अज़ीज़न कमरे में दाखिल हुई तो शर्मा खड़ा हो गया, '*आदाब।*'

'आदाब! तशरीफ़ रखिए।' अज़ीज़न बोली, 'इस मुहल्ले में आना कैसा लगता है?'

'आप लोगों की वजह से आ जाता हूँ।' शर्मा बोला, 'वरना मैंने कभी कल्पना न की थी कि कभी इधर कदम रखूँगा। वैसे मुझे यह अच्छा लगता है कि यहाँ ज़िन्दगी की धड़कनें सुनी जा सकती हैं। हमारी तरफ़ तो शाम होते ही जैसे श्मशान की सी ख़ामोशी और सन्नाटा हो जाता है। बेहद वीरानगी है शहर के बाहर।'

अज़ीज़न टकटकी लगा कर प्रोफ़ेसर के चेहरे की तरफ़ देख रही थी। लड़का उसे पसन्द था। बात करते शरमाता था। विल्ली की तरह साफ़-सुथरा। चप्पल के अन्दर से उसके सुडौल पैर झांक रहे थे। शर्मा के पूरे व्यक्तित्व में एक ऐसी ताज़गी थी कि अज़ीज़न अनायास सोच गयी, गुल के लिए हूबहू ऐसे ही लड़के की उसने कामना की थी।

'गुल के लिए आपने क्या सोचा।' शर्मा ने सीधा सवाल किया।

'प्रोफ़ेसर साव गुल एक तवायफ़ की लड़की है।'

'मुझे मालूम है।'

'गुल मुसलमान है।'

'मुझे यह भी मालूम है।'

'गुल का कोई भाई नहीं है।'

'मैं जानता हूँ।' प्रोफ़ेसर ने कहा, 'आपकी इजाज़त मिल गयी तो मैं अपने को बहुत खुशनसीब समझूंगा।'

'आपके अब्बा हुज़ूर इस रिश्ते को मंजूर करेंगे?'

'मालूम नहीं। शायद नहीं। मगर मुझे मंजूर है।'

'मैं नहीं चाहती मेरी बिटिया ऐसे घर में जाए जहाँ उसे नफ़रत की निगाहों से देखा जाए।'

'ऐसा नहीं होगा।' प्रोफ़ेसर बोला।

'लगता है, आप एक जज़्बाती शख्स हैं। खूब अच्छी तरह से सोच-विचार लीजिए। कोई जल्दी नहीं है। हो सकता है इस बीच आपको गुल से भी अच्छी लड़की मिल जाये।'

'मैं खूब सोच चुका हूँ।' प्रोफ़ेसर को लगा यह औरत आसान नहीं है।

'मेरे लिए बहुत खुशी की बात है कि आप गुल को इतना चाहते हैं।' अज़ीज़न ने कहा, 'मगर एक बात बताइए, अगर यह शादी तय होती है तो क्या आप बारात लेकर आ पायेंगे, इस गली में।'

'बारात-वारात में क्या रखा है।' प्रोफ़ेसर ने कहा, 'मैं तो बहुत ही साधारण तरीके से शादी करना चाहता हूँ।'

'मगर मैं जब भी गुल की शादी करूंगी, बहुत धूमधाम से करूंगी। दोनों ही रीतियों से करूंगी। मेरी अम्मा बताया करती थीं कि हम लोग बुनियादी तौर पर हिन्दू ही थे और बादशाही ज़माने में ही हिन्दू से मुसलमान हुए थे।'

प्रोफ़ेसर बारात आदि के झंझट से निरुत्साहित हो रहा था। उसे आशा नहीं थी कि उसके माता-पिता या कोई भी रिश्तेदार इस शादी में शामिल होंगे। वह बहुत सादगी से बोला, 'मगर मैं कचहरी में शादी करने के पक्ष

में हूँ। आपकी इच्छा है तो बारात भी लेकर आऊँगा, उसमें मेरे रिश्तेदार न होंगे, माता-पिता के आने का तो प्रश्न ही नहीं।'

'आप एक पढ़े-लिखे आदमी हैं। यह सब आप खुद तय कर सकते हैं। शादी की हर रस्म इसी मुहल्ले में होगी।'

'ज़रूर होगी।'

'इस घर में बड़े-बड़े रईस और राजे-महाराजे आ चुके हैं। फिर बारात क्यों नहीं आयेगी?'

'ज़रूर आयेगी।' शर्मा बोला, 'मगर बहुत मुख्तसर-सी।'

'शादी के बाद मैं एक रिसेप्शन दूँगी, जिसमें पाँच सौ से कम लोग न आयेंगे।'

'मेरा इसमें कोई विश्वास नहीं, दिलचस्पी भी नहीं।' शर्मा ने कहा, दिखावे से मुझे चिढ़ है।'

'मेरी गहरी दिलचस्पी है, समाज को यह बताने में कि देखो मैंने अपनी बिटिया के लिए कितना अच्छा लड़का ढूँढा है। पिछले पचास बरसों से इस गली मे बारात नही आयी। अगर कचहरी में शादी हो गयी और बारात न आयी तो लोग यही कहेंगे कि गुल किसी के साथ भाग गयी। आप इन लोगों की जहनियत से वाकिफ़ नहीं।'

शर्मा टाँग हिलाने लगा। बोला, 'मेरी निगाह में यह एक सामाजिक कुरीति है। ब्याह-शादियों पर पैसा बर्बाद करना मुझे हमेशा से नापसन्द है। न ही मैं दहेज-वगैरह की बात सोचता हूँ। इस मामले में मैं बहुत आदर्श-वादी हूँ।'

'शर्मा जी, मैंने बहुत आदर्शवादी देखे हैं।' अज़ीज़न ने कहा, 'बेहतर हो आप अपने दोस्तों और माँ-बाप से भी मशविरा ले लें।'

'शादी मुझे करनी है, मेरे माँ-बाप को नहीं।' शर्मा ने कहा, 'यह मेरा निजी मामला है।'

'मैं इसे एक सामाजिक मामला मानती हूँ।'

'आप बहुत पुराने ख़याल की हैं।'

'नये खयालात आपको मुबारक हों। मेरी जान, मेरी बिटिया में बस्ती है। मैं उसे तक्लीफ़ में देख ही नहीं सकती।'

'मैं भी नहीं देख सकता।'

'सुना था बीच में आप घर गये थे।'

'हाँ गया था।' शर्मा बोला, 'माँ-बाप इस रिश्ते के लिए तैयार'

'मुझे पहले ही मालूम था कि वे लोग तैयार न होंगे।'

'मुझे ऐसी उम्मीद न थी।' शर्मा बोला, 'मुझे अपने माँ-बाप से ऐसी उम्मीद न थी।'

अज़ीज़न ने मुँह में पान रखा और बोली, 'आपने दुनिया देखी होती तो ऐसी उम्मीद न रखते।'

'ऐसी सूरत में मुझे क्या करना चाहिए!'

'इस बारे में मैं कोई राय न दे सकूँगी।' अज़ीज़न ने कहा, 'बात दर-असल यह है कि मेरे कुछ भी कहने का यही मतलब निकलेगा कि मैं आपको फुसला रही हूँ या निराश कर रही हूँ।'

'मैंने यही तय किया कि मेरे माँ-बाप राज़ी हों या न हों, मैं शादी गुल से ही करूँगा।'

'आपका सोचना जायज़ है।' अज़ीज़न बोली, 'मगर गुल के लिए उलझन पैदा हो जायेगी। आपके घर के लोग हमेशा उसे नफ़रत से देखेंगे।'

'मेरे घर में उसे पूरी इज़्ज़त मिलेगी।' शर्मा ने अज़ीज़न का रुख देखते हुए कहा, 'शायद यही वजह है कि मैं सोचता हूँ, क्यों न कचहरी में शादी कर ली जाये।'

'न, न, कभी नहीं।' अज़ीज़न बोली, 'पूरे समाज को इस शादी को मान्यता देनी होगी। अगर आप में बारात लेकर आने की हिम्मत नहीं तो यह शादी नहीं होगी।'

'हिम्मत की कमी नहीं है।' शर्मा परेशान हो उठा था। अज़ीज़न को अपनी इज़्ज़त, अपनी ज़िद और अपनी बिटिया की चिन्ता थी। वह सोचना भी नहीं चाहती थी कि शर्मा का एक सामाजिक दायित्व है। वह ऐसी नौकरी में है कि उसके लिए कुछ सामाजिक मानदण्डों का निर्वाह करना बेहद ज़रूरी है।

'मैं ऐसी नौकरी करता हूँ कि मेरे सामने बहुत सी कठिनाइयाँ हैं। जाने इस शादी को सामाजिक मान्यता कब मिले। अगर लड़कों ने ही कोई आन्दो-लन खड़ा कर दिया?'

'यह तो आपको मानकर चलना चाहिए कि बहुत से लोग बवाल करेंगे। हो सकता है आपको अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़े। इस शादी से हिन्दू खुश होगा न मुसलमान। उपकुलपति खुश होंगे न आपके विभागाध्यक्ष।'

'इसीलिए मैं सोच रहा था कि चुपचाप बग़ैर किसी तामझाम के शादी हो जाए। इसे सार्वजनिक बनाने से परेशानी ही बढ़ेगी।

अज़ीज़न को बात पसन्द न आयी। वह पान लगाने में व्यस्त हो गयी।

शर्मा को पान भेंट किया और बोली, 'मुआफ़ कीजिए, यह शादी न होगी।'

'क्यों ?' शर्मा के होंठ सूखने लगे।

'क्योंकि आप एक कमज़ोर इन्सान हैं। अभी इतना घबरा रहे हैं, बाद में जब समाज का दबाव बढ़ेगा तो आप भाग निकलेंगे। क्या मैं गलत कह रही हूँ ?'

शर्मा के पास इसके अलावा कोई चारा नहीं था कि कह दे, आप ग़लत कह रही हैं, मगर उसने कहा, 'आप जल्दबाजी में नतीजे पर पहुँच रही हैं।'

'हो सकता है।' अज़ीज़न ने कहा, 'मैं किसी से यह नहीं सुनना चाहती कि अज़ीज़न ने अपनी दौलत से लड़का ख़रीद लिया है। मैं जानती हूँ, सब यही कहेंगी।'

'मगर मुझे दौलत का लालच नहीं। मुझे गुल का लालच है।'

'मैं सिगरेट नहीं पीती,मगर अभी पीना चाहती हूँ।' अज़ीज़न दूसरे कमरे में गयी और एक लम्बी सी सिगरेट सुलगाकर चली आयी, 'आप सिगरेट पीते हैं ?'

शर्मा को देर से सिगरेट की तलब लगी थी, बोला, "पी लूँगा"

अज़ीज़न ने पाँच सौ पचपन का पैकेट शर्मा की तरफ़ बढ़ा दिया। शर्मा ने सिगरेट सुलगाया और कुर्सी पर पीठ टिका ली।

'गुल कहाँ है ?' शर्मा ने एक लम्बा कश लिया, इतना लम्बा कि देर तक धुआँ छोड़ता रहा।

'गुल तिवारीजी के यहाँ गयी हुई है। अभी नफ़ीस जाएगा उसे लेने।'

'कौन तिवारी जी ?'

'शहर के एम० पी०।' अज़ीज़न बोली, 'उनका लड़का मनोहर भी गुल से शादी करना चाहता है।'

'तिवारी जी तैयार हैं ?'

'तैयार ही समझिए। उनकी निगाह मेरी दौलत पर है। खुदा का क़रम है। कि तिवारी जी दो चार चुनाव तो इत्मीनान से लड़ सकेंगे। समाज में एक मिसाल कायम कर के कुछ वोट भी पा सकते हैं। मगर मुझे लड़का पसन्द है न तिवारी जी का कृपा भाव। जबकि लड़के के पास हिन्दुस्तान लीवर्स की एजेंसी है, देखने में भी माशा अल्लाह ठीक ही है, मगर मुझे यह रिश्ता मंजूर नहीं। तिवारी जी मुझे और गुल दोनों को इस्तेमाल कर ले जाएँगे और बाद में गुल को ज़लील करना तो बहुत आसान होगा कि गुल तवायफ़ की लड़की है, गुल मुसलमान है, गुल कुँआरी नहीं है। वे कुछ भी कह सकते हैं। इसका जवाब कौन देगा ?' अज़ीज़न सिगरेट के छोटे-छोटे कश ले रही थी। शर्मा को यह सब देखना बहुत विचित्र लग रहा था।

• •

शुभा के माता-पिता खींसे निपोरते हुए कमरे में दाखिल हुए तो शर्मा उन्हें देखकर हतप्रभ रह गया। वह उस समय अपने मित्र प्रकाश के साथ बड़ी आत्मीयता और तल्लीनता से बतिया रहा था। उसने आजतक गुल के बारे में अपने किसी मित्र से अपने मन की बात न की थी। आज अपने सहपाठी प्रकाश से मिल कर सहसा वाचाल हो गया था। दरअसल शर्मा ने खुद ही तार देकर प्रकाश को बुलाया था।

प्रकाश और शर्मा दोनों एक ही शहर और कालिज के थे। प्रकाश एम० ए० करते ही आई० ए० एस० में आ गया और शर्मा युनिवर्सिटी में। प्रकाश के आई० ए० एस० में आते ही उसे इतने रिश्ते आने लगे कि आखिर एक आई० ए० एस० अफ़सर की एम० ए० (अंग्रेजी) लड़की से उसकी शादी हो गयी। उसकी पत्नी अब दो बच्चे की माँ थी और वह बहुत तेजी से तरक्की करता हुआ गंजा हो गया था। प्रकाश ने आज शेव नहीं बनायी थी और शर्मा ने देखा उसकी ठुड्डी के अधिकांश बाल सफ़ेद हो गये थे। वह पहले से मोटा वाचाल और लम्पट हो गया था।

प्रकाश बड़ी बेतकल्लुफी से कुर्सी पर चौकड़ी मार कर बैठ गया था और शुभा के पिता को देखते ही उसे यह समझने में ज़रा भी देर न लगी कि यह आदमी भी जरूर उसी के कबीले का है यानी कि सिविल सर्वेण्ट। शुभा के पिता को राजा के बेटे की तरह सूट में लैस और शुभा की माँ को कीमती बनारसी साड़ी में देख कर प्रकाश के मन में आया कि कहे वे दोनों 'मेड फार ईच अदर' लग रहे हैं। मगर परिचय से पूर्व गुस्ताखी करने से वह किसी तरह अपने पर काबू पा गया। उन्हें देख कर वह और भी बेतकल्लुफ़ी से कुर्सी पर पसर गया। उसके पास कैमिस्ट्री की एक किताब पड़ी थी। उसने किताब उठा ली और उसमें डूबने का अभिनय करने में व्यस्त हो गया। शर्मा ने तुरन्त ही दोनों को परिचित कराया। प्रकाश ने जब देखा कि आगन्तुक पी० सी०

एस० है और वह आई० ए० एस० तो उसके व्यवहार में उद्दण्डता और बेन्याजी और बेफिक्री नमूदार होने लगी।

'आपको देख कर मैं विश्वास के साथ कह सकता हूँ', प्रकाश पहलू बदलते हुए बोला, 'आप दोनों मिल कर एक दम्पती, बल्कि यों कहना चाहिए एक आदर्श दम्पती बनाते हैं। हमारे एक प्रोफ़ेसर थे प्रोफेसर मदान, वे अक्सर कहा करते थे कि सफल दम्पती कुछ अर्से बाद शक्ल से भाई-बहन लगने लगते हैं।'

शुभा के पिता, गिरीशचन्द्र भारद्वाज गम्भीर स्वभाव के व्यक्ति थे। वे अपनी अन्य दो लड़कियों की तरह शुभा के लिए भी किसी आई० ए० एस० लड़के की तलाश में थे, मगर शुभा दो बार बना-बनाया खेल बिगाड़ चुकी थी। एक लड़का तो इसी बात से ऐंठ गया कि शुभा क्रिकेट को किरकेट और शाम को साम बोलती है। बिटिया का उच्चारण सुधारने के लिए उन्हें एक ट्यूटर रखना पड़ा था। दूसरे शुभा का क़द बहुत छोटा था, जबकि शुभा अक्सर ढाई इंच एड़ी के जूते पहनती थी और हेयर स्टाइल भी ऐसा था कि वह एक इंच और ऊँची दिखे। उसके पिता ने शर्मा को देखा तो लेक्चरार से ही समझौता करने का निश्चय कर लिया। शर्मा उनके दोनों दामादों से अधिक चुस्त-दुरुस्त, सुन्दर और गम्भीर था। शर्मा शहर में नया-नया आया था, उसकी ज़रूरत की तमाम चीज़ें, जो परमिट और लाइसेन्स से मिलती थी, उन्होंने शर्मा को अनायास ही उपलब्ध करा दी। उनकी इच्छा थी अगले वर्ष शुभा के भी हाथ पीले करके गंगा नहा लें और मकान बनाने का अपना अन्तिम सपना भी पूरा कर लें।

'आप लोग कल हमारे यहाँ खाने पर क्यों नहीं आते?' श्रीमती भारद्वाज अपना पल्लू ठीक करते हुए कहा, 'प्रकासजी आये हुए हैं, इसी खुसी में।'

'कल तो सोनी के यहाँ हम लोगों का डिनर है। गोंडा में मैं और वह साथ-साथ थे।' सोनी शहर के डी० एम० का नाम था।

'उन्हें भी बुलाया जा सकता है।' भारद्वाज ने कहा।

'सम्भव नहीं होगा।' प्रकाश ने कहा, 'मैं और वह रात की गाड़ी से ही दिल्ली रवाना हो जायेंगे। हमारे एक दूसरे कोलीग की लड़की की शादी है। मगर साहब मेरी समझ में एक बात नहीं आती कि लोग आज भी दहेज-वहेज के चक्कर से मुक्त नहीं हो पा रहे। जिस शादी में हम लोग जा रहे हैं वह दो लाख में तय हुई है। हमारे समाज में पढ़े-लिखे तबके की यह हालत है तो औसत आदमी का क्या हाल होगा।'

भारद्वाज खोखली-सी हँसी हँसे। वह शर्मा की उपस्थिति में इतने नाजुक

• •

शुभा के माता-पिता खीसे निपोरते हुए कमरे में दाखिल हुए तो शर्मा उन्हें देखकर हतप्रभ रह गया। वह उस समय अपने मित्र प्रकाश के साथ बड़ी आत्मीयता और तल्लीनता से बतिया रहा था। उसने आजतक गुल के बारे में अपने किसी मित्र से अपने मन की बात न की थी। आज अपने सहपाठी प्रकाश से मिल कर सहसा वाचाल हो गया था। दरअसल शर्मा ने खुद ही तार देकर प्रकाश को बुलाया था।

प्रकाश और शर्मा दोनों एक ही शहर और कालिज के थे। प्रकाश एम० ए० करते ही आई० ए० एस० में आ गया और शर्मा युनिवर्सिटी में। प्रकाश के आई० ए० एस० में आते ही उसे इतने रिश्ते आने लगे कि आखिर एक आई० ए० एस० अफ़सर की एम० ए० (अंग्रेजी) लड़की से उसकी शादी हो गयी। उसकी पत्नी अब दो बच्चे की माँ थी और वह बहुत तेज़ी से तरक्की करता हुआ गंजा हो गया था। प्रकाश ने आज शेव नहीं बनायी थी और शर्मा ने देखा उसकी ठुड्डी के अधिकांश बाल सफ़ेद हो गये थे। वह पहले से मोटा वाचाल और लम्पट हो गया था।

प्रकाश बड़ी बेतकल्लुफी से कुर्सी पर चौकड़ी मार कर बैठ गया था और शुभा के पिता को देखते ही उसे यह समझने में ज़रा भी देर न लगी कि यह आदमी भी ज़रूर उसी के कबीले का है यानी कि सिविल सर्वेण्ट। शुभा के पिता को राजा के बेटे की तरह सूट में लैस और शुभा की माँ को कीमती बनारसी साड़ी में देख कर प्रकाश के मन में आया कि कहे वे दोनों 'मेड फार ईच अदर' लग रहे हैं। मगर परिचय से पूर्व गुस्ताखी करने से वह किसी तरह अपने पर काबू पा गया। उन्हें देख कर वह और भी बेतकल्लुफ़ी से कुर्सी पर पसर गया। उसके पास कैमिस्ट्री की एक किताब पड़ी थी। उसने किताब उठा ली और उसमें डूबने का अभिनय करने में व्यस्त हो गया। शर्मा ने तुरन्त ही दोनों को परिचित कराया। प्रकाश ने जब देखा कि आगन्तुक पी० सी०

एस० है और वह याई० ए० एस० तो उसके व्यवहार में उद्दण्डता और वेन्याजी और बेफिक्री नमूदार होने लगी।

'आपको देख कर मैं विश्वास के साथ कह सकता हूँ', प्रकाश पहलू बदलते हुए बोला, 'आप दोनों मिल कर एक दम्पती, बल्कि यों कहना चाहिए एक आदर्श दम्पती बनाते हैं। हमारे एक प्रोफेसर थे प्रोफेसर मदान, वे अक्सर कहा करते थे कि सफल दम्पती कुछ अर्से बाद शक्ल से भाई-बहन लगने लगते हैं।'

शुभा के पिता, गिरीशचन्द्र भारद्वाज गम्भीर स्वभाव के व्यक्ति थे। वे अपनी अन्य दो लड़कियों की तरह शुभा के लिए भी किसी आई० ए० एस० लड़के की तलाश में थे, मगर शुभा दो बार बना-बनाया खेल बिगाड़ चुकी थी। एक लड़का तो इसी बात से ऐंठ गया कि शुभा क्रिकेट को किरकेट और शाम को साम बोलती है। बिटिया का उच्चारण सुधारने के लिए उन्हें एक ट्यूटर रखना पड़ा था। दूसरे शुभा का कद बहुत छोटा था, जबकि शुभा अक्सर ढाई इंच एड़ी के जूते पहनती थी और हेयर स्टाइल भी ऐसा था कि वह एक इंच और ऊँची दिखे। उसके पिता ने शर्मा को देखा तो लेक्चरार से ही समझौता करने का निश्चय कर लिया। शर्मा उनके दोनों दामादों से अधिक चुस्त-दुरुस्त, सुन्दर और गम्भीर था। शर्मा शहर में नया-नया आया था, उसको जरूरत की तमाम चीजें, जो परमिट और लाइसेन्स से मिलती थी, उन्होंने शर्मा को अनायास ही उपलब्ध करा दीं। उनकी इच्छा थी अगले वर्ष शुभा के भी हाथ पीले करके गंगा नहा लें और मकान बनाने का अपना अन्तिम सपना भी पूरा कर लें।

'आप लोग कल हमारे यहाँ खाने पर क्यों नहीं आते ?' श्रीमती भारद्वाज अपना पल्लू ठीक करते हुए कहा, 'प्रकासजी आये हुए हैं, इसी खुसी में।'

'कल तो सोनी के यहाँ हम लोगों का डिनर है। गोंडा में मैं और वह साथ-साथ थे।' सोनी शहर के डी० एम० का नाम था।

'उन्हें भी बुलाया जा सकता है।' भारद्वाज ने कहा।

'सम्भव नहीं होगा।' प्रकाश ने कहा, 'मैं और वह रात की गाड़ी से ही दिल्ली रवाना हो जायेंगे। हमारे एक दूसरे कोलीग की लड़की की शादी है। मगर साहब मेरी समझ में एक बात नहीं आती कि लोग आज भी दहेज-वहेज के चक्कर से मुक्त नहीं हो पा रहे। जिस शादी में हम लोग जा रहे हैं वह दो लाख में तय हुई है। हमारे समाज में पढ़े-लिखे तबके की यह हालत है तो औसत आदमी का क्या हाल होगा।'

भारद्वाज खोखली-सी हँसी हँसे। वह शर्मा की उपस्थिति में इतने

विषय पर बात नहीं करना चाहते थे। अभी तक इस विषय में शर्मा के विचार उन्हें ज्ञात नहीं हो सके थे। शुभा के नाम से पचीस-तीस हजार रुपये एफ० डी० एकाउन्ट के रूप में जमा थे। उन्होंने बहस में पड़ना उचित न समझा और शर्मा से बोले, 'क्यों शर्मा जी, आप इस विषय में क्या सोचते हैं?'

'यह....' प्रकाश हँसा, 'यह भी उन नवयुवकों में से है जो ऐसे विषयों पर शादी से पहले बात करना पसन्द नहीं करते।'

भारद्वाज ने अपनी पत्नी की ओर देखा। पत्नी ने उनकी ओर। पत्नी को प्रकाश की बातों में मजा आ रहा था, बोली, 'प्रकासजी, कितना अच्छा होता, आजकल के लड़कों का दृष्टिकोण आप जैसा होता।'

भारद्वाज साहब ने बड़ा बुरा मुँह बनाया। उन्होंने अपनी पत्नी को बीसियों बार सिखाया है कि सभा-सोसाइटी में 'श' को 'स' न कहा करे। जब से 'स' के चलते हुए शुभा का रिश्ता टूटा था, वह और भी सावधान हो गये थे। प्रकाश को इस पृष्ठभूमि का ज्ञान नहीं था, बोला, 'माता जी, मैं खुद एक भ्रस्ट इन्सान हूँ। देखिए इस समय मैं आपको कितना एन्लाइटेण्ड लग रहा हूँ, मगर मेरे माँ-बाप मेरी सादी का शौदा तय कर रहे थे तो मैं इन सवालों से बेखबर था।'

प्रकाश अचानक जानबूझ कर 'श' को 'स' और 'स' को 'श' बोलने लगा। शर्मा को समझते देर न लगी कि वह जानबूझ कर श्रीमती भारद्वाज को माता जी तथा 'श' 'स' का नाटक कर रहा है। उसे अपने दोस्त की यह हरकत बहुत असभ्य लगी। प्रकाश को शान्त करने के इरादे से शर्मा ने कहा, भारद्वाज साहब, यह शुरू से ही जोकर रहा है। एक बार इसकी प्रेमिका की साइकिल को एक लड़का ताला लगा कर चाबी ले गया। जब इसे मालूम हुआ तो कन्धे पर साइकिल उठाये उसके घर छोड़ आया। लड़की के बाप ने जब इसका शुक्रिया अदा किया तो उनके सामने दण्ड बैठकें पेलने लगा।'

'अरे तुम्हें याद है अभी तक?' प्रकाश बोला।

'आपकी लवमैरिज हुई थी?' मिसेज भारद्वाज ने प्रकाश से पूछा।

'शादी की बात से प्रकाश अत्यन्त उत्साहित हो गया। ताली पीट कर उठा और बोला, 'लव मैरिज करके मैं अपने बाप का नुकसान नहीं करना चाहता था।' वह अपनी बात पर खुद ही लोट-पोट होता गया, ''मेरे पिता को दहेज का लालच न होता तो बेचारे कब के स्वर्ग सिधार गये होते, वे इसी आशा में कुछ बरस और खींच ले गये।'

भारद्वाज साहब आज शर्मा से अन्तिम बातचीत करने के इरादे से आये थे, बीच में प्रकाश नाम के इस खलनायक को पाकर पति-पत्नी दोनों को बहुत

निराशा हो रही थी। भारद्वाज को दो दिन बाद ही ड्यू
के लिए आगरा चले जाना था और इन दो दिनों के कि
इतना नपा-तुला था कि वे दोबारा आ नहीं सकते थे और यह
अब कोई गुन्जाइश न रह गयी थी।

'अच्छा प्रकाश भाई, आपसे मिल कर बहुत खुशी हुई,' कहते हुए वे उठे। उनकी पत्नी ने भी हाथ जोड़ कर होठों पर मुस्कान भर ली।

'नमस्कार।' वह बोलीं।

'नमस्कार।' प्रकाश ने कहा।

शर्मा जब उन लोगों को बाहर तक छोड़ कर लौटा तो प्रकाश बैठे-बैठे ही आँख मारी और अपने बड़े-बड़े दाँतों की नुमाइश लगा दी।

'साले मैं अब तुमसे बात नहीं करूँगा।'

'माँ के पुतर, मैंने तुम्हारी रक्षा कर ली। मैं इन्हें देखते ही समझ गया था कि यह तुम्हारे खूंटे पर अपनी बिटिया बाँधने आये हैं।' वह गुनगुनाने लगा :

अब जब मुझको होश नहीं है
आये हैं समझाने लोग

'मगर मैंने तय कर लिया है, मुझे जो करना है।'

'अच्छा तो गुल के बारे में और कुछ बताओ। पहले यह बताओ तुमने उसके साथ कोई गुल खिलाया कि नहीं।'

'शट-अप।' शर्मा बोला, 'तुम घोर अनैतिक आदमी हो। मैं अब तुमसे बात नहीं करूँगा।'

'तुम साले निहायत चूतिया प्रोफ़ेसर हो। तुमने अभी दुनिया नहीं देखी। मैं अपनी बीवी को बेहद चाहता हूँ इसका मतलब यह तो नहीं हो गया कि मैं उसी के खूँटे से बँधा रहूँ।'

'लखनऊ आऊँगा तो भाभी से पूछूंगा, आप इसकी पत्नी हैं या खूँटा।'

'बेशक।' वह फिर दांत निकाल कर हँसा, 'मैं तुम्हारे साहस की दाद देना चाहता हूँ। अब मजाक बन्द, मैं तुमसे सिर्फ़ गुल के बारे में बातचीत करना चाहता हूँ। मैं नहीं चाहता तुम भावुकता में कोई गलत कदम उठा लो। मुझे लगता है तुम्हारे सामने दो विकल्प हैं, मगर मुआफ़ करना, दोनों ही बेकार हैं। तुम ऐसा करो हिन्दुस्तान टाइम्स में एक विज्ञापन दे दो, तब देखो तुम्हारे सामने कितने विकल्प आते हैं। मैं तुम्हारी एक मदद कर सकता हूँ कि प्रत्येक पत्र पर पूरे विवेक से विचार करने में तुम्हारी सही मदद करूँ। मगर तुम्हारी हालत देवदास से भी गयी-गुजरी है और मुझे लगता है, त

बिटिया तुम्हें ले ही डूबेगी। क्यों ?' प्रकाश ने शर्मा की ओर गर्दन घुमायी तो पाया शर्मा प्रकाश की उपेक्षा करते हुए चुपचाप एक उपन्यास पढ़ने में बात अनसुन तल्लीन था।

'शर्मे मैं कुछ बक रहा था !'

'इसीलिए मैं उपन्यास पढ़ रहा हूँ। तुम्हारे तमाम मूल्य तुम्हारी नौकरी में घुस गये हैं। मुझे अब ज़रा भी शक नहीं रहा कि तुम रिश्वत भी लेते होंगे। तुम्हारी चेतना नौकरशाही ने लील ली है। तुम्हारे लिए सम्बन्धों की 'सेंक्टिटी' समाप्त हो चुकी है। तुम जिस तरह बिना जान-पहचान के मेरे मेहमानों के साथ पेश आ रहे थे, उसे देख कर मैं इसी नतीजे पर पहुँचा हूँ कि तुम्हारा पूरा पतन हो चुका है। इस वक्त मैं तुमसे सिर्फ यह जानना चाहता हूँ कि शाम का खाना घर पर खाओगे या किसी रेस्तराँ में ?'

प्रकाश पहले तो शर्मा की तरफ़ बड़ी शरारत से देखता रहा, मगर शर्मा की बात ख़त्म होते-होते वह मुआफी माँगने की मुद्रा में आ गया, बोला, 'यार मुझे मुआफ़ करोगे। मैं बहक गया था।'

'खाना कहाँ खाओगे।'

'तुम दारू-वारू पीते हो ?'

'परहेज़ नहीं करता, तुम्हारे साथ पी भी सकता हूँ। एक शर्त पर। तुम मेरे व्यक्तिगत जीवन में दिलचस्पी नहीं दिखाओगे।'

प्रकाश हतप्रभ हो गया, मगर वह इस तरह शिकस्त खाने को तैयार नहीं था, बोला, 'आर्यसमाजी शिक्षण संस्थाओं में पढ़ने का मेरी मानसिकता पर भी ऐसा ही असर पड़ा था, मैं भी शुरू में किसी विधवा से शादी करने की सोचता था।'

'तुम्हारे लिए किसी भी चीज़ की पवित्रता शेष नहीं रह गयी।'

'पवित्रता के मेरे प्रतिमान दूसरे हैं। तुमने 'अन्ना केरेनिन' पढ़ा है ? अन्ना मेरी नज़रों में आज भी पवित्र है। जो आदमी अन्तरात्मा की आवाज़ सुनता है, वह पवित्र है, बस वही पवित्र है।'

'तुम्हारे जैसे लम्पट अपने तमाम कुकृत्यों को अन्तरात्मा की आवाज़ ही समझते आये हैं। वास्तव में आदमी जिस दिन अपने वर्ग से कट जाता है, उसकी रूहानी मौत हो जाती है। अपने मूल्य, अपनी आस्थाएँ, आदर्श उसे खोखले लगने लगते हैं।'

प्रकाश ने बड़े-बड़े दाँत निपोरे और उठ कर सोफ़े पर लेट कर तन्मयता से गाने लगा :

गिर गयी रे मोरे माथे की बिन्दिया

गिर गयी रे
गिर गयी रे
गिर गयी रे मोरे माथे की बिंदिया

शर्मा प्रकाश से उतना खफ़ा नहीं था जितना वह इस समय प्रकट कर रहा था। उसे मालूम है, प्रकाश ने अपने पिता की मृत्यु के बाद निहायत जिम्मेदारी से दोनों बहनों की शादी की थी, अपनी माँ को भी नियमित रूप से पैसे भेजता था। मगर इस तरह के दौरे प्रकाश को बचपन से पड़ा करते थे। प्रकट रूप से वह निहायत फूहड़ होने का भ्रम देता था जबकि कालिदास, शेक्सपियर, मार्क्स, गीता, कुरआन, उपनिषद्, परिवार नियोजन और क्रिकेट-किसी भी विषय पर वह धाराप्रवाह एवं अधिकारपूर्वक बोल सकता था। उसकी स्मरण शक्ति अद्भुत थी। संस्कृत के श्लोक हों या ग़ालिब के शेर या अंग्रेज़ी के सॉनेट—वह एक ही बार पढ़कर बरसों के लिए याद कर लेता था।

इस वक्त शर्मा ने उसे अकेले छोड़ना ही ठीक समझा। नौकर को खाने के लिए कह कर वह स्वयं दूसरे कमरे में जाकर बिस्तर पर लेट गया। एक लिहाज से उसे यह अच्छा ही लग रहा था कि प्रकाश की उपस्थिति में वह सुधा के माँ बाप के शिकंजे से निकल गया। वे लोग आज जरूर सुधा से मिलने की बात चलाते और वह अपने को निहायत विचित्र स्थिति में पाता।

शर्मा अभी सोकर उठा ही था कि अचानक प्रकाश उसकी रजाई में घुस आया और उसके बाल सहलाने लगा।

'आपका खादिम माफ़ी माँगने हाज़िर है।' उसने शर्मा की बाँहें सहलाते हुए कहा, 'आपका खादिम अपनी गुस्ताखियों के लिए न सिर्फ शर्मिन्दा है बल्कि अपने को बहुत अपराधी पा रहा है।'

शर्मा मुस्करा कर बैठ गया और चाय तलब की।

"मैं तुम्हारी मानसिक स्थिति को समझ रहा हूँ, मगर मुझे डर यही लगता है कि तुम्हारे इस कदम पर तुम्हारे परिवार की क्या स्थिति होगी?"

[illegible]

'मुझे शिकायत है तुम मुझसे प्यार करती हो?'
'मुझे शिकायत है मैं तुम से प्यार करता हूँ।'
'शिकायत यही कि तुम मुझसे प्यार नहीं करती।'

'मैं तब भी उसे नरक से निकालने की हर चन्द कोशिश करूँगा।'

'यह पवित्र काम तो तुम अपनी बलि दिये बग़ैर भी कर सकते हो। मेरा सुझाव है कि तुम नौकरी छोड़ कर वेश्या-उद्धार समिति का गठन कर लो। वहाँ तुम्हें बहुत-सी गुल मिलेंगी।'

'मगर मैं तो गुल से प्यार करता हूँ।' शर्मा बोला, 'और दूसरे बार-बार उस घिसे-पिटे शब्द का इस्तेमाल करना मुझे पसन्द नहीं।'

'तुमने अपनी भावनाओं को गुल के सामने रखा?'

'नहीं।' शर्मा बोला,' 'वक्त आने पर रखूँगा। वैसे अगर उसमें जरा सी भी समझ है तो मेरी आँखों में सब कुछ पढ़ चुकी होगी।'

'हूँ।' प्रकाश बोला, 'कौन कहता है मुहब्बत की ज़ुबाँ होती है।
यह हक़ीक़त तो निगाहों से बयाँ होती है।

'बहुत अच्छा शेर है।'

'शेर तो अच्छा है मगर तुमने सोचा है कि तुम्हारे मां-बाप इस प्रस्ताव को हरगिज़ मंज़ूर नहीं करेंगे।'

'मैं तुम्हें पहले बता चुका हूँ, मैं नहीं चाहूँगा, बाबू जी इसका विरोध करें।'

'क्या यह संभव है?'

'शायद नहीं।'

प्रकाश ने कलम और कापी उठा ली बोला, 'तुम यह कापी ले लो। एक तरफ़ इस शादी के पक्ष में जितनी बातें तुम्हारे दिमाग़ में आयें, लिखते चलो और दूसरी ओर विपक्ष की बातें। तुम काग़ज़ पढ़ोगे तो तमाम बातें तुम्हारी समझ में आ जायेंगी। अनिर्णय की स्थिति में मैं ऐसे ही किया करता हूँ। इस प्रोसेस से निर्णय पर पहुँचने में देर नहीं लगेगी।'

'लिख लूँगा।'

'नहीं अभी लिखोगे!' प्रकाश ने कहा, 'लो अब कापी खोलो। और प्वाइंट लिखते जाओ।'

'मुझसे यह सब नहीं होगा।'

'मैं तुम्हारी मदद करता हूँ। लिखो....लिखो....पहले पक्ष में ही लिखो (१) मुझे लड़की पसन्द है (२) इस बहाने वह नरक से निकल जायेगी, लिखो!

शर्मा ने कलम नहीं उठायी। बोला, 'यह बकवास है।'

'बकवास नहीं। मैं तुम्हें एक प्रश्नपत्र देता हूँ या लखनऊ से भेजूँगा। तुम हल करते-करते निर्णय पर पहुँच जाओगे। क्या यह नहीं हो सकता मैं उससे मिलूँ।'

'मुआफ़ करो।' शर्मा ने कहा, 'अभी-अभी एक रिश्ता तो तोड़ चुके हो।'

प्रकाश ने ठहाका लगाया, 'एक नहीं दो ! मैं खुद अपनी बहन के बारे में बात करने आया था, मगर मैंने तुरन्त अपने को पीछे खींच लिया। मुझे यह कहने में ज़रा भी संकोच नहीं।'

शर्मा झेंपने लगा।

प्रकाश ने कहा, 'देखो गुरु, करो वही जो तुम्हारी आत्मा कहे, मगर तुम भावुक आदमी हो। बाद में कहीं पूरा जीवन इसी कुण्ठा में न नष्ट हो जाए कि तुमने एक तवायफ़ की लड़की से शादी की। बहुत से लोग ऐसे भी होते हैं जो पहले तो वीरपुत्र बन कर इस प्रकार का क्रान्तिकारी कदम उठाते हैं और बाद में जब इस क़दम के अन्तर्विरोध उभरने लगते हैं तो बीवी को लगातार ज़लील करने में ही सुख पाते हैं। मुझे यकीन है, तुम एक भिन्न आदमी हो। ऐसी परिस्थिति में इस सम्भावना को भी नजरअन्दाज नहीं, किया जा सकता कि तुम उसे एक नर्क से तो मुक्ति दिला दो, मगर उसके लिए एक नये नर्क का निर्माण कर दो।''

शर्मा को आशा नहीं थी कि प्रकाश इस सरल तरीके से समस्या की तह तक पहुँचेगा। प्रकाश के प्रति उसके मन में पूर्वाग्रह समाप्त होने लगा। उसे लगा, प्रकाश उससे अधिक व्यवहारिक है, भावनाओं के सागर में निर्जीव कुन्दे की तरह बह नहीं रहा।

'अगर शादी तय होती है तो तुम जरूर आओगे।' शर्मा बोला।

'शीला भी आयेगी। हो सकता है शादी में मुझे तुम्हारा बाप ही बनना पड़े, क्योंकि मुझे नहीं लगता उग्रसेनजी शादी में शामिल होंगे।'

'मगर यह शादी होकर रहेगी।' शर्मा ने कहा।

'लेट अस सेलिब्रेट द आइडिया।' प्रकाश ने कहा और गाड़ी में से ह्विस्की की बोतल निकाल लाया।

'मैं इसे तुम्हारा साहस ही कहूँगा।' प्रकाश बोला, 'मैं इसे तुम्हारा दुस्साहस नहीं कहूँगा। यह भी हो सकता है तुम्हारे पीछे कुछ गुण्डे लग जायें। हमें हर पहलू पर विचार करना होगा।'

'गुण्डे ?' शर्मा चौंका, 'गुण्डे क्यों पीछे लग जायेंगे ?'

'तुम किसी के पेट पर लात मारोगे तो वह शांत रहेगा ?'

'मैं किसी के पेट पर लात नहीं मार रहा।'

'तुम अभी बच्चे हो, मैं दो-दो जिलों का जिलाधीश रहा हूँ। तुम बहुत आदर्शवादी निगाहों से चीजों को देख रहे हो। तुम इस 'अण्डरवर्ल्ड' को नहीं जानते।'

शर्मा डर गया। अब उसे विश्वास हो रहा था, वह चीजों को जितना

सरल समझ रहा था, चीजें वास्तव में उतनी सरल नहीं हैं।

'तुम एक शख्स के बारे में बता रहे थे, जो गुल को रोज़ विश्वविद्यालय छोड़ने आता है। वह कौन है ?'

'नफ़ीस।'

'मगर वह गुल का क्या लगता है ?'

'उसका बॉडी गार्ड है !'

'खूब !' प्रकाश बोला 'बॉडी गार्ड ! अगर वही तुम्हारी हत्या कर दे ?'

'तुम साले मुझे डरा रहे हो ?'

'मैं सच्चाइयों से तुम्हारा साक्षात्कार करवा रहा हूँ।'

शर्मा ने ग्लास उठाया और एक-एक घूंट पीने लगा। इस पक्ष पर उसने कुछ भी नहीं सोचा था। सहसा उसे एहसास हुआ कि चीजें उतनी सरल नहीं हैं जितना वह सोच रहा है। गुल को अपनाना न केवल अपने वल्कि उसके समाज से भी दुश्मनी मोल लेना था। ह्विस्की के पहले पेग की गर्मी ने उसका खोया हुआ आत्मविश्वास लौटा दिया।'

'वेल, अब मैं हर स्थिति का सामना करूँगा। अच्छा हुआ तुम चले आये। मैं अब जल्दी ही गुल से विस्तार से बात करूँगा।'

प्रकाश अभी तक परिस्थिति को समझने में मशगूल था।

'तुम गुल से बात कर लो, गुल की अम्मा से मैं बात करूँगा। मैं शीला को साथ लेकर जाऊँगा। अर्दली के साथ। सरकारी तामझाम के साथ।'

प्रकाश ने कहा, 'तुम जानते हो कि रिश्ता करते समय कुछ बातों पर ज़रूर ग़ौर किया जाता है।''

'जैसे ?'

'जैसे यह कि लड़की की पारिवरिक पृष्ठभूमि क्या है ? तालीम क्या है, कितने भाई बहन हैं, पिता क्या करता है, वह कुंआरी है या नहीं।'

'यह सब फ़िज़ूल की बातें हैं।' शर्मा ने कहा।

'अच्छा यह बताओ, तुम ऐसी लड़की से शादी कर सकते हो जिसका शील भंग हो चुका हो ?'

शर्मा ने इन तमाम बातों पर कभी ध्याय ही न दिया था, बोला, 'इसके बारे में मैंने कभी सोचा ही नहीं।'

'इसके बारे में कब सोचने का इरादा है ?' प्रकाश हँसा 'क्या शादी के बाद ?'

'योनि की पवित्रता को तुम बहुत बड़ा मूल्य मानते हो ?' शर्मा ने पूछा।

'शादी तुम करने जा रहे हो, मैं नहीं।' प्रकाश ने कहा, 'इसीलिए तो

मैंने पूछा था कि तुमने कोई गुल खिलाया कि नहीं ?'

'मेरे लिए गुल से पवित्र कोई चीज नहीं।' शर्मा ने कहा, 'वह पवित्रता का मानवीकरण है। उसकी माँ ने कितने कष्ट सह कर उसे पूरे माहौल से अलग रखा है, यह मैं जानता हूँ।'

'बहरहाल, एक दोस्त के नाते मैंने तुम्हें सब पूरी वस्तुस्थिति से आगाह कर दिया है। अब निर्णय लेना तुम्हारा काम है।'

'शुक्रिया।' शर्मा ने कहा, 'तुम्हारे मशिवरे की जरूरत महसूस हुई तो तार दूँगा। भाभी को साथ ले कर आना।'

'जरूर आऊँगी।' प्रकाश ने कहा, हर चीज वैसी नहीं होती, जैसे सतह से दिखायी देती है। अक्सर लोग जिन्दगी में एक ही बार शादी करते हैं, इसलिए इस मामले में तह में जाना जरूरी हो जाता है। हो सकता है कि अजीजन बी की जायदाद पर कुछ लोगों की नजर हो। अजीजन के बाद तुम उन को खटकने लगोगे। इन सब बातों पर ठण्डे दिमाग़ से गौर कर लेना। ख़ुदा हाफ़िज़।' प्रकाश ने कहा और विदा ले ली।

● ●

साहिल ने ज़िन्दगी में पहली बार इतनी लम्बी यात्रा की थी। वह आज तक लखनऊ से आगे नहीं गया था। अम्मां की बहुत तेज याद आ रही थी, मगर वह असमर्थ था। मसऊद ने उसे समय ही न दिया और एक बोरे की तरह गाड़ी में डाल दिया।

मसऊद ने रिज़र्व कम्पार्टमेंट में उसे किसी चमत्कार से बैठा दिया और वह शाहज़ादों की तरह गाड़ी में बैठा रहा। बीच-बीच में मुसम्मी-सन्तरे वगैरह भी लेता रहा। मसऊद ने उसे स्टेशन से ही उर्दू की दो-तीन पत्रिकाएं खरीद दी थीं। एक फ़िल्मी पत्रिका का नया अंक पाकर उसे बड़ा अच्छा लगा। आज तक उसने इस पत्रिका के पुराने अंक ही पढ़े थे। यह सोच कर भी उसे गुदगुदी हो रही थी कि रास्ते में दिल्ली स्टेशन भी आयेगा। दिल्ली देखने का उसे बहुत चाव था, मगर मसऊद ने ताकीद कर दी थी कि वह सीधा कालका मेल से ही लौट आये। दिल्ली देखने की हसरत मसऊद बाद में पूरी करवा देगा। मसऊद ने कहा, 'वह निहायत चुगद किस्म का फ़ोटो-ग्राफ़र है। आंखों पर मोटा चश्मा लगाता है और खाली समय में दाढ़ी खुजाता रहता है। तुम जाते ही एक नोट उसके सामने रख देना। साले के मुंह से राल टपकने लगेगी, ज्यादा न-नुकर करे तो यह रामपुरी चाकू दिखा देना। डरना मत। एक बात याद रखना कि बुनियादी तौर पर वह एक कायर इन्सान है।'

साहिल फ़ौरन तय नहीं कर पाया कि फ़ोटोग्राफ़र से मिलने पर वह क्या करेगा और क्या कहेगा, फिर भी उसने चुपचाप हामी भर दी।

'ज्यादा वक्त न लगाना।' मसऊद ने उसे गाड़ी में बैठाते हुए कहा, 'उसके पास एक बोसीदा-सा रजिस्टर है, उसमें मेरा नाम कृष्णकुमार ज़रूर लिखा होगा। नम्बर देख कर वह फौरन नैगेटिव निकाल सकता है। अच्छा, खुदा-हाफ़िज़।'

साहिल अपना मन बहलाने के लिए फ़िल्मी पत्रिका के पन्ने पलटता रहा।

उसे लगा यह पत्रिका उसी के लिए आया हुई है। वह हसीनों की तस्वीरों में खोया रहा और मन ही मन तय करने लगा कि एक दिन बहुत-सा पैसा कमा वह खुद फ़िल्म बनायेगा।

गाड़ी दिल्ली पहुँची तो साहिल को बहुत निराशा हुई। तब तक अँधेरा हो चुका था। देखते ही देखते अधिकांश लोग गाड़ी से उतर गये। वह अकेला रह गया तो मालूम हुआ कि उसे भी डिब्बा बदलना पड़ेगा। वह डिब्बा वहीं कटने जा रहा था।

नीचे प्लेटफ़ार्म पर उतर कर वह जगमगाते स्टेशन की तरफ़ आश्चर्य से देखता रहा। चारों तरफ़ चहल-पहल थी। रोशनी का एक रंगीन समुन्दर बह रहा था। उसके चारों तरफ़ एक अपरिचित भीड़ थी। किसी-किसी युवती को वह देखता ही रह जाता। उसे लगा अच्छा ही हुआ, वह नरक से निकल आया। उसका मन हुआ कि वह यहीं बस जाय। सोलन जाय और न ही अपने घर वापिस।

उसने नीचे एक ठेले वाले से गोश्त और चपाती लेकर पेट भर कर खाना खाया और कण्डक्टर से पूछ कर अपनी सीट पर बैठ गया। उसे नींद आ रही थी। गाड़ी घण्टों स्टेशन पर खड़ी रही। देखते-देखते डिब्बे में दूसरे लोग भी घुसने लगे। वह अपनी सीट पर लेटा रहा। लोगों के खूबसूरत सामान, उनकी खूबसूरत स्त्रियों को देखता रहा। बीच-बीच में अपनी अम्मा का ध्यान भी उसके दिमाग़ में कौंध जाता। अम्मां के बारे में कुछ भी सोचने से उसे दहशत हो रही थी। वह इससे पहले भी घर से भागा था, मगर तब अम्मा स्वस्थ थी और अकेली नहीं थी। उसके पास हसीना थी। अब अम्मा कोठरी में अकेली पड़ी रो रही होगी। सिगरेट ख़त्म होते ही वह जेब से नया सिगरेट निकाल कर सुलगा लेता और पहलू बदल लेता।

गाड़ी अभी दिल्ली स्टेशन पर ही खड़ी थी कि साहिल सो गया। चण्डीगढ़ में उसकी नींद खुली। वह अपनी सीट पर बैठ गया। ज्यों-ज्यों कालका पास आ रहा था उसके दिल की बेचैनी बढ़ रही थी। उसे यह भी लग रहा था कि पूरी गाड़ी में वह अकेला मुसलमान है। यह सोच कर उसे तसल्ली हुई कि उसके चेहरे पर कहीं नहीं लिखा कि वह मुसलमान है।

कालका से उसने सोलन के लिए बस पकड़ी। सोलन में थोड़ी सर्दी थी। उसने स्वेटर पहन लिया और ढाबे पर अण्डे का नाश्ता करके इधर-उधर टहलने लगा। टहलते-टहलते ही वह फ़ोटोग्राफ़र की दूकान 'चित्र-मन्दिर' भी देख आया। दूकान अभी बन्द थी, वह दोबारा उसी ढाबे में लौट आया। अण्डे का नाश्ता उसे अच्छा लगा था। वह वहीं बैठ कर उर्दू का अख़बार

पढ़ने लगा। उसे आश्चर्य हो रहा था कि यह कैसी जगह है जहाँ उर्दू तो है मगर मुसलमान नहीं। रास्ते में उसने एक दुकान पर शेव बनवायी थी, वहाँ भी उर्दू का अखबार दिखायी दे रहा था। साहिल ने पूरा अखबार पलट लिया। उसे अपने शहर की एक भी ख़बर देखने को न मिली।

सामने शिमला की पहाड़ियाँ दिखायी दे रही थीं। साहिल को यह सब इतना अच्छा लग रहा था कि वह जूतों से छोटे-छोटे पत्थरों को ठोकर लगाता एक घुमावदार सड़क पर चल पड़ा। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ जब वह चलता-चलता उसी बाजार में पहुँच गया जहाँ उसने 'चित्र-मन्दिर' देखा था। फ़ोटोग्राफ़र साहब भी उर्दू का अखबार पढ़ रहे थे। पीछे भगवान जी की मूर्ति के पास अगरबत्ती जल रही थी। चित्र-मन्दिर के बगल में पूड़ी की एक दुकान थी। बड़ी-बड़ी पूड़ियाँ कढ़ाही से निकाली जा रही थीं और पास ही बेंच पर बैठे लोग पूड़ियाँ खा रहे थे। बेंच पर एक जगह खाली हुई तो साहिल भी बैठ गया। उसने भी एक प्लेट पूड़ी खायी। फिर हाथ धोकर चित्र-मन्दिर की तरफ़ देखा। दूकान का मालिक उसी तरह इत्मीनान से अख़बार पढ़ रहा था।

वह दूकान के पास जाकर खड़ा हो गया। उसकी समझ में नहीं आ रहा था, बातचीत कैसे शुरू करे। उसका एक हाथ पतलून की जेब में था जो सौ रुपये के नोट को सहला रहा था। साहिल दीवारों में लगी तस्वीरों को देखता रहा।

'कहिए, फ़ोटो खिचवाइएगा?' फ़ोटोग्राफ़र ने पूछा।

'हूँ।'

'किस साइज में?'

साहिल ने मेज़ पर शीशे के नीचे एक छोटे आकार के चित्र की ओर संकेत किया।

'पाँच रुपये में तीन कापी।'

'ठीक है।' साहिल ने कहा।

फ़ोटोग्राफ़र के चेहरे की जड़ता दूर हुई। वह पर्दा उठाकर साथ वाले कमरे में घुस गया और लाइट वगैरह ठीक करने लगा।

थोड़ी देर बाद साहिल कैमरे के सामने स्टूल पर बैठा था। फ़ोटो में उसकी विशेष दिलचस्पी न थी। वह स्टूल पर बैठ कर फ़ोटोग्राफर की तरफ़ देख रहा था कि उसने कहा, 'जरा मुस्कराइए।' साहिल की [illegible]

इच्छा न हुई। वह तुरन्त नैगेटिव की बात कर लेना चाहता था, मगर टुकुर-टुकुर उसकी तरफ़ देखता रहा। फ़ोटोग्राफ़र ने तस्वीर खींच ली और उसके साथ-साथ दफ़्तर की तरफ़ चल पड़ा।

'कब मिल जायेगी।'

'यही दो घण्टे में।' उसने रजिस्टर खोलते हुए पूछा, 'नाम ?'

'सतीश !' साहिल बोला।

'पता ?'

'पता ?' साहिल हँसा 'कुछ भी लिख लीजिए।'

'मतलब ?' वह चश्मा उतार कर बोला ? 'आप एडवान्स लाये हैं ?'

साहिल ने गर्दन हिला दी।

'लाइए तीन रुपये दीजिए।'

साहिल ने सौ का नोट उसके हाथ में थमा दिया।

'सुबह-सुबह छुट्टा कहाँ मिलेगा ?'

'छुट्टे की जरूरत नहीं।'

'मतलब ?' उसने चश्मा पहन लिया, 'आप कौन हैं ?'

'आपके पास तो रिकार्ड रहता है, मुझे एक नैगेटिव चाहिए।'

'मेरे पास है ?'

'हाँ होगा।' साहिल ने कहा, 'जरूर होगा।'

'आप जितनी कापी कहेंगे, मैं छाप दूँगा।'

'मुझे नैगेटिव की जरूरत है।'

'कितना पैसा दीजिएगा।'

'सौ रुपये।'

'सौ रुपये ?' उसकी नाक चढ़ गयी, 'कितना पुराना है ?'

'ज्यादा पुराना नहीं।' साहिल बोला, 'पिछले साल बैसाखी पर खिंचवाया था।'

'आपका है ?'

'मेरा ही समझिए।'

फ़ोटोग्राफ़र ने नोट अपनी हथेली पर दाब रखा था। वह नोट छोड़ना नहीं चाहता था। उसने पूछा 'क्या नाम है आपका ?'

'सतीश।' साहिल बोला।

फ़ोटोग्राफ़र अन्दर से एक रजिस्टर उठा लाया। वह बड़ी तेजी से उसके पन्ने उलटने लगा। जनवरी, फ़रवरी, मार्च मई, दुबारा मई, फ़रवरी, जनवरी।

'माईयावा।' उसने रजिस्टर को गाली दी, 'यह रहा अप्रैल दस, --

चौदह ।'

साहिल प्रसन्न था। उसे लगा आदमी सीधा है, लालची है, जरूरत-मन्द है।

फ़ोटोग्राफ़र ने तेरह अप्रैल निकाल लिया। चौदह तस्वीरें खिची थीं। वह चश्मा चढ़ा कर पढ़ गया, 'इस दिन तो किसी सतीश ने तस्वीर नहीं खिचवायी।'

'देखिए कृष्ण कुमार ने खिचवायी थी कि नहीं।'

वह कलम हाथ में लेकर फिर सीढ़ी उतर गया, 'हाँ कृष्ण कुमार ने खिचवायी थी।'

फ़ोटोग्राफ़र का चेहरा उत्तेजना से लाल हो गया, 'माईयावे।'

'नहीं है क्या ?'

'है, मगर घर पर होगा।' वह बोला।

'कब मिल जायगा ?'

फ़ोटोग्राफ़र ने चश्मा उतार कर काउण्टर पर रख दिया और आँखें मलने लगा। देर तक मलता रहा। मलते-मलते आँखें नम हो गयीं, बोला, 'माईयावे।'

साहिल ने सोचा, पंजाबी में कुछ कह रहा है। उसने पूछा, 'कब हाज़िर हो जाऊँ ?'

उसने चश्मा पहन लिया, बोला, 'चार बजे घर जाऊँगा, आप पाँच बजे आइए।

'यह नोट ?'

फ़ोटोग्राफ़र ने अपनी गीली हथेली खोल दी, उसमें एक मुचड़ा हुआ सौ का नोट पड़ा था। साहिल ने नोट उठा लिया, 'पाँच बजे यह आपका हो जायेगा।'

'माईयावे।' फोटोग्राफ़र बोला, और खड़ा होकर अपनी बेल्ट खोल-कर फिर से बाँधने लगा।'

साहिल को विश्वास हो गया कि यह शख्स किसी भी सूरत में पाँच बजे उसके हाथ में नैगेटिव थमा देगा।

साहिल सीटी बजाता हुआ सीढ़ी उतर रहा था कि फ़ोटोग्राफ़र ने कहा, 'भाई साहब एडवान्स ?'

'कितना ?'

'तीन रुपये ?'

साहिल ने जेब में हाथ डाला। दस का एक नोट उसके हाथ में आया।

उसने नोट फ़ोटोग्राफर को थमा दिया। फ़ोटोग्राफ़र ने जेब से चाभी निकाली, कैशबॉक्स खोला और नोट गिनने लगा।

'शाम को हिसाब हो जायेगा।' साहिल बोला।

'रुकिये,' फ़ोटोग्राफ़र ने कहा,' मैं उसूल का आदमी हूँ, उधार देता हूँ, न लेता हूँ।'

साहिल रुक गया

वह दुकान से कूदा और छुट्टा कराने निकल गया। थोड़ी देर में वह मुस्कराता हुआ लौट आया और बोला, 'यह लीजिए सात रुपये। वैसे आप चाहें तो पूरा पेमेन्ट भी कर सकते हैं।'

साहिल ने पाँच का नोट ले लिया और सीटी बजाते हुए बाजार की तरफ़ बढ़ गया।

पाँच बजे के करीब साहिल मुंह में पान दबाये चित्र मन्दिर पहुँचा तो वहाँ दो आदमी और बैठे थे। दोनों के सामने एक तश्तरी में नमकीन तथा चाय के गिलास पड़े थे। ये लोग बड़े इतमीनान से बातचीत कर रहे थे। प्रत्येक के सामने कुछ कागजात थे।

साहिल को देखते ही फ़ोटोग्राफ़र खड़ा हो गया, 'आइए, आइए, आप ही का इन्तजार था।'

'नैगेटिव मिल गया ?'

'यही है ?' फोटोग्राफर ने सामने पड़े एक लिफाफे में से नैगेटिव दिखाते हुए कहा, 'आप शिनाख्त कर लें।'

साहिल ने देखा, मसऊद एक लड़की के कन्धो पर हाथ धरे इतमीनान से बैठा था। नैगेटिव में उसे मसऊद को पहचानने में जरा देर लगी, क्योंकि उसे लग रहा था, यह मसऊद की नहीं उसके पंजर की तस्वीर है।

'साला।' वह मुस्कराया, 'जहाँ जाता है मस्ती करता है।'

साहिल ने जेब से सौ का नोट निकाल कर फ़ोटोग्राफ़र को थमा दिया और जेब में नैगेटिव का लिफ़ाफ़ा रख कर चल दिया।

'अरे सुनिये।' फ़ोटोग्राफ़र के सामने बैठे शख्स ने कहा और अपना चश्मा ठीक करने लगा।

'कहिए ?' साहिल रुक गया।

'आप कृष्ण कुमार को जानते हैं ? वह हमारे भी दोस्त थे।'

उस आदमी की बात साहिल की समझ में न आयी, बोला, 'आपको धोखा हुआ होगा।'

'अरे धोखा नहीं, मैं उसे पहचानता हूँ। प्रो० सत्यदेवजी के यहाँ वह बावर्ची था।'

साहिल बवाल में नहीं पड़ना चाहता था। वह बड़ी लापरवाही से मुस्कराया और हाथ हिलाते हुए ढाल उतरने लगा।

'अरे साहब आप भी अजब आदमी हैं। एक शख्स आपसे बात कर रहा है और आप निहायत लापरवाही से चलते चले जा रहे हैं।'

साहिल ने देखा, चित्र-मन्दिर में बैठा दूसरा आदमी उसकी बाँह पकड़ कर उसे रुकने के लिए कह रहा था।

साहिल को दाल में कुछ काला नज़र आया। वह 'जल तू जलाल तू आई बला को टाल तू' कहते हुए बाँह छुड़ा कर भागा। वह आदमी उसके पीछे हो लिया। पहाड़ी इलाका था, सिर्फ़ एक सीधी सड़क थी। एक तरफ़ गहरी खाई और दूसरी ओर ऊँचे पहाड़ थे। साहिल भागता चला गया था। उसने पीछे मुड़कर भी नहीं देखा, मगर पीछा करने वाले आदमी के कदमों की आवाज़ उसे सुनायी पड़ रही थी। रास्ता चूंकि उतराई का था, उसे दौड़ने में मजा भी आ रहा था। साहिल ने महसूस किया कि धीरे-धीरे वह आदमी उससे पीछे छूटता चला जा रहा है। साहिल आश्वस्त हो गया तो धीरे-धीरे चलने लगा। वह अब थकान महसूस कर रहा था। आखिर उसने तय किया कि वह नीचे खाई में उतर कर सिगरेट पियेगा। उसने सिगरेट सुलगाई और दूर-दूर तक हरि-याली देख कर बहुत प्रसन्न हुआ। सूरज डूब रहा था। सारी घाटी सूरज के प्रकाश में सिन्दूरी और सुहागिन लग रही थी। हरी साड़ी वाली सुहागिन।....

सिगरेट फूंकते हुए उसकी निगाह उसी रास्ते की तरफ़ लगी हुई थी जिधर से वह आया था। वह तय नहीं कर पा रहा था कि उसे वापिस लौट जाना चाहिए या आगे बढ़ते रहना चाहिए। साहिल को यह सब सोचना बहुत नागवार लग रहा था, उसने आगे ही बढ़ते रहना महफूज़ समझा। निगेटिव उसकी जेब में था। उसने डूबते सूरज की रोशनी में निगेटिव निकाल कर देखा। मसऊद पर उसे बहुत गुस्सा आ रहा था। वह सिगरेट फूंकते हुए उसे चुन-चुन कर गालियाँ बकने लगा। वह गाली बक रहा था और नीचे खड्ड में खोद-खोद कर पत्थर फेंक रहा था।

साहिल अभी निगेटिव लिफाफे में रख ही रहा था कि उसे सामने से, जिधर वह भागने की योजना बना रहा था तीन-चार आदमी आते दिखायी दिये। उसे लगा, वह घिर गया है और उसका बचाव संभव नहीं है। उन

लोगा में से अपने दुश्मन को पहचानने में उसे ज्यादा देर न लगी। वह एक हाथ में लिफ़ाफ़ा और दूसरे हाथ में निगेटिव थामे वापिस भागा। तीनों आदमी उसके पीछे भागे। पहले तो उसकी इच्छा हुई खड्ड मे उतर जाये, मगर वह जानता था ये पहाड़ी लोग उसे खड्ड में ज़रूर धर दबोचेंगे, क्योंकि वह खड्ड में भाग नही पायेगा। चढ़ाई पर भागने से उसकी सास फूलने में ज्यादा समय न लगा। साहिल अपने भाग्य को कोसता हुआ, मुँह में रूमाल दबाए भागता जा रहा था। तभी सामने उसे फोटोग्राफ़र और एक दूसरा आदमी आते हुए दिखायी दिये। वे लोग गप्पें लड़ाते हुए धीरे-धीरे चले आ रहे थे।

साहिल को लगा अब उन लोगों के पंजे से बच नही पायेगा। साहिल को देख कर तीनों ताली बजाने लगे।

'रुको रुको भाई।' एक आदमी ने कहा।

साहिल जड़-सा अपनी जगह खड़ा हो गया। वे लोग उसके पास आकर रुक गये। साहिल की सांस फूल गयी थी। वह किसी भी बात का उत्तर देने की स्थिति में नही था।

''लगता है तुम एक शरीफ़ और अनाड़ी आदमी हो।' वह आदमी उसका हाथ थामते हुए बोला, 'दरअसल तुम्हारा कृष्ण कुमार प्रोफ़ेसर साहब के यहाँ से चोरी करके भागा है। हमें मालूम था, अगर वह पेशेवर चोर हुआ तो इस निगेटिव की तलाश में किसी को ज़रूर भेजेगा।'

साहिल का चेहरा सुर्ख़ हो गया था। उसकी साँस धौंकनी की तरह चल रही थी और वह बार-बार आस्तीन से पसीना पोंछ रहा था। रूमाल वह कहीं गिरा आया था।

'बरखुरदार इत्मीनान से बैठ जाओ दो घड़ी। साँस संभल जायेगी तो बात करेंगे।' साहिल ने एक ऐसे बकरे की तरह उसकी तरफ़ देखा जिसे एहसास हो चुका हो कि कल बकरीद है। उन लोगों की चंगुल से निकल भागना उसे अब मुमकिन नही लग रहा था। वह बीच सड़क मे सिर थामकर बैठ गया। अपनी बूढ़ी अम्मा और भागी हुई बहन हसीना की उसे बहुत तेज़ याद आयी। उसकी इच्छा हुई कि वह बहुत जोर से चीखे, इतनी जोर से कि उसकी आवाज खड्डों में टकराती किसी तरह उसकी अम्मा के पास पहुँच जाये। मसऊद से उसे गहरी नफ़रत हो गयी थी। मसऊद का ध्यान आते ही उसकी थूकने की इच्छा होती, मगर उसकी जुबान खुश्क हो चुकी थी। अपने को यो परदेश में अकेला और घिरा हुआ पाकर साहिल फूट फूट कर रोने लगा।

आधी रात को जब साहिल की नींद खुली तो उसने अपने को एक पहाड़ी हवालात में बन्द पाया। उस समय उसे पेशाब लगा था और उसका दिल बहुत जोर से धड़क रहा था।

• •

जिस रोज साहिल एक दारोगा के साथ इकबाल गंज स्टेशन पर उतरा इदुज्जुहा का दिन था। दारोगा ने उससे मसऊद का पता लिया और साहिल को घर जाने दिया। दारोगा अकेले ही मसऊद के यहां जाना चाहता था। इस मामले में वह बहुत स्पष्ट था। उसका उद्देश्य मसऊद को पकड़ना नहीं उससे कम-से-कम एक हज़ार प्राप्त करना था। साहिल से उसे जितनी जानकारी मिली थी उससे वह बहुत आश्वस्त था। दारोगा की बिटिया जवान हो रही थी और वह जल्दी से जल्दी कम से कम बीस हज़ार रुपये जमा कर लेना चाहता था। इस यात्रा में उसे टी० ए० डी० ए० अलग से मिलेगा। एक हज़ार में पांचसौ भी उसके हिस्से आ गये तो वह सन्तुष्ट रहेगा। साहिल के पास जितना पैसा था इन लोगों ने सोलन में ही बांट लिया था।

'मसऊद मुझे जान से मार डालेगा। जब उसे मालूम होगा कि उसका पता मैंने दिया है।'

'तू घबरा न बेटे।' दारोगा नन्दलाल बोला, 'बुरी सोहबत से बचना।'

'पुलिस मुझे तो परेशान न करेगी ?'

नन्दलाल मुस्कराया, बोला, 'न। तुम्हारे तिलों में तेल है न वज़न।'

साहिल कुछ न बोला। उसका दिल तेज़ी से धड़कने लगा था। वह अपने शहर में था। अपनी अम्मा के बहुत पास। वह जल्द से जल्द घर पहुँच जाना चाहता था।

'मालूम नहीं, अम्मां ने इस बरस बकरा खरीदा कि नहीं।' वह बुद-बुदाया और नन्दलाल से विदा लेकर तेज़-तेज़ कदम बढ़ाता घर की तरफ़ चल दिया। वह गया था तो उसकी जेब में चार सौ रुपये थे। लौटा है तो खाली हाथ। कसाइयों ने एक भी पैसा नहीं छोड़ा था।

'अम्मा बीड़ी बना रही होगी।' उसने सोचा, 'वह जाते ही अम्मा से लिपट जायेगा। मुआफी मांगेगा और जब तक अम्मा की नाराज़गी दूर न हो जाएगी, अम्मा से लिपटा रहेगा।'

चौक में बकरों का बाज़ार लगा था। बकरों की गन्ध वह दूर से ही महसूस करने लगा। वह बाज़ार में जाये बिना न रह सका। हर क़द और हर रंग का बकरा था। कई-कई बकरों के सींगों में फूलमाला पहनायी गयी थी। उसके कपड़े इस क़दर मैले और चेहरे की इस क़दर दाढ़ी बढ़ आयी थी कि उसकी हिम्मत न हुई कि दाम भी पूछ सके। वह जगह-जगह खड़े होकर स्थिति का जायज़ा लेता रहा। वह दाम जानना चाहता था। ज्यों ही उसे पता लगा कि ढाई सौ से कम में कोई बकरा नहीं, वह सीधा घर की तरफ़ लपका। उसकी अम्मा हमेशा तकलीफ़ उठा कर बकरीद पर हमेशा बकरा खरीदती रही हैं। उसकी आँखों के सामने वह दृश्य घूम रहा था कि कसाई बकरा काट रहा है, क़ुरआन की आयतें उसके कानों में गूंजने लगीं। वह दिन भर तश्तरी में गोश्त लिये पूरी गली में दौड़ता था। अम्मा ग़रीबों में इतना बांट देती थीं कि घर के लिए बहुत कम हिस्सा बचता।

गली की नुक्कड़ पर ही उसे न्याज दिखा। न्याज उसे पहचान भी न पाया। साहिल ने भी अपना हुलिया देखते हुए उससे दुआ सलाम न की। मगर उसे पूरी गली बहुत सुनसान लग रही थी। बीच-बीच में नये कपड़े और टोपी पहने बच्चे उसे नज़र आते। साहिल को लगा वह अपनी ही निगाहों में गिर चुका है। वह अम्मा से कैसे आँखें मिलायेगा।

तभी उसे नवाब साहब के यहाँ से हाथ में छुरी थामे कसाई निकलता हुआ दिखा था। वह बहुत जल्दी में था। उसकी आस्तीन पर और तहमद पर खून के ताज़े धब्बे पड़े थे। वह नवाब साहब के घर से निकला और बगल के घर में घुस गया। साहिल ने देखा गली की नालियों का पानी सुर्ख हो गया था। उसे याद आया सिर्फ़ होली पर ही उसने मुहल्ले की सदियों पुरानी बोसीदा नालियों में रंग बहते देखा था। आज नालियों को यों सुर्ख देख कर उसे याद आया, पिछली होली में उसने रंग का ठेला लगाया था। दस दिन में उसने सौ रुपये से ज्यादा पैदा किये थे।

इस्माइल खां ने साहिल को पहचान लिया और दूर से ही आवाज़ दी, 'साहिल हो का? अब क्या करने लौट रहे हो। तुम्हारी अम्मा तो अल्लाह को प्यारी हो चुकी है। कहां थे तुम?'

'मैं अम्मा से मिलने आया हूँ। बकवास बन्द करो।'

'यह बकवास नहीं। साले वह तुम्हारी राह देखते-देखते चल बसी।'

साहिल को विश्वास न हुआ। वह अपने घर की तरफ़ भागा। घर के कपाट खुले थे। आंगन में कौवे थे और ऊपर चीलें दौड़ रही थीं। कौवों को

गोश्त की दावत उड़ाने के लिए यही जगह मिली थी। पूरे मुहल्ले के ऊपर चीलें मंडरा रही थीं। वे एक हवाई जहाज की तरह नीचे उतरतीं और बगैर धरती को छुए गोश्त का टुकड़ा उठा कर आसमान में लौट जातीं। चीलों के मुंह या पंजों से कोई टुकड़ा गिर जाता तो कौवे उस पर झपटते। साहिल ने अपने घर को यों खुला और कौवों से घिरा पाकर एक ज़ोर की दहाड़ मारी। फिर वह अन्दर जाकर अम्मा की खटिया से लिपट-लिपट कर देर तक रोता रहा। उसके तमाम दोस्त इकट्ठे हो गये थे। लोग उससे सवाल कर रहे थे मगर वह बजाय जवाब देने के अपने को पीटता और रोता जा रहा था।

इदल्जुहा साहिल के ऊपर से गुज़र गयी बग़ैर साहिल को छुए। सुबह वह सबसे पहले अम्मां की कब्र पर फातिहा पढ़ने के लिए गया। उसकी इच्छा हो रही थी, थोड़ी-सी मिट्टी खोद कर अम्मा के साथ वहीं दफ़न हो जाये। फ़ातिहा पढ़ कर उसे बड़ा सुकून मिला। फ़ातिहा पढ़ते हुए उसे अचानक हसीना की बहुत तेज़ याद आयी। मगर उसके पास हसीना का पता नहीं था। उसने तय किया कि वह हसीना का पता पाकर जल्द से जल्द हसीना से मिलने जायेगा। कब्रिस्तान से वह सीधा घर की तरफ़ लौट आया।

घर में अम्मा के अलावा सब कुछ वैसे का वैसा पड़ा था। टूटी चिमनी वाली लालटेन उसी तरह छत से नीचे लटक रही थी। घर भर में बीड़ी के खामोश पत्ते सहमे पड़े थे। बिस्तर पर बहुत-सी धूल जम गयी थी, जैसे बिस्तर धूल के लिये ही बिछा था। धूल इत्मीनान से आराम फ़रमा रही थी। कोने में लोहे की कुर्सी पर अम्मा का एक लिबास पड़ा था उसे देखते ही साहिल को ज़ोर की रुलाई आ गयी। बगल के घरों से गोश्त और सालन उसके लिए आये थे, मगर साहिल को इच्छा न हुई कि वह रकाबी का ढक्कन भी उठा ले।

'या अल्लाह मुझे किस गुनाह की सज़ा दी है,' वह बुदबुदाया और रोने लगा, 'मैं अम्मां के बगैर कैसे ज़िन्दा रहूँगा।'

वह भूखा प्यासा वहीं फ़र्श पर लेट गया। मुहल्ले के तमाम लोग ईद की खुशी में मस्त थे। मालूम नहीं साहिल को कब नींद आ गयी। वह उसी तरह मैले-कुचैले कपड़ों में फ़र्श पर लेटा रहा कि अचानक किसी ने बहुत ज़ोर से उसके चूतड़ पर एक लात जमाई—'उठ हरामज़ादे। यह देख कौन आया है।'

साहिल ने घबरा कर आँखें खोलीं तो पाया मसरूर उसके सामने खड़ा

था। गुस्से से उसकी आँखें सुर्ख हो रही थी। उसके साथ ही दारोगा जी खड़े उन्हें देख कर लग रहा था दोनों पिये हैं।

'मेरी अम्मा नहीं रही।' वह बुदबुदाया।

'मैंने तुम्हें इसीलिए रवाना किया था कि तुम मुझे पकड़वाने का इन्तजाम करके लौटो? बोल डोस भी वाले।'

'मसऊद भाई, मुझे ग़लत न समझो। मैं बिलकुल बेकसूर हूँ। तुम्हारा मन हो तो तुम मुझे मार डालो। मैं यो भी अम्मा के बगैर जिन्दा न रह पाऊंगा।'

दारोगा को कुछ तरस आ गया, बोले, 'कुछ खाना-वाना खाया कि नही?'

'नहीं हुजूर, जब से अम्मा के इन्तकाल का पता चला, पेट में हौल-सा उठ रहा है।' वह ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा।

'साला चूतिया।' मसऊद बोला, 'चलो अन्दर जाकर हाथ-मुँह धो लो।'

साहिल वहीं खड़ा आस्तीन से आँसू पोंछता रहा।

दारोगा को बहुत बुरा लगा, वह आगे बढ़ा, उसने बहुत प्यार से साहिल के आँसू पोछे और बोला, 'दुनिया फानी है।'

साहिल ने बड़े अदब से सन्तरी की तरफ़ देखा और बोला, 'दारोगा जी, क्या मेरी अम्मा अब कभी नही लौटेंगी?'

'तुम जज्बाती हो रहे हो।' मसऊद ने कहा, 'जो इस दुनिया से कूच कर जाता है, वह कभी नहीं लौटता। और दूसरे अगर आदमी को जिन्दगी का इल्म है तो उसे मौत को चुपचाप मन्जूर कर लेना चाहिए।'

साहिल शायद इस सच्चाई को सुनने के लिए तैयार नही था, वह और भी ऊँची आवाज में रोने लगा।

दारोगा जी ने उसे उठाया और अपने साथ नल तक ले गये। उन्होने उसके मुँह पर पानी के छींटे दिये। पानी के प्रत्येक छींटे के साथ साहिल को अच्छा लग रहा था।

'जानते हो आज बकरा ईद है?' मसऊद बोला, 'आज के दिन की कुर्बानी का ख़ास महत्व है। तुम्हारी अम्मा की रूह को सकून तभी मिल सकता है अगर तुम अपनी जिन्दगी को खुशहाली में तबदील कर दो।'

मसऊद ने जेब से एक चमचमाता सिगरेट केस निकाला और एक सिगरेट दारोगा जी को पेश किया। दोनों ने सिगरेट सुलगाई। मसऊद ने साहिल के मुर्दा चेहरे पर धुआँ फेंकते हुए जेब से एक रिवाल्वर निकाला और हवा की तरफ़ करते हुए बोला, 'तुम्हारी किस्मत अच्छी थी जो तुम्हारे साथ

नन्दलाल भी आये। वरना तुम इस वक्त अपनी अम्मा के पास ही होते।'

'मैं जीना ही नहीं चाहता। मुझे इसी वक्त खत्म कर दो मसऊद भाई।' साहिल ने मसऊद के हाथ से पिस्तौल छीनने की कोशिश की।

'भक् चूतिया।' मसऊद बोला, 'कुदरत ने तुम्हें एक और मौका अता किया है। कल सुबह तुम दोबारा कालका मेल से दिल्ली जा रहे हो। तुम्हें दिल्ली स्टेशन तक एक छोटी-सा अटैची पहुँचानी है। दारोगा जी तुम्हारे साथ होंगे। मुस्तैदी से काम कर लोगे तो मैं न सिर्फ़ तुम्हें मुआफ़ कर दूँगा, तुम मालामाल भी हो जाओगे।'

'मैं मालामाल नहीं होना चाहता मसऊद भाई, मुझे मार डालो।'

'भक् साला!' मसऊद बोला, 'यह पिस्तौल देख रहे हो?'

'देख रहा हूँ।' साहिल बोला, 'मुझे खत्म कर दो। मैं कोई भी बहादुरी का काम करने लायक नहीं।'

मसऊद ने उसकी तरफ़ एक पैकेट फेंका और बोला, 'देखो मुँह हाथ धोकर कपड़े बदल लो। तुम्हारे लिये नया कुर्ता पजामा लेता आया हूँ।

साहिल जड़-सा वहीं खड़ा रहा। मसऊद ने अपने भारी-भरकम जूते की नोक से उसके कूल्हे पर एक ऐसी लात जमाई कि साहिल सीधा गली में लगे नल की तरफ़ चल पड़ा।

• •

लतीफ को तुरन्त इमरजेन्सी में भर्ती कराके लक्ष्मीधर ने मजदूरों से पूरी कहानी सुनी तो बोला, 'आप ही लोग कहते हैं कि यूनियन बनाओ, यूनियन बनाओ। भैया यह यूनियनबाजी ही पूरे फ़साद की जड़ है।' फिर उसने अचानक आकाश की तरफ़ हाथ उठा दिये और बोला—'या अल्लाह कहीं मिल को किसी ने आग न लगा दी हो।' लक्ष्मीधर ने वहाँ उपस्थित चारों मजदूरों के बीच एक सौ का नोट फेंक दिया और बोला, 'आप लोग जाकर इनकी बीवी को इत्तिला कर दें। बाकी पैसे घर खर्च और दूसरे जरूरियात के लिए दे दें। मैं यहीं लतीफ़ के पास बैठूंगा। न जाने कब किस दवा या सिफ़ारिश की जरूरत पड़ जाये।'

मजदूरों ने पहले तो पैसा लेने से इनकार कर दिया मगर बाद में वे चारों पैसा लेकर दरवाजे की तरफ़ चल दिये। थोड़ी देर में चार में से तीन लौट आये। लक्ष्मीधर उस समय बरामदे में टहलकदमी करते हुए सिगरेट फूंक रहा था, जबकि सामने ही बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था—'यहाँ धूम्रपान न करें।'

वे लोग चुपचाप लक्ष्मीधर के पीछे हो गये।

'डाक्टरों ने बताया है कि उसकी हालत गम्भीर है।' लक्ष्मीधर बोला, 'शायद खून की जरूरत भी पड़े।'

इस बीच मिल से पन्द्रह-बीस मजदूर आ गये थे। पूरा कारीडोर उन लोगों से भर गया था। सब मजदूर दहशत में थे। कोई किसी से बात न कर रहा था। तभी डाक्टर ने आकर बताया कि दो बोतलें खून और ग्लूकोज की तीन बोतलों का फौरन इन्तज़ाम किया जाये। लतीफ़ का ब्लड ग्रुप ए-बी था। लक्ष्मीधर को मालूम था कि डा० मीरा सक्सेना के यहाँ हर ब्लड ग्रुप का खून हमेशा उपलब्ध रहता है। डाक्टर मीरा सक्सेना केवल खून का धंधा करती थीं। बहुत से बेकार नवयुवक और प्रोफेशनल रक्तदाता जरूरत पड़ने पर उसके यहाँ खून बेचा करते थे। डा० मीरा सक्सेना के पास प्रत्येक ब्लड

ग्रुप के लोगों के नाम-पते भी थे। किसी भी ग्रुप की मांग आने पर वह सम्बन्धित व्यक्ति को बुला भेजती थीं।

लक्ष्मीधर ने अस्पताल से ही फ़ोन करके मालूम किया कि डाक्टर मीरा सक्सेना के पास ए-बी ग्रुप का खून उपलब्ध है या नहीं। पता चला कि हर ग्रुप का खून उपलब्ध है।

'कब का है?'

'बिल्कुल ताज़ा है। कल ही लिया है।' मीरा सक्सेना ने बताया, 'सौ रुपये की बोतल के हिसाब से पैसा भेज दें।'

लक्ष्मीधर ने दो सौ रुपये देकर ड्राइवर को रवाना कर दिया। एक मजदूर को रुपये लेकर ग्लूकोज़ की बोतलें लाने के लिए भेज दिया। मज़दूर अभी अस्पताल के मुख्य दरवाजे से बाहर भी न निकला था कि उसने देखा एक स्त्री बुर्का ओढ़े रिक्शा से उतरी। वह स्त्री रो-रो कर बेहाल हो रही थी। उसे अपने साथियों को दूसरे रिक्शे से उतरते देख कर यह समझने में देर न लगी कि वह स्त्री और कोई नहीं, हसीना ही है। लगभग भागते हुए हसीना अस्पताल के अन्दर दाखिल हुई।

'घबड़ाइए नहीं!' किसी ने कहा, 'खुदा पर भरोसा रखिए।'

हसीना बरामदे में पहुँची तो उसने बहुत से मजदूरों को उदास चेहरा लिये बरामदे में टहलते देखा। हसीना की सिसकियाँ किसी भटकी हुई रूह की तरह अस्पताल के कारीडोरों में गश्त लगा रही थीं कि मुँह पर पट्टी बांधे एक डाक्टर मुंह पर उँगली रख कर शान्ति बनाये रखने का संकेत कर गया।

'देखिए शान्त रहिए।' लक्ष्मीधर ने हसीना के पास जाकर कहा, 'ईश्वर ने चाहा तो लतीफ़ जल्दी ही ठीक हो जायेगा।'

हसीना ने चेहरे पर से बुर्का हटा कर लक्ष्मीधर की तरफ़ देखा और पूछा, 'क्या बहुत चोट आयी है?'

'किसी गुण्डे ने नुकीला पत्थर फेंका जो लतीफ़ की कनपटी पर लगा। बहुत खून बह गया है, मगर चिन्ता की कोई बात नहीं।'

लक्ष्मीधर ने देखा, रो-रो कर हसीना की आँखें सूज गयी थीं। लक्ष्मीधर को अपनी तरफ़ बहुत दिलचस्पी से देखते पाकर हसीना ने चेहरे पर बुर्का कर लिया। लक्ष्मीधर सचमुच उसकी सूरत देख कर चकित रह गया था। उसने ऐसी बिल्लौरी आँखें, ऐसा आकर्षक चेहरा, ऐसी ताज़ा अनछुई-सी त्वचा बहुत कम देखी थी। हसीना के चेहरे पर कुदरत ने नैसर्गिक शृंगार कर रखा था।

हसीना से खड़ा न रहा गया। वह दीवार के साथ पीठ टिका कर वहीं बरामदे में धम्म से बैठ गयी। बरामदे में और भी कई लोग गठरी की तरह पड़े हुए थे। चौकीदार कई बार आकर उन लोगों को उठा चुका था, मगर इधर-उधर टहल कर वे फिर बैठ जाते। अन्दर वार्ड से नर्सों की तेज़ आवाज़ और एनेस्थीसिया की गन्ध आ रही थी। तभी खटिया पर डाल कर एक बूढ़े को कुछ लोग इमरजेन्सी में ले गये। एक दूसरी तरह की भीड़ बरामदे में जमा होने लगी।

'खून का इन्तज़ाम हुआ ?' अन्दर से एक डाक्टर आया और उसने लक्ष्मीधर से पूछा, 'जल्दी कीजिए।'

'ड्राइवर को लेने भेजा है।' लक्ष्मीधर बोला।

'कहाँ भेजा है ?'

'मीरा सक्सेना के यहाँ।'

'वह खून न चलेगा।' डाक्टर बोला, 'उसे खून की गारण्टी हम नहीं लेते।'

'तब क्या करना होगा ?'

'आप इतने लोग है, क्यों नही लैब मे जाकर टैस्ट कराते ?'

यह कह कर डाक्टर पुन: आपरेशन थियेटर में घुस गया। लक्ष्मीधर ने सब लोगों को लैब की तरफ़ चलने को कहा। हसीना घुटनों मे सर दिये हुए चुपचाप बैठी रही। लक्ष्मीधर ने उसे भी साथ चलने को कहा तो हसीना ने कोई जवाब न दिया। दरअसल हसीना के दाँत जुड़ गये थे और वह बेहोश हो गयी थी। लक्ष्मीधर इमरजेन्सी की तरफ़ भागा और वार्ड बाय स्ट्रेचर में डाल कर हसीना को भी अन्दर ले गये।

'घबराने की कोई बात नहीं है।' एक छोटी उम्र की लेडी डाक्टर बोली, 'इसे गहरा सदमा पहुँचा है।'

'मैं खून का इन्तज़ाम करके अभी लौटता हूँ।' लक्ष्मीधर लैब की तरफ़ झपटा।

मज़दूरों का खून टैस्ट किया जा रहा था, मगर किसी का भी खून ए-बी ग्रुप का न निकल रहा था। लक्ष्मीधर को विश्वास था कि उसका भी खून ए-बी ग्रुप का न होगा। उसने लगे हाथ अपना भी खून टैस्ट करा डालने का इरादा किया। उसे कम-से-कम यह तो पता रहता कि उसका खून किस ग्रुप का है।

मालूम हुआ कि उसका खून ए-बी ग्रुप का ही है। उत्सुकता की लहर दौड़ गयी कि लक्ष्मीधर क्या

लगा जैसे वह इम्तिहान में नकल करते हुए पकड़ा गया हो। लक्ष्मीधर का ख्याल था कि सभी मजदूरों का एक ही ब्लड ग्रुप होता है, मगर अब यह जानकर उसे बहुत ताज्जुब हो रहा था कि प्रकृति मजदूर और मालिक को भी एक-सा ग्रुप दे सकती है। लक्ष्मीधर होठों पर जीभ फेर रहा था कि कम्पाउण्डर ट्यूब और दूसरे उपकरण लेकर लक्ष्मीधर के सामने यमदूत-सा खड़ा हो गया—

'जल्दी कीजिए।' वह बोला और लक्ष्मीधर को पंजा बढ़ाने को कहा।

लक्ष्मीधर ने धीरे से कहा, 'इससे कोई नुकसान तो नहीं होता ?'

'न न !' कम्पाउण्डर ने लापरवाही से कहा, 'दस दिन में नया खून बन जायेगा।'

उसने मशीनी ढंग से लक्ष्मीधर की कलाई प्रिक कर दी और ट्यूब से खून निकलने लगा। लक्ष्मीधर ने आँखें मूंद लीं। दांतों से उसने दोनों होंठ दाब लिये थे। उसने आँखें खोल कर निकलते हुए खून को देखा तो दुबारा आँखें मूंद लीं। मज़दूर लोग दूर खड़े बड़े कौतुक से यह दृश्य देख रहे थे।

लक्ष्मीधर को अचानक बहुत कमजोरी महसूस हुई। लगा, वह वहीं गिर पड़ेगा।

'घर जाकर गर्म-गर्म दूध पीजिए और थोड़ा आराम कीजिए।' कम्पाउण्डर ने कहा, 'एक बोतल का और इन्तज़ाम करना होगा।'

'देखो नीचे कुछ लोग हों तो उन्हें भी बुला लाओ। ड्राइवर आ गया हो तो उसे ऊपर भेजिए।'

लक्ष्मीधर पास रखे स्टूल पर बैठ गया और ड्राइवर का इन्तजार करने लगा। उसने जीवन में पहली बार खून दिया था। उसे अपनी नौकरी पर गुस्सा आ रहा था। वह मन ही मन अपनी स्थिति पर लानत भेजता रहा। उसे लग रहा था ये मालिक लोग उसका भी खून चूसे बिना न मानेंगे।

कई लोगों के जीना चढ़ने की आवाज़ आयी तो लक्ष्मीधर को आशा बँधी कि ड्राइवर भी इन लोगों में जरूर होगा। उसका अनुमान ग़लत न निकला। पांच-सात मज़दूरों के साथ उसका ड्राइवर भी था।

'आप लोग अब दूसरी बोतल का इन्तजाम कीजिए। मैं घर जा रहा हूँ। आप लोगों में से किसी का खून मेल न खाये तो कुछ दूसरे लोगों को बुला भेजिए।'

लक्ष्मीधर सीढ़ी से नीचे उतरा तो उसने देखा जगदीश माथुर भी सीढ़ी चढ़ रहा था।

'बहुत बुरा हुआ !' जगदीश माथुर बोला, 'भीड़ को काबू में करना

यह सुनते ही उमा घबराहट में लक्ष्मीधर से लिपट-सी गयी, 'सुनिये जी, आप ठीक तो हैं। आपने यह क्या कर डाला ?'

लक्ष्मीधर को ड्राइवर की बात ने बहुत बल दिया, वह तेज-तेज साँस लेने लगा। लक्ष्मीधर की हालत देख कर श्याम बाबू फोन की तरफ़ लपके और अपने फैमिली डाक्टर को फ़ोन मिलाने लगे।

'बहू जी जो कुर्बानी आज कम्पनी के लिए लक्ष्मीधर बाबू ने दी है, वह कौन देगा।' ड्राइवर ने भी मुसम्मी के ताजा रस का एक गिलास पिया था, बोला, 'न जाने डाक्टरों ने कितना खून निकाल लिया।'

'यह तो बहुत बुरी बात है।' उमा ने श्याम बाबू के सिर पर जाकर चिल्लाना शुरू कर दिया, 'यह तो निहायत अफ़सोसनाक बात है। दिन भर वे आपकी सेवा में लगे रहते हैं और उसका इनाम आपने यह दिया कि उनका खून मुफ्त में बँटवा दिया। इस तरह तो ये समाप्त हो जायेंगे। जाने कितने दिनों से सोये नहीं। रात भर कमरे में टहलते हैं।'

'डाक्टर आ रहा है।' श्याम बाबू ने कहा, 'लक्ष्मीधर तो मजदूरों के बीच हीरो हो गये होंगे।'

श्याम बाबू की बातें सुन कर भीतर-ही-भीतर लक्ष्मीधर की सारी कमजोरी दूर हो रही थी, मगर उन्होंने अपने को असहाय और निढाल बनाये रखना ही उचित समझा।

'यह आपकी ज़्यादती है श्याम बाबू, ये तो दिन भर पागलों की तरह अपना सिर फोड़ें.....'अचानक उमा की आवाज़ इतनी आर्द्र हो गयी कि वह आगे न बोल सकी। साड़ी के पल्लू से आँसू पोंछने लगी।

'तुम भी निहायत पगली औरत हो। देश भर के हजारों लोग रोज़ खून देते हैं। यह कोई बहुत घबराने की बात नहीं है। लक्ष्मीधर ने पहली बार खून दिया है इसलिए साइक्लोजिकली डर गया है। अभी डाक्टर आता होगा। ताकत की सुई लगवा दूंगा, ढेर से टानिक ला दूंगा, इतनी ताकत उसमें भरवा दूंगा कि.....'

ड्राइवर को देख कर श्याम बाबू चुप हो गये और ड्राइवर से कहा, 'ठीक है तुम जाओ।'

ड्राइवर चला गया, मगर उमा लक्ष्मीधर को देख कर बदस्तूर सिसकियां भरती रही। श्यामबाबू अब इस किस्से से बोर हो रहे थे। वे चाहते थे, डाक्टर आयें और वह इस माहौल से विदा ले। उन्होंने लक्ष्मीधर की नब्ज़ पकड़ कर घड़ी से नाप ली थी, वह ठीक-ठाक थी। श्यामबाबू से यह नाटक और बर-दाश्त न हुआ तो दूसरे कमरे में जाकर बेगम अख्तर की ग़ज़ल सुनने लगे।

उमा कुछ ऐसी मुद्रा में लक्ष्मीधर के बिस्तर के पास बैठी थी कि डाक्टर जल्दी न आया तो वह विधवा हो जायेगी। उसकी आँखो में एक दिव्य किस्म का सूनापन था। मालूम नहीं वह थकान की वजह से था अथवा लक्ष्मीधर की चिन्ता में। उसे देख कर लग रहा था, लक्ष्मीधर मर गया तो वह उसके साथ ही सती हो जायेगी।

वास्तव में लक्ष्मीधर एक बहुत मेहनती इन्सान था। बीमार भी बहुत कम पड़ता था। मन से जरूर कमज़ोर थो कि जुकाम भी हो जाये तो निढाल हो जाता। जैसे अब कभी ठीक न होगा। शुरू-शुरू में लक्ष्मीधर के पास स्कूटर था। अगर कहीं स्कूटर ओवरफ्लो कर जाता और कई किक लगाने पर भी स्टार्ट न होता तो उसका दिल ज़ोर ज़ोर से धड़कने लगता। उसे लगता, अगली किक के साथ ही उसे दिल का दौरा पड़ने वाला है। यही एक ऐसी कमज़ोरी थी जो उमा से आसानी से छिपायी जा सकती थी। उमा के सामने तो वह हमेशा एक बहादुर, चतुर और निडर आदमी की छवि पेश करता था। यही कारण था कि लक्ष्मीधर की तमाम कमज़ोरियों से वाकिफ़ होते हुए भी उमा मन ही मन ही कहीं उससे बहुत डरती थी। वह कई बार लक्ष्मीधर का गुस्सा देख चुकी थी। लक्ष्मीधर गुस्से मे कुछ भी कर सकता था, स्टीरियो फेंक सकता था, फ्रिज को औंधा कर सकता था, डायनिंग सेट पलट सकता था, नौकरी से इस्तीफ़ा दे सकता था, उमा को छिनाल कह सकता था, बच्चे को झापड़ रसीद कर सकता था। उमा जानती है नाजुक क्षणो मे किसी भी सीमा तक जा सकता था लक्ष्मीधर।

डाक्टर की गाड़ी गेट मे दाखिल हुई तो उमा ने राहत की साँस ली। श्याम बाबू का बेगम अख्तर सुनने का एक ही मकसद था कि वे इस पूरे काण्ड को अत्यन्त साधारण नाटक सिद्ध कर रहे थे। उमा आदरपूर्वक डाक्टर को अन्दर ले आयी। डाक्टर ने बहुत विस्तार से लक्ष्मीधर का मुआइना किया और बताया कि लक्ष्मीधर चुस्त-दुरुस्त है। ब्लडप्रेशर, नब्ज़, दिल, पेट, जिगर सब ठीक-ठाक काम कर रहे हैं।

'एगज़रशन है।' डाक्टर बनर्जी ने कहा, 'लगता है इस बीच लक्ष्मीधर ने बहुत काम किया है।'

'यूनियनबाज़ी ने मेरे दोस्त को बीमार कर दिया।' कमरे में दाखिल होते हुए श्यामबाबू ने कहा,' डाक्टर साब कोई ऐसा टॉनिक दीजिए कि लक्ष्मीधर दौड़ में मिल्खासिंह को पीछे छोड़ दे।'

डाक्टर अपने ब्रीफ़केस के ऊपर लेटरहेड रख कर लक्ष्मीधर के लिए टॉनिक ही लिख रहे थे।

उमा डाक्टर को विदा करने गयी हुई थी कि लक्ष्मीधर उठ बैठा और बोला, 'मुझे हसीना का बहुत अफ़सोस है। तुमने उसका ग़मगीन चेहरा देख लिया होता तो मिल उसके नाम कर देते। बेचारी।'

'उसके लिए कुछ करना चाहिए। लतीफ़ को अभी तक होश नहीं आया।' श्याम बाबू ने बताया कि उन्होंने अभी-अभी फोन से दरियाफ़्त किया है।

'उमा से कहो उसे यहीं ले आये। बल्कि उमा से कहो, वह अस्पताल जाये, हसीना और लतीफ़ दोनों की देखभाल करे।'

उमा ने लक्ष्मीधर को बात करते देखा तो राहत की साँस ली। बोली, 'चलिए आज कहीं बाहर डिनर लें। आज का डिनर मैं फुट करूँगी।'

डाक्टर के आने से लक्ष्मीधर अपने को काफी स्वस्थ अनुभव कर रहा था। इससे पहले कि लक्ष्मीधर कुछ कहता श्याम बाबू ने कहा, 'देखो उमा भाभी, लतीफ़ अस्पताल में बेहोश पड़ा है। सुनते हैं शहर में उसका कोई रिश्तेदार नहीं। हसीना रो-रो कर बेहोश हो गयी है। किसी को कुछ हो गया तो कितनी बदनामी होगी।''

'यह तो मेरी बात का जवाब नहीं।'

'यह आप ही की बात का जवाब है।'

'कैसे ?'

'मेरे कहने का मतलब है, आज का डिनर मैं फुट करूँगा।'

'आपकी ये उलटबांसियाँ मेरी समझ में नहीं आतीं।'

'या रब वो समझे हैं न समझेंगे मेरी बात।' श्याम बाबू ने कहा, 'भाभी तुम्हें क्या हो गया है ?'

'मुझे देवर हो गया है।' उमा बोली, 'लक्ष्मीधर कहा करते हैं कि देवर भी एक रोग होता है।'

श्याम बाबू ने पूरा ज़ोर लगा कर एक फूहड़ किस्म का ठहाका लगाया। 'मेरी ही भाभी इतनी खूबसूरत और कमसिन बातें कर सकती है।'

उमा ने अपनी आँखों का सम्पूर्ण राग श्याम बाबू की आँखों में उंडेल दिया और बोली, 'मुझे खुद हसीना पर अफ़सोस हो रहा है।

'अफ़सोस करने से क्या होगा ?' श्याम बाबू ने कहा, 'जिसके लिए महसूस करो उसके लिए कुछ करना भी चाहिए। सिर्फ़ ज़ुबानी कलामी कुछ नहीं होता।'

उमा ने लक्ष्मीधर की तरफ़ देखा और बोली, 'भाई साहब आप तो ऐसा न कहें। लक्ष्मी तो अभी-अभी खून देकर आये हैं।'

'लक्ष्मी के खून से वह बच जाये तब तो।' श्याम बाबू ने कहा, 'बेहतर होगा आप दोनों मियां-बीवी हसीना को अपने संरक्षण में ले लें। वरना लक्ष्मी

का खून बेकार जायेगा।'

'अगर लक्ष्मी की तबियत ठीक हो तो उसे देख आयें।' उमा ने अनुमति लेने की मुद्रा में लक्ष्मी की तरफ़ देखा।

'श्याम बाबू का जाना ठीक न होगा।' लक्ष्मीधर ने कहा, 'कहा नहीं जा सकता कब क्या हो जाये।'

'मैं अकेले जाऊँगी। अगर हसीना तैयार हुई तो साथ लेती आऊँगी।'

'वह लतीफ़ को छोड़ कर कैसे आ पायेगी। बेहतर होगा उसके लिए कुछ खाना ले जाओ।' लक्ष्मीधर ने कहा, 'वहाँ ज्यादा देर न रुकना।'

'अच्छा तो हम चल दिये।' उमा ने कहा और नौकर को आवाज दी कि वह खाने के लिए कुछ पैक कर दे।

उमा अस्पताल पहुँची तो उसने सर पर पल्ला ले लिया था। अन्दर घुसते ही ज्ञात हो गया कि लतीफ़ की तबीयत बेहतर है। हसीना उसी के पास बैठी है। उमा धड़धड़ाती हुई इमरजेंसी वार्ड में घुस गयी। एक नर्स उसे लतीफ़ के बेड के पास छोड़ आयी। पास ही स्टूल पर हसीना बैठी थी। चुपचाप। असमर्थ। असहाय। लाचार।

अभी तक खून चढ़ाया जा रहा था। बोतल में से एक-एक बूंद गिर रही थी। बोतल पर एक कपड़ा डाल दिया गया था। पूरे वार्ड में सन्नाटा था। थोड़ी-थोड़ी देर में नर्स नब्ज टटोल जाती थी।

'अभी होश आया कि नहीं ?'

'बीच में आँखें तो खोली थीं।' नर्स ने बताया। हसीना उसी प्रकार शून्य में ताकती रही। उमा के आने से उसमें कोई हरकत न हुई थी।

उमा ने हसीना का सर बहुत प्यार से थपथपाया और अपने सीने से सटा लिया, 'तुम घबड़ाओ नहीं, लतीफ़ साहब ठीक हो जायेंगे।'

हसीना की आँखें गीली हो गयीं।

'देखो मैं तुम्हारे लिए कुछ खाना लायी हूँ, खा लो, सुबह से भूखी होगी।'

'हमें भूख नहीं है।'

तभी लतीफ़ ने एक बार फिर आँखें खोलीं। हसीना को देख कर दो आँसू दोनों आँखों से झर कर दो अलग-अलग दिशाओं में बह गये।

'ऐसे तो तुम भी बीमार पड़ जाओगी।' उमा बोली, 'देखो बाहर कितने लोग लतीफ़ के लिए खड़े हैं। तुम मेरे साथ चलो, कुछ देर आराम करके चली आना। मैं यहाँ किसी जिम्मेदार आदमी को तैनात कर जाऊँगी।'

'मैं न जाऊँगी।' हसीना बोली, 'मैं तो इन्हीं के दम से जिन्दा हूँ।'

उमा ने उसे पुचकारा, 'मैंने मालिकों से बात की है। वे अपनी

कोई कसर न छोड़ेंगे। दवा-दारू की चिन्ता न करना, सब मिल वाले मुहैया करेंगे।' उमा ने पर्स से सौ-सौ के दो नोट हसीना की झोली में रख दिये, 'किसी चीज़ की ज़रूरत हो तो फौरन मँगवा लेना।'

हसीना ने नोट वहीं पड़े रहने दिये और धीरे से बोली, 'शुक्रिया।'

'अभी मैं डाक्टर से मिल कर जाऊँगी।' उमा ने चलते हुए कहा, 'ज़रूरत हुई तो मेडिकल कालिज़ में भर्ती करवा दूँगी।'

'ख़ुदा हाफ़िज़!' दो उदास आँखें पल भर के लिए उठीं।

'ख़ुदा हाफ़िज़!' उमा ने कहा, 'खाना ज़रूर खा लेना।'

उमा के जाते ही दो डाक्टर एक साथ आये। लतीफ़ के तमाम कागज़ात देखे और आपस में अंग्रेज़ी में बात करते हुए लौट गये। डाक्टरों को देख कर हसीना खड़ी हो गयी थी। उनके जाने के बाद भी खड़ी रही। भूख-प्यास और चिन्ता ने उसे बेहद कमज़ोर कर दिया था। उसकी टाँगों ने इजाज़त न दी तो वह दुबारा स्टूल पर बैठ गयी।

इसी बीच तीन-चार बेड छोड़ कर एक अधेड़ आदमी की मौत हो गयी। दो-तीन मिनट पहले डाक्टर और नर्स हाल में दौड़ी हुई आयी थीं। एक स्ट्रेचर पर लाद कर उस आदमी को फौरन वार्ड से बाहर कर दिया गया। उसके पीछे-पीछे दो औरतें रोती-चिल्लाती बाहर चली गयीं।

हसीना का दिल ज़ोर से धड़कने लगा। उसने घबराहट में लतीफ़ की तरफ़ देखा, उसकी आँखें उसी तरह मुंदी थीं। ख़ून की बोतल में ज़रा-सा ख़ून बचा था!

••

यूनियन का चुनाव स्थगित कर दिया गया। शायद मिल के माहौल को देखते हुए ऐसा करना जरूरी भी हो गया था। मजदूरों में अनुशासन बनाये रखने के लिए जगदीश माथुर को निलम्बित कर दिया गया। जगदीश माथुर खुशी-खुशी निलम्बित हो गये। दरअसल जगदीश माथुर को यहाँ से निलम्बित करके कम्पनी ने एक दूसरी मिल में पदोन्नति पर भेज दिया था। मिल के गेट पर पुलिस का पहरा बैठ गया था। मिल के वफ़ादार कर्मचारी लक्ष्मीधर के खून दिये जाने की चर्चा से अत्यन्त उत्साहित थे और हर विभाग में लक्ष्मीधर की चर्चा थी।

लक्ष्मीधर भी कम चतुर न थे। उस रोज वह बिना शेव बनाये और साधारण से कपड़े पहन कर दफ्तर आये। उनके पीछे-पीछे उनका ब्रीफ़केस उठाये उनका ड्राइवर चला आ रहा था। एक जगह मजदूरों का झुण्ड देखकर उसने ड्राइवर से जरा ऊँची आवाज में कहा, 'सामान रखने के बाद अस्पताल जाकर पता कर आओ कि और खून तो नहीं चाहिए।'

इस काण्ड से हीरालाल अत्यन्त क्षुब्ध था। वह लोगों में कहता घूम रहा था कि चुनाव टालने के लिए मालिकों ने ही दंगा कराया है। लक्ष्मीधर ने तुरन्त उसे बुलवा भेजा और बताया कि कम से कम हीरालाल तो ऐसा प्रचार न करे क्योंकि जिलाधीश तो हीरालाल को ही गिरफ्तार करने जा रहे थे और लक्ष्मीधर की वजह से ही वह जेल के बाहर है। हीरालाल धाकड़ आदमी था, बोला, 'जिलाधीश में हिम्मत हो तो पकड़ कर देख ले। कल ही उसका तबादला न करा दिया तो मिल से इस्तीफ़ा दे दूँगा। रात ही मेरी मंत्री जी से बात हुई थी।'

'आप मेरी बात का बुरा न मानिए, मगर ग़लती आपकी ही है। आपने साइकिलों और कम्बलों का लालच देकर वोट खरीदने चाहे। मेरे पास पूरी रिपोर्ट है। इससे आपके विरोधी लोग भड़क गये और स्वार्थी तत्वों ने इसे दंगे का रूप दे दिया। आप में जिलाधीश का ट्रांसफर करवाने की

तो ज़रूर करवाइए। मैं अपनी तरफ़ से आपको छोड़ दिये जाने का प्रयास वापिस ले लेता हूँ।'

हीरालाल किसी झंझट में नहीं पड़ना चाहता था। दंगों से उसे वैसे ही घबराहट होती थी, बोला, 'बेहतर यही होगा कि न आप मुझ पर कोई एहसान जतायें और न मैं। मगर यूनियन का चुनाव होकर रहेगा।'

'लतीफ़ के स्वस्थ हो जाने के बाद चुनाव होगा और ज़रूर होगा।'

हीरालाल को यह शर्त मंजूर न थी, वह जानता था कि अस्पताल से लौट कर लतीफ़ आसानी से जीत जायेगा। लोग रहम खा कर ही उसे जिता देंगे और एक बार लतीफ़ जीत गया तो हीरालाल के लिए यूनियन के दरवाज़े हमेशा के लिए बन्द हो जायेंगे।'

'इस समय चुनाव कराना आपके हित में न होगा' लक्ष्मीधर ने कहा।

'यह आप किस आधार पर कह रहे हैं?'

'मैं निराधार तो बात करता ही नहीं।' लक्ष्मीधर ने कहा, 'आप मेरी बात पर विश्वास कीजिए।'

हीरालाल को सचमुच विश्वास न हो रहा था। बोला, 'आप मेरे लिए काँटे बो रहे हैं।'

'मुझे आपसे कोई दुश्मनी नहीं है।' लक्ष्मीधर बोला, 'चुनाव हो भी जाते हैं तो लतीफ़ की जीत निश्चित है।'

'मगर मैं तो उसे खून देने भी गया था।'

'खून तो मैंने भी दिया है। मगर आप तो खून का व्यापार कर रहे हैं। मैंने निःस्वार्थ भाव से ऐसा किया है।'

'दरअसल आजकल उसकी रगों में आपका खून ही बह रहा है। इसलिए आप उसे जितवाना चाहते हैं।'

'उसे जिताना होता तो हम चुनाव स्थगित ही न करते।' लक्ष्मीधर ने कहा।

हीरालाल को भय था कि अगर चुनाव न हुए तो मंत्रीजी उस पर विश्वास खो देंगे। मंत्रीजी का ख़याल था कि चुनाव जीत कर ही हीरालाल उनकी ट्रेड यूनियन कांग्रेस से अपनी यूनियन सम्बद्ध करा सकता है और इस प्रकार मजदूरों के बीच उनका प्रभाव बढ़ेगा। चुनाव टलने की स्थिति में उसे पैसा भी लौटाना पड़ सकता है। लक्ष्मीधर हीरा लाल की विडम्बनापूर्ण स्थिति का मन ही मन मजा ले रहा था।

माह से दस रुपये मँहगाई भत्ता प्रत्येक मजदूर को मिलेगा। पिछले दस माह से यह आदेश लागू होगा। प्रत्येक कर्मचारी को सौ रुपये होली के अवसर पर दिये जायेंगे।

हीरालाल ने बहुत कोशिश की कि मजदूर लोग इस निर्णय के विरोध मे संघर्ष करें। इस मँहगाई मे दस रुपये का अर्थ ही क्या है, मगर हीरालाल की बात को व्यापक समर्थन न मिला। लतीफ़ के दल के लोगो ने २५ रुपये मँहगाई भत्ता की माँग उठायी, मगर लतीफ़ की बीमारी के कारण यह आन्दोलन भी ठप्प हो गया। लतीफ़ का शुरू से ही मत था कि जब तक मजदूरों को अधिकारो के प्रति जागरूक नहीं किया जायेगा, वे इसी तरह पिसते रहेंगे। मजदूरों ने दो-एक दिन गेट मीटिंग की, अनशन की धमकी दी, मगर यूनियन के निष्क्रिय हो जाने के कारण सारा मामला अपने आप शान्त हो गया।

लतीफ़ की हालत देखते हुए उसे सिविल अस्पताल से निकाल कर एक प्राइवेट नर्सिंग होम में दाखिल करा दिया गया। 'प्रीति नर्सिंग होम' डायरेक्टरों का प्रिय नर्सिंग होम था। लगभग तमाम डायरेक्टरो के बच्चे इसी नर्सिंग होम में पैदा हुए थे। 'वर्कर्ज वेलफेयर' के खाते से हजारो रुपये प्रत्येक माह डायरेक्टरों के खानदानी रोग मधुमेह, उनकी पत्नियों के खानदानी स्त्री रोग श्वेत प्रदर की मद मे यहाँ खर्च होते थे। इस पर, चूँकि आयकर विभाग से भी छूट मिलती थी, इसलिए कभी कभार एकाध कर्मचारी को भी ये सुविधाएँ उपलब्ध करा दी जाती थीं।

'नर्सिंग होम' मे लतीफ के बीसियो एक्सरे लिए गये। उसकी रीढ की हड्डी पर भी चोट आयी थी। कई बार उसे साँस लेने मे दिक्कत होती। सरकारी अस्पताल के इलाज का एक परिणाम तो यह निकला था कि जगह जगह चोटों में मवाद पड़ गया था। वह दिन भर बिस्तर पर पड़ा-पड़ा कराहता रहता। अस्पताल में मजदूरों की जो भीड़ लगी रहती थी, नर्सिंग होम में छंट गयी। यहाँ माहौल में एक ऐसा परायापन था कि लोग अन्दर घुसने में संकोच करते। अक्सर लोग लतीफ़ को देखने आते थे और हसीना की तरफ टकटकी लगाकर देखते रहते। ऐसे लोगों का प्रवेश अपने आप निषिद्ध हो गया। लतीफ़ के चन्द अत्यन्त आत्मीय मित्र ही उसकी देखभाल में तैनात थे।

हसीना लतीफ़ के बिस्तर के पास ही दिन-रात पड़ी रहती। [illegible]न दोपहर में वह भूख प्यास से दोबारा बेहोश हो गयी तो उमा [illegible]

अपने यहाँ ले गयी। उमा ने उसे अपने हाथों से भोजन कराया, जैसे माताएँ छोटे बच्चों को खिलाती हैं। उसके स्नान की अपने निजी 'बाथरूम' में व्यवस्था कर दी। हसीना साड़ी बहुत कम पहनती थी, उमा ने अपनी वार्डरोब से कत्थई रंग की एक नयी साड़ी हसीना को दे दी। वह साड़ी हसीना पर बहुत खिली, जैसे गुलदस्ते को किसी अत्यन्त कलात्मक फूलदान में सजा दिया हो। साड़ी के रंग की ही चूड़ियाँ भी उसने खरीदी थीं। उमा ने अपना 'बैंगल बाक्स' बटन दबा कर खोला और हसीना के हाथ में आठ-दस चूड़ियाँ भी पहना दीं।

हसीना को यह सब बिलकुल अच्छा न लग रहा था। उसकी इच्छा हो रही थी, साड़ी उतार कर अपने पुराने कपड़े पहन ले, चूड़ियाँ लौटा दे और इस दमघोटू माहौल से भागकर लतीफ़ के पास जा बैठे और मन ही मन उसकी तन्दुरुस्ती के लिये दुआ करती रहे।

'तुम्हें साड़ी अच्छी नहीं लगी?' उमा ने बड़े रश्क से हसीना की तरफ़ देखते हुए कहा।

'बेहद अच्छी लगी। और ये चूड़ियाँ भी कितनी खूबसूरत हैं।' हसीना की आँखें भर आयीं, 'मगर मेरा मन ठीक नहीं।' हसीना की आँखों से आँसू झरने लगे, 'जिसके लिए पहन कर खुशी होती, वह बेहोश पड़ा है।'

उमा को अपनी गलती का एहसास हो गया। उसने हसीना से मुआफ़ी माँगी और बोली, 'मुझे मुआफ़ करोगी हसीना। तुमसे मिल कर इतना अच्छा लगता है कि सब कुछ भूल जाती हूँ। चलो, तुम्हें अस्पताल छोड़ आऊँ और सुनो, मेरी कसम खा कर कहो कि इस घर को अपना घर समझोगी और मुझे अपनी अच्छी आपा।'

'मैं कितनी खुशनसीब हूँ जो आप मुझे इतनी इज्जत बख्श रही हैं। वरना इस जहान में तो मेरा कोई नहीं। एक भाई था, उसका भी कोई अता पता नहीं।'

उमा ने अपनी दायीं बाँह से हसीना को भींच लिया, 'खुदा ने मुझे एक बहन दे दी।'

हसीना से प्यार का स्पर्श बर्दाश्त न हुआ। वह उमा के पहलू में सिसकने लगी। उमा ने अपने खुशबूदार रूमाल से उसके आँसू पोंछे और पेशानी पर हसीना को चूम लिया।

हसीना के व्यक्तित्व में इतनी सादगी थी कि उमा, वास्तव में, हसीना के लिए महसूस करने लगी थी। वह हसीना की स्थिति में होती तो शायद कभी

का धैर्य छोड़ चुकी होती, मगर हसीना में बेइन्तिहा धीरज था। वह दुखों के बीच ही पली थी। उमा ने वहीं बैठे-बैठे ड्राइवर को आवाज़ दी और डाक्टर से फ़ोन मिलाया। वह जानना चाहती थी लतीफ़ की प्रगति सन्तोषजनक है या नहीं।

'आपके इस सवाल का जवाब देना अभी मुश्किल है।' डाक्टर बनर्जी ने बताया 'वट आई थिंक ही विल बी आऊट आफ डेंजर, इफ आई सक्सीड इन टुडेज ऑपरेशन?'

'इज़ ही गोइंग टु बी ऑपरेटेड अगेन।'

'आई थिंक दैट्स द ओनली आल्टरनेटिव लेफ्ट विद् अस।'

उमा ने एक लम्बी साँस ली और चोंगा रख दिया। हसीना उमा के चेहरे से जान गयी कि डाक्टर ने कोई गम्भीर बात बतायी है।

'आज रात मैं तुम्हारे साथ ही नर्सिंगहोम में रुकूँगी।'

'खैरियत तो है?'

'आज एक छोटा-सा ऑपरेशन होगा। तुम अकेले में घबराओगी।'

'मगर दीदी वहाँ आप कैसे सोयेंगी।'

'तुम्हारे साथ जगूँगी।' उमा ने कहा, 'अगर तुम बुरा न मानो तो मैं थोड़ी देर एल०डी० का इन्तज़ार कर लूँ।'

'किसका?'

'एल०डी० का।' उमा बोली, 'मैं अपने पति को एल०डी० के नाम से पुकारती हूँ।'

हसीना चकित रह गयी, यह भी कैसा नाम है। एलडी। यह किसी आदमी का नाम तो नहीं हो सकता। हसीना ने सोचा था कि यह उनके किसी पालतू का नाम है जो नौकर के साथ हवाखोरी के लिए गया होगा।

नर्सिंग होम पहुँचकर उसे एक शिला की भाँति जड़ हो जाना था, उसने कहा, 'दीदी आप भी कैसी बातें करती हैं। हम लोग उनका इन्तज़ार करेंगे।'

हसीना ने काँच के पीछे सर टिका दिया। वह कई दिन की थकी थी, ऊँघाई लग गयी। उमा ने देखा तो काँच पर तकिया लगाकर उसे धीरे से लिटा ही नहीं दिया एक चादर भी ओढ़ा दी, बत्ती भी बन्द कर दी और दूसरे कमरे में जाकर कपड़े बदलने लगी। उमा को लग रहा था, हसीना के सामने वह उसकी चाची लग रही है। उसने तय किया, आज वह गरारा पहनेगी। गरारा-कुर्ता उसने बहुत दिनों से नहीं पहना था। उसने बहुत चाव से गरारा-कुर्ता निकाला, उसे प्रेस करवाया मगर जब वह गर[illegible] पहनकर आईने के सामने गयी तो उसे रुलाई आ गयी। गरारा-

कमसिन नहीं लग रही थी। वह अपनी ही निगाहों में गिर गयी। उसने अपने को देख कर आईने में मुंह विचकाया और अपनी उम्र को एक भद्दी गाली दी। और जब उमा अपनी सूरत और अपनी उम्र को कोसा करती है तो लगे हाथ लक्ष्मीधर को भी शामिल कर लिया करती है। आईने में अपना चेहरा देख कर उसे लग रहा था कि वह किसी खलनायिका को देख रही है, या किसी बुढ़िया को। शोख रंग का कुर्ता-गरारा उसे और अधिक अकेला और दयनीय छोड़ गया था।

उमा कुर्ते गरारे के बारे में कोई निर्णय लेती कि उसने देखा दरवाज़े पर श्यामजी खड़े हैं। श्यामबाबू ने सिगरेट की राख झाड़ते हुये कहा, 'ब्यूटीफुल।'

उमा ने पलट कर देखा और बोली, 'यू आर ए परवर्ट। तुम किसकी इजाज़त से यहाँ तक चले आये ?'

'मैं अपनी रूह से इजाजत मांगता हूँ और कहीं भी चला जाता हूँ।' श्यामजी ने पूछा, 'ड्राइंग रूम में कौन सो रहा है ?'

श्यामजी चादर उघाड़ कर देख चुका था कि हसीना सो रही है। हसीना की एक टांग चादर के बाहर थी और मुंह ढंका था। श्यामजी ने ऐसी सुडौल और मांसल पिंडली पहले न देखी थी। वह आश्चर्य चकित सा कितनी देर उसी तरफ देखता रहा था। फिर उसने चेहरा देखा, धीरे से चादर हटा कर बहुत होशियारी से और फिर पिंडली भी ढंक दी और उमा को कमरों में खोजता हुआ चला आया था।

'तुम चलो, मैं अभी कपड़े तबदील करके आती हूँ।' उमा को इन कपड़ों में सचमुच असुविधा हो रही थी, बोली 'लगता है इन कपड़ों के लायक मेरी उम्र नहीं रही।'

'ऐसा न कहो उमा।' श्यामजी ने कहा, 'तुम शीशे में अपना चेहरा न देखो मेरे आईने में देखो !' श्यामजी ने अपनी बुश्शर्ट के दो तीन बटन खोल दिये।

उमा ने यह जानने के लिए श्यामजी की तरफ़ देखा कि वह कहीं झूठी तारीफ़ तो नहीं कर रहा है।

'कहो क्या प्रोग्राम है ?'

'मैं तो हसीना के साथ अस्पताल जाऊँगी। बेचारी रो-रो कर बेहाल हो रही है।'

'आज एक और आपरेशन होगा।' श्यामजी ने कहा, 'मगर वह लौंडा ठीक हो जायगा। डाक्टर से मेरी बात हुई थी।'

'लतीफ़ ठीक हो जायगा तो मैं हनुमान जी को ग्यारह रुपये की मिठाई

चढ़ाऊँगी ।'

'चलो तुम लोगों को नर्सिंग होम तक छोड़ दूँ ।'

'मगर मैं तो आज हसीना के साथ नर्सिंग होम में ही रहूँगी ।'

'वहां ज़मीन पर सो लोगी ?'

'भाभी की इतनी ही चिन्ता है तो प्राइवेट वार्ड में कमरा क्यों नहीं ले लेते ।

'अभी इन्तज़ाम करता हूँ ।' श्यामजी ने कहा, 'लेबर वेलफेयर के लिए मैंने हमेशा दरियादिली से खर्च किया है ।'

उमा ने जाकर हसीना को अत्यन्त प्यार से उठाया । हसीना आँखें मलती हुई उठी । उमा ने देखा हसीना के पारदर्शी नाखूनों में मैल भर गयी थी । उसकी इच्छा हुई अभी नेलकटर से नाखून काट दे, मगर श्यामजी की उपस्थिति में वह ऐसी गुस्ताखी न कर सकती थी । उमा ने श्यामजी से एक बार फिर हसीना का परिचय कराया । हसीना ने डरते डरते श्यामजी की तरफ़ देखा और बुर्का ओढ़ लिया । अन्दर जाकर वह दूसरे कपड़े पहन आई ।

'नर्सिंग होम' पहुँचकर श्यामजी सीधा दफ़्तर में घुस गया । हसीना और उसके पीछे-पीछे लगभग भागती हुई उमा वार्ड की तरफ़ चल दी । लतीफ़ को आपरेशन के लिए तैयार किया जा रहा था । तभी दो वार्ड ब्वॉय स्ट्रेचर उठाये हुए चले आये । नर्स ने आकर एक पर्चा हसीना को दिया । दवायें, ग्लूकोज और खून की माँग थी उसमें । हसीना ने पर्चा देखा, कुछ न समझ कर पर्चा उमा को थमा दिया । उमा भागती हुई-सी श्यामजी को खोजती हुई दफ़्तर में पहुँची । श्यामजी डाक्टरों से घिरा खड़ा था । डा० बनर्जी भी थे, जिन्हें आपरेशन करना था । उमा ने बीच में ही पर्चा श्यामजी को थमा दिया । श्यामजी ने पर्चा डॉ० बनर्जी को थमा दिया और बोला,' इसका इन्तज़ाम आप करेंगे । बाद में हिसाब हो जायेगा ।'

डा० बनर्जी ने पर्चा जेब के हवाले किया और आपरेशन थियेटर की ओर लपके ।

हस्पेतामूल बरामदे का माहौल ग़मगीन और उदास था । फिनाइल और डिटोल से ज़र्रा-ज़र्रा महक रहा था । बरामदे में एक स्त्री बेंच पर अत्यंत चिन्ता और व्यग्रता में बैठी थी । पास से जो भी आदमी गुज़रता, उदासी, चिन्ता और घबराहट के साथ ही । श्यामजी भी बहुत ही बेमन से वार्ड की तरफ़ चल दिया । इस बीमार उदास और मतली भरे माहौल से वह पहली फ़ुर्सत में निकल भागना चाहता था । उसने उमा से कहा, 'फ़र्स्ट फ्लोर पर तेइस नम्बर कमरे में इन्तज़ाम हो गया है । मगर तुम यहाँ कैसे रहोगी । मेरा तो दम घुट रहा है । रात को आकर एक बार देख जाना । डाक्टर

बात हो गयी है। देखभाल के लिए उसके दो साथी आ ही गये हैं।'

'मगर मैं हसीना को यों बेसहारा नहीं छोड़ सकती।'

'यह यकायक समाजसेवा में आपकी दिलचस्पी कैसे पैदा हो गयी?'

उमा भी चलते-चलते रुक गयी। पास से मरीजों का खाना लिए एक ट्राली निकल रही थी। एप्रन पहने दो आदमी ट्राली खींच रहे थे।

'तुम जाओ।' उमा ने कहा, 'मैं आपरेशन तक तो रुकूँगी। सब ठीक-ठाक रहा तो घर पर खाना खाने आऊँगी एल०डी० से बोल देना।'

श्यामजी की जान छूटी। उसने जल्दी से 'बाय' कहा और गेट की तरफ़ बढ़ गया।

लतीफ़ का बेड खाली था। हसीना जरूर जड़वत बेंच पर बैठी थी। उमा ने देखा रो-रो कर उसकी आँखें सुर्ख हो रही थीं।

'उनको कहाँ ले गये हैं?'

'आपरेशन थियेटर में।' उमा ने कहा, 'वहाँ डाक्टरों के अलावा कोई नहीं जा सकता।'

'कितनी देर लगेगी आपरेशन में?'

'एक-दो घण्टे भी लग सकते हैं।'

हसीना अपने खुश्क होठों पर जीभ फेरने लगी।

उमा के लिए वहां बैठना मुहाल हो रहा था, उसने कहा, 'श्यामजी ने प्रायवेट वार्ड में कमरे का इन्तज़ाम कर दिया है। चलो चल कर देख आयें।'

हसीना की हिलने-डुलने की भी इच्छा न हो रही थी। बुर्का ओढ़ने की भी नहीं। वह उठी और मृत कदमों से उमा के पीछे-पीछे चल दी। उमा जाकर लिफ़्ट के आगे खड़ी हो गयी। लिफ़्ट में पहली मंजिल पर जाने की इजाजत नहीं थी। लिफ़्ट नीचे आयी तो वह अन्दर दाखिल हो गयी। लिफ़्ट-मैन ने उमा को सलाम पेश किया और सवालिया निगाहों से उसकी तरफ़ देखा। उमा ने पर्स से एक का नोट निकाल कर उसे थमा दिया और बोली, 'फ़र्स्ट।'

लिफ़्ट पहली मंजिल पर पहुँच कर रुक गयी। लिफ़्टमैन ने बाहर निकल कर उमा को एक और सलाम ठोंका और लिफ़्ट का दरवाजा खोल दिया। उमा और उसके पीछे-पीछे हसीना बरामदे में आ गये।

'तेईस नम्बर कमरा किधर होगा?' उमा ने पूछा।

'बायीं तरफ़ आखिर में।'

वे दोनों उसी तरफ़ चल दीं। प्रायवेट वार्ड काफी साफ़-सुथरा नज़र आ रहा था। बरामदे का फ़र्श एकदम साफ़ था और छत पर भी जाले आदि

नहीं लटक रहे थे। फ्लोरोसेंट लाइट से पूरा बरामदा जगमगा रहा था। नेईस नम्बर कमरा बरामदे के अन्त में था। दरवाजा बन्द था। उमा ने दरवाजा खुलवाया। वह शायद अस्पताल का सबसे बड़ा कमरा था। शायद वी० आई० पी० मरीजों के लिए। तीन तरफ खिड़कियाँ थीं। बीचोंबीच एक बैड था, जिस पर सफेद चादर बिछी थी और बड़े सलीके से कम्बल तहाया गया था। बैड एडजेस्टेबल था। पास में दो-तीन कुर्सियाँ, मेज और तिपाई रखी थी। खिड़की के पास एक बेड नुमा काउच था। खिड़कियों, दरवाजों पर मोटे खूबसूरत परदे लटक रहे थे।

हसीना ने कमरा देखा तो चकित रह गयी। उसने इतना अच्छा कमरा जिन्दगी मे पहली बार देखा था। यहाँ तो थकान आने पर वह आराम कर सकती थी। कमरे मे एक घण्टी भी लगी थी, जरूरत पड़ने पर डॉक्टर अथवा नर्स को बुलाया जा सकता था। उसे लगा जैसे वह अस्पताल मे नहीं किसी खूबसूरत होटल में आ गयी हो।

'हाय यह कमरा देख कर बीमार पड़ने की इच्छा हो रही है।' उमा बोली।

'बीमार पड़ें आपके दुश्मन।' हसीना ने कहा।

उमा काउच पर बैठ गयी और खिड़की से बाहर देखने लगी। दूर दूर तक पेड़ ही पेड़ दिखायी दे रहे थे। हरियाली देखना उसे अच्छा लग रहा था। आसमान भी उसने बहुत दिनो बाद देखा था। नीले आसमान मे चीलें मंडरा रही थीं। हसीना भी एक खिड़की के पास पर्दे के पीछे जा खड़ी हो गयी। वह नीचे जमीन की तरफ देख रही थी। पेड के नीचे कुछ देहाती लोग अपनी गठरियों के मध्य बैठे थे। चुपचाप। कोई किसी से बात न कर रहा था। मालूम नही, इन लोगों को क्या तकलीफ़ है। जरूर कोई प्रियजन यहाँ लाया गया होगा। दूसरे पेड़ के नीचे एक आदमी टहलकदमी करते हुए सिगरेट फूंक रहा था। हसीना जब से अस्पताल में थी, उसने किसी के चेहरे पर मुस्कान न देखी थी। उसके वार्ड में एक नर्स जरूर हँसमुख थी। वह हर किसी को हँसाने की चेष्टा करती। मारिया उसका नाम था। जिस दिन उसकी छुट्टी होती, पूरे वार्ड में मुर्दनी-सी छा जाती।

उमा ने घड़ी देखी छह बज रहे थे।

'मालूम नहीं आपरेशन खत्म हुआ कि नहीं।' हसीना ने पूछा।

'आपरेशन के बाद लतीफ़ को यहीं लाया जायेगा।' उमा बोली, 'मुझे तो अस्पताल के नाम से घबराहट होती है।'

'अल्लाह आपकी मुरादें पूरी करे।' हसीना ने कहा, 'मुझे

था कि इस जमीन पर आप जैसे फ़रिश्ते भी बसते हैं।'

'मैंने तो जिस दिन पहली बार तुम्हें देखा था, तुमसे बंध गयी थी। क्या मालूम था कि ऐसा हादसा हम दोनों को और नज़दीक ले आयेगा।'

'खुदा को यही मंजूर था। मैं उनसे रोज कहा करती थी कि यह यूनियन का चक्कर छोड़ कर चुपचाप अपने काम से मतलब रखो।'

'हर आदमी का अपना नेचर, यानी स्वभाव होता है।' उमा बोली, 'एल० डी० एक मामूली-सी नौकरी पर इस मिल में आये थे, आज देख रही हो उनका रुतबा। अपनी मेहनत, लगन और ईमानदारी से यहाँ तक पहुँचे हैं।'

हसीना ने मन ही मन तय किया कि लतीफ़ के ठीक होने पर उसे दुबारा इस जंजाल में न पड़ने देगी। अपना नहीं तो कम से कम मेरा तो ख्याल करना चाहिए।

'मालूम नहीं लतीफ़ के अब्बा हुजूर को खबर दी गयी है या नहीं।' उमा ने पूछा।

'जब से शादी हुई है उन लोगों से बोलचाल बन्द है।' हसीना बोली, 'एक बार ये घर गये भी थे, मगर बहुत बेइज्जत होकर लौटे थे। अब्बा हुजूर ने सीधे मुंह बात तक नहीं की। खबर लगी भी होगी तो वे लोग शायद न आएँ।'

'ऐसे भी माँ-बाप होते हैं?' उमा ने पूछा, 'क्या तुम लोगों की शादी रज़ामन्दी से न हुई थी?'

'वे लोग आज तक रजामन्द न हो पाये।'

तभी धड़ाक से दरवाजा खुला और लक्ष्मीधर अन्दर दाखिल हुआ।

'मैंने कोना-कोना छान मारा तुम लोगों को ढूंढने में।' लक्ष्मीधर ने कमरे का मुआइना करते हुए कहा, 'डाक्टरों का कहना है कि आपरेशन कामयाब हुआ है। ईश्वर ने चाहा तो लतीफ़ अब जल्दी ही ठीक हो जायेगा।'

'अल्लाह आपको बहुत लम्बी उमर अता फरमाये।' हसीना इस खबर से गद्‌गद् हो गयी। उसके सीने पर जो एक पत्थर पड़ा था वह जैसे किसी ने एकाएक हटा दिया हो। उसकी इच्छा हो रही थी लक्ष्मीधर के कदमों पर लेट जाये और रो-रो कर अपने जज़्बातों का इजहार कर दे।

'आप कितने अच्छे लोग हैं।' हसीना ने कहा, 'उमाजी के बगैर तो मैं अब एक घण्टा भी नहीं रह सकती।'

लक्ष्मीधर मुस्कराया, 'दरअसल मालिक और मजदूर का रिश्ता बदनाम हो चुका है कि लोग असलियत को समझ ही नहीं सकते। ईश्वर ने सबको एक समान पैदा किया है। यह भेदभाव तो हमीं लोग करते हैं। अब तुम ही

बताओ हसीना मालिक लोग इतने ही बुरे होते तो लतीफ़ के लिए पानी की तरह इतना रुपया क्यों बहाते ?'

हसीना चुप रही। लक्ष्मीधर उसी के मन की बात कर रहे थे। तभी लिफ्ट का दरवाजा खुला और ट्राली पर स्ट्रेचर में किसी मरीज को लादे लोग इधर ही आते दिखायी दिये। लक्ष्मीधर दरवाजा खोल कर बाहर आ गया। उसी के पीछे-पीछे उमा और हसीना भी। लतीफ़ को ही लाया जा रहा था। लक्ष्मीधर ने दरवाजे खोल दिये। ट्राली बेड के पास जाकर रुकी। ग्लूकोज चढ़ाया जा रहा था। ग्लूकोज की बोतल थामे एक आदमी साथ-साथ चल रहा था। बड़ी एहतियात से लतीफ़ को बेड पर उतारा गया। ग्लूकोज की बोतल स्टैण्ड पर लटका दी गयी।

लतीफ़ का सिर, मुँह पूरी तरह पट्टियों से बँधा था। केवल नाक और आँखें खुली थीं। एक क्लिपबोर्ड पर बहुत से कागज लगे हुए थे जो बिस्तर के पास ही लटका दिये गये। बरामदे में दस-बारह मजदूरों की भीड़ जमा हो गयी थी। लक्ष्मीधर ने बाहर जाकर बताया कि आपरेशन कामयाब हुआ है, भगवान ने चाहा तो लतीफ़ जल्द ही ठीक हो जायेगा। मजदूर लोग उसी प्रकार बरामदे में टँगे रहे। वे धीरे-धीरे फुसफुसा रहे थे। बीड़ी के धुएँ से बरामदा भर गया था। बरामदे से आती हुई एक नर्स ने डाँट पिलायी तो लोगों ने बीड़ियाँ खिड़की से बाहर फेंक दीं।

तमतमाती हुई नर्स अन्दर आयी और बोली, 'इसका फ्रेण्ड लोग कइसा है, बीड़ी के धुएँ से मरीज को खाँसी आ सकता है। तुम लोग मना क्यों नहीं करता।'

'मरीज के दोस्त लोग हैं।' लक्ष्मीधर ने बताया।

'ये कैसे दोस्त लोग हैं। बाहर खड़े होकर बीड़ी फूँक रहे हैं, ठहाके लगा रहे हैं। इससे मरीज की क्या हेल्प होगा ?'

'इन लोगों को ज्यादा समझाइएगा तो ये नीचे अस्पताल के सामने भूख हड़ताल कर देंगे।' लक्ष्मीधर ने पूछा, 'लतीफ़ की तबियत कैसी है ?'

'हम कू का मालूम। हमकू तो मैट्रन ने भेज दिया है कि पूरे वार्ड में धुआँ फैल रहा है।'

'हम अभी इन्तजाम करते हैं।' लक्ष्मीधर ने कहा, 'सिस्टर आप एक छोटा सा काम कर दें। इन लोगों से कह दें कि मरीज को खून की जरूरत है। सबका खून टैस्ट होगा। तुरत मालूम हो जायेगा कि कौन दोस्त है और कौन तमाशबीन।'

सिस्टर ने बहुत शरारत से लक्ष्मीधर की तरफ़ देखा जैसे कह रही हो

तुम तो बहुत खतरनाक आदमी हो। उमा को नर्स का इस अदा से लक्ष्मीधर की तरफ़ देखना बहुत खल गया। हसीना ने बुझे मन से भी लक्ष्मीधर की बात का मज़ा लिया। दरवाज़ा खोलने से पहले सिस्टर ने लक्ष्मीधर की तरफ़ देख कर आँख मारी, जिसका मतलब यही निकलता था कि अभी इन लोगों का इलाज करती हूँ, मगर उमा ने उसका दूसरा ही मतलब लगा लिया और खिड़की पर जाकर खड़ी हो गयी और पर्दा अपने पीछे वालों की तरह गिरा लिया।

लक्ष्मीधर को उमा का रूठना बेहद अच्छा लगा। उमा इस तरह बरसों बाद उससे रूठी थी। लक्ष्मीधर लतीफ़ के बिस्तर की तरफ़ बढ़ गया। एक नर्स लतीफ़ की बाँह थाम रही थी। लतीफ़ बाँह झटकता तो वह 'ओ माई गॉड' कह कर दुबारा बाँह थाम लेती।

'इतनी कस कर इसकी बाँह न थामो सिस्टर।'

'हम तो परेशान हो गया। डाक्टर लोग बोलता है कि यह बेहोश है। ज़रा बाँह थाम कर देखिए, कैसे झटकता है। ओ माई गॉड।'

लक्ष्मीधर ने हसीना को इशारे से बताया कि वह आकर कुछ देर के लिए बाँह थाम ले। सिस्टर ने राहत की साँस ली और आँखों में लक्ष्मीधर का शुक्रिया अदा किया। यह संयोग ही था कि ठीक उसी समय उमा ने पर्दे में से झाँक कर देखा और उसे इस नतीजे पर पहुँचने में एक क्षण भी न लगा कि लक्ष्मीधर नर्सों पर फिदा है। नर्स ने लतीफ़ की बाँह हसीना को सौंप दी और उठ कर बेतकल्लुफ़ अँगड़ाई ली।

'छिनाल कहीं की।' उमा ने मन-ही-मन कहा, 'छिः मर्दों के सामने कैसे ऐंठ रही है।'

'लगता है, सिस्टर बहुत थक गयी हो।'

'उफ़!' सिस्टर ने आँखें मूंद कर होंठ बिचकाये, 'बेहद।'

'चाय मँगवाऊँ?'

'आपके मँगवाने पर चाय न आयेगी। मैं ही मँगवाती हूँ।'

सिस्टर ने बटन दबाया और एक दाई तुरंत ही चली आयी। सिस्टर जब तक अपने वक्ष की भूलभुलैया में पर्स टटोलती लक्ष्मीधर ने दस का एक ताज़ा सरसराता नोट दाई के हाथ में थमा दिया। नोट देते हुए उमा ने लक्ष्मीधर को देख लिया। अब तो यह सब उमा की बरदाश्त के बाहर हो गया। वह अपने अन्तःपुर से निकली, मेज़ पर से पर्स उठाया और दरवाज़ा खोल कर अपनी ऊँची एड़ी से ठक-ठक करते करते बरामदे को पार कर गयी। देर तक उमा की एड़ी की खट-खट सुनायी देती रही। लक्ष्मीधर ने सोचा, टायलेट

तक गयी होगी। जब उमा से पहले चाय चली आयी तो उसे लगा, उमा कहीं और गयी है।

'मेरी बीवी ?' उसने सिस्टर से पूछा।

'वो आपकी वाइफ़ थी ?' सिस्टर हँसते-हँसते स्टूल पर बैठ गयीं।

'इसमें हँसने की क्या बात है ?'

'वह तो खफ़ा होकर मैके चली गयी है।' सिस्टर फिर हँसने लगी।

लक्ष्मीधर को बहुत अच्छा लगा कि उसकी पत्नी शादी के इतने वर्षों बाद उससे रूठी है। दरअसल उसने वर्षों से रूठना ही बन्द कर रखा था।

थोड़ी देर बाद बरामदे में सन्नाटा हो गया। अब केवल दो मजदूर बैठे कानाफूसी कर रहे थे। सिस्टर नब्ज, टैम्परेचर, ब्लडप्रेशर लेकर कमरे से निकलती तो दोनों खड़े हो जाते। सिस्टर से पूछते, 'कैसी तबीयत है ?'

सिस्टर उत्तर न देकर नाक की सीध में चल देती।

हसीना उसी प्रकार लतीफ़ की सेवा में लगी रही। लक्ष्मीधर ने हाथ जोड़ कर जाने की इजाजत माँगी तो हसीना ने आँखों ही आँखों में कृतज्ञता प्रकट की। हसीना को भी महसूस हो गया था कि उमा लक्ष्मीधर से रूठ कर चली गयी है। मगर वह इसमें उसकी कोई मदद नहीं कर सकती थी। उसे सचमुच नर्स पर बहुत क्रोध आ रहा था। कितनी बेशर्मी से मर्दों से बतियाती है। न शर्म, न हया, न पर्दा।

लक्ष्मीधर के जाते ही दोनों मजदूर अन्दर आ गये। एक ने लतीफ़ का हाथ थाम लिया। हसीना उठ कर कॉट पर बैठ गयी। उसका ध्यान उमा की तरफ ही लगा था। उसका इस तरह नाराज होकर लौट जाना हसीना को बहुत बुरा लग रहा था। जाने से पहले वह हसीना से भी बात करके नहीं गयी थी।

उमा दरअसल सीधे लिफ्ट में नीचे उतर गयी थी। नीचे लक्ष्मीधर की गाड़ी खड़ी थी। वह जाकर गाड़ी में बैठ गयी और ड्राइवर को घर चलने को कहा।

'साहब ?'

'मुझे छोड़ आओ। फिर उन्हें ले जाना।' उमा ने बैठते हुए कहा।

घर पहुँच कर उमा ने श्यामजी से फ़ोन मिलाया। वह घर पर नहीं था। दफ्तर फ़ोन मिलाया, दफ़्तर में भी नहीं था। उसका पारा चढ़ता

वह इस नतीजे पर पहुँच गयी थी कि तमाम मर्द लम्पट होते हैं। लक्ष्मीधर पर तो उसे बेहद क्रोध आ रहा था जो उसकी उपस्थिति में ही टके टके की छोकरियों से 'फ्लर्ट' कर रहा था। उसने मन ही मन तय किया, वह लक्ष्मी धर को कभी अपने पास न फटकने देगी।

लक्ष्मी सीटी बजाता हुआ कमरे में दाखिल हुआ तो उमा ने पलक उठा कर भी उसकी तरफ़ न देखा। वह उस समय एक पत्रिका पलट रही थी, 'तुम बिना बताये कैसे चली आयी?' लक्ष्मीधर ने उमा के पास बैठते हुए कहा, 'हर लिबास में तुम ग़जब ढाती हो।'

उमा वहाँ से उठी और दूसरे कमरे में जाकर पलंग पर बैठ गयी। लक्ष्मी धर को बहुत मजा आ रहा था। वह भी उसके पीछे-पीछे चला आया। जूतों समेत पलंग पर बैठ गया और उमा की कमर में हाथ डाल दिया।

'मुझे मत छुओ।'

'तो किसको छुऊँ?'

'मेरी बला से।' उमा ने कहा, 'मुझसे बात भी न करो।'

'तो किससे बात करूँ?'

उमा पलंग से उतर कर खड़ी हो गयी। वह लम्बी-लम्बी सांस भर रही थी।

'तो यह बात है।' अचानक श्यामजी ने दरवाजे से घुसते हुए कहा, 'अच्छा तो हम चलते हैं।'

उमा उठी, दुबारा ड्राइंग रूम में आ बैठी। उसके पीछे-पीछे श्यामजी आ गया। लक्ष्मीधर ने संक्षेप में उमा की नाराजगी का कारण भी बता दिया।

'लक्ष्मीधर का तो बहुत पतन हो गया है।' श्यामजी ने तिपाई पर से एक सेब उठाया, दो-तीन बार हवा में उछाला और फिर काटते हुए बोला, 'दिन भर नर्सों के चक्कर में रहता है। दफ़्तर में भी नर्सों के फ़ोन आते रहते हैं।'

'तुम क्या बताते हो, मैंने आज खुद अपनी आँखों से देख लिया है।' उमा बोली, 'जाओ तुम भी उसी से दोस्ती करो।'

'हम इस बुढ़ापे में अब कहाँ जायेंगे।' श्यामजी बोला, 'तुमने जल्दी से कोई लड़की न देखी तो तुम्हारा देवर कुआँरा ही रह जायेगा।'

'दिल्ली से कोई जवाब आया?'

'हाँ आया है। लड़की देखने के लिए बुलाया है।' श्यामजी ने लिफ़ाफ़ा उमा को थमा दिया। उमा ने लिफ़ाफ़े में से पत्र और तस्वीर दोनों निकाले।

'लड़की तो बहुत सुन्दर है।' उमा ने पूछा, 'तुमसे कितने बरस छोटी है?'

'यही कोई दस-बारह बरस।' श्यामजी ने कहा।

'दस-बारह बरस का अन्तर तो कुछ नहीं होता!' उमा ने कहा 'तस्वीर से तो लगता है लड़की बहुत सुन्दर होगी।'

'तुम्हें तो लखनऊ वाली लड़की की तस्वीर भी बहुत भायी थी।'

'मगर उसकी आवाज मर्दों जैसी थी।'

'तो चलो इसकी भी आवाज सुन आयें।'

'चलो!' उमा का मूड एकदम दुरुस्त हो गया। उसने दोनों हाथों से पेशानी पर आ गये बाल हटाये और खड़ी हो गयी, 'चलो। एल० डी० को नर्सों से इश्क लड़ाने दो।'

'इस सप्ताह तो निकल पाना संभव नहीं। मिल की हालत देख रही हो। मेरी अपनी हालत भी काबिले रहम है। भाई साहब बीमार पड़े हैं, उनका भी काम देखना पड़ता है।

'तुम्हें एल० डी० को समझाना चाहिए।'

'क्या समझाना चाहिए।'

'यही कि उसे ये सब हरकतें शोभा नहीं देतीं।'

'एल० डी० को कौन समझा सकता है।' श्यामजी ने मुंह बिचकाया, 'वह तो गॉन केस है।'

'श्यामजी मज़ाक न करो, मुझे सच-सच बताओ, तुम एल० डी० के बारे में क्या जानते हो?'

'जो कुछ भी जानता था, बता दिया, श्यामजी बोला, 'एक दिन मैंने उसे गाड़ी पर नर्स के साथ लेक की तरफ़ जाते हुए भी देखा था।'

दरअसल श्यामजी ने दरवाजे के पीछे लक्ष्मीधर की झलक देख ली थी। वह इतनी ऊँची आवाज में बोल रहा था कि लक्ष्मीधर अपनी तारीफ़ सुन ले। लक्ष्मीधर ने अपनी तारीफ़ सुनी तो सचमुच अन्दर चला आया, बोला, 'श्यामजी आपने फैक्टरी का इतना काम मेरे ऊपर डाल रखा है कि अपनी बीवी को मनाने की भी फ़ुर्सत नहीं मिलती। देख रहे हो न मूड अंगारों की तरह दहक रहा है।'

'सब देख रहा हूँ। तुम चाहते हो भाभी तुम्हारी काली करतूतों को चुपचाप देखती रहें। अब पकड़े गये हो तो लगे काम की दुहाई देने।'

'लगता है आप तय करके आये हैं कि घर से मेरा पत्ता कटवा कर ही दम लेंगे?'

'तुम्हारा पत्ता काट कर मुझे कुछ न मिलेगा। दूसरे मैं कभी किसी का पत्ता नहीं काटता....'

'सिर्फ़ अपना पत्ता फेंकते रहते हो !' लक्ष्मीधर वोला ।

'वाह भाई वाह !' श्यामजी ने कहा, 'तबीयत खुश हो गयी । चलो इसी वात पर कुछ हो जाये ।'

'क्या हो जाये ?'

'भोजन !' श्यामजी कहा, 'आज तुम लोगों को चाइनीज़ डिनर खिलाता हूँ ।'

चाइनीज़ डिनर लक्ष्मीधर ने कभी पसन्द नहीं किया था । उमा को पसन्द था ।

'हम लोग तो खा ही लेंगे । वेचारी हसीना के लिए भी कुछ व्यवस्था करनी चाहिए ।'

'उसके लिए भी एक पैकेट भिजवा देंगे ।' श्यामजी वोला, 'बोर मत करो ।'

'मालूम नहीं लतीफ़ होश में आया कि नहीं ।'

'आ जायेगा ।' श्यामजी वोला, 'और न भी आया तो आप क्या कर लेंगी ?'

'तुम वहुत क्रूर आदमी हो ।' उमा ने कहा ।

'तुम वहुत क्रूर औरत हो ।' श्यामजी ने उसी वज़न पर दोहरा दिया ।

'तुम लोग हरवक्त नोंक-झोंक में लगे रहते हो ।' लक्ष्मीधर ने कहा और खड़ा हो गया, 'चलो, चलते हुए नज़र आओ ।'

'मगर हम तो ड्रेस तबदील करेंगे ।'

'ऐसा कभी मत करना ।' श्यामजी वोला, 'तुम्हारे ऊपर यह लिबास बहुत फब रहा है ।'

लक्ष्मीधर चुप रहा । जाने क्यों उसे उमा आज चुड़ैल-सी लग रही थी । वह अपनी राय वता कर एक नया ववाल नहीं खड़ा करना चाहता था ।

उन लोगों ने चाइनीज़ रेस्तराँ में भोजन किया । श्यामजी ने हसीना के भोजन का भी ख्याल रखा । खाना पैक कराके उसने उमा के हाथ में थमा दिया कि वह खाना दे आये और लतीफ़ को भी देख आये, मगर उमा ने तुरन्त पैकेट लौटा दिया, 'हम नहीं जायेंगे । हमारा मूड आज वहुत उखड़ रहा है ।'

श्यामजी ने वहस में पड़ना उचित नहीं समझा और पैकेट ड्राइवर को सौंप दिया कि फ़ुर्सत मिलते ही वह पैकेट तेईस नम्वर कमरे में पहुँचा आये । श्यामजी तो उन लोगों को घर पर ड्राप करके चला गया, मगर लक्ष्मीधर उमा के मूड को देख कर वहुत सहम गया । आज उसने कुछ ज्यादा ही स्वतन्त्रता ले ली थी । वह चाहता था किसी तरह से पूरी वात श्यामजी के स्वभाव के

ऊपर डाल कर चुपचाप सो रहे मगर उमा ने भी कुछ तय कर रखा था। वह दनदनाती हुई सीधी बाथरूम में घुस गयी। उसने मेक-अप उतारा, मंजन किया, वार्डरोब से बहुत दिनों के बाद अपनी झीनी नाइटी निकाली और जब वह इतराती हुई बेडरूम में दखिल हुई तो देखा लक्ष्मीधर सोने के लिये 'रीडर्स डाइजेस्ट' में लतीफे पढ़ रहा था। खुशबू को अपनी तरफ़ मुखातिब देख कर वह अवाक् रह गया. उमा मान की मुद्रा में उसकी तरफ देख रही थी। उसकी आँखों में कई भाव थे, रूठने के, निमन्त्रण के, प्यार के, शिकायत के, शिकवे के। और न जाने क्या था कि लक्ष्मीधर ने हाथ बढ़ा कर लैम्प बुझा दिया।

उमा अगले रोज अस्पताल नहीं गयी। आठ बजे तक सोती रही। बाद में यों ही लेटी रही। बाबा को ड्राइवर स्कूल छोड़ आया और वह अभी तक बिस्तर पर ही पड़ी थी। लक्ष्मीधर सुबह सैर पर जाया करता था, वह लौटते हुए जलेबियाँ ले आया। उमा ने बिस्तर पर ही जलेबियाँ खायी, चाय पी और बोली, 'मैं फिर सो रही हूँ।'

'सो जाओ।' लक्ष्मीधर बोला, 'आलस लगे तो आराम करना, अस्पताल भी मत जाना।'

'तुम भी अस्पताल न जाना।'

लक्ष्मीधर मुस्कराया, 'मगर मुझे तो दफ्तर जाना ही होगा।'

'बस दफ्तर ही जाना, अच्छे बच्चे की तरह। किसी चुड़ैल का फ़ोन आये तो काट देना।'

'मुझे तो चुड़ैल भी फ़ोन नहीं करती।' लक्ष्मीधर बोला, 'बस तुम्हारा फ़ोन ही कभी-कभार आया करता है।'

'अच्छा जाओ।' उमा ने कहा, 'हम तो अभी सोयेंगे। हम तो सोते रहेंगे।'

लक्ष्मीधर चला गया। उमा ने चादर ओढ़ ली। आँखें मूँद लीं। दोपहर को मिसेज धर के साथ उसका मूवी जाने का प्रोग्राम था, उसने बिस्तर से ही फ़ोन मिलाया कि वह आज मूवी देखने न जा पायेगी।

'क्यों क्या हुआ?'

'बहुत थकान आ रही है यार।' उमा बोली।

'क्या नौकर फिर भाग गया?'

'नहीं दोनों हैं।' उमा बोली, 'पूरे बदन में दर्द हो रहा है।'

'अच्छा तो यह बात है।' मिसेज धर ने कहा। मिसेज धर के

कहीं दर्द न हो रहा था, यह सोच कर मिसेज धर उदास हो गयीं। बाद में उसने चिन्ता प्रकट करते हुए कहा, 'इस उम्र में तो दर्द न होना चाहिए।'

'आपकी उम्र तक पहुँचूंगी तो शायद यह शिकायत न रहे।' उमा ने तुरन्त हिसाब चुका दिया।

'मैं तुमसे छोटी ही हूँगी।'

'आपका डेट आफ़ बर्थ क्या है ?'

'पांच दिसम्बर पैंसठ।'

'हाय-हाय।' उमा को गुदगुदी होने लगी, 'तुम्हें तो अभी सोलहवां भी नहीं लगा।'

'तुम भी अजब बेवकूफ़ हो। इतना भी नहीं जानती कि औरत शादी के रोज ही पैदा होती है।'

उमा ने ठहाका लगाया। मिसेज धर की बात उसे बहुत पसन्द आयी। इसलिये भी पसन्द आयी कि इस लिहाज़ से भी उसकी उम्र मिसेज धर से कम ही बैठती थी, बोली, 'मुझे तो अभी दसवां लगा है।'

'चलो यार बोर मत करो। मैंने टिकटें मँगवा रखी हैं, तुम्हें चलना ही होगा।'

'आकर मेरी सूरत देख लो एक बार।'

'आऊँगी मगर तुम्हें चलना होगा।'

'आओ।' उसने कहा और चोंगा रख दिया। मिसेज धर के आने तक वह उसी तरह नाइटी में पड़ी रही।

मिसेज धर ने कमरे में घुसते ही पूछा, 'यह इंटीमेट कहां से मँगवाया।'

'तुम्हें चाहिये ?'

'हां।'

'तो तुम्हें भी दूंगी।' उमा उठी और उतर कर ड्रेसिंग टेबुल तक गयी। उसने एक छोटी-सी शीशी मिसेज धर के सामने खोल कर थोड़ा-सा सेंट उसकी कनपटी पर छिड़क दिया और शीशी भेंट कर दी। आज बरसों बाद उसने नाइटी पहनी थी। यह नाइटी लक्ष्मीधर उसके लिए पैरिस से लाया था। मिसेज धर ने भी कसम खा ली कि वह नाइटी की तारीफ़ में एक शब्द न बोलेगी। नाइटी के अन्दर से उमा का सुडौल बदन झांक रहा था। मिसेज धर को धर साहब पर गुस्सा आने लगा। चार-चार बच्चे उसकी जान को लगा दिये और एक तरफ़ उमा है, कितनी बेफ़िक्र, जबकि जितना इसके पति कमाते होंगे उतना धर साहब घूस में पैदा कर लेते हैं।

उमा ने अंगड़ाई ली और बाथरूम में घुस गयी। उसका दिन आज सार्थक

हो गया था ।

पिक्चर में उमा का खूब मन लगा । उसे हर दृश्य अच्छा लग रहा था । दरअसल उसने बहुत दिनों बाद मूवी देखी थी । लौट कर उसने श्यामजी को 'शाक' देने के लिये फ़ोन मिलाया कि वह पिक्चर देख कर लौटी है । मालूम हुआ श्यामजी दोपहर की उड़ान से दिल्ली चला गया है । फ़ोन पर श्यामजी की सेक्रेटरी बोल रही थी ।

'कल तक तो उनका कोई प्रोग्राम नहीं था ।' उमा ने आश्चर्य से पूछा ।

'उनका टिकट तो परसों ही आ गया था ।' सेक्रेटरी ने बताया ।

उमा ने गुस्से से रिसीवर फेंक दिया । अब श्यामजी उसके साथ स्मार्ट हो रहा है । श्यामजी के बारे में सोचते-सोचते वह अचानक रोने लगी । यह वही श्यामजी था जो साँस भी उससे पूछ कर लिया करता था । अब वह इतना बाग़ी हो गया है कि दिल्ली जाते हुए भी बता कर नहीं जाता । वह जरूर लड़की देखने गया है और उमा की राय को कोई महत्व नहीं देना चाहता । उसे एक-एक कर सब बातें याद आ रही थीं । जरूर श्यामजी को किसी ने बहका दिया है ।

उमा से और अधिक बरदाश्त न हुआ । उसने दोबारा फ़ोन मिलाया । इस बार भी सेक्रेटरी ने ही उठाया ।

'श्यामजी कब लौट रहे हैं ?' उसने पूछा ।

'परसों शाम की फ्लाइट से !'

उसने सेक्रेटरी से ज्यादा बात करना उचित न समझा । रिसीवर रख दिया और मन ही मन तय किया कि श्यामजी से सीधे मुंह बात न करेगी । बॉस होगा तो एल० डी० का । वह उसकी शादी में भी शामिल न होगी । उमा की खाना खाने की इच्छा भी न हो रही थी । वह यों ही कुर्सी में धँस गयी । उसे अपने चारों ओर अजीब तरह की शून्यता महसूस हो रही थी । उसे लग रहा था, उसका बहुत अधिक अपमान हो गया है । बहुत देर तक वह बदला लेने की योजनाएँ बनाती रही । बीच में तो उसने यहाँ तक भी सोचा कि वह श्यामजी की हत्या कर देगी । मछली में जहर मिला देगी । या श्यामजी से रिवाल्वर देखने के लिए माँगेगी और उसी से उसका काम तमाम कर देगी ।

अचानक उसे लगा, कोई उसके कन्धे पर झुक रहा है । वह दबाव पहचाना हुआ था । उसने पलट कर देखा, कोई नहीं था । छत पर पंखा घूम रहा था । बाहर माली किसी पर चिल्ला रहा था । दरवाजे पर एक झटके से कार रुकने की आवाज आयी । श्यामजी ही ऐसे झटके के साथ कार

रोका करता है। ज़रूर सेक्रेटरी ने उसके साथ मज़ाक किया है। उमा ने उचक कर बाहर देखा। पड़ोस के बंगले पर कार रुकी थी। फाटक के अन्दर गाय घुस आयी थी और माली छड़ी लिये उसे भगा रहा था।

उमा ने आखिर लक्ष्मीधर को फ़ोन मिलाया। लक्ष्मीधर भी सीट पर नहीं था। सेक्रेटरी ने बताया कि अभी-अभी कहीं निकले हैं। अचानक उसे बाबा का ध्यान आया। क्यों न वह आज बाबा को स्कूल से ले आये? उमा ने घड़ी की तरफ़ देखा, अभी समय था। उसने जल्दी से आँखों पर छींटें दिये और बाल ठीक किये। कार लक्ष्मीधर ले गया था। उसने एक रिक्शा रोका और स्कूल की तरफ़ चल दी। स्कूल के फाटक बन्द थे। अभी छुट्टी न हुई थी। उमा छोटे दरवाज़े से अन्दर जाती कि घन्टी बज गयी। फाटक खुला और बच्चे बाढ़ की तरह बाहर निकले।

बाबा बस में लौटता था। गैरेज के सामने बसें फ़ायर ब्रिगेड की तरह तैयार खड़ी थीं। सब बसें एक ही तरह की लग रही थीं। सब पर अलग-अलग नम्बर थे। उसने आज तक यह जानने की जहमत न उठायी थी कि बाबा की बस का नम्बर क्या है।

चारों तरफ़ एक से ड्रेस में एक से बच्चे दिखायी दे रहे थे। बच्चों की उस भीड़ में वह बाबा को चीन्हने की कोशिश कर रही थी। देखते-ही-देखते बस बच्चों से लद गयीं, उमा बसों के अन्दर झांक कर देख रही थी, मगर बाबा कहीं न दिख रहा था। वह जब तक बाबा की बस के बारे में कुछ दरियाफ़्त करती कि एक के पीछे दूसरी बसें हार्न बजाती हुई गेट के बाहर निकलने लगीं। उमा रिक्शा वाले को बाहर इन्तज़ार करने के लिए कह आयी थी, बाहर जा कर देखा वह भी जा चुका था। आस-पास कोई रिक्शा न था, केवल बच्चों के रिक्शे थे, जिनमें बच्चे लोग ठूंसे जा रहे थे।

उमा चौराहे की तरफ़ पैदल ही चल दी। कोई पन्द्रह-बीस मिनट चलने के बाद उसे घर के लिए रिक्शा मिला। वह घर पहुँची तो बाबा आया की गोद में बैठा आराम से खाना खा रहा था। बाबा ने उमा की तरफ़ कोई खास ध्यान न दिया। आया उसे कोई कहानी सुना रही थी और वह बहुत ध्यान से सुन रहा था।

'हम तुम्हारे स्कूल से आ रहे हैं।' उमा ने बाबा की तरफ़ बढ़ते हुए कहा।

'हाँ तो आगे क्या हुआ?' बाबा ने आया का गाल अपनी तरफ़ मोड़ते हुए कहा।

आया उमा की बात सुनना चाहती थी, मगर बाबा ने तब तक कौर मुंह

में न रखा, जब तक आया आगे कहानी सुनाने के लिए तैयार न हो गयी।

उमा को बाबा पर बहुत लाड़ आ रहा था। वह उसे बताना चाहती थी कि वस न पाकर वह पीछे-पीछे चली आयी है, बाबा की इस सबमें कोई दिलचस्पी न थी।

बाबा ने आया को दूसरी तरफ देखते पाकर उसका गाल दुबारा अपनी ओर मोड़ लिया और पूछा, 'तो आगे क्या हुआ?'

कमरे में आकर उसने लक्ष्मीधर को फोन मिलाया। इस बार लक्ष्मीधर लाइन पर मिल गया।

'दोपहर में कहाँ थे?'

'मैं तो सुबह से सीट पर हूँ, बीच में लंच रूम गया था।'

'हमारा मन नहीं लग रहा।'

'किसी तरह से लगाओ। शाम को पिक्चर चलेंगे।'

'पिक्चर तो हम मिसेज धर के साथ देख आये। उमा ने पूछा, 'वह श्यामजी कहाँ है?'

'वह तो दिल्ली गया। बोर्ड आव् डाइरेक्टर्स की मीटिंग है।'

'मगर उसने ज़िक्र तक न किया।'

'कई दिनों से तो गा रहा था कि उसे जाना है।'

'यह सब बहानेबाज़ी है। दरअसल उसे लड़की देखने जाना था।'

'एक पंथ दो काज।' लक्ष्मीधर ने कहा, 'लड़की देखना तो उसकी हॉबी है।'

'मगर दिल्ली में तो रिश्ता तय होने की बात थी।'

'होगी।' लक्ष्मीधर ने पूछा, 'अस्पताल गयी थी?'

'न! वहाँ तो हम बेहद बोर होते हैं।'

'तुम कहो तो साथ-साथ चलें। तुम्हारा मन बहल जायेगा।'

'अस्पताल में तो तुम्हारा मन बहलता है' उमा बोली, 'तुम्हारा साथ दे देंगे।'

'न, न मुझ पर एहसान न जताओ। मेरी कोई दिलचस्पी नहीं।' लक्ष्मीधर ने कहा, 'जाने का इरादा हो तो खादिम अभी हाजिर हो जाएगा।'

उमा और लक्ष्मीधर अस्पताल पहुँचे तो सतीश तकियों पर पीठ लगाये बैठा चाय पी रहा था। उमा उसको स्वस्थ देखकर किलकारी मारते हुए उसके पास जा पहुँची।

'बहुत अच्छा लग रहा है आपको इस तरह देखना।' उमा ने कहा।

'आपकी नज़रे इनायत न होती तो जाने हम लोग कितनी तकलीफ़ पाते।' हसीना पास आकर खड़ी हो गयी।

लक्ष्मीधर के आने से लतीफ़ के सब साथी खड़े हो गये थे। लक्ष्मीधर अपने साथ बाँस के कागज़ के बढ़िया लिफाफे में लतीफ़ के लिए सन्तरे, मुसम्मी और सेब लाया था। उसने लिफाफा लतीफ़ के सिरहाने के पास रख दिया। लतीफ़ ने मुस्करा कर लक्ष्मीधर की तरफ़ देखा और लिफाफे में से फल निकालकर अपने साथियों में बाँटने लगा।

'कल रात इन्हें होश आया तो मैं खुशी से पागल हो गयी।' हसीना उमा से पूरा किस्सा बयान कर रही थीं, 'सच दीदी मुझे आपकी इतनी याद आयी कि बता नहीं सकती।'

'मुझे भी लगातार लतीफ़ साहब का ध्यान आता रहा।' उमा ने झूठ बोलना शुरू किया, 'कल ये दफ्तर से लौटे तो बेपनाह सर दर्द हो रहा था।'

'दफ़्तर सरदर्द ही होता है।' लक्ष्मीधर बोला।

'लतीफ़ साहब की तन्दुरुस्ती सेलिब्रेट की जानी चाहिए।' उमा बोली।

'जरूर की जायगी।' लक्ष्मीधर बोला, 'कल पूरी फैक्टरी में लड्डू बँटवा दूंगा।'

लतीफ़ मन्द-मन्द मुस्करा रहा था। डाक्टर ने उसे बोलने के लिए मना कर रखा था। आज दिन में दोस्तों से बातचीत कर रहा था कि अचानक सर में बहुत तेज दर्द उठा। इस वक्त भी हल्का-हल्का सरदर्द हो रहा था; उसने हसीना को बताना मुनासिब न समझा। लतीफ़ ने तय किया कि रात को डाक्टर राउण्ड पर आयेगा तो उसी को बतायेगा।

एक-एक करके लतीफ़ के साथी लोग कमरे से बाहर चले गये थे। किसी के हाथ में संतरा, किसी के हाथ में मुसम्मी और किसी के हाथ में सेब। लक्ष्मीधर के सामने फल खाने में उन्हें संकोच हो रहा था। बाहर जाकर वे लोग सन्तरे छीलने लगे।

'तुम्हारे दोस्तों में कोई ऐसा नहीं जो रात को रुक जाए?'

लतीफ़ ने सर हिलाया कि बहुत से हैं। सब हैं।

'तो आज हसीना मेरे साथ सोयेगी।' उमा ने कहा, 'बेचारी कितनी थक गयी होगी।'

लतीफ़ ने आँखों से ही बताया कि हसीना को मंजूर हो तो वह आपके साथ जा सकती है।

'तो चलो तैयार हो जाओ।'

'तैयार मैं क्या हो सकती हूँ। जब से ये जख्मी हुए हैं, मैं घर ही नहीं गयी।'

'एल० डी०,' उमा ने एल० डी० से कहा कि जाकर डाक्टर से पूछ आये कि लतीफ़ साहब को चिकन सूप दिया जा सकता है कि नहीं।

एल० डी० जैसे हुक्म की प्रतीक्षा में ही खड़ा था। तुरन्त लैफ्टराइट करता कमरे से बाहर निकल गया। लतीफ़ के साथी लोग बेंच से उठ कर खड़े हो गये। लक्ष्मीधर को लतीफ़ के महत्व का एहसास ये लोग पल-पल पर दे रहे थे।

'डाक्टर ने बताया है कि चिकन सूप ही नहीं, आप चाहें तो चिकन भी दे सकते हैं।'

'कितनी अच्छी खबर है। मैं दोनों भिजवाऊँगी।'

'अब आप रुखसत दीजिए।' उमा ने दोनों हाथ जोड़े दिये और हसीना का कंधा थाम लिया, 'तुम्हें चलना होगा। दीदी कहती हो तो दीदी का कहना भी तो मानना पड़ेगा।'

हसीना ने लतीफ़ के कान के पास जाकर लतीफ़ से कुछ कहा, लतीफ़ ने आँखों में ही इजाजत दे दी।

'खुदा हाफ़िज !' वे लोग चलने लगे तो हसीना ने कहा।

जाने से पहले हसीना ने दफ्ती के तमाम डिब्बे उठा लिए जिनमें उसके लिए खाना आया करता था।

'ये कहाँ ले जा रही हो ?' उमा ने पूछा।

'घर में काम आयेंगे।' वह बोली।

'मेरी स्वीट बिटिया।' उमा को हसीना पर बहुत लाड़ आ गया, पूछा, 'ये क्या काम आयेंगे ?'

'ये बहुत खूबसूरत हैं।' हसीना बोली, 'मेरी तो फेंकने की इच्छा ही नहीं हो रही।'

उमा और लक्ष्मीधर की आँखें मिलीं। लक्ष्मीधर ने बढ़ कर तमाम डिब्बे थाम लिये और बोले, 'चलो।'

हसीना एक बार पुनः लतीफ़ के पास गयी और इजाजत लेकर बरामदे में उन लोगों के साथ हो ली। लतीफ़ के तमाम साथी इन लोगों के विदा होते ही कमरे में घुस गये। लतीफ़ ने लिफ़ाफ़े की तरफ़ इशारा किया कि अभी बहुत माल बचा है। सन्तरे छीले जाने लगे, मुसम्मियाँ और सेब कटने लगे।

लतीफ़ के सर का दर्द बरकरार था, मगर साथियों के बीच वह उसे आसानी से बरदाश्त कर रहा था।

लतीफ़ पर हमले के बारे में तरह-तरह की बातें हो रहीं थीं, किसी का मत था कि यह सब जगदीश माथुर का षडयन्त्र था, इस षडयन्त्र में मालिक लोग भी शामिल हैं। कोई हीरालाल को दोषी ठहरा रहा था। यह भी सुनने में आया कि लतीफ़ की लोकप्रियता को देखते हुए ट्रेड यूनियन कांग्रेस के लोगों ने यह काम किया था। लतीफ़ सब बातें ध्यान से सुन रहा था। एक विचार बार-बार उसकी ज़ेहन में आ रहा था कि अगर मालिक लोग भी इस षड्यन्त्र में शामिल होते तो उन्होंने उस पर इतना खर्च क्यों किया, उसे कार में लाद कर अस्पताल क्यों ले आये, रास्ते में ही क्यों न मर जाने दिया? उसकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था। सरदर्द के बीच वह इन तमाम बातों के बारे में ग़ौर करना नहीं चाहता था।

हसीना की स्थिति भिन्न थी, वह उमा के साथ बाहर निकली तो उसने महसूस किया, बाहर की दुनिया में धूप भी होती है, घास भी, आकाश और हवा भी। लगातार कमरे में बन्द रहने और पंखे की हवा में रहने से उसका दम घुट रहा था। इस वक्त उमा के साथ चलते-चलते वह झेंप जरूर रही थी। कई दिनों से वह कपड़े भी तब्दील नहीं कर पायी थी। कपड़ों की पूरी आब ख़त्म हो चुकी थी। दो एक जगह हल्दी के दाग पड़ गये थे। एक दिन तो चाय का पूरा कुल्हड़ ही कपड़ों पर गिर गया था। वह झेंपती हुई उमा के पीछे-पीछे पालतू की तरह चल रही थी।

वे लोग गेट पर खड़े हो गये। ड्राइवर उन्हें देखते ही कार गेट तक ले आया। कार रोक कर वह उतरा, उसने पहले पीछे का दरवाजा खोला। उमा और हसीना कार में बैठ गयीं तो उसने लक्ष्मीधर के लिए अगला दरवाजा खोला और उनके बैठते ही न जाने कब स्टीयरिंग पर पहुँच कर गाड़ी स्टार्ट कर दी।

हसीना से मीठी, खमीरी और मादक गंध आ रही थी। उमा प्रत्येक झोंके के साथ महसूस करती। उसके शरीर की वह गंध उमा के 'इंटीमेट' को बेंधती हुई-सी नाक में समा जाती थी। इस खमीरी गंध को खुशबू और बदबू के बीच कहीं रखा जा सकता है। वह न तो शुद्ध खुशबू थी और न शुद्ध बदबू। रास्ते भर उमा उसका रासायनिक विश्लेषण करती रही। मगर उस गंध में कहीं कोई आत्मीयता और आकर्षण भी था। कहीं अनात्मीयता और विकर्षण भी। उमा ने सोचा, हो सकता है तमाम तवायफों में से यही गंध फूटती हो उमा ने मुड़ कर हसीना की तरफ देखा। वह बेचारी सिमटी सकुचाई बैठी थी

और खिड़की से बाहर देख रही थी।

घर पहुँचकर उमा ने सबसे पहले हसीना के नहाने का इन्तजाम किया। उसे अपना एक पुराना ब्लाऊज और साड़ी देकर वह टेलीफोन पर जुट गयी। उसने श्यामबाबू के यहाँ फोन करके जानना चाहा कि कहीं एल० डी० और श्यामजी मिलकर उसे बेवकूफ तो नहीं बना रहे। श्याम बाबू के यहाँ उमा ने देर तक घण्टी दी, जब किसी ने चोंगा न उठाया तो उसने रिसीवर रख दिया। रिसीवर रख कर वह सर थाम कर बैठ गयी। मगर तभी टेली-फोन की घंटी टनटनाई। हड़बड़ी में उस ने फोन उठाया।

'उमा।' उस ने कहा।

'हाय,' आवाज श्यामजी की थी, 'दिल्ली कब आ रही हो?'

'कभी नहीं।'

'तो लड़की कौन पसन्द करेगा?'

'लड़का।' उमा बोली, 'रस्में क्यों निभा रहे हो?'

श्यामजी जोर से हँसने लगा। उमा चुप रही। बहुत देर तक चुप रही, श्यामजी उधर से 'हेलो हेलो' करता रहा।

'हाँ,' थोड़ी देर बाद उमा बोली।

'क्या कर रही हो?'

'नहीं बताऊँगी।'

'बताओ यार बोर मत करो।'

'करेंगे।'

'उल्लू।'

'तुम उल्लू।'

'तुम।'

'तुम।'

'अच्छा हमी उल्लू। बताओ दिल्ली कब आ रही हो।'

उमा का गुस्सा शान्त हो रहा था, बोली, 'तुम हमें बता कर क्यों नहीं गये। हम तब से परेशान हैं।'

श्यामजी जोर से हँसा, बोला, 'भाई साहब भी साथ में थे।'

'बता तो सकते थे।'

'चलते वक्त वे तैयार हो गये। आज वे लौट रहे हैं। एल०डी० से बोलो तुम्हें हर हालत में सुबह की फ़्लाइट मे बैठा देगा।'

एल०डी० सर पर आ धमका था। उमा ने फोन उसे थमा दिया। वह 'ठीक है, ठीक है' कहता रहा और बोला, 'लतीफ़ को होश आ गया है।'

'हसीना को ?'

'वह आज हमारे यहाँ है।'

'तब तो तुम आज ही भाभी को रवाना कर दो।' हंसते हंसते श्यामजी ने रिसीवर रख दिया।

फोन रख कर लक्ष्मीधर तुरन्त उमा की सीट रिजर्व कराने में जुट गया।

उमा के मूड में यकायक बहार आ गयी थी। हसीना सर पर तौलिया लपेटे कमरे में आयी तो बोली, 'आइए सरदार जी, हम तो सुबह हवाई जहाज से दिल्ली जा रहे हैं।'

'लतीफ़ ठीक होता तो हम भी आपके साथ चलते।'

'अगली बार चलना। दिल्ली से हम तुम्हारे लिए क्या लाएं ?'

'बस अपनी मुहब्बत बनाये रखिये।'

उमा ने उसे खींच कर माथे पर चूम लिया। उसके सर से ग्लिसरीन साबुन की खुशबू आ रही थी। उमा ने सर पीट लिया। वह किसी को अपना साबुन इस्तेमाल न करने देती थी। इस बेवकूफ लड़की ने शैम्पू के बजाए पूरी टिकिया सर में रगड़ ली होगी। इस वक्त वह गुलाब-सी महक रही थी।

'आज हम तुम्हें सजायेंगे।' उमा बोली और हसीना को खींचते हुए अपने ड्रेसिंग टेबिल तक ले गयी। उसके पास एक नया स्प्रे आया था। उसने हसीना के जिस्म पर खूब जम कर स्प्रे किया। अपना फांउडेशन लगाया। एक शोख रंग की लिपिस्टिक उसे भेंट कर दी और उसके होंठ रंग दिये। बालों को हेयर ड्रायर से सुखा कर तेल के बजाय वैसलीन हेयर टानिक की कुछ बूंदें डाल कर अपने हाथों से मल दिया। बोली, 'अब तुम जाओ लतीफ़ के पास।'

'हमें शर्म आ रही है।' आइने में अपना चेहरा देखते हुए वह बोली, 'वे हमें डांटेंगे।'

'मर्दों का काम ही है, डांटना। तुमने एल० डी० का गुस्सा नहीं देखा।'

'दीदी हमें सचमुच शर्म आ रही है। उनके साथी लोग भी क्या सोचेंगे।'

'अच्छा हम तुम्हारे साथ चलेंगे, तुम्हें छोड़ने।'

'आप तो लौट आयेंगी। मगर वे डांटेंगे जरूर।'

'अच्छा हमारे लिए डांट भी बरदाश्त कर लेना।'

उमा ने दोनों का भोजन पैक करवाया और एल० डी को बता कर कार में बैठ गयी।

वे लोग बहुत खुशी-खुशी कमरे तक पहुँचे। मालूम हुआ, लतीफ़ दोबारा बेहोश हो गया है। डाक्टरों ने बात-चीत के लिए सख्त मनाही की थी और उपचार में लगे थे। हसीना को अपने ऊपर बहुत क्रोध आया। वह क्यों उमा के साथ चली गयी। उमा तुरन्त डाक्टर से मिलने चली गयी। मालूम हुआ, थकान से चूर होकर दोबारा बीमार पड़ गया है। उमा ने हसीना को ताकीद कर दी कि होश में आने पर वह लतीफ को बिलकुल न बोलने दे। घबराने की कोई बात नहीं।

उमा को दिल्ली जाने के लिये सामान खरीदना था। वह जल्दी ही वहाँ से रुख़सत हो ली। उमा को विदा करते ही हसीना टायलट में घुस गयी और साबुन से अपने होंठ धोने लगी। होंठ साफ़ हो गये तो उसने मुँह धोना शुरू किया।

दिल्ली में उमा को हसीना का ध्यान भी न आया। लतीफ़ का भी नहीं। बाबा की याद आती तो वह फोन मिला कर बाबा से बात कर लेती। बाबा के लिए उसने इस बार एक नये मॉडल की ट्रेन खरीद रखी थी और बाबा दिन भर ट्रेन का ही इंतजार करता रहता था।

'मामा कब आयेगी?' वह आया से पूछता।

'मामा कल आयेगा।'

'आज, कल है क्या?'

'नहीं आज आज है।'

'कल भी तो कल था।'

'ओ हो।' आया झल्ला जाती, 'बाबा तू तो बहुत कान खाता है।'

बाबा ताली बजाने लगता, 'अरे हम तो बिस्किट खाते हैं। बिस्किट कान होता है?'

शाम को उमा का फोन आया तो बाबा ने शिकायत कर दी, 'आया कहती है बिस्किट कान होता है।'

उमा दिल्ली में खूब बोर हो रही थी। लड़की की परीक्षाएँ चल रही थी। और सरमीधर की कांफ्रेंस। वह होटल में पड़ी-पड़ी बोर होती रहती। ज्यादा से ज्यादा कनाट प्लेस तक घूम आती। मगर श्यामजी उसका बहुत ध्यान रखता। रोज अपनी बाँहों में कुछ न कुछ भर लाता। कभी साड़ी, कभी मैक्सी, कभी नाइटी, कभी मिडी।

'मैं तुम्हारा दहेज जुटा रहा हूँ।' वह कहता।

श्यामजी इधर कुछ खब्ती होता जा रहा था। बूढ़ों की तरह हर बात कर समझा कर कहता। कई बार वाक्य अधूरा ही छोड़ देता और उमा को वाक्य पूरा करना पड़ता। वह वाक्य पूरा करती और खिलखिलाए बिना न रहती।

'देखो आज शाम को काश्मीरी रोग़नजोश खायें और नान। बाद में होटल तक पैदल लौटेंगे।' श्याम जी बहुत लाड में पूछता, 'बाद में होटल तक····।'' वह सहसा रुक जाता और उमा कुढ़ते हुए कहती 'पैदल लौटेंगे।'

'देखो लड़की की परीक्षाएँ चल रही हैं तो तुमने हमें क्यों बुलाया ?'

'तुम्हारी वार्डरोब एकदम कंडम हो गयी थी।' श्यामजी बोला, 'तुम्हारी वार्डरोब एकदम····

'कंडम हो गयी थी।' उमा ने कहा और इस बार हँसी न रोक पायी। वह गर्दन उठा कर जोर से खिलखिलाई।

'तुम आजकल बहुत खिलखिलाने लगी हो।' श्यामजी ने प्यार से उमा की तरफ़ देखते हुए कहा, 'तुम आजकल बहुत····'

उमा से अब और अधिक बर्दाश्त न हुआ। वह पेट पकड़कर उठी और हँसते हुए लोटपोट हो गयी। उसकी हँसी थी कि रुक ही नहीं रही थी। श्यामजी हक्का-बक्का उमा को हँसते हुए देख रहा था। अचानक उसे लगा कि वह पागल हो गयी है।

'पागल हो गयी हो क्या ?' श्यामजी ने उसके पास आते हुए पूछा।

'रुको रुको।' उमा कुर्सी पर बैठ गयी। उसके पेट में बल पड़ गये थे। बोली, 'तुम मेरे प्राण ले लोगे।'

'हा हा हा !' श्यामजी बोला, 'अच्छा बताओ घर पर तुम कभी इतना हँसी हो ?'

'घर में हम रोते हैं।' उमा बोली, 'हँसी के बाद हमें बहुत रोना आता है।'

'रोना भी एक ऐयाशी है। कितने लोगों को नसीब होती है ?' श्यामजी ने पूछा, ''कितने लोगों को ···'

'नसीब होती है।' उमा को दोबारा हँसी का दौरा पड़ा।

श्यामी जी की समझ में कुछ न आ रहा था बोला, 'लगता है तुमने आज भाँग····'

हँसते-हँसते उमा कुर्सी पर गिर पड़ी। श्यामजी को पूरा विश्वास हो

गया कि इसको कुछ हो गया है, उसने तुरन्त एयरपोर्ट फोन मिलवाया कि प्लेन राइट टाइम है या नहीं।

'चलो खाना खा आयें। खाना खाकर होटल तक ''''वह श्यामजी के ही अन्दाज में अन्तिम शब्द पर जोर देकर रुक गयी।

'पैदल लौटेंगे।' श्यामजी बोला।

तभी टेलीफोन टनटनाया। उमा ने उठाया।

'हैलो श्यामजी हैं ?' आवाज आपरेटर की थी।

'हाँ हैं।' उमा ने कहा।

श्यामजी ने फोन ले लिया और बोला, 'ओह ! हम आज ही चल रहे हैं ठीक है। हां। नहीं। हा हा हा। जरूर। जरूर। अच्छा।

उमा का चेहरा तमतमाने लगा। वह उठी और कमरे से बाहर निकल गयी। श्यामजी यही चाहता था। उमा लिफ्ट से सीधे रिसैप्शन पर गयी।

रिसेप्सनिस्ट का नाम भी उमा ही था। उमा थोड़ी खुशामद के बाद कमरे की लाइन पाने में सफल हो गयी।

'तुम तो मार डालोगी।' श्यामजी कह रहा था।

'तुमने मार डाला।' उधर से शोख आवाज आई, अठखेलियाँ खाती हुई, 'तुम तो कह रहे हो अगले रोज लौट आयेंगे। कितनी बार फ़ोन किया, कोई चुड़ैल उठाती थी।'

उमा पसीना पोछने लगी। उसे लग रहा था कि वह चक्कर खाकर गिर जायेगी। तभी श्यामजी की आवाज सुनायी दी, 'कौन उठाता था फ़ोन ?'

'चुड़ैल।' उधर से और भी नफरत-बुझी आवाज आयी।

'मेरी बहन के लिए ऐसा मत कहो।'

'सॉरी।' उधर से आवाज आई, 'तुमने कभी बताया नहीं।'

'देखो ऐसे न बोला करो।' श्यामजी बोला, 'मुझे गहरा सदमा पहुँचा है।'

उमा के हाथ में रिसीवर काँप रहा था। दूसरी उमा ने उसकी यह हालत देखी तो आँखों ही आँखों से माजरा पूछा। उमा ने अपने मातमी चेहरे पर फीकी-सी मुस्कराहट लाने की कोशिश की और अपनी बायीं आँख दबा दी।

'सॉरी, मैंने पहले ही कह दिया था।'

'अगर तुम सुबह की फ्लाइट से न आये तो हम तुमसे कभी न बोलेंगे।'

'मैं आऊँगा और सुबह की फ्लाइट से ही आऊँगा।'

उमा ने तभी तय कर लिया कि वह किसी बहाने सुबह की फ्लाइट तो छुड़वा ही देगी।

उसने यही किया।

सुबह जब श्यामजी मुंह धोकर सामान पैक करके उसे जगाने आया तो वह भड़क गयी, 'सारी रात सर दर्द हुआ है। बीस बार तुम्हें आवाजें दीं, मगर तुमने हर बार करवट बदल ली।'

श्यामजी रात भर लगभग जागता रहा था। फ्लाइट पकड़ने की उसे इतनी चिन्ता थी कि 'मॉर्निंग अलार्म' भी लगा कर सोया था। मॉर्निंग अलार्म जगाता इससे पहले ही वह जाग चुका था।

'मगर मुझे खुद रात को नींद न आ रही थी।'

उमा ने उत्तर देने के बजाय, कराहना अधिक उपयुक्त समझा। कराहते हुए ही उसने कहा, 'इतना भी न हुआ कि किसी डाक्टर को बुला लेते।' वह हाय-हाय करने लगी।

श्यामजी ने रिसेप्शनिस्ट के सामने अपनी समस्या रखी। रिसेप्शनिस्ट ने कहा कि इस वक्त शायद ही कोई डाक्टर आना पसन्द करे। श्यामजी ने रिसीवर रख दिया और उमा का सर दाबने लगा। श्यामजी के हाथों का स्पर्श उमा से बरदाश्त न हो रहा था। रात भर उसने करवट बदलते हुए गुज़ारी थी। उसके अन्दर नफ़रत, अपमान और प्रतिशोध का नाला बह रहा था। वह इस शख्स की सूरत तक देखना न चाहती थी। श्यामजी की मूंछें, श्यामजी की सांस, श्यामजी के बदन से उसे अरुचि हो गयी थी। वह आँखें मूंदे धीरे-धीरे कराहती रही।

'कैसी तबीयत है।' श्यामजी ऊब गया था।

उमा ने करवट बदल ली और बोली, 'तुम चाहो तो अभी चले जाओ। मैं कल आ जाऊँगी।'

श्यामजी के लिए वह दरअसल संवादहीनता की स्थिति पैदा कर रही थी। मीना के बारे में उसने सुना जरूर था, मगर उसे आशा नहीं थी कि वह श्यामजी के साथ आप से तू पर आ चुकी है। उसका मन कर रहा था कुर्सी, स्टूल या पलंग उठाकर श्यामजी के मुंह पर दे मारे। मगर यह उसकी प्रकृति और हैसियत से बाहर था। वह सिर्फ़ कराह सकती थी, सिसक सकती थी, पछता सकती थी, उसे अचानक बाबा की भी याद आने लगी। गोया कि उसकी ज़िन्दगी में जितनी भुलाने लायक या याद करने लायक चीज़ें थीं, तमाम उसके सामने आती चली गयीं।

अचानक वह रोने लगी। जितनी बार श्यामजी घड़ी की तरफ़ देखता उसे रुलाई आ जाती।

श्यामजी ने उमा का यह रूप नहीं देखा था। उसे उमा पर एक साथ
और क्रोध आ रहा था। उसने आखिर फ्लाइट छोड़ने का निर्णय ले
ा और डाक्टर को बुला भेजा। जब तक डाक्टर उमा के नाक, पेट, गले
दि का मुआइना करता श्यामजी नीचे रिसैप्शन पर जाकर फ़ोन कर
या। वह फ़ोन के बाद बहुत निश्चिन्त हो गया और बहुत अनौपचारिक
रीके से कमरे में घुसा, जैसे बाथरूम से निकला हो। उमा दो-एक गाव
किंयों के सहारे बिस्तर पर पड़ी थी, 'कहाँ गये थे ?'

'कहीं नहीं। बाहर खड़ा आसमान की तरफ़ देख रहा था।'' श्यामजी ने
डाक्टर से पूछा, 'क्या तकलीफ है ?'

'किसको फोन करने गये थे ?' उमा ने पूछा।

'फ़ोन ?' श्यामजी चकरा गया, 'डाक्टर साब लगता है इन्हें नाइट मेयर
आते हैं।'

उमा ने आँखें मूंद लीं, शायद वह क्रोध से श्यामजी की तरफ़ देखने तक
में असमर्थ थी। उसने हमेशा प्यार से ही उसकी तरफ़ देखा था।

'क्या तकलीफ़ है डाक्टर ?' श्यामजी ने पूछा।

'लगता है दिमागी तौर पर परेशान हैं।'

उमा ने और ज़ोर से आँखें मूंद लीं। डाक्टर उसके शब्दों को ही दोहरा
रहा था, 'लगता है इन्हें कोई गहरा सदमा लगा है।'

श्यामजी पीठ पीछे दोनों हाथ लटकाये कमरे में घूमने लगा, 'मगर दोप-
हर तक तो ये ठीक-ठाक थी।'

'लगता है किसी बात से उखड़ गयी हैं।' डाक्टर ने कहा, 'सुबह किसी
साइक्येटरिस्ट को दिखा दीजिए। डाक्टर मुकर्जी हैं पूसा रोड पर। फिलहाल
मैं हल्का-सा सैडेटिव देना पसन्द करूंगा।'

डाक्टर ने वेलियम-५ की एक टिकिया श्यामजी की हथेली पर रख द
और बोला, 'इन्हें आराम से सोने दें।'

श्यामजी ने माथा पीट लिया। उसने उमा का जबडा खोल कर व
बेरुखी से टिकिया उमा के मुंह मे रख दी और उसकी तरफ़ पानी का गिल
बढ़ा दिया। उमा ने टिकिया निगल ली और श्यामजी की ओर पीठ क
लेट गयी। श्यामजी से उसे इतना परहेज हो गया कि उसने अपनी पीठ
साड़ी से अच्छी तरह ढंक ली। श्यामजी ने सोचा कि उमा को जाड़ा
रहा है। उसने एक हल्की-सी चादर उढ़ा दी।

'यह कफ़न क्यों उढ़ा रहे हो ?' उमा ने क्रोध में कहा।

श्यामजी ने चादर उठा ली और कुर्सी पर बैठ कर धीरे-धीरे बीयर के घूंट लेने लगा।

दूसरे दिन सुबह की उड़ान से वे लोग रवाना हुए। उमा के जैसे दांत जुड़ गये थे। चौबीस घण्टे से उसने मौन धारण कर रखा था। विमान में भी वह चुपचाप श्यामजी की बगल में बैठी रही। श्यामजी सोच रहा था, उमा की तबीयत सचमुच बहुत नासाज़ है। उसने दो-तीन बार सन्तरे छीले, मगर उमा को जैसे उसके नाखूनों से भी चिढ़ हो गयी। प्यास लगने पर उसने खुद एक सन्तरा उठाया और छीलने लगी। श्यामजी की तरफ़ एक फ़ांक भी न बढ़ायी।

हवाई अड्डे पर श्यामजी का ड्राइवर उपस्थित था। उसने उमा को घर पर छोड़ा और लक्ष्मीधर के सुपुर्द करके चुपचाप निकल गया। उमा की इस अप्रत्याशित बीमारी ने उसका पूरा उत्साह भंग कर दिया था। उमा के यहां से उसने अपने फैमिली डाक्टर बनर्जी को फ़ोन किया और डाक्टर के आने से पहले ही चाय का कप पीकर विदा हो गया।

'लड़की पसन्द आयी श्यामजी को ?' लक्ष्मीधर ने पूछा।

'मेरे सामने श्यामजी का नाम भी न लो।' उमा ने कहा।

'क्या हुआ ? उसने कोई गुस्ताख़ी की ?'

'न।' उमा बोली, इतनी लिबर्टी मैं नहीं देती।'

'तो फ़िर नाराज़ क्यों हो ?

'बाबा कितने बजे लौटेगा ?' उमा ने पूछा। उमा श्यामजी का जिक्र भी सुनना न चाहती थी।

'रोज़ के समय पर यानी ढाई बजे तक उसे लौटना चाहिए।'

उमा ने घड़ी देखी, अभी पौन घण्टा बाकी था।

'बैनर्जी को फ़ोन कर दें, मैं अब ठीक हूं।' उमा ने कहा।

एक आज्ञाकारी बच्चे की तरह लक्ष्मीधर ने डा० बनर्जी को संदेश दिया कि उमा अब ठीक है।

'यह मीना कौन है ?' उमा ने सहसा लक्ष्मीधर से पूछा।

'मीना मीरचन्दानी ?' लक्ष्मीधर ने बात को समझने की कोशिश करते हुए कहा, 'मीरचन्दानी की छोटी बिटिया। गोकुल मीरचन्दानी, जो हमारे यहां मार्केटिंग मैनेजर हैं।'

'श्यामजी आजकल उसी पर लट्टू है। दोनों चुपके-चुपके इश्क लड़ा रहे हैं।'

'हूं।' लक्ष्मीधर ने कहा, 'अब समझा। मैंने उन्हें पहले भी कई बार साथ-साथ देखा है। उसकी सूरत देखोगी तो सर पीट लोगी। इस शहर में

उसके कम से कम एक दर्जन आशिकों को तो मैं जानता हूँ। शी इज ए विच। चार तो अवार्शन हो चुके हैं। शादी से पहले ही वह ढल गयी है। दरअस्ल उसी के बल पर मीरचन्दानी मिल में प्रोमोशन पाता है।'

'लगता है मीरचन्दानी बहुत गिरा हुआ इन्सान है जो अपनी बिटिया से पेशा करवाता है।' उमा ने कहा।

'दरअसल मीना के आशिकों की फेहरिस्त बहुत दिलचस्प है। उसके आशिक लोग कम्पनी के बहुत काम आते हैं। इनकम टैक्स के असिस्टेन्ट कमिश्नर मिस्टर गांगुली को मीना का किंगलवर माना जाता है।'

'गांगुली अविवाहित है?'

'नहीं चार बच्चे हैं।,

'छी छी आप किस कुलटा का जिक्र कर रहे हैं।'

'हाँ मगर उसी ने कम्पनी के लाखों के टैक्स की बचत करायी थी और इसी तरह लेबर कमिश्नर भट्टाचार्य तो गर्मियों में मीना के साथ नैनीताल में छुट्टी मनाते हैं। यह अकारण नहीं कि इतनी बड़ी मिल में मालिकों को एक भी बार प्रासिक्यूट नहीं किया गया, जबकि बीसियों बार केस दर्ज हुए।'

'ऐसी क्या खासियत है उस लड़की में कि बड़े-बड़े लोग उस पर फ़िदा हैं।'

लक्ष्मीधर ने ज़ोर से एक खोखला-सा ठहाका लगाया, 'एक पढ़ी-लिखी तवायफ़ है। मर्दों को पटाना जानती है। रिझाना जानती है। उसके बारे में तो इतनी अफ़वाहें हैं कि बताने लायक नहीं। वह एक गयी गुजरी औरत है।'

उमा की आत्मा को शान्ति मिली उसके अन्दर जो चीज धू धू सुलग सुलग रही थी, लक्ष्मीधर के एक ही छींटे से शांत हो गयी। लक्ष्मीधर इस कला में पारंगत था। वह एक अच्छा सेल्समैन था। लक्ष्मीधर ने अमृतधारा की तरह उमा को राहत पहुँचायी।

तभी बाबा स्कूल से लौट आया।

'हाय रे मेरा बेटुल।' उमा ने दौड़ कर बाबा को गोद में उठा लिया। उमा ने उस पर अपना सम्पूर्ण प्रेम उँडेल दिया। चुम्बनों से बाबा के गाल सुर्ख़ हो गये,' हम तुम्हारे लिए एक रेलगाड़ी लाये हैं। वह बैटरी से चलती है। एल० डी० ज़रा मेरा सूटकेस खोल कर बाबा की रेलगाड़ी निकाल दो।'

रेलगाड़ी का नाम सुनते ही बाबा की मम्मी में दिलचस्पी ख़त्म हो गई। वह कूदता हुआ लक्ष्मीधर के पीछे भागा छुक छुक छुक। लक्ष्मीधर ने बड़ी तत्परता से साड़ियों के नीचे से रेलगाड़ी का डिब्बा निकाला। बाप-बेटा दोनों वहीं फ़र्श पर बैठ कर पटरियाँ जोड़ने लगे। रेलगाड़ी सचमुच छुक-छुक

श्यामजी ने चादर उठा ली और कुर्सी पर बैठ कर धीरे-धीरे बीयर के घूंट लेने लगा।

दूसरे दिन सुबह की उड़ान से वे लोग रवाना हुए। उमा के जैसे दांत जुड़ गये थे। चौबीस घण्टे से उसने मौन धारण कर रखा था। विमान में भी वह चुपचाप श्यामजी की बगल में बैठी रही। श्यामजी सोच रहा था, उमा की तबीयत सचमुच बहुत नासाज़ है। उसने दो-तीन बार सन्तरे छीले, मगर उमा को जैसे उसके नाखूनों से भी चिढ़ हो गयी। प्यास लगने पर उसने खुद एक सन्तरा उठाया और छीलने लगी। श्यामजी की तरफ़ एक फ़ांक भी न बढ़ायी।

हवाई अड्डे पर श्यामजी का ड्राइवर उपस्थित था। उसने उमा को घर पर छोड़ा और लक्ष्मीधर के सुपुर्द करके चुपचाप निकल गया। उमा की इस अप्रत्याशित बीमारी ने उसका पूरा उत्साह भंग कर दिया था। उमा के यहाँ से उसने अपने फैमिली डाक्टर बनर्जी को फ़ोन किया और डाक्टर के आने से पहले ही चाय का कप पीकर विदा हो गया।

'लड़की पसन्द आयी श्यामजी को?' लक्ष्मीधर ने पूछा।

'मेरे सामने श्यामजी का नाम भी न लो।' उमा ने कहा।

'क्या हुआ? उसने कोई गुस्ताख़ी की?'

'न।' उमा बोली, इतनी लिबर्टी मैं नहीं देती।'

'तो फ़िर नाराज़ क्यों हो?

'बाबा कितने बजे लौटेगा?' उमा ने पूछा। उमा श्यामजी का ज़िक्र भी सुनना न चाहती थी।

'रोज के समय पर यानी ढाई बजे तक उसे लौटना चाहिए।'

उमा ने घड़ी देखी, अभी पौन घण्टा बाकी था।

'बैनर्जी को फ़ोन कर दें, मैं अब ठीक हूँ।' उमा ने कहा।

एक आज्ञाकारी बच्चे की तरह लक्ष्मीधर ने डा० बनर्जी को संदेश दिया कि उमा अब ठीक है।

'यह मीना कौन है?' उमा ने सहसा लक्ष्मीधर से पूछा।

'मीना मीरचन्दानी?' लक्ष्मीधर ने बात को समझने की कोशिश करते हुए कहा, 'मीरचन्दानी की छोटी बिटिया। गोकुल मीरचन्दानी, जो हमारे यहाँ मार्केटिंग मैनेजर हैं।'

'श्यामजी आजकल उसी पर लट्टू है। दोनों चुपके-चुपके इश्क लड़ा रहे हैं।'

'हूँ।' लक्ष्मीधर ने कहा, 'अब समझा। मैंने उन्हें पहले भी कई बार साथ-साथ देखा है। उसकी सूरत देखोगी तो सर पीट लोगी। इस शहर में

उसके कम से कम एक दर्जन आशिकों को तो मैं जानता हूँ। शी इज ए विच। चार तो अबार्शन हो चुके हैं। शादी से पहले ही वह ढल गयी है। दरअस्ल उसी के बल पर मीरचन्दानी मिल में प्रोमोशन पाता है।'

'लगता है मीरचन्दानी बहुत गिरा हुआ इन्सान है जो अपनी बिटिया से पेशा करवाता है।' उमा ने कहा।

'दरअसल मीना के आशिकों की फेहरिस्त बहुत दिलचस्प है। उसके आशिक लोग कम्पनी के बहुत काम आते हैं। इनकम टैक्स के असिस्टेन्ट कमिश्नर मिस्टर गांगुली को मीना का किंगलवर माना जाता है।'

'गांगुली अविवाहित है ?'

'नहीं चार बच्चे हैं।,

'छी छी आप किस कुलटा का ज़िक्र कर रहे हैं।'

'हाँ मगर उसी ने कम्पनी के लाखों के टैक्स की बचत करायी थी और इसी तरह लेबर कमिश्नर भट्टाचार्य तो गर्मियों में मीना के साथ नैनीताल में छुट्टी मनाते हैं। यह अकारण नहीं कि इतनी बड़ी मिल के मालिकों को एक भी बार प्रासिक्यूट नहीं किया गया, जबकि बीसियों बार केस दर्ज हुए।'

'ऐसी क्या ख़ासियत है उस लड़की में कि बड़े-बड़े लोग उस पर फ़िदा है।'

लक्ष्मीधर ने जोर से एक खोखला-सा ठहाका लगाया, 'एक पढ़ी-लिखी तवायफ़ है। मर्दों को पटाना जानती है। रिझाना जानती है। उसके बारे में तो इतनी अफ़वाहें हैं कि बताने लायक नहीं। वह एक गयी गुजरी औरत है।'

उमा की आत्मा को शान्ति मिली उसके अन्दर जो चीज धू धू सुलग सुलग रही थी, लक्ष्मीधर के एक ही छींटे से शांत हो गयी। लक्ष्मीधर इस कला में पारंगत था। वह एक अच्छा सेल्समैन था। लक्ष्मीधर ने अमृतधारा की तरह उमा को राहत पहुँचायी।

तभी बाबा स्कूल से लौट आया।

'हाय रे मेरा बेटुल।' उमा ने दौड़ कर बाबा को गोद में उठा लिया। उमा ने उस पर अपना सम्पूर्ण प्रेम उँडेल दिया। चुम्बनों से बाबा के गाल सुर्ख़ हो गये,' हम तुम्हारे लिए एक रेलगाड़ी लाये हैं। वह बैटरी से चलती है। एल० डी० जरा मेरा सूटकेस खोल कर बाबा की रेलगाड़ी निकाल दो।'

रेलगाड़ी का नाम सुनते ही बाबा की मम्मी में दिलचस्पी ख़त्म हो गई। वह कूदता हुआ लक्ष्मीधर के पीछे भागा छुक छुक छुक्। लक्ष्मीधर ने बड़ी तत्परता से साड़ियों के नीचे से रेलगाड़ी का डिब्बा निकाला। बाप-बेटा दोनों वहीं फर्श पर बैठ कर पटरियाँ जोड़ने लगे। रेलगाड़ी सचमुच छुक-छुक

करती हुई पटरियों पर ठुमकने लगी। थोड़ी ही देर में रेलगाड़ी ने रफ़्तार पकड़ ली और बीच-बीच में व्हिसल भी करने लगी।

'मामा हमें यह रेलगाड़ी बहुत अच्छी लगती है।' बाबा रेलगाड़ी के साथ-साथ पटरी के इर्द गिर्द घूमने लगा।

'ऐसे चक्कर न लगाओ, सर घूम जाएगा।' उमा ने बताया, 'जानते हो इस रेलगाड़ी का नाम है फ्रन्टियर मेल।'

बाबा की रेलगाड़ी पटरी से उतर गयी तो उमा बोली, 'देखो बाबा अपनी गाड़ी को कभी पटरी से मत उतरने देना।'

'थीक है।' बाबा बोला, 'हम गाड़ी को मालेगा अगल बदमाशी कलेगी।'

रेलगाड़ी पाकर बाबा तृप्त हो गया। वह बार-बार पटरी समेटता, बिछाता और रेलगाड़ी चालू कर देता।

'लतीफ़ का क्या हाल है?' उमा ने पूछा।

'बेहतर है।' लक्ष्मीधर बोला, 'मगर उसकी मौत हो चुकी है।'

'क्या मतलब?'

'वह खुद तो जिन्दा है, उसके ट्रेड यूनियन के कैरियर की मौत हो चुकी है।'

'हमें उसके ट्रेड युनियन के कैरियर से क्या लेना था?'

'मैनेजमेन्ट को तो लेना था।' लक्ष्मीधर डींग हांकने लगा, 'डायरेक्टर लोग मुझसे बेहद प्रसन्न हैं कि मैंने उनकी मिल में उभरने वाली एक चुनौती को हमेशा के लिए ख़त्म कर दिया। लतीफ़ कुछ भी समझे, तमाम लोग उसे मालिकों का पिट्ठू और दलाल ही कह रहे हैं। जब से हम लोगों ने उसे अस्पताल से निकाल कर नर्सिंग होम में भर्ती करा दिया, उसके निकट के दोस्तों का भी उनपर से विश्वास उठ गया। यह एक गहरी चाल थी जिसका एहसास उसे तन्दुरुस्त होने के बाद होगा।'

'लोग तुम्हें भी तो मालिकों का दलाल ही कहते होंगे।'

लक्ष्मीधर हँसा, 'मैं एक कामयाब दलाल हूँ। एक मँहगा दलाल।'

'यह दलाली तुम्हें भी मँहगी पड़ रही है।' उमा ने लक्ष्मीधर के सर की तरफ़ देखते हुए कहा, 'इस उम्र में तुम्हारे आधे बाल पक गये हैं।'

उमा ने देखा लक्ष्मीधर के सर के नीचे एक कटोरी के आकार की चांद निकल आयी थी, जो धीरे-धीरे रेगिस्तान की तरह फैलती जा रही थी। चश्मे के कीमती फ्रेम के भीतर उसका निस्तेज चेहरा आज उसने मुद्दत के बाद गौर से देखा था।

'तुम अपने सर के ऊपर जितने काम लेते जाओगे, तुम्हारी चांद बढ़ती

श्यामजी ने अपने दाँतों की नुमायश लगा दी। जरा सी तारीफ़ सुन कर पुलकित हो जाता था।

वे लोग नर्सिंग होम पहुँचे तो लतीफ़ तकियों के सहारे अधलेटा चाय पी रहा था। हसीना पास ही स्टूल पर बैठी थी। उमा उसे जिन कपड़ों में छोड़ गयी थी, वह उन्हीं कपड़ों में थी। बालों के ऊपर धूल की हलकी सी परत जम गयी थी और होठों पर पपड़ियाँ। चेहरे से लगता था, नहाई भी नहीं। उमा को उसकी वही खमीरी गंध याद आ गयी। वह जाकर उसके साथ ही स्टूल पर बैठ गयी। ठीक वही गंध थी। खमीरी। मीठी। खट्टी। सुगन्ध। दुर्गंध।

'अब कैसी तबीयत है लतीफ़ भाई ?' उमा ने पूछा

श्यामजी पास ही एक कुर्सी पर बैठ गया था और चाबियों के गुच्छे से खेल रहा था।

'अब ठीक हूँ। अस्पताल में जी ऊब रहा है।'

'ये हसीना ने क्या सूरत बना रखी है ?'

'इस पर बहुत मेहनत पड़ गयी।' लतीफ़ बोला, 'दिनभर चक्करघिन्नी की तरह दौड़ती रही है। कल रात शायद पहली बार सोई थी।'

'बहरहाल तुम लोगों को देख कर बहुत अच्छा लग रहा है।' उमा बोली, तीसरे दिन लौट आई हूँ मगर लगता है महीनों बाद लौटी हूँ।'

'आप इस बीच और खूबसूरत हो गयी हैं।' हसीना ने कहा।

हसीना ने ठीक ही कहा था। उमा ने दिल्ली में पाँच घंटे ब्यूटी पारलर में बिताये थे।

'आज लतीफ़ के साथी नहीं दिखाई दे रहे ?'

'दी दी सब लोग इनके खिलाफ़ हो गये हैं। हसीना ने बताया, 'इन का सबसे गहरा दोस्त हफ़ीज कह रहा था कि लतीफ़ तो मालिकों का जरखरीद गुलाम है।'

'बकने दो।' उमा ने श्यामजी को बताया, 'सुन रहे हो ?'

'सुन रहा हूँ।' श्यामजी बोला,'वे लोग शायद लतीफ़ को जिन्दा नहीं देख पा रहे हैं। वे लोग लतीफ़ की शहादत चाहते थे।'

लतीफ़ चुपचाप छत की कड़ियाँ गिनता रहा। उसे भी लग रहा था कि कहीं जरूर कोई घपला हो गया है जो दो चार दिन से एक भी साथी 'नर्सिंग-होम' नहीं आया।

श्यामजी से मिलने 'नर्सिंग होम' के कई वरिष्ठ डाक्टर चले आए। अपने स्वर्गीय पिता की समृति में श्यामजी के परिवार ने 'नर्सिंग होम' को एक लाख रुपये का अनुदान दिया था। नर्सिंग होम की कार्यकारिणी का वह एक प्रभाव-

शाली सदस्य था। वह कुर्सी पर बैठे-बैठे डाक्टर लोगों से बातचीत करता रहा ।

लतीफ़ का मन अब इस माहौल से उखड़ चुका था। वह एक पंछी की तरह पिंजरे से आज़ाद हो जाना चाहता था। उसने डाक्टर को उमा से बात करते देख उसने हसीना को पास बुलाया और कहा कि डाक्टर से पूछे कि वह कब तक छुट्टी पायगा।

उमा ने बात सुन ली। वह जाकर अंग्रेजी में डाक्टर से बतियाने लगी। मालूम हुआ कि लगभग एक सप्ताह उसे 'आब्ज़र्वेशन' में रखा जायगा। उसके बाद चार सप्ताह घर पर आराम करना होगा।

• •

नयी दिल्ली का रेलवे स्टेशन। टिकट लेने वालों की लम्बी कतार। भीड़। अपरिचित चेहरों की भीड़। हर व्यक्ति अपने में मशगूल। तीसरे दर्जे के टिकट की खिड़की की कतार के सब से पीछे खड़े थे सिद्दीकी साहब। दो तीन रोज से शेव न करने से चेहरा बड़ा बेरौनक लग रहा था। उन का चेहरा देखकर ही बताया जा सकता था कि उन्हें टिकट नहीं मिला और उनकी जेब में टिकट लायक पैसे ही बचे हैं। वे कुछ देर कतार में लगे रहे और जब उन्होंने देखा कि कतार आगे सरक ही नहीं रही है तो वह बगल में रखा सूटकेस उठा कर प्लेटफार्म की खिड़की की तरफ़ चल दिये। भीड़ वहाँ भी कम न थी। सिद्दीकी साहब एक लावारिस आदमी की तरह भीड़ में भटकने लगे। वे लगातार सिगरेट फूंक रहे थे, खांस रहे थे और बीच बीच में एक नम्बर प्लेटफार्म पर खड़ी गाड़ी की तरफ़ देख लेते। वे जितनी बार गाड़ी की तरफ़ देखते, कोई न कोई परिचित चेहरा दिखायी दे जाता। तमाम सीटों का फैसला हो चुका था और सब लोग नामांकन पत्र दाखिल करने के लिए अपने ज़िलों के लिए रवाना हो रहे थे। सिद्दीकी साहब यह जान कर बहुत बदज़न हुए कि उनका नाम किसी ने विचारार्थ भी प्रस्तुत नहीं किया। स्टेशन पर कोई सफल टिकटार्थी दिख जाता तो वे बगलें झांकने लगते। अब तक वे अपने को अत्यन्त महत्वपूर्ण उम्मीदवार मान रहे थे। उन्होंने वह गाड़ी केवल इसलिए छोड़ दी कि तमाम सफल टिकटार्थी दनादन उस पर सवार हो रहे थे। सिद्दीकी साहब को अपने जैसे किसी असफल टिकटार्थी की तलाश थी, जिससे मिलकर वह अपने दिल की भड़ास निकाल सकते। उन्हें विश्वास हो गया था कि योग्य आदमी की सियासत में कोई पूछ नहीं है। जिसका पौवा जितना भारी है, उतनी आसानी से वह टिकट पा जाता है। जाने क्या कारण था, जो भी टिकटार्थी दिखायी देता उसके भाल पर दूर से ही टिकट का लम्बा सा तिलक नज़र आ जाता। वह मन ही मन खुदा से उसकी हार के लिए दुआ करते और नज़रें हटा लेते।

सिद्दीकी साहब एक कोने में दुबके चाय पी रहे थे कि उन की निगाह छोटेलाल पर पड़ी। छोटेलाल एक हाथ में अटैची थामे और दूसरे से केला खाते हुए बड़े बेमन और सुस्त रफ्तार से एक कुली के पीछे चल रहे थे। छोटेलाल की सूरत से लग रहा था, वह भी एक पिटा हुआ टिकटार्थी है। सिद्दीकी साहब ने चाय का अन्तिम घूँट भरा और झपट कर छोटेलाल का बाजू पकड़ लिया, "कहिए छोटे लाल जी, क्या समाचार है?"

छोटेलाल ने पलट कर सिद्दीकी साहब की तरफ़ देखा और खीसें निपोर दीं, "देवी बगुलामुखी ने मेरी मुराद पूरी कर दी।" छोटेलाल ने केले का गूदा निकाल कर हाथ में पकड़ लिया और छिलका प्लेटफॉर्म पर फेंक दिया। सिद्दीकी साहब ने केले का छिलका उठाकर पटरी पर फेंकते हुए गर्मजोशी से कहा, "बधाई, बधाई!"

छोटेलाल से सिद्दीकी साहब का इधर कुछ दिन पहले ही परिचय हुआ था। छोटेलाल को उ० प्र० निवास में कहीं जगह न मिल रही थी। एक दिन सिद्दीकी साहब ने उसे बरामदे में बिस्तर बिछा कर सोते देखा तो अपने कमरे में उसकी व्यवस्था कर दी। सिद्दीकी साहब के साथ छोटेलाल तीन दिन रहा था। उन तीन दिनों में ही छोटेलाल ने चमत्कार कर दिखाया। सिद्दीकी साहब अभी सो ही रहे होते कि छोटेलाल सुबह सुबह अपने अभियान पर निकल जाता और फिर आधी रात को ही उसका चेहरा दिखायी देता। वह सदैव सम भाव में रहता। उसे देखने पर मालूम ही न पड़ता था कि वह प्रसन्न है अथवा अप्रसन्न। सिद्दीकी साहब ने सपने में भी कल्पना न की थी कि छोटे लाल टिकट पाने में सफल हो जाएगा। छोटेलाल के बारे में प्रसिद्ध हो गया था कि वह किसी भी नेता के पाँव पर लेट कर हास्यास्पद स्थिति उत्पन्न कर देता था। छोटेलाल से अगर विनोद में भी कोई कह देता कि मुख्यमन्त्री का ड्राइवर टिकट दिला सकता है तो वह उसी की जीहुजूरी में जुट जाता और पान लिए उसके आगे पीछे दौड़ता। इस प्रकार नेताओं के ड्राइवर [illegible] और खानसामों के मध्य वह अत्यन्त लोकप्रिय हो गया। कई बार [illegible] जब उसे कार से उतरते देखा तो छोटेलाल की प्रतिमा का लोहा [illegible]।

छोटेलाल का लोहा सिद्दीकी साहब भी मान चुके थे। [illegible] बारे में बहुत कम बात करता था, अक्सर दूसरों की बातें [illegible] था। इन तीन दिनों में सिद्दीकी साहब उसके बारे में इतना [illegible] कि उसके तीन लड़के और एक लड़की हैं। लड़की की शादी [illegible]। बड़ा लड़का पिछले एक साल से घर से लापता है और [illegible]

की तरफ़ ध्यान नहीं देते। उसकी बातचीत से यह अर्थ निकलता था कि चूंकि उसके सब बच्चे आवारा निकल चुके हैं, उसके लिए विधायक होना बहुत आवश्यक है। छोटेलाल सुबह बहुत जल्दी स्नान कर लेता था। एक दिन सुबह पांच बजे के करीब सिद्दीकी साहब की नींद खुली तो उन्होंने देखा, छोटे लाल नहा धो कर एक कोने में लकड़ी के पीढ़े पर पीले वस्त्र का आसन बिछा कर उस पर देवी का चित्र व कुछ दूसरा सामान रखे, दायें हाथ में जल लिए आंखें बन्द किए मन्त्रोच्चारण कर रहा था। सिद्दीकी साहब अधमुंदी आंखों से उसे पूजा करते हुए देख रहे थे। छोटेलाल को यों तन्मयता से पूजा करते देख सिद्दीकी साहब को बहुत ग्लानि हुई कि वे दिन में नमाज़ तक नहीं पढ़ते। उन्होंने तय किया कि घर लौटते ही वे नियमित रूप से पांचों वक्त की नमाज़ पढ़ा करेंगे। सिद्दीकी साहब के देखते देखते छोटे लाल ने विधिवत पूजा की और समान समेट कर कुर्सी पर आ बैठे। कुर्सी पर बैठते ही छोटेलाल ने सिगरेट सुलगा ली और हवा में धुएँ के छल्ले छोड़ने लगा। सिद्दीकी साहब को धुएँ के छल्ले देखने में कोई दिलचस्पी न थी, उन्होंने करवट बदल ली। कुछ देर बाद कालबेल सुनाई दी। छोटेलाल ने तत्परता से दरवाज़ा खोला। शायद अखबार वाला था। छोटे लाल को अखबार में कोई दिलचस्पी न थी, वह एक रंगीन पत्रिका लेकर लौटा। छोटेलाल देर तक लोई ओढ़े मनोयोग से पत्रिका पढ़ता रहा। सिद्दीकी साहब उठे तो छोटेलाल ने पत्रिका बन्द करके लापरवाही से कूल्हे के नीचे छिपा ली।

"कोई ख़ास कहानी छपी है क्या ?" सिद्दीकी साहब ने पूछा।

"क्या ख़ास बात होगी।"

"क्या पढ़ रहे थे, जो चौंक गये ? ज़रूर कोई दिलचस्प खबर छपी है।" सिद्दीकी साहब ने कहा।

"कुछ खास नहीं।" छोटे लाल ने सिद्दीकी साहब को सिगेरट पेश की। सिद्दीकी साहब ने भी सिगेरट सुलगा ली। उन्हें सुबह-सुबह समाचार पत्र पढ़ने का शौक था। वे किसी बगल के कमरे में अखबार पढ़ने जाते कि घण्टी फिर बजी। छोटेलाल उठा और अलगनी पर सूख रही अपनी खादी की बनियान पत्रिका के ऊपर डाल दी और बाहर जाकर किसी से बतियाने लगा। सिद्दीकी साहब ने उत्सुकता से पत्रिका उठायी। उन्होंने उड़ती निगाह से कई पन्ने देखे। पत्रिका में केवल स्त्रियों के नग्न चित्र थे। सिद्दीकी साहब ने 'सेंटर स्प्रैड' खोलकर देखा और पत्रिका यथा स्थान रख दी। उसके ऊपर बनियान भी डाल दी। उन की रगों में खून की गर्दिश तेज़ हो गई थी। उन्होंने तय किया कि छोटेलाल पत्रिका को कमरे में छिपा गया तो वह दरवाज़ा बन्द

करके इतमीनान से उस का मुतालया करेंगे, वे देर तक छोटेलाल के जाने का इन्तज़ार कर रहे थे। छोटेलाल इस प्रतीक्षा में था कि सिद्दीकी साहब बाथरूम में घुसें तो वह चुपचाप खिसक जाए। आखिर छोटेलाल की ही विजय हुई, सिद्दीकी साहब बाथरूम में घुसे तो वह कुर्ते के भीतर पत्रिका छिपा कर कमरे से निकल गये। छोटे लाल के जाने के बाद सिद्दीकी साहब ने कमरे का एक-एक कोना छान मारा मगर निराशा ही उनके हाथ लगी थी।

इस समय छोटेलाल एकबदला हुआ इन्सान लग रहा था। जबकि उस का चेहरा हमेशा की तरह भाव-शून्य था सिद्दीकी साहब ने प्लेटफार्म से गाड़ी को सरकते देखा तो राहत की सांस ली। गाड़ी में नवाब अख्तर भी चल रहा था, जिसने सिद्दीकी के स्थान पर टिकट पाया था। वह किसी भी हालत में उस गाड़ी में जाना नहीं चाहते थे।

"किस गाड़ी से चलने का इरादा है?" गाड़ी ने प्लेट फार्म छोड़ दिया तो सिद्दीकी ने छोटेलाल से पूछा।

"जाना तो फौरन चाहता था। एक गाड़ी दस बजे भी है। सोचता हूँ उसी से निकल जाऊँ।" छोटे ने पूछा, "आपका क्या कार्यक्रम है?"

"मेरा कोई कार्यक्रम नहीं। हवा के झोंके जिधर ले जाएँगे, चल दूँगा।"

"तो आप हमारे साथ चलिए। हमें तो आप से भी दूर जाना है। रास्ता कट जाएगा।" छोटे लाल ने पूछा, 'आपको एतराज न हो तो आज कहीं अच्छी जगह खाना खाते हुए कैबरे देखा जाए। एक गाड़ी दस बजे जाती है, उससे जाएँगे।"

"क्या?"

"कैबरे!" छोटे ने मुस्कराते हुए कहा।

"कैबरे क्या होता है" सिद्दीकी साहब ने आश्चर्य से पूछा। उन्होंने आज तक 'कोबरा' तो सुन रखा था मगर कैबरे नहीं। मगर छोटे लाल इस समय कोबरा क्यों देखना चाहता है। सिद्दीकी साहब ने सोचा हो सकता है हिन्दू लोग किसी काम में सफलता प्राप्त करने के बाद नागदेवता के दर्शन करते हों।

"आपने अभी तक कैबरे नहीं देखा?"

"कोबरा तो देखा है।" सिद्दीकी साहब ने कहा, 'आप देखना चाहते हैं तो मैं भी देख लूँगा।"

"कोबरा नहीं।" छोटेलाल हँसते हुए लोट पोट होने लगा, "कैबरे। आप चलिए, आप की उम्र में और अच्छा लगता है। दर असल पिछले दिनों इतना मसरूफ़ रहे और इतनी दौड़ भाग रही कि किसी चीज का ध्यान

न आया। अब जा कर फिर वही हाल होगा। दिन रात मेहनत कर लूँगा तो शायद जीत जाऊँ।"

"आप जरूर जीतेंगे।" सिद्दीकी साहब के भोजन का प्रबन्ध हो गया था, उन्हें विश्वास था टिकट का भी हो जाएगा, उन्होंने कहा, "मैं आप के चुनाव में डटकर काम करूँगा।"

"जिन्दगी में तफ़रीह भी जरूरी है, वरना आदमी जानवर से भी बद-तर है।"

"आप ठीक फरमा रहे है।" सिद्दीकी साहब ने कहा, "मैं तो जब से सियासत में आया हूँ तफ़रीह नाम के लफ़्ज का मतलब भूल गया हूँ।"

सिद्दीकी साहब जरा सी बात से उत्साहित हो गये थे। आरामदेह रेल यात्रा, लजीज़ भोजन और मुफ़्त की तफ़रीह की उन्हें सख्त जरूरत थी।

दोनों ने अपना सामान क्लोक रूम में जमा कराया और टैक्सी में बैठकर आनन्द पर्वत की तरफ़ रवाना हो गये।

टैक्सी ड्राइवर आनन्द पर्वत से परिचित नहीं था। सिद्दीकी साहब को आश्चर्य हुआ कि छोटेलाल दायें बायें कहता हुआ उसे ठीक जगह पर ले गया। छोटेलाल सड़कें ही नहीं, रेस्तरां भी पहचानता था। टैक्सी का भाड़ा तक उसे याद था। उसने टैक्सी रुकने के पहले ही ड्राइवर को देने के लिए पैसे मुट्ठी में बांध रखे थे और टैक्सी ठहरते ही ऐसे उतरा जैसे गाड़ी छूट रही हो। जब तक सिद्दीकी साहब ख़रामा ख़रामा टैक्सी से उतरते, वह भुगतान करके सामने की खिड़की से पैंतीस पैंतीस रुपये के दो टिकट खरीद लाया था।

जीना चढ़ते हुए बैंड की धुन सुनाई दी। शायद कोई दरवाजा खोल कर बाहर आया था। दरवाजा बन्द होते ही बाहर की चिल्ल-पों सुनाई दी जिस के प्रति दोनों लोग अब तक उदासीन थे। छोटे लाल को देखकर दरबान ने दरवाजा खोला। कानों को भेदने वाली बैण्ड की पागल धुन। उन लोगों के भीतर जाते ही दरवाजा बन्द हो गया। दोनों दरवाजे के नज़दीक खड़े हो गये। एक लड़की बैण्ड की धुन पर नाच रही थी। उस के शरीर पर कभी लाल, कभी पीली और कभी नीली रोशनी पड़ती। सिद्दीकी साहब दीवार से सट कर खड़े थे और लड़की के करतब देख रहे थे। उसके बदन पर एक महीन झीनी चोली और चोली से भी महीन अण्डरवियर था। कसा बदन। सुडौल टाँगें। सिद्दीकी साहब ने अब तक बुर्कों से ढँकी लड़कियाँ ही देखी थीं, यह उनके जीवन का प्रथम अवसर था कि उन्होंने किसी युवती के बदन को इतना नजदीक से देखा। वे अपलक लड़की की तरफ़ देख रहे थे, उन्हें छोटेलाल की उपस्थिति का एहसास भी न रहा। लड़की ने अपनी चोली का बटन खोलने

की तीन चार बार कोशिश की, न खुल पाया तो नीचे उतर कर एक दर्शक के सामने पीठ कर दी। चोली उतारते हुए वह दुबारा मंच पर आ कर नाचने लगी। सिद्दीकी साहब की घिग्घी बंध गयी। टाँगें काँपने लगीं। होंठ खुश्क हो गये। साँस उखड़ने लगी। लड़की ने नाचते नाचते चड्ढी भी उतार कर उछाल दी तो सिद्दीकी साहब को लगा, उनके दिल की धड़कन रुक जाएगी। वे दीवार का सहारा ले कर खड़े हो गये। बैरे ने आकर खाली मेज की ओर संकेत किया तो दोनों लड़की की तरफ़ देखते हुए महज उंगली के इशारे के सहारे कुर्सी तक पहुँच गये। सिद्दीकी साहब ने जेब से रूमाल निकाला और पसीना पोंछने लगे। तब तक लड़की मंच से नीचे उतर आई थी और लोगों के बीच घूम रही थी। सिद्दीकी साहब को पाला मार गया जब लड़की ने सिद्दीकी साहब की सिगरेट उनके मुँह से निकाल कर एक लम्बा कश खींचा। धुआँ छोड़ते हुए उसने वह सिगरेट छोटेलाल के मुँह में खोंस दी। छोटेलाल ने लड़की की कमर पर हाथ रख दिया और दूसरे हाथ से हवा में एक चुम्बन दिया। छोटे लाल हाथ ऊपर या नीचे ले जाता, उससे पहले ही वह लड़की दूसरी मेज पर जा चुकी थी।

सिद्दीकी साहब का बदन उत्तेजना से बुरी तरह झनझना उठा था। उन्होंने कभी नहीं सोचा था, दिल्ली में यह सब भी होता है। वास्तव में छोटे-लाल उन्हें एक नयी दुनिया मे ले आया था। सिद्दीकी साहब का पूरा जीवन थाने कोतवाली की दलाली में ही बीता था। उन्हें यकायक जिन्दगी हसीन लगने लगी और जीने लायक। उन्हें इस जीवन की हल्की सी भी झलक मिली होती, तो वे भी टिकट पाने के लिए जी जान एक कर देते। वे अपने को कोसने लगे कि कैसे उन्होंने दिल्ली में केवल सोकर अपना मूल्यवान समय गँवा दिया और छोटेलाल जैसे अनपढ़ लोग टिकट पाने मे कामयाब हो गये। अब पाँच बरस का लम्बा इन्तजार था। न जाने तब तक पार्टी की क्या स्थिति हो जाए।

इतने मे धुन बदली। मंच रंग बिरंगी रोशनियों के बिल्लौर की तरह चमक रहा था। धुन के साथ लड़की भी बदल गयी। देखते देखते वह भी उन्माद मे आने लगी। उसने भी एक एक कर बदन के कपड़े उतारने शुरू किये। अब उसके बदन पर मात्र एक लम्बा सा चोगा था। वह भी सामने से खुला। झीना। आखिर उसे वह भी स्वीकार न हुआ। उसने अत्यन्त अलसाते हुए वह चोगा भी उतार फेंका। चोगा उतार कर वह औंधी लेट गयी और उत्तेजक संगीत के मध्य सिसकारियाँ भरते हुए अत्यन्त अभद्र भंगिमाओं के मध्य अपनी कमर फ़र्श पर पटकने लगी। बीच बीच में वह फूहड़ तरह से 'हाय उई' चिल्लाती। सिद्दीकी साहब टाँग पर टाँग रखे सिगरेट फूँक रहे थे। छोटेलाल

अलबत्ता शांत था। वह बगैर किसी प्रकार की उत्तेजना के टकटकी लगा कर मंच की तरफ़ देख रहा था। इस बीच मेज़ पर भोजन लग गया था। मगर सिद्दीकी साहब की भूख मर चुकी थी। बटर चिकन ठंडा हो रहा था। नान अकड़ गये थे।

"वाह वाह सिद्दीकी साहब।" छोटेलाल ने अचानक भोजन पर धावा बोल दिया। मुर्गे की टाँग चबाते हुए उसने सिद्दीकी साहब को भी खाने का आमन्त्रण दिया, "लीजिए अब खाना खाइए और चलने की तैयारी कीजिए।"

"बहुत वाहियात औरतें हैं।" सिद्दीकी साहब ने पानी का गिलास खाली किया और बोले "दिन भर सिगरेट फूंकते फूंकते भूख खत्म हो गयी।"

"रास्ते में कुछ न मिलेगा। भरपेट भोजन कर लीजिए।" छोटे लाल ने कहा और पूछा, "कहिए कैसा रहा?"

"छोटेलाल जी, हमारे समाज में इतनी गन्दगी है, इसका मुझे एहसास नहीं था। उन बेशर्म औरतों को देखकर मुझे उबकाई आ रही थी।"

"मैं भी देख रहा था, आप को उबकाई आ रही थी।" छोटेलाल ने कहा, "नौजवान मन लगा कर खाना खाओ।"

मगर सिद्दीकी साहब बेमन से खाना खा रहे थे। ड्रम की धमक उनके कानों में अभी तक गूंज रही थी। अचानक उन्हें लड़कियों पर दया आ गयी, "न जाने किस मजबूरी में ये बेचारी अपनी अस्मत बेचती हैं।"

'खाना खाओ नौजवान।' छोटे लाल ने कहा, 'कल तक मैं भी नेताओं के बीच अस्मत बेच रहा था। देवी बगुलामुखी की कृपा हो गयी कि मेरी अस्मत बिक गयी। वर्ना बहुत से लोग अस्मत लिए घूम रहे थे, गाहक नहीं मिल रहा था।'

सिद्दीकी साहब छोटेलाल की बात से बेहद प्रभावित हुए। उन्हें खरीददार मिल जाता तो वह भी अपना स्वाभिमान टके सेर के भाव से बेचकर टिकट पा लिए होते। उन्हें खरीददार ही नहीं मिला, बहुत दल बदल कर देख लिए। अब छोटे लाल के विधायक होने की सम्भावना थी, सिद्दीकी साहब ने कहा 'छोटे लाल जी आपका कोई जवाब नहीं। लगता है आप सचमुच तफ़रीह के लिए निकले हैं। कभी कभी आप ऐसी बात कर देते हैं कि प्याज़ के छिलके की तरह खुलती चली जाती है।'

छोटेलाल मुस्कराया। छोटेलाल मुस्कराता है तो उसकी मूँछें दूज के चाँद की तरह धनुष के आकार की हो जाती हैं। बोला, 'सुबह तक मैं गीदड़ था, अब शेर हूँ। मगर मुझे मालूम हो चुका है कि कब गीदड़ होना चाहिए और कब शेर। जो लोग कल तक मुझे लेकर लतीफ़े बना रहे थे, आज खुद

सलीक़ा बन गये हैं। मगर मैं उन पर सलीक़े बनाकर अपना समय नष्ट नहीं करूँगा। जिन्दगी एक तराजू की तरह ऊपर नीचे होती रहती है। इस समय, देवी बगुलीमुखी की कृपा से मेरा पलड़ा भारी है।'

सिद्दीकी साहब को लगा, वे छोटेलाल को जितना मूर्ख समझ रहे थे वह उसका शतांश भी मूर्ख नहीं है। सिद्दीकी साहब बात जरूर छोटेलाल से कर रहे थे, मगर उन का ध्यान उन लड़कियों की तरफ़ था, जो कुछ देर पहले तक मंच पर उछल कूद मचा रही थीं। उनके मन में लड़कियों को लेकर अनेक जिज्ञासाएँ उठ रही थीं। इन लड़कियों के माता पिता ने न जाने इन्हें कैबरे करने की किन परिस्थितियों में इजाजत दी होगी। इन लड़कियों से कौन शादी करेगा?

'इन लड़कियों से कौन शादी करेगा?' अचानक सिद्दीकी साहब ने जिज्ञासा प्रकट की।

'नौजवान, हो सकता है, ये लड़कियाँ शादीशुदा हों,' छोटे लाल ने कहा, 'जिस समाज में आदमी अपनी औरत को कैरोसीन से जला सकता है, अपनी औरत को नंगा नचा कर दहेज की क्षति पूर्ति करने में क्यों संकोच करेगा?'

'यह भी एक तरह से औरत को जिन्दा जलाना है।' सिद्दीकी साहब ने कहा।

'जरूरी नहीं। समाज में छिनालों की भी कमी नहीं। आजकल फैशन हो गया है हर बात के लिए मर्द को क़ुसूरवार ठहरा देना। मगर ट्रेजेडी यही है कि छिनालें जिन्दा रह जाती हैं और मासूम औरतों को जला दिया जाता है।'

'इन युवतियों को शर्म नहीं आती अपना बदन उघाड़ते?''

'शायद नहीं।' छोटेलाल बोला, 'औरत कोई अजूबा नहीं। एक बार तन उघाड़ लेती है तो फिर हमेशा के लिए बेफ़िक्र हो जाती है। उसे नजरों के वस्त्र पसन्द आने लगते हैं।'

'आप अपने तजुर्बे से कह रहे हैं?'

'आप के तजुर्बे से तो क़तई नहीं।' छोटलाल बोला, 'लगता है आप। जीवन में कोई छिनाल नहीं आई। सब्र रखिए आती ही होगी।' ऐसी छिनालों को जानता हूँ जो अब तक सैकड़ों बलात्कार कर चु

सिद्दीकी साहब अपनी किस्मत को कोसने लगे। उन्हें लग रे क्षेत्र में वे फिसड्डी रह गये हैं। उनके जीवन में छिनाल भी नहीं छोटेलाल का दिन था, वह प्रसन्न था और सन्तुष्ट। उसने दे से था, उसे मिल गया था। सिद्दीकी साहब ने जिन्दगी से अगर कु ई की थी थी तो कमी पूरी न हुई थी। छोटेलाल ने गिलास।

डाल कर हाथ धोये और जरा सा झुक कर मेजपोश से मुँह भी पोंछ लिया। सिद्दीकी साहब छोटे लाल के सलीके और किस्मत से लगातार रश्क कर रहे थे।

'जा कर नामांकन पत्र दाखिल करूँगा और काम में जुट जाऊँगा। आप आएँगे तो मेरे हाथ बँधे हुए ही पायेंगे। एक वक्त में मैं एक ही काम करता हूँ और जो काम करता हूँ उसे सरअंजाम दे कर ही दम लेता हूँ।'

'वह तो मैं देख ही रहा हूँ।' सिद्दीकी साहब ने कहा और हो हो कर हँस पड़े।

बैरा बिल ले आया था। छोटेलाल ने निहायत लापरवाही से सौ का एक चमचमाता नोट बैरे की तश्तरी में रख दिया और जब तक बैरा बाकी पैसे लेकर लौटता वह टूथपिक से दाँतों के बीच फँसी चर्बी कुरेदते रहे।

'चुनाव लड़ना भी एक सरदर्द है।' छोटेलाल ने कहा, 'मगर मैं यह सरदर्द दूसरी बार मोल ले रहा हूँ।'

'यहाँ तो पूरी ज़िन्दगी सरदर्द हो गयी है।' सिद्दीकी साहब इस समय दिल की भड़ास नहीं निकालना चाहते थे, मगर वह अनायास निकल गयी।

'अभी आपकी उम्र क्या है? आप की उम्र में तो मैं नेताओं का झोला उठाये उनके पीछे पीछे घूमा करता था।'

'लाइए, आपका झोला कहाँ है?' सिद्दीकी साहब ने ठहाका लगाते हुए कहा और छोटेलाल को उठते देख खुद भी उठ गये; छोटेलाल की ही तरह दाँत कुरेदते हुए। बाहर आ कर लगा, वे वापिस दुनिया में लौट आए हैं। सड़कों पर गाड़ियों की वही रेल पेल थी। छोटेलाल ने बायें हाथ से सिगरेट का कश खींचा और दाहिने हाथ से टैक्सी को रुकने का आदेश दिया। टैक्सी रुकी, दोनों उस पर सवार हो गये। टैक्सी नयी दिल्ली स्टेशन की तरफ़ दौड़ने लगी।

सिद्दीकी साहब छोटेलाल के बल पर प्रथम श्रेणी में यात्रा करते हुए इकबालगंज जरूर पहुँच गये, मगर कैबरे ने उन की मानसिकता तहस नहस कर दी थी। घर पहुँच कर उन की आत्मा अत्यन्त संतप्त हो गयी। उन्होंने वे सब कर्म कर डाले जिनकी तरफ़ वे बहुत बुरी निगाह से देखा करते थे। ताज्जुब तो इस बात से हो रहा था कि उन्हें टिकट न मिलने का इतना दुःख नहीं था, जितना वह शादी को लेकर परेशान रहने लगे थे। गत वर्ष उनकी फूफी एक रिश्ता लाई थीं जिसे सिद्दीकी साहब ने फौरन अस्वीकार कर दिया था। उन्होंने सिर्फ़ एक बार सलमा को देखा था। जब सिद्दीकी साहब ने सलमा

को देखा था, सलमा बाल खोले पीढ़े पर बैठी थी, शायद बाल सुखा रही थी। उसके लम्बे बाल पीढ़े से नीचे जमीन पर मूँगफली के छिलकों की तरह बिखरे थे। असावधानी से उस संकरे कमरे में कुर्सी तक पहुँचने की छोटी सी यात्रा में सिद्दीकी साहब के पाँव उस के बालों पर पड़ गये थे। सलमा ने पलट कर बालों की तरफ़ देखा था। सलमा की निगाहों में क्या भाव था। यह वह आज तक जान नहीं पाये थे। उन्हें लग रहा था, सलमा की आँखों में गुस्सा था, गुस्ताखी थी, प्यार था, घृणा थी, याचना थी या तिरस्कार था, सिद्दीकी साहब दिल्ली से लौट कर अपना पूरा समय यह जानने में लगा रहे थे कि सलमा की आँखों में क्या भाव था। उस एक क्षण की चमक को वह अपनी याददाश्त में ताज़ा नहीं कर पा रहे थे। इस कोशिश में नाकामयाब हो कर एक दिन उन्होंने अकबर को भेज कर एक अन्तर्देशीय मँगवाया और फूफी को खत लिखने बैठ गये। खत उन्होंने संक्षिप्त सा लिखा था, मगर उस दौरान घर के हर फ़र्द को डाँट दिया। दरअसल नयी दिल्ली से गाड़ी छूटते ही, सलमा उन की चेतना पर सवार हो गयी थी। छोटेलाल कूपे में इत्मीनान से सो रहा था और एक सिद्दीकी साहब थे, कभी टहलने लगते, कभी खिड़की का शीशा गिरा देते और कभी उठा देते। उन्हें बेतरह सलमा की याद आ रही थी। गाड़ी शाहजहाँपुर पहुँची तो वे उतर कर प्लेटफ़ार्म पर टहलने लगे। यही था सलमा का नगर। फूफी ने ही बताया था कि सलमा अपने मामू के साथ शाहजहाँपुर में रहती है। सिद्दीकी साहब उस समय अपनी सियासत में कुछ इस कदर डूबे हुए थे कि सलमा के मामू का पता जानने की ज़हमत तक न उठायी थी। आज वही सिद्दीकी साहब शाहजहाँपुर के स्टेशन पर टहलते हुए पछता रहे थे। जब तक गाड़ी का सिग्नल न हुआ, वे दीवानों की तरह प्लेटफ़ार्म पर टहलते रहे। सिद्दीकी साहब कूपे में आये तो देखा छोटेलाल टिकट और बँवरे के नशे में मदहोश बेफ़िक्र सो रहा था। उसके नथुने बज रहे थे। सोते समय उसका चेहरा बहुत विकृत लग रहा था। आदमी की सही शख्सियत को जानना हो तो उसे सोते में देखना चाहिए, सिद्दीकी साहब ने सोचा और उनकी तरफ़ देखते हुए मूक गालियाँ बकने लगे। छोटेलाल अब सिद्दीकी साहब की तारीफ़ का मुहताज न रहा था। वह जिस काम के लिए घर से निकला था, पूरा करके लौट रहा था।

सिद्दीकी साहब सकुशल अपने घर पहुँच गये। घर पहुँचकर भी उनकी मानसिकता में कोई परिवर्तन न आया बल्कि स्थिति गम्भीर होती चली गयी। शाम होते ही वे छत पर टहलने लगते। उनकी निगाहें दूर दराज के घरों का जायज़ा लेती रहतीं। बचपन के मकान में एक दिन उन्होंने तक

स्त्री को नल के नीचे नहाते देख लिया तो वे झरोखे के पास छिपकर बैठ गये। उन्होंने जिन्दगी में पहली बार, बल्कि यों कहना चाहिए, कैबरे देखने के बाद, दूसरी बार किसी निर्वसन स्त्री को देखा था। यह स्त्री नहीं थी, उनके गहरे दोस्त आदिल की अम्मा थी। वे उसे तब तक देखते रहे, ठीक कैबरे की तरह, जब तक उसने कपड़े नहीं पहन लिए। बाद में देर तक सिद्दीकी साहब अपनी इस हरकत पर शर्मसार होते रहे। अपनी चोरी उन्होंने खुद पकड़ ली थी। आखिर अपने अकेलेपन से ऊबकर उन्होंने अपनी फूफी को ख़त लिखा कि वह जल्द ही उन्हें मिलने के लिए आ रहे हैं। खत में उन्होंने सलमा का भी हल्का सा उल्लेख किया था। फूफी अनुभवी महिला थीं, उन्होंने लौटती डाक से खबर दी कि सलमा की शादी हो चुकी है और अब वह एक बच्चे की माँ है। सलमा की एक चचेरी बहन शकीला है, वह चाहे तो उससे बात चलायी जा सकती है। शकीला सलमा से कहीं ज्यादा खूबसूरत है, मगर उसके बदन पर कहीं कहीं सफ़ेद दाग़ हैं।

सिद्दीकी साहब आजकल हर किसी से नाराज रहते थे। फूफी का खत पा कर उन्हें बहुत सदमा लगा। उन्होंने फूफी का खत फाड़ कर फेंक दिया और तय किया वे इसका कोई जवाब न देंगे। इधर उनमें कुछ और परिवर्तन आ रहे थे। सड़क चलते कोई जान पहचान की लड़की देखते तो उसके कान उमेठ देते, और कुछ न बन पड़े तो गाल पर हल्की सी चपत लगा देते। बच्चों में उन्होंने इतनी टाफ़ियाँ तक़सीम कर डालीं कि वे टॉफ़ी वाले नेताजी के रूप में विख्यात हो गये।

एक दिन सुबह सुबह चायवाले ने खबर दी कि उनका चाय-बिस्किट का बिल दो सौ से ऊपर जा चुका है तो वे सतर्क हुए। बिल की रकम सुन कर ही जैसे उनकी तन्द्रा टूट गयी।

'ठीक है, ठीक है,' सिद्दीकी साहब ने कहा, 'जल्द ही इन्तज़ाम होगा।' सिद्दीकी साहब अपनी नयी शेरवानी और टोपी पहन कर ख्वाजा अली बख्श के बँगले की तरफ़ रवाना हो गये।

ख्वाजा अली बख्श शहर के बीड़ी किंग थे। उनकी बीड़ी न केवल उत्तर प्रदेश [illegible] मध्य प्रदेश, बिहार और राजस्थान तक में मक़बूल थी। यही नहीं, [illegible] ब ने सुना था वे अपनी बीड़ी का निर्यात मध्य पूर्वी देशों में भी [illegible] के [illegible] ख्वाजा अली बख्श से हज़ार दो हज़ार झटक

उम्मीद न रखनी चाहिए।'

'मैं उसकी चालबाज़ी का शिकार हो गया। पिछले छह महीनों से उनके साथ था। मुझ से पूछे बग़ैर वह किसी से मुलाक़ात नहीं करते थे।' सिद्दीकी साहब ने ख़्वाजा को दिलचस्पी लेते देखा तो लगे हाँकने, 'हालत तो यह थी कि लोग श्यामसुन्दर की सिफ़ारिश के लिए मेरे दरवाज़े पर खड़े रहते थे। मैंने अनेक लोगों के तबादले करा डाले, कइयों को नौकरियाँ दिलवा दीं, मगर इधर एक माह से, जब चुनाव का दौर शुरू हुआ, श्यामसुन्दर ने मुझे काटना शुरू कर दिया। ज़ाहिरा तौर पर वह आखिर तक मेरे साथ रहे। पी० एम० से मिल आया। अपनी लिस्ट दिखायी, उसमें मेरा तीसरा नम्बर था।'

'नाटक करने में तो वह उस्ताद है।' ख़्वाजा बोले, 'मैं उसे ख़ूब अच्छी तरह जानता हूँ। दिन भर ज्योतिषियों और तांत्रिकों के पीछे दौड़ता है। हो सकता है किसी तांत्रिक ने ही उसे ऐसा मश्विरा दे दिया हो कि मुसलमानों से दूर रहो।'

'मुमकिन है। बहुत मुमकिन है।' सिद्दीकी साहब बोले, 'जाने से पहले मुझे भी एक फ़कीर से मिलने का मौका मिला था। वह भी बहुत पहुँचा हुआ फ़क़ीर था। मैं उसे किसी भी तांत्रिक से ऊँचा दर्जा दूँगा। गर्मी हो, सर्दी या बरसात, वह फ़क़ीर जंगल में एक पेड़ के नीचे ही रहता है। मैं अभी दूर ही था, वह बोला, आइए मन्त्रीजी। मैं उसकी बात सुनकर हँसा तो उसने डाँट दिया, तुम मन्त्री हो जाओगे बेटा और तब मैं हँसूँगा। इसी तरह तुम्हारा मज़ाक उड़ाऊँगा। हा हा हा, वह देर तक हँसता रहा। बोला, ला अपना हाथ इधर कर। मैंने हाथ फैलाया तो उसने उसपर गर्म गर्म कलाकन्द रख दिया।'

ख़्वाजा खुद पीरों और फ़क़ीरों के बहुत मुरीद थे। उनकी माँ ने बतलाया था कि वे एक फ़क़ीर की दुआ के बाद ही पैदा हुए थे, शादी के चौदह बरस बाद। अचानक ख़्वाजा की दिलचस्पी सिद्दीकी से हटकर फ़क़ीर पर आ गयी। पूछा, 'कहाँ रहता है ऐसा फ़क़ीर, जो सर्दी, गर्मी और बारिश में पेड़ के तले ही रहता है? कोई तावीज नहीं दिया उसने?'

'दिया था।' सिद्दीकी साहब ने कहा, 'एक तावीज़ दिया था। मगर श्यामसुन्दर का रुख देख कर मैंने वह तावीज़ फेंक दिया।'

'बस आप यहीं चूक गये। अब चलो किसी दिन मेरे साथ उस फ़क़ीर के पास और अपनी गुस्ताखी के लिए माफ़ी माँग लो। किसी भी छुट्टी के दिन प्रोग्राम बनाओ।'

'चलिए।' सिद्दीकी साहब ने कहा। उन्हें सचमुच अफ़सोस हो रहा था

कि उन्होंने जज़्बात की रौ में तावीज़ क्यों फेंक दिया।

'यहाँ से कितनी दूर होगा?'

'यही कोई चालीस पचास किलोमीटर।'

'ठीक है। इतवार की सुबह मैं गाड़ी भेज दूँगा। आप तैयार रहिए।'

'ठीक है, तैयार रहूँगा।' सिद्दीकी साहब ने कहा। दीवार पर ख्वाजा की मशहूर कछुआ छाप बीड़ी का नये साल का कैलेण्डर लटक रहा था, वे टकटकी लगा कर कैलेण्डर की तरफ़ देखने लगे।

'आप यों मायूस न होइए। हर शख़्स की ज़िन्दगी में मायूसी के लम्हात आते हैं। आपने पहले बताया होता तो मैं ख़ुद आप के साथ दिल्ली चलता। बड़े लड़के के साढ़ू आप की पार्टी के जैनेरल सेक्रेटरी हैं। उन पर ज़ोर डाल कर टिकट दिलवा देता। असेम्बली के बाद इसी बरस कौंसिल के इन्तिख़ाब होंगे, मैं पूरी कोशिश करूँगा कि आपको कौंसिल का टिकट मिल जाए।'

'आप हाशिम भाई का ज़िक्र कर रहे हैं?'

'हाँ हाशिम अरशद का साढ़ू है।'

'अरशद भाई चाह लेंगे तो टिकट ज़रूर मिल जाएगा।' सिद्दीकी ने कहा।

'अभी पिछले माह वे आए थे और हमारे यहाँ ही ठहरे थे। आप इत-मीनान रखिए, मैं आपका काम करवाऊँगा।'

ख्वाजा से बात करके सिद्दीकी साहब के चेहरे पर मायूसी के बादल छँटने लगे। उन्होंने सिगरेट सुलगाया और बोले, 'यह आपने बहुत उम्दा ख़बर दी, वरना मैं तो हमेशा के लिए शिकस्त क़ुबूल कर चुका था और आजकल अपने ख़ालाज़ाद भाई रसूल के पास कुवैत जाने के बारे में बड़ी शिद्दत से सोच रहा था। ख्वाजा, आप ही बताइए, आख़िर कब तक कोई शख़्स गर्दिश में रह सकता है। गुज़श्ता बीस बरसों से मैं सियासत की धूल फाँक रहा हूँ। आप तो जानते हैं, मेरी सियासी शख़्सीयत एक दम बेदाग़ है। मुख़ालिफ़ पार्टियों के लोग भी मेरी तरफ़ उँगली नहीं उठा सकते।'

'आप यह सब मुझे बता रहे हैं? मैं आप के बारे में सब कुछ जानता हूँ।' ख्वाजा ने मेज़ पर लगी घण्टी दबा दी, 'इस वक़्त आप क्या लेना पसन्द करेंगे? आज कबाब बहुत उम्दा बने हैं।'

'ख्वाजा आप तकल्लुफ़ मत कीजिए। मैं तो यों ही चला आया था, एक ज़माने से आप से मुलाक़ात न हुई थी। सोचा, आज आपका नियाज़ हासिल कर लूँ।'

ख्वाजा ने असलम से कबाब और काफ़ी लाने के लिए कहा और हुस्ना फ़क़ीर के बारे में पूछ-ताछ करने लगे।

"वह जरूर कोई अजीम फ़क़ीर होगा, वरना उस जंगल में उसकी हथेली पर ताजा कलाकंद कहाँ से चला आता?" ख्वाजा ने हैरत जाहिर की, "आपको उसके दिए तावीज़ के साथ बदसलूकी नहीं करनी चाहिए थी।" ख्वाजा ने अपनी शेरवानी का ऊपर का बटन खोल कर अपने गले में बँधे कई गंडे तावीज़ सिद्दीकी साहब को दिखाए, "इन ख़ुदाई तावीज़ों की वजह से जिन्दा हूँ वरना कब का इस दुनिया से कूच कर गया होता। दो दो हार्ट अटैक बर्दाश्त करने के बाद आदमी दस दस बारह बारह घण्टे किसी की दुआ से ही काम कर सकता है।"

"इस उम्र में आप कितना काम कर लेते हैं।" सिद्दीकी साहब ने कबाब और कॉफ़ी का इन्तज़ार करते हुए ख्वाजा के कारोबार के बारे में दरियाफ़्त करने की रस्म भी निभा दी, "आप का कारोबार कैसा चल रहा है।"

"कुछ न पूछो म्याँ। कारोबार आजकल ठंडा है। यही वजह है कि मैं आपके फ़क़ीर से पहली फ़ुर्सत में मिल लेना चाहता हूँ।" ख्वाजा ने बात आगे बढ़ाई, "जब से सेठ भैरवलाल बीड़ी के धंधे में कूदा है, मेरी परेशानियाँ बढ़ गई हैं। उसने मुझे जबरदस्त नुक्सान पहुँचाया है। सबसे पहले उसने मेरे मैनेजर को फोड़ लिया। मार्केट में आते ही उसने बीड़ी के दाम गिरा दिए और मजदूरी बढ़ा दी।"

"क्या मुश्ताक साहब अब आपके यहाँ नहीं हैं?"

"उसे छोड़े तो छह माह हो गये। मैं जानता हूँ वही सब करवा रहा है। मेरा प्रोडक्शन आधा रह गया है। मैंने सब अल्लाह मियाँ के भरोसे छोड़ रखा है। आप तो जानते हैं मुश्ताक को मैंने लड़कों की तरह पाला था।"

"ख्वाजा यह तो आप बड़ी अजीब बात बता रहे हैं। मुश्ताक भाई आप को बुढ़ापे में यों दग़ा दे देंगे, मेरे लिए यह एक नाकाबिले बर्दाश्त खबर है। यह तो मुश्ताक भाई की सरासर ज्यादती है।"

"ऊपर वाले की ऐसी ही मर्ज़ी थी।" ख्वाजा ने कहा, "ताज्जुब है आपको अभी तक इसकी इत्तिला नहीं थी।"

"इधर कई बार मुश्ताक भाई से मुलाकात हुई, मगर उन्होंने कभी जिक्र न किया। मैंने जब जब आप के बारे में दरियाफ़्त किया यही बोले ख्वाजा मजे में हैं।"

"बहरहाल, बिल्ली कछुए पर हावी हो रही है। हर सिनेमा हाल में बिल्ली छाप बीड़ी की रंगीन स्लाइडें दिखायी जा रही हैं। अखबारों और रिसालों में बड़े-बड़े इश्तिहार छप रहे हैं। अगर हालात इसी रफ़्तार से बिगड़ते चले गये तो मुझे यह धंधा छोड़ कर अपने फ़ार्म पर लौट जाना पड़ेगा।"

थियेटर में गेट कीपर से ले कर ऑपरेटर तक मुसलमान हैं। हिन्दु नहीं चाहता मुसलमानों को कोई रोज़गार मुहैया करे। वे चाहते हैं, मुसलमान सड़कों पर मारा मारा फिरता रहे।"

"यह तो ख्वाजा आप ज़्यादती कर रहे हैं।" सिद्दीकी साहब को दवा का यह घूंट बहुत कड़वा महसूस हुआ, "आप देखिए, हमारे ही सूबे में कितने मुस्लिम विधायक हैं। मन्त्री हैं। आई० ए० एस० अफ़सर हैं।"

"यह एक छलावा है, धोखा है। दस मुसलमानों को खुश करके करोड़ों मुसलमानों के साथ जुल्म किया जा रहा है। बहरहाल इस वक्त आप की समझ में यह बात नहीं आ रही, वक्त के साथ साथ अपने आप आ जाएगी। आप ही बताइए आप को टिकट क्यों नहीं मिला।"

"मगर अनेक मुसलमानों को टिकट मिला है।"

"मैं आपकी बात कर रहा हूँ। आपको शायद मालूम नहीं कि श्याम-सुन्दर भैरू लाल का आदमी है।"

"श्यामसुन्दर भैरूलाल का आदमी है या भैरूलाल श्यामसुन्दर का आदमी है?"

"श्यामसुन्दर भैरूलाल का आदमी है। उसके चुनाव का पूरा खर्च वही उठाता है। श्यामसुन्दर की बिटिया की शादी भैरूलाल ने ही की थी। भैरूलाल का बस चले तो उसे मुख्यमन्त्री बना दे। भैरूलाल के लिए सरकार से परमिट लाइसेंस वही बटोरा करता है।"

"अब समझा। लगता है, भैरूलाल ने ही श्यामसुन्दर को भड़काया होगा। मैं आज तक भैरूलाल के यहाँ सलाम बजाने नहीं गया।" सिद्दीकी साहब ने अपनी सेवाएँ पेश कीं :

"आप बेफ़िक्र रहिए। मैं बीड़ी मज़दूरों को एकजुट करता हूं और उनकी एक यूनियन बनाता हूँ।"

"यूनियन से कुछ न होगा।" ख्वाजा अली बख्श ने बताया, "यूनियन उनियन से कुछ न होगा। बीड़ी मज़दूरों की दो यूनियन तो पहले से मेरी जेब में मौजूद हैं। सवाल मजदूरी की नयी दर का है। भैरू लाल अपनी काली कमायी बीड़ी में फूंक सकता है। मेरे पास फूंकने के लिए क्या है? भैरू लाल दस बीस लाख रुपये फूंककर मुझे चौपट कर सकता है। जब उसकी मनोपली हो जाएगी, पूरी रकम सूद समेत बटोर लेगा। कोई मुकाबिल न होगा तो फिर वह कितनी भी बेईमानी करे, कोई पूछने वाला नहीं। असल सवाल है उसके नापाक इरादों का पर्दाफ़ाश करने का। मुसलमान एक जज़्बाती कौम है, गरीब कौम है। पहले अंग्रेजों ने उस का खून चूसा और अब हिन्दु सरमायेदारी उस का इस्तेमाल करना चाहती है।"

'अगर मेहनात के एंटी मुस्लिम इरादों को बेनकाब किया जाए तो हो सकता है मुसलमान उसके लिए बीड़ी रोल करने से इन्कार कर दें।' सिद्दीकी साहब ने सुझाव रखा।

'ग़रीबी ने मुसलमानों की कमर तोड़ दी है। जरा से लालच में आकर वह कोई भी काम कर सकते हैं। आपके मुसलमान मन्त्री यही सब कर रहे हैं। एक अदना मजदूर की क्या हैसियत कि वह छोटे-छोटे फायदों के सामने घुटने न टेक दे।'

'वे शायद नहीं जानते कि उनके पेट को सहलाकर इस्लाम पर चोट की जा रही है।' सिद्दीकी साहब ने समस्या का हल खोजते हुए ख्वाजा को राय दी कि ख्वाजा को बीड़ी मजदूरों की एक विशाल रैली को सम्बोधित करते हुए उन्हें हिन्दू सरमायादारी के खतरों से आगाह करना चाहिए।

'ऐसा मैं नहीं कर सकता। लोग मुझे फिरकापरस्त करार दे देंगे। यह दूसरी बात है कि लोगों की नजर में हर मुसलमान फ़िरकापरस्त है। इस काम को तो बाकायदा एक गुमनाम तहरीक खड़ी करके ही सरंजाम दिया जा सकता है। आप जैसे नौजवान साथ दें तो क्या नहीं किया जा सकता।'

ख्वाजा को उम्मीद थी कि उनकी बात सुनकर सिद्दीकी भड़क जाएँगे, मगर सिद्दीकी साहब शांत रहे, ख्वाजा से भी एक कदम आगे बढ़ कर बोले, 'श्यामसुन्दर मुसलमानों की हमदर्दी पाकर यकीनन इन्तिखाब में जीत जाएगा, मगर उसके बाद जब मुसलमानों को जी भर कर लतियाएगा तब उन्हें अक़्ल आएगी। मुसलमानों के लिए यह एक शर्मनाक बात है कि वे हिन्दू सरमायादारों के हाथ बिक कर मुसलमानों का कारोबार चौपट कर दें. [illegible] मैं ग़लत कह रहा हूँ क्या?' सिद्दीकी साहब ने अपनी बात की [illegible] के लिए ख्वाजा की तरफ़ देखा। श्यामसुन्दर की बेरुखी से वह [illegible] चुके थे और आज ख्वाजा से बात करके उन्हें अपने [illegible] दिखाई दे रहा था। आजतक उन्होंने कभी हिन्दू [illegible] सोचा था, बल्कि टिकट की आशा में हिन्दुओं का [illegible] उन्हें लाभ भी मिला था कि अपनी पार्टी के [illegible] के रूप में ही जाने जाते थे। मगर आज उन्हें [illegible] अब तक का वक़्त हिन्दुओं की जी-हुजूरी में [illegible]

'आज दिन बहुत चढ़ आया है। [illegible] है। वह धीरे धीरे हिन्दुओं की [illegible] है। मेरा सर तो शर्म से झुक जाता है [illegible] नवाब घूमते देखता हूँ। इन [illegible]

क्या हश्र होगा, इसका अन्दाज़ा आप लगा सकते हैं।'

ख्वाजा से बात करते हुए सिद्दीकी साहब को लगातार झटके मिल रहे थे। वे एक आज़ाद खयाल आदमी थे। अब तक अपने घर में भी उन्होंने यही कोशिश की थी कि उन की मां और बहनें परदे के दमघोंटू माहौल से बरी रहें। मगर आज वे ऐसी परिस्थिति में आ गये थे कि पर्दानिशीनी की ताईद करना उनके लिए ज़रूरी हो गया था। वे एक तालिबइल्म की तरह ध्यान लगा कर ख्वाजा के खयालात सुन रहे थे। ख्वाजा को भी कई दिन बाद एक मनपसन्द श्रोता मिला था। ख्वाजा कह रहे थे, 'मगर यह एक बहुत ही नाज़ुक मसला है। यह काम बहुत होशियारी से करने का है। मैंने एक तहरीक चलाई है, उसकी बाज़गश्त आप तक भी पहुँची होगी। आपने किसी न किसी दीवार पर ज़रूर पढ़ा होगा; 'मुसमलानों•नमाज़ पढ़ो।' 'मुसलामनों मस्जिद तुम्हें पुकार रही है।' रमज़ान के महीने में तो मैंने सैकड़ों दीवारों पर लिखवा दिया था कि 'मुसलमानों रमज़ान के महीने में रोज़ा रखो।' 'बुतपरस्ती का डट कर मुकाबला करो।' आपने किसी न किसी दीवार पर यह ज़रूर पढ़ा होगा।'

'मेरी अपनी दीवार पर कोई लिख गया था : औरतें पर्दा करें।' सिद्दीकी साहब ने बताया।

'मेरे कई आदमी दिन रात इस काम में मशगूल हैं। अब तक दो चार हज़ार रुपये इस मद में खर्च भी कर चुका हूं। इस काम के लिए मैं उन्हीं मुसलमानों को चुन रहा हूँ जो गरीब हैं, ज़रूरतमन्द हैं और एक एक रोटी को मुहताज हैं। सिद्दीकी साहब, मैं अपना पैसा रंगीन स्लाइडों पर खर्च न करूँगा। अपने मज़हब के लिए, इस्लाम के लिए, मैं एक एक पाई खर्च कर दूंगा।'

दो चार हज़ार रुपये की बात सुन कर सिद्दीकी साहब थोड़ा उत्साहित हुए। उन्हें लगा इन तिलों में अभी तेल है। उन्होंने कहा, 'आप बजा फरमा रहे हैं। इस का असर स्लाइडों से कहीं ज्यादा पड़ेगा। इस बहाने मज़हब की खिदमत भी हो जाएगी।'

जबकि सचाई यह थी कि सिद्दीकी साहब ने अपनी दीवार पर 'औरतें पर्दा करें' लिखा देखा था तो बेहद बिगड़ गये थे। उन्होंने लिखने वाले को गली में खड़े हो कर गालियां दी थीं और उसी वक्त इस इबारत के ऊपर पुताई करवा दी थी।

'मैं छोटे छोटे पैम्फ़लेट भी छपवा रहा हूं। एक तो छप कर आ भी गया है, आप देखिए।' ख्वाजा ने ड्राअर खोला और छोटी सी किताब सिद्दीकी

साहब के हाथ में थमा दी। किताब का नाम था: बुतपरस्ती के ख़तरे। सिद्दीकी साहब पढ़ने लगे: जाअन्ल् हक़, व ज़हक़ल्बातिलु, इन्नल्बातिलु कान ज़हूक़। यानी सच्चाई आयी, झूठ भाग गया, बेशक झूठ भगोड़ा है। काबा की मूर्तियों के तोड़े जाते वक़्त हज़रत मुहम्मद यही कहते थे।....' सिद्दीकी साहब ने पैम्फलेट जेब के हवाले किया और बोले, 'आप बहुत उम्दा काम कर रहे हैं। इस बहाने मुसलमानों को तालीम भी मिलेगी। ख़्वाजा आप एक काम करें। पैम्फलेट के नीचे एक लाइन छपवा दें: कछुआ छाप बीड़ी बनाने वालों की तरफ़ से।'

'आप तो सियासत करना ही नहीं जानते। कोई भी सियासी आदमी इस तरह की राय न देगा। कोई भी सियासी आदमी कहेगा कि ख़्वाजा किसी को कानोंकान ख़बर न लगनी चाहिए कि इस तहरीक से आप भी वाबस्ता हैं।'

'मैं दूसरी तरह से सोचता हूँ। इससे आपकी बीड़ी मक़बूल होगी।'

'आप शायद यह सोच रहे हैं कि कछुआ छाप बीड़ी सिर्फ़ मुसलमान पीते हैं। आपको यह भी नहीं मालूम कि इस मुल्क में सब से बड़ी गाली है: फ़िर-क़ापरस्त। आप अगर अपने मज़हब के लिए कोई काम करना चाहते हैं तो सेकुलरिज़्म का लबादा ओढ़ कर कीजिए। आप भेस नहीं बदलेंगे तो लोग कहेंगे मैं इस्लाम के हक़ में नहीं हिन्दुओं के ख़िलाफ़ काम कर रहा हूँ। यह अचानक नहीं है कि हर साल कछुआ छाप बीड़ी बनाने वालों की तरफ़ से शहर के स्कूलों में क़ौमी यकजहती पर एक डिबेट करायी जाती है और अव्वल आने वाले तालिबइल्म को एक गोल्ड दी जाती है।'

'वाह वाह ख़्वाजा, मैं तो आप का गुलाम हो गया। मैं अब तक [illegible] नहीं कर रहा था, घास छील रहा था।' सिद्दीकी साहब [illegible] से सचमुच आक्रान्त होते जा रहे थे।

'सेकुलर स्टेट में हर फ़र्द को अपने मज़हब की [illegible] करने का हक़ हासिल है। आप बग़ैर सोचे समझे इस हक़ का इस्तेमाल करेंगे तो [illegible] को फ़िरक़ापरस्त क़रार दे देंगे। आप अभी [illegible] हैं। सियासत के दाँव पेंच की समझ आप में नहीं है। मैंने [illegible] को बहुत नज़दीक से देखा है। बँटवारे के बाद मैं ख़ुद पाकिस्तान [illegible]। [illegible] जब मैंने देखा कि गाड़ियों की गाड़ियाँ, जिन पर [illegible] से काटी जा रही हैं, तो मैं दिल्ली से लौट आया। [illegible] मासूम मुसलमान बेवजह कट कर शहीद हो गये। [illegible] हैं। वे जब मरते, इससे पहले ही [illegible] ने [illegible]।'

बात बीच में छोड़, ख्वाजा ने जेब से सहसा चाबी निकाल कर दूसरा ड्राअर खोला और सौ सौ के पांच नोट सिद्दीकी साहब की नजर कर दिये और कहा, 'फिलहाल आप ये पाँच सौ रखिए। कोई ग़रीब और ईमानदार मुसलमान दिखायी दे जाये तो उसे दीवारों पर इस्लाम की तबलीग़ करने का काम दीजिए। अपने मुलाकातियों से मज़हब के 'मसायल' पर बात कीजिए। एक बात हमेशा याद रखिए कि आप जब तक अपने फिरके में मकबूल न होंगे, आप को सियासत में कोई नहीं पूछेगा। आपकी सियासत धरी रह जायेगी। एक बार आपने अपने फिरक़े में एक मकबूल लीडर की हैसियत कायम कर ली, फिर आप को कोई न उखाड़ पायेगा। श्यामसुन्दर आप के घर आकर आप को टिकट दे जायेगा।'

सिद्दीकी साहब को ख्वाजा की बात जम गयी। पैसा पाकर वैसे भी वह तन्दुरुस्त महसूस कर रहे थे। ख्वाजा कह रहे थे 'आप यकीन मानिए म्यां, आज इस्लाम खतरे में है। बुत-परस्तों ने एक बार फिर फन उठाया है। मगर हम उनके नापाक इरादे नाकामयाब किये बगैर चैन न लेंगे।'

सिद्दीकी साहब इन पाँच सौ रुपयों का हिसाब फौरन चुकता करने चाहते थे। यह तभी मुमकिन था, अगर ख्वाजा उनकी कोई योजना स्वीकार कर लें। सिद्दीकी साहब ने डरते डरते प्रस्ताव रखा, "ख्वाजा, क्यों नहीं आप कछुआ छाप बीड़ी बनाने वालों की तरफ़ से हर साल कम से कम पाँच बीड़ी मजदूरों को हज करवाने का ऐलान कर देते?"

सिद्दीकी साहब का यह पहला सुझाव था, जो ख्वाजा को पसन्द आ गया। वे जैसे कुर्सी पर से उछल पड़े, "वाह! वाह!! सिद्दीकी साहब, आप ने एक लाख रुपये का मशविरा दिया है। आप के ख़यालात की मैं कद्र करता हूँ। खुदा के करम से आज तक मैंने शहर की आधी से ज्यादा मुस्लिम आबादी को रोजगार दिया है। उस आबादी की जानिब मेरी भी कुछ जिम्मेदरियाँ हैं। कम से कम पांच बीड़ी मजदूरों को हज का सफ़र कराना मेरा फ़र्ज है। न जाने अब तक मैं क्यों गाफ़िल रहा।"

"एक बात मैं और कहना चाहता हूँ।" सिद्दीकी साहब ने ख्वाजा की बात से उत्साहित होकर कहा, "मुश्ताक भाई से आप समझौता कर लें। वह आप की तिजारत के तमाम दांवपेंच जानता है। आप के दिये हुए तजुर्बे का इस्तेमाल वह आप के ही खिलाफ़ करेगा। उसे तेन्दु पत्ते से लेकर तम्बाकू तक की मुकम्मल जानकारी है। अव्वल तो आप को ऐसा आदमी अपने हाथ से छोड़ना ही नहीं चाहिए था, अब छूट चुका है तो कोई ऐसी तरकीब निकालिए कि वह वापिस चला आए। आप इजाजत देंगे तो मैं काम में जुट जाऊँगा और मुश्ताक भाई को लेकर हो कर लौटूंगा।"

'वह आदमी अब मेरे लिए बेकार है। रखने लायक भी नहीं रहा। सुनने में आ रहा है, मुझे ज़लील करने के लिए भैंरूलाल ने उसे अपनी फर्म में पार्टनर की हैसियत दी है। मगर वहाँ भी वह डट कर बेईमानी कर रहा है। भैंरूलाल को इसकी परवाह नहीं। उसके मकसद दूसरे हैं। वह मेरे कारोबार को चौपट करना चाहता है।' ख्वाजा ने मेज़ पर रखे पानी के गिलास से दवा की तरह एक कड़वा घूंट भरा और बोला, 'मगर यह तय है, उसने अब तक हर जगह अपना कमीशन तय कर रखा है। भैंरूलाल को इसकी भनक भी नहीं। फिर उसका मकसद दूसरा है, सिर्फ़ मेरा कारोबार चौपट करना। आप देखिएगा, मेरा कारोबार चौपट करने के बाद वह मुसलमानों को चौपट करेगा। इस शहर से अपना कारखाना ही उठा लेगा और किसी दूसरे शहर में ले जाएगा। अभी तो ख्वाहिश है, आप देखते रहिए आगे क्या होता है। मुश्ताक बेवकूफ़ है, वह आखिर तक न जान पायेगा, भैंरूलाल उसे गुमराह कर रहा है। जानबूझ कर उसे तरजीह दे रहा है ताकि वह ग़लतियाँ करता चला जाये और एक दिन जब भैंरूलाल चाहेगा, वह सीखचों के पीछे बन्द हो जाएगा। मुश्ताक हिन्दुओं के किरदार से वाकिफ़ नहीं। अल्लाह उसे खुद सज़ा देगा। वह मुसलमानों के पेट के साथ खिलवाड़ कर रहा है। उसकी खुदग़र्ज़ी उसे ले डूबेगी।'

नेताजी ख्वाजा की बातों से बेतरह मुतअस्सिर हो रहे थे। उन्हें यकीन हो गया था कि हिन्दुओं की वजह से ही वे टिकट नहीं पा सके।

'ख्वाजा आप दुरुस्त फ़रमा रहे हैं। खुदा न ख्वास्ता भैंरूलाल अपना कारखाना किसी दूसरे शहर में उठा कर ले गया तो यहाँ के मुसलमान भूखों मरने लगेंगे। बीड़ी ही औसत मुसलमानों का ज़रियामाश है। उन्हें अपने हाथ के हुनर पर भरोसा है।' सिद्दीकी साहब बोले, 'मुसलमान हिन्दुओं के लिए बीड़ी रोल करेगा तो अपनी कब्र खोदेगा। शहर में हिन्दुओं के इतने कारखाने हैं, बड़ी बड़ी फैक्टरियाँ हैं, उनमें मुसलमानों के लिए कोई काम नहीं। भैंरूलाल को मुसलमानों की इतनी ही फ़िक्र है तो क्यों नहीं मुसलमानों को होज़री में, कोल्ड स्टोरेज में, दवाओं के कारखाने में काम देता? सिर्फ़ इसलिए कि इससे उसके मन्सूबे पूरे नहीं होते, इससे किसी मुसलमान बिज़नेसमैन को चोट नहीं पहुँचती। ख्वाजा, मैं उसकी साजिश की तह तक पहुँच गया हूँ। बीड़ी ही एक ऐसा मैदान बचा था, जहाँ अब तक हिन्दुओं की घुसपैठ नहीं थी। अभी तो ये लोग घुसपैठ कर रहे हैं, कामयाब होते ही ऐसी दुलत्ती मारेंगे कि मुसलमान ज़िन्दगी भर याद रखेंगे कि ख्वाजा को मक्कार धोखा दिया।'

"म्यां खुलासा बहुत अच्छा करने लगे हो।" ख्वाजा को खुशी हो रही थी कि सिद्दीकी उतना बेवकूफ़ नहीं है, जितना वह समझ रहे थे।

"ख्वाजा मुसलमानों के लिए बहुत ज़रूरी हो गया है कि इकट्ठा हो कर इस ज़ुल्म के खिलाफ़ जेहाद छेड़ दें।"

"अब आये आप सही रास्ते पर। अब आप टिकट पाने के भी हक़दार हो गये हैं। मेरी यह बात हमेशा-हमेशा के लिए समझ लें कि जब तक आप अपनी कौम के मसायल नहीं समझेंगे, आप अपनी क़ौम की कोई मदद न कर पायेंगे। जो शख्स अपनी कौम के लिए बेमानी है वह अपने मुल्क के लिए भी बेमानी है।"

"ख्वाजा, मैं आपका बहुत मश्कूर हूँ कि आपसे मिलकर मेरे दिमाग़ पर से कोहरा हट गया है। अब मैं सैकुलरिज़्म का मतलब भी समझ सकता हूँ और फ़िरकापरस्ती का भी। आज़ादी से पहले पुलिस में हिन्दुओं से कहीं ज़्यादा तादाद में मुसलमान थे, आज क्या है, मुसलमान ढूंढने पर भी नहीं मिलता। हिन्दुओं ने चालाकी से यह काम किया है। क्यों ख्वाजा?" ख्वाजा को अपनी बात दिलचस्पी से सुनते देख सिद्दीकी साहब अपनी बात बीच में ही भूल गये। ख्वाजा सहमति में धीरे-धीरे अपनी गर्दन हिला रहे थे।

सिद्दीकी साहब दरअसल अपनी तकरीर तैयार कर रहे थे। ख्वाजा की दिलचस्पी से प्रोत्साहित होकर वे दुबारा श्यामसुन्दर पर उतर आए, "ख्वाजा मैं कसम खा कर कह रहा हूँ, श्यामसुन्दर के अगर भैरूलाल से नज़दीकी ताल्लुकात हैं तो मैं उसकी सियासी ज़िन्दगी चौपट कर दूँगा। कौन नहीं जानता भैरूलाल दाएँ बाज़ू की पार्टियों को जी खोलकर चंदा देता है।"

"ज़रूर देता होगा, मगर इसमें बुराई क्या है? म्यां अगला सबक भी ले लो, यह दाएँ बाज़ू की पार्टियां ही हैं जो मजहब को ज़िन्दा रखे हैं, वरना सब मटियामेट हो जाता। तुमने कभी बायें बाज़ू की पार्टियों को इस्लाम की तरफ़दारी करते देखा है? नहीं देखा होगा, यकीनन नहीं देखा होगा। क्या यह अचानक है?"

सिद्दीकी साहब का सिर घूमने लगा। बहुत दबाव डालने पर भी वह ख्वाजा की बात नहीं काट पाये। मगर ख्वाजा की बात सिद्दीकी साहब के हलक के नीचे न उतर रही थी। कुछ देर चुपचाप बैठे रहने के बाद सिद्दीकी साहब ने सिगरेट का लम्बा कश खींचा और धुआं छोड़ते हुए अपनी पार्टी की ही भाषा में बोले, "ख्वाजा, मैं अक्सर महसूस करता हूँ, महसूस ही नहीं करता, इसमें यकीन भी करने लगा हूँ कि हिन्दू और मुसलमान एक ही नदी के दो साहिल हैं और सदियों से साथ साथ रहते चले आ रहे हैं। मैंने बारहा

ने ख्वाजा की तरफ़ झेंपते हुए देखा और बोले, "आज आप से पहला सबक लिया।"

"दूसरा सबक भी लेते जाओ। चीजें उतनी आसान नहीं होतीं, जितनी सतह से नजर आती हैं। आपको जानना होगा, भैरूलाल और श्याम सुन्दर की दोस्ती का राज क्या है, मेरे खिलाफ़ भैरूलाल को कौन लोग भड़का रहे हैं। उनके मकसद क्या हैं?"

"क्या मकसद हो सकते हैं?"

"धीरे-धीरे सब जान जाओगे।" ख्वाजा ने कहा, "नौजवान! तुम्हें जान कर ताज्जुब होगा कि इजराइल के दोस्त भैरूलाल को मेरे खिलाफ़ खड़ा कर रहे हैं।"

"इस्माइल के दोस्त?" सिद्दीकी साहब ने पूछा। इजराइल नाम के वे किसी आदमी को न जानते थे।

"इस्माइल नहीं, इजराइल।" ख्वाजा ने हँसी रोकते हुए कहा, "इजराइल एक मुल्क है और उस मुल्क के दोस्त मुमालिक भैरूलाल की होजरी का पूरा सामान खरीद लेते हैं। भैरूलाल उन्हीं मुमालिक के इशारे पर नाचता है। मेरी बीड़ी चूंकि मध्यपूर्व और मध्यएशिया में मकबूल हो चुकी है, उन्हें यह फूटी आंख नहीं सुहा रहा।"

सिद्दीकी साहब ने यह तो अनेक लोगों से सुना था कि ख्वाजा को दूसरे मुल्कों से पैसा मिलता है, उन्हें यह नहीं मालूम था, कि यह पैसा बीड़ी का निर्यात करके मिलता है। खैरात में नहीं मिलता। कुछ लोग ख्वाजा को विदेशों का एजेंट भी बताते थे। अब सिद्दीकी साहब के सामने सारी स्थिति स्पष्ट हो गयी। उन्होंने कहा, "बड़ा अच्छा हुआ, आप ने यह सब बता दिया, वरना लोग आपके बारे में गलत किस्म की अफ़वाहें उड़ाया करते हैं। जैसे विदेशों से आपको बीड़ी का दाम नहीं, एजेंटी का मुआवजा मिलता हो।"

"लोग तो यह भी कहते हैं, मुझे पाकिस्तान से रुपया आता है। मैं पाकिस्तान का एजेंट हूँ। उनकी नजर में हर मुसलमान पाकिस्तान का एजेंट है। जिस किसी के घर में दो वक्त चूल्हा जलता है, वह पाकिस्तान का एजेंट है। आज हिन्दुस्तान में मुसलमान दो पाटों के बीच पिस रहा है। एक तरफ़ ऐसी ताकतें हैं जो सिर्फ़ मुसलमानों के बल पर ताकत में आती हैं और ताकत में आकर अगले पांच बरसों के लिए मुसलमानों को भूल जाती हैं, उर्दू को भूल जाती हैं, अपने उन तमाम वादों को भूल जाती हैं जो इन्तिखाब के दिनों में किये जाते हैं। दूसरी तरफ़ वे ताकतें हैं, जिन्होंने आज तक सही

मायने में मुसलमानों को इस मुल्क का बाशिंदा नहीं माना और मुसलमानों की मुख़ालफत करके सिर्फ सियासी फ़ायदे उठाये हैं।"

"यहाँ तक काबिले बर्दाश्त था ख़्वाजा, मगर आप ने जो दूसरे मुल्कों के बारे में बताया कि वे भी इस जंग में कूद पड़े हैं, इससे मुझे बहुत ताज्जुब हो रहा है।"

दरअसल अब तक सिद्दीकी साहब का स्थानीय समस्याओं से ही पाला पड़ा था। आज अपने देश के सन्दर्भ में दूसरे देशों की दिलचस्पी के बारे में सुन कर वे हतप्रभ रह गये। *अब तक सिद्दीकी साहब यह सोचकर सन्तुष्ट थे* कि वे मुश्ताक भाई को पटाकर चुटकियों में ख़्वाजा की समस्या हल कर देंगे, मगर अब उन्हें यह मसला उलझा हुआ लग रहा था। उन्हें ताज्जुब हो रहा था एक छोटे से शहर के छोटे से बीड़ी के कारख़ाने में इज़राइल कूद पड़ा था, मध्य एशिया और मध्य पूर्वी देश राजनीति कर रहे थे। सिद्दीकी साहब को लगा जल्द ही बड़ी शक्तियाँ भी इस युद्ध में कूद पड़ेंगी और ख़्वाजा का बीड़ी का कारखाना हिरोशिमा बन जायेगा। सच तो यह है इज़राइल का नाम आज उन्होंने ज़िन्दगी में पहली बार ख़्वाजा के मुँह से सुना था, मध्य एशिया और मध्य पूर्व के बारे में भी उन की जानकारी नगण्य थी। सिद्दीकी साहब की नन्ही सी दुनिया में खलबली मच गयी। उन्होंने तय किया, ख़्वाजा के यहाँ से लौटते हुए वे एक एटलस और कुछ पत्र-पत्रिकाएँ लेते जायेंगे। उन्हें लग रहा था, उनका अब तक का राजनीतिक जीवन केवल नेताओं और दारोगाओं की चाटुकारी में बीत गया। अख़बार भी वे उसी स्थिति में पढ़ते थे, अगर शहर में कोई हादसा हो जाता या उनके किसी प्रिय नेता की तस्वीर या वक्तव्य छापा हो जाता था। दूसरी तरफ़ ख़्वाजा थे, जो मुल्क की हर पत्रिका पढ़ते थे, बहुत से विदेशी रिसाले भी उनकी मेज पर नज़र आ रहे थे। दरअसल ख़्वाजा के पास देश विदेश की अधिसंख्य पत्रिकाएँ आती थीं, *कुछ विज्ञापन की फ़रियाद के साथ और बाकी ख़्वाजा की दिलचस्पी की* वजह से। ख़्वाजा से बातचीत करने के बाद सिद्दीकी साहब महसूस कर रहे थे कि अब तक उन्हें सियासत के अलिफ़ बे पे का भी इल्म नहीं था। सिद्दीकी साहब को ख़्वाजा आज एक तिलिस्म की तरह लग रहे थे। सामने मेज पर टूटे-फूटे कॉफ़ी के बदरंग प्याले पड़े थे। अल्युम्मुनियम की टेढ़ी मेढ़ी ट्रे भी पड़ी थी। किसी दूसरे आदमी का इतना बड़ा व्यापार होता तो दफ़्तर का

रूप ही दूसरा होता। सिद्दीकी साहब ने अनेक मित्रों के आलीशान दफ़्तर देखे थे और उनके सुरुचिपूर्ण घर का रखाव देखा था, जो आर्थिक रूप से ख्वाजा के मैनेजर से भी कम कमाते थे। एक ख्वाजा थे कि आज भी दफ़्तर में लोहे की पुरानी कुर्सियों से काम चला रहे थे। दीवार पर से प्लास्तर गिर रहा था। छत पर लगा पंखा चलने पर इतनी आवाज़ करता था जैसे सड़क पर म्युनिसिपैलिटी का कचरा ढोने वाला ठेला चल रहा हो। सिद्दीकी साहब ने ख्वाजा का घर भी देखा था, वहाँ भी लोहे की ऐसी ही बूढ़ी कुर्सियाँ थीं। एक बार सिद्दीकी साहब ख्वाजा की मिज़ाजपुर्सी करने उन के घर गये थे, ख्वाजा मैली चीकट रजाई ओढ़े लेटे हुए थे। दीवारों पर पुराने पर्दे लटक रहे थे। यही शख्स जो ऊपर से देखने पर एक फ़कीर लगता था, कुरआन के नाम पर लाखों खर्च करने को तत्पर था। चाय के बदरंग प्यालों में काफ़ी की चुस्कियाँ लेते हुए राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर अधिकारपूर्वक चर्चा कर सकता है। यह सोचकर वह बहुत अपमानित महसूस कर रहे थे कि उन्हें इज़राइल का नाम तक नहीं मालूम था, ख्वाजा उनके बारे में क्या सोच रहे होंगे। उन्होंने मन ही मन तय कर रखा था, जब तक वे अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति पर अपनी काबलियत नहीं दिखा देंगे, यहाँ से नहीं हिलेंगे। बहुत सोच विचार के बाद उन्होंने सिगरेट का एक लम्बा कश खींचा और धुआँ छोड़ते हुए बोले, "ख्वाजा, अगर इज़राइल को अपने दोस्तों पर नाज़ है तो मिडल ईस्ट के दोस्तों की तादाद भी दुनिया में कम नहीं।"

ख्वाजा, सिद्दीकी से सियासी समझ की ज्यादा उम्मीद न रखते थे। सिद्दीकी का जिस मोर्चे पर इस्तेमाल किया जा सकता था, उस पर ख्वाजा ने उसे पाँच सौ रुपये में ही तैनात कर दिया था। ख्वाजा को हैरानी हो रही थी कि रुपये पाकर भी सिद्दीकी को जाने की जल्दी नहीं हो रही थी। ख्वाजा को शक हुआ कि उत्साह में सिद्दीकी ने निर्णय ले लिया है कि वह पैसे का सही इस्तेमाल करेगा। सिद्दीकी के खर्चे के लिए ख्वाजा ने उसे तीन सौ रुपए और दे दिये और उसकी तरफ़ पान की तश्तरी बढ़ाते हुए बोले 'जाने से पहले मेरी एक बात सुनते जाइए। मैं जानता हूँ कि आप एक नेक आदमी हैं और आपकी ज़हनियत एक सियासी आदमी की नहीं है। अगर आप यह सोचते हैं कि समाज की, मुल्क की, मज़लूमों की ख़िदमत करने से टिकट मिलता है तो मुआफ़ कीजिए आप निहायत सादालौह आदमी हैं। टिकट इस तरह से न मिलता है न मिलेगा। टिकट मिलता है आदमी की हैसियत से। टिकट देने से पहले कोई भी पार्टी यह देखना चाहेगी आपके फिरके के कितने लोग आपके साथ हैं। मुझे यहाँ बैठे-बैठे मालूम हो गया था कि आपकी

जगह अख्तर भाई को टिकट मिलेगा। अब आप ही बताइए, इतने बदनाम आदमी को टिकट कैसे मिल गया। कौन नहीं जानता अख्तर भाई की गाड़ी रात दो-दो बजे तक इनामुल्ला बिल्डिंग के बाहर किस के लिए खड़ी रहती है। क्या आपकी पार्टी के लोग यह नहीं जानते ?'

सिद्दीकी साहब अख्तर भाई से जले भुने बैठे थे। कुर्सी पर उछलते हुए बोले, 'कौन नहीं जानता वह बड़े बड़े नेताओं को लड़कियां सप्लाई करता है। इस बार तो वह अपनी ही लड़की ले गया था।'

'मैं कह रहा था कि तुम एक गैर-सियासी आदमी हो। अफ़वाहों के पीछे सिर्फ गैर सियासी आदमी दौड़ते हैं। तुम यह कभी नहीं सोचोगे कि अख्तर भाई ने कितनी मस्जिदों का कायाकल्प कराया, अख्तर भाई ने कितनी बेवाओं को पेन्शन दिलवाई, अख्तर भाई ने कितने मुसलमानों को हाउसिंग बोर्ड से मकान दिलवाए। मुझे मालूम था तुम जनबूझ कर अख्तर भाई की शख्सियत के इस पहलू पर कुछ नहीं कहोगे। अख्तर भाई अपनी तमाम दुनियावी कमज़ोरियों के बावजूद अपनी कौम के मसायल को समझते हैं। तुम्हें यह सुन कर भी बहुत तकलीफ़ होगी कि अख्तर भाई कभी टिकट न पाते अगर मैंने उनकी मदद न की होती। मेरा मक़सद है कौम की भलाई। कौम की भलाई के लिए आप कोई टोपी पहन लीजिए, गांधी टोपी पहन लीजिए या अलीगढ़ी। एक टोपी मैंने अख्तर भाई को पहना दी है, एक, आज, तुम्हें पहना रहा हूँ। अगर तुम सचमुच सियासत करना चाहते हो तो एक दिन पाओगे तुम्हारी ही पार्टी के लोग तुम्हारे घर आ कर तुम्हें टिकट दे जायेंगे।'

'वाह वाह ! ख्वाजा, लगता है अब तक मैं भाड़ झोंक रहा था,।' सिद्दीकी साहब ने ख्वाजा की तरह ही ऊपर का होंठ नाक की तरफ़ धकेलना शुरू किया, 'मैं अब तक भटक रहा था ख्वाजा; आपने एक राह दिखा दी। खुदा ने चाहा तो आपके पैमाने पर सही उतरूँगा। आज आपका बहुत वक्त लिया मगर मेरा बहुत भला हो गया। मैं एक बदले हुए इन्सान की तरह यहाँ से रुख्सत हो रहा हूँ।'

ख्वाजा उठ गए, बोले, 'पहला सबक यही है कि अपने सामने एक ही मक़सद रखो—'इस्लाम।'

'अब मैं अपनी जिन्दगी का मक़सद इस्लाम में ही ढूँढूँगा।' सिद्दीकी साहब ख्वाजा से विदा लेकर बाहर निकल आये।

सिद्दीकी साहब अपने इरादे के मुताबिक सीधे किताबों और रिसालों की

दूकान पर गए। उन्होंने एक एटलस खरीदी और कुछ रिसाले; दो दर्जन सन्तरे, एक किलो सेब, डबलरोटी, मक्खन, पनीर, ब्रॉयलर चिकन वगैरह-वगैरह। तमाम चीज़ें थामे वे अपने घर की तरफ़ इस तरह बढ़ रहे थे जैसे मुसलमानों का भविष्य अब उन्हीं के कन्धों पर टिका है। एक बदले हुए इन्सान ही की तरह सिद्दीकी साहब ने गली में प्रवेश किया।

गली की नाली कई दिनों से रुकी हुई थी। पानी सड़क पर बह रहा था। गुन्नावदेई की चक्की के बाहर पानी का छोटा सा तालाब बन गया था। उसने नेताजी को रोक कर अपनी तकलीफ़ बतानी चाही मगर नेताजी 'देखेंगे, देखेंगे' कहते हुए बेहद बेनियाज़ी से उसके पास से गुजर गए, जैसे आज उन्होंने तय कर लिया हो कि वे नाली की राजनीति नहीं करेंगे। दूर से ही उन्होंने देखा उनकी छोटी बहन अजरा नंगे सिर, नंगे पैर, बाहर चौतरे पर एक पतंगबाज से हुज्जत कर रही थी, जो छत पर से पतंग उतारने की जिद कर रहा था। सिद्दीकी साहब ने अपना सामान ज़हीर को थमा दिया और आगे बढ़ कर पतंगबाज़ के चेहरे पर ऐसा जोरदार तमाचा रसीद किया कि वह तड़प कर पीछे हट गया। यही नहीं, उन्होंने अपनी बहन की चोटी पकड़ कर उसे कुछ ऐसी बेरहमी से कमरे की तरफ़ धकेल दिया कि पूरी गली में सन्नाटा खिंच गया। सिद्दीकी साहब बहुत गुस्से में कमरे की तरफ़ बढ़े और उसी गुस्से में कमरे से बाहर आ गए। घंटी बजाते हुए एक खाली रिक्शा चौक की तरफ़ जा रहा था। सिद्दीकी साहब कूद कर उसमें सवार हो गए और अपनी माँ और बहनों के लिए बुर्क़ा खरीदने के इरादे से चौक की तरफ़ बढ़ गए।

के मुँह पर आलू और किसी के मुँह पर प्याज़ फेंक देती।

उस्मान भाई का काम हो गया था। उसे अचानक अपने आमलेट की याद आई और वह लोगों से आँख बचाता हुआ अनवर के यहाँ पहुँच गया। उसकी मेज पर से प्लेट गायब थी।

'मेरा आमलेट रखा था यहाँ।'

'तुम्हारा आमलेट मैंने बाहर फेंक दिया।' नवाब साहब ने कहा, 'तुम मुहल्ले में फ़िरकादाराना फ़साद करवाने पर आमादा हो। तुमने आज जो काम किया, सब तुम्हारी मुज़म्मत कर रहे हैं। तुम्हारे इरादे बहुत नापाक हैं। पुलिस जब मुहल्ले के शरीफ़ लोगों को भी बंद कर देगी तुम्हारा सपना तब पूरा होगा।'

नवाब साहब को फ़िरकादाराना फ़सादों से बेहद ख़ौफ़ आता था। उस्मान भाई यह सोच कर होटल में आये थे कि तमाम लोग उन्हें कंधों पर उठा लेंगे। मुहल्ले में उनकी वाह वाह हो जायेगी। नवाब साहब का तेवर देखकर उनका माथा ठनका। सुबह से इस काम में तीस चालीस रुपये भी खर्च हो

के तमाम लोगों को इस्माइल की दुकान की तरफ़ लपकते देखा। उस्मान भाई तुरन्त तय न कर पाये कि उन्हें नाश्ता खत्म करना चाहिए या जा कर मौके का जायज़ा लेना चाहिए। उन्होंने गर्म गर्म आमलेट के दो चार कौर ज़ुबान पर रख कर निगल लिए और एक बड़ा सा कौर मुँह में डाल कर जीभ के ऊपर उछालते हुए इस्माइल की दुकान की तरफ़ लपके। जाते जाते उन्होंने मूड़ी हिलाते हुए अनवर को दस का एक नोट थमा दिया कि हिसाब होता रहेगा। उस्मान भाई ने दुकान से उतरते ही तहमद खोल कर बांधा और लगभग दौड़ते हुए भीड़ की तरफ़ लपके।

लड़कों ने उम्दा काम किया था। मल्लू के ठेले की साग सब्ज़ी बीच सड़क में फैली हुई थी और ठेला तड़प रहे मेढक की तरह पीठ के बल औंधा पड़ा था। पास ही निर्वसन मल्लू अपनी जांघों पर दोनों हाथ रखे बड़ी बेचारगी से भीड़ की सहानुभूति पाने के लिए याचना भरी नजरों से देख रहा था। उसका चश्मा उसके पाँव के पास किर्च किर्च पड़ा था। छोटे बच्चे तमाशाइयों की टांगों के बीच में बैठ कर घुसते हुए सड़क तक पहुँचते और कोई प्याज़ से झोली भर कर और कोई आलू समेटते हुए भाग जाता। कुछ बच्चे हजरी बी को बुलाने दौड़े और उसके यहाँ भी खबर दे आये। हजरी आलू छील रही थी, जब उसे खबर मिली, वह उत्तेजना में चाकू घुमाती हुई भीड़ में शामिल हो गयी।

'मर जाओ हरामियों शर्म से। एक बेबस आदमी को परेशान कर रहे हो। तुम यजीद की औलाद हो। क्या देखना चाहते हो तुम उसे नंगा करके। लो मैं दिखाती हूँ।' हजरी बी ने अपना पेटीकोट उतार दिया, 'लो हरामज़ादो देख लो! देख लो!!' उसने देखते-देखते बदन के तमाम कपड़े उतार कर फेंक दिये। हजरी छाती पीट रही थी और कपड़े नोच रही थी। हजरी का रुख देख कर किसी ने मल्लू के ऊपर उसकी लुंगी फेंक दी। मल्लू ने लुंगी पहनी और बग़ैर अपने ठेले और बिखरी सब्ज़ियों की तरफ़ देखे गली से बाहर हो गया।

'साला काफ़िर निकला।' किसी ने कहा।

'उसने कब कहा था, वह काफ़िर नहीं है? क्या काफ़िरों पर मुसीबत नहीं आती? हरामियो, मुसीबत जात देख कर नहीं आती। उसने कुछ कर लिया तो मैं एक एक को दोजख में डाले बगैर चैन न लूंगी।'

'कपड़े पहन लो माँ।' उस्मान भाई ने हाथ जोड़ दिये, 'मेरी बस यही एक बात मान लो।'

'मान जाओ हजरी, मान जाओ।' चारों तरफ़ से इसरार होने लगा।

हजरी कपड़े पहन कर सब्ज़ी बीनने लगी। फुसफुसाहट सुनते ही किसी

के मुँह पर आलू और किसी के मुँह पर प्याज फेंक देती।

उस्मान भाई का काम हो गया था। उसे अचानक अपने आमलेट की याद आई और वह लोगों से आँख बचाता हुआ अनवर के यहाँ पहुँच गया। उसकी मेज पर से प्लेट गायब थी।

'मेरा आमलेट रखा था यहाँ।'

'तुम्हारा आमलेट मैंने बाहर फेंक दिया।' नवाब साहब ने कहा, 'तुम मुहल्ले में फिरकापरस्ताना फ़साद करवाने पर आमादा हो। तुमने आज जो काम किया, सब तुम्हारी मुज़म्मत कर रहे हैं। तुम्हारे इरादे बहुत नापाक हैं। पुलिस जब मुहल्ले के शरीफ़ लोगों को भी बंद कर देगी तुम्हारा सपना तब पूरा होगा।'

नवाब साहब को फिरकापरस्ताना फसादों से बेहद खौफ़ आता था। उस्मान भाई यह सोच कर होटल में आये थे कि तमाम लोग उन्हें कंधों पर उठा लेंगे। मुहल्ले में उनकी वाह वाह हो जायेगी। नवाब साहब का तेवर देखकर उनका माथा ठनका। सुबह से इस काम में तीस चालीस रुपये भी खर्च हो चुके थे।

'आप भी कहर ढाते हैं नवाब साहब।' उस्मान ने कहा, 'मैं तो यहाँ अनवर म्यां के यहाँ बैठा आमलेट खा रहा था, जब लौंडों ने बवाल कर दिया।'

'यही तरीका होता है बवाल कराने का। तुम्हारे जैसे लोग दंगा करने से पहले किसी न किसी जुर्म में जेल चले जाते हैं और पीछे से दंगा करवाते हैं ताकि कह सकें कि वह तो जेल में थे।'

'आप भी कमाल करते हैं नवाब साहब। मुझे अभी तक मालूम नहीं कि आखिर हुआ क्या। क्योंकर हुआ?' उस्मान भीतर से बेहद डर गया। उसे लगा, अब उसे कोई जेल जाने से न बचा पायेगा। उसकी किस्मत अच्छी थी कि तभी सिद्दीकी साहब अन्दर चले आये और हँसते हुए बोले, 'यह आज क्या बवाल हो गया मुहल्ले में?'

'सब उस्मान की करामात है।'

'आप का यही दस्तूर है नवाब साहब। हर बुराई के लिए गरीब आदमी जिम्मेदार होता है। जिस शख्स को दो जून का खाना भी आसानी से मयस्सर न होगा, वह क्या खा कर बवाल करेगा या करायेगा। मुझे अपने काम से ही फ़ुर्सत नहीं। जब से कैंटूनमेंट में ठीका लिया है, जहर खाने की फ़ुरसत नहीं मिल रही।'

'क्या हुआ उस्मान भाई?'

'मुझे क्या मालूम क्या हुआ?' उस्मान भाई ने सिद्दीकी साहब की सहानु-

भूति पा कर कहा, 'इस मुल्क में हर बवाल के लिए, हर झंझट के लिए, हर दंगे के लिए मुसलमान ही जिम्मेदार है।'

'वाह वाह।' सिद्दीकी साहब ने सिगरेट सुलगाया, 'हिन्दुओं का पूरा पालिटिक्स ही यहाँ है। दंगे करवाओ और ज़िम्मेदार मुसलमानों को ठहराओ।'

'मगर इसमें तो साफ़-साफ़ उस्मान का हाथ है।' नवाब साहब ने कहा। नवाब साहब को मालूम था, सिद्दीकी साहब के यहाँ बड़े-बड़े पुलिस अधिकारी आया करते हैं। वे स्थिति को स्पष्ट कर देना चाहते थे।

'हुज़ूर मैं तो खाना खा रहा था, जब दंगा हुआ।' उस्मान ने इस बार दो आमलेट का आर्डर दिया। उसने सिद्दीकी साहब को भी आमलेट खिलाने का निर्णय ले लिया था। सिद्दीकी साहब को समझते देर न लगी कि दूसरा आमलेट उन्हीं के लिए आ रहा है। सिद्दीकी साहब ने सिगरेट का भरपूर कश खींचा और बोले, 'नवाब साहब, मुझे उसी शख्स पर शुबहा है कि वह दंगा कराने के इरादे से ही हमारे मुहल्ले में आया था। उसे अपनी रिहाइश के लिए मुसल-मानों की बस्ती ही मिली। वह किसी साज़िश के तहत ही यहाँ आया था। मैं तो उन लौंडों का मश्कूर हूँ, जिन्होंने आज उसकी शख्सीयत के पोशीदा हिस्से को नुमायाँ कर दिया। क्यों आया था वह इकबालगंज ?'

नवाब साहब ने फौरन चाय का पैसा अदा किया और वहाँ से हट जाना ही बेहतर समझा। सिद्दीकी साहब भी यही चाहते थे कि नवाब जैसा आदमी दृश्य से हट जाये। ये कायर लोग फायर ब्रिगेड की भूमिका निभाते हैं।

'आज हर सिम्त से मुसलमानों पर हमला हो रहा है। मुसलमान फ़िरका-परस्त है, पाकिस्तानी है, देश द्रोही है और हिन्दू फिरकापारस्त नहीं है, देश प्रेमी है। यह देश जैसे उसी का है, हमारा नहीं।' सिद्दीकी साहब ने आमलेट खत्म किया और भीड़ को देख कर बिल का भुगतान भी कर दिया। बाहर तमाम लोग जमा हो गये थे। भीड़ में नसीर और जावेद भी नज़र आ रहे थे। दोनों को उस्मान भाई से अपना मेहनताना लेना था, मगर सिद्दीकी साहब और अन्य लोगों की उपस्थिति में माँग न पा रहे थे।

गली में हजरी की आवाज गूंज रही थी, 'मुसलमानों डूब मरो। तुम लोगों ने एक शरीफ़ इन्सान के साथ नाइन्साफ़ी की है। तुम मुसलमान नहीं हो, ज़ालिम हो, कातिल हो। काफिर से भी गये गुज़रे हो।'

हजरी बी ने पलट कर ठेला सीधा किया। ठेले के ऊपर बैठ गयी और मातम शुरू कर दिया। ताहिर ने ठेला ठेलना शुरू किया। ताहिर ठेल रहा

से यह छुपा न रहा। उन्हें लग रहा था कि उस्मान काम का आदमी है। उन्होंने तय किया जाते समय वह ख्वाजा के पैसों में से पचीस तीस रुपये उसे जरूर देंगे। उसका काम सिद्दीकी साहब को पसन्द आया था। सिद्दीकी साहब देर तक उस्मान के बेटे का नाम याद करते रहे, जिसके लिए उस्मान ने कई दफ़ा उन से प्रार्थना की थी कि उसे टी० बी० अस्पताल में दाखिला दिला दें, सिद्दीकी साहब ने कभी इस तरफ़ ध्यान नहीं दिया था। आज अचानक उन्हें उस्मान के बेटे की बीमारी की याद आ गयी। उस्मान के प्रति अपनी आत्मीयता प्रकट करने के लिए यह जरूरी था कि वह उस्मान के लड़के का हाल उस का नाम लेकर पूछें। दिमाग़ पर बहुत दबाव देने पर 'असरार' ही उनके दिमाग में कौंध रहा था।

'असरार कैसा है? उसे अस्पताल में दाखिला मिला या घर पर ही है? आपने तो मियां कभी खबर ही न दी।'

'क्या करता सिद्दीकी साहब। हर अस्पताल में धक्के खाये, मगर मुसलमानों की कहीं पूछ नहीं, पहुँच नहीं। अल्लाह के भरोसे छोड़ रखा है। रात भर खांसता है तो कलेजा मुँह को आ जाता है।' उस्मान की आँखें भर आईं 'मालूम नहीं अल्लाह ताला कौन सा इम्तिहान लेने पर आमादा हैं।'

'तुम परेशान न हो। मैं कल ही असरार के लिए टी० बी० अस्पताल में पूछताछ करूँगा। दो एक डाक्टरों का तबादला मैंने रुकवाया था, वे मेरी सिफ़ारिश पर ध्यान देंगे।'

उस्मान ने राहत की सांस ली। उसे लग रहा था, असरार घर में पड़ा रहा तो टी०बी० के जरासीम उसके पूरे परिवार को चाट जाएँगे। वह सिद्दीकी साहब के पैरों पर गिर पड़ा, "हुजूर मेरे बच्चे को बचा लीजिए। वह रात रात भर खांसता है। चेहरा देखेंगे तो उसे पहचान न पायेंगे। मेरे छोटे छोटे बच्चे हैं हुजूर। कहीं का न रहूँगा।'

सिद्दीकी साहब देर से जेब से दस रुपये का नोट टटोल रहे थे। मगर हर बार बीस अथवा पचास का नोट ही हाथ लगता। अब उस्मान का कष्ट देख कर उन्होंने तय किया कि जो भी नोट हाथ में आ जायेगा, उस्मान की नज़र कर देंगे। आखिर पचास के नोट ने रोशनी देखी! सिद्दीकी साहब ने पचास का नोट उस्मान की हथेली में रखकर मुट्ठी बन्द कर दी, 'फिलहाल यह रखो। असरार का काम मैं कल जरूर करूँगा।'

पचास का नोट पाकर उस्मान अभी अभी लौंडों को दिए रुपये का दर्द भूल गया। उसका कलेजा यही सोच कर बैठ रहा था कि उन पैसों से वह घर के लिए जरूरी अखराजात कर सकता था। मगर उसने यह सोचकर सब्र कर

लिया था कि आखिर उसने पैसे का सही इस्तेमाल किया। एक काफ़िर की पोल पट्टी खोल दी। एक नापाक इन्सान को मुहल्ले से निकाल फेंका। अब उसकी मुट्ठी में पचास रुपये थे। उस्मान ने सिद्दीकी साहब के हाथ थाम लिए 'आप आज आप हमारे यहाँ खाना खाएँगे। आप को मालूम नहीं, सुल्ताना बहुत अच्छे कबाब बनाती है।'

सुल्ताना को सिद्दीकी साहब ने कई बार बीड़ी के ठेकेदार के यहाँ पत्ते और तम्बाकू लेते देखा था। उनके नज़दीक सुल्ताना एक ऐसा फूल था, जो वक्त से पहले मुर्झा रहा था। उसके झीने कपड़े हमेशा उन कपड़ों के भीतर झांकने की प्रेरणा देते थे। सिद्दीकी साहब को दिल्ली में देखा कैबरे याद आ गया। वे यही चाहते थे, उस्मान भाई इसरार कर के सिद्दीकी साहब को अपने घर ले चलें। वे सुल्ताना को अभी, इसी वक्त देख लेना चाहते थे। सिद्दीकी साहब ने जेब से सब रुपये निकाल लिए। उनमें से दस का नोट अब्दुल को दिया कि वह कहीं से अच्छा कीमा लाकर उस्मान भाई के यहाँ छोड़ आए।

घर जा कर सिद्दीकी साहब ने शेव बनायी। शेव बनाते समय उन्होंने सोचा कि अब समय आ गया है, वे दाढ़ी बढ़ा लें। अपने सम्प्रदाय का प्रतिनिधित्व वे बगैर दाढ़ी के नहीं कर पायेंगे। सिद्दीकी साहब ने तय किया कि शादी तक वह इस खयाल को स्थगित रखेंगे। उन्होंने ग्लीसरीन साबुन की नयी पारदर्शी टिकिया निकाली और कंधे पर तौलिया डाल कर गुसलखाने में घुस गये। देर तक पानी गिरने की आवाज आती रही। सिद्दीकी साहब ने खूब विस्तारपूर्वक स्नान किया। इससे पहले वे दस पांच लोटे पानी उंडेल कर बाहर निकल आया करते थे। आज उन्होंने झाँवें से रगड़कर एड़ियाँ साफ़ की। अवांछित बाल साफ किये। शिकाकाई से सिर के बाल शैम्पू किए। बाद में जब उन्होंने सिर पर तेल लगाया तो बीसियों बाल हथेली पर चिपक गये। सिद्दीकी साहब अपने गिरते हुए बालों से चिन्तित हो गये। क्या वह तब शादी करेंगे जब सर पर चाँद निकल आएगी, उन्होंने मन ही एक सवाल किया। इस सवाल के जवाब में उन्होंने कन्नौज के इत्र की एक छोटी शीशी खोली और अपनी कलाई, बगलों और कानों में इत्र लगाने लगे। नया धोबी-धुला कुर्ता पायजामा पहन वह नीचे बैठक में चले आये और सिगरेट फूँकते हुए उस्मान भाई के बुलौए का इन्तज़ार करने लगे। दरवाज़ा खुलते ही पुलिस, तहसील और इन्सपेक्टरों से पीड़ित लोगों का मजमा लग गया। सिद्दीकी साहब फ़िलास-फराना अन्दाज़ में तमाम लोगों की शिकायतें, तकलीफ़ें सुनते रहे। वे देश में मुसलमानों के प्रति हो रहे भेदभाव पर अपना बयान दे रहे थे कि अचानक पसीने से लथपथ उस्मान भाई प्रकट हुए।

'आपको याद दिलाने चला आया। बस गोश्त पक रहा है।'

सिद्दीकी साहब मुर्गे सँवरे बैठे थे। अचानक झेंप गये, बोले, 'आज डी० एम० साहब के यहाँ भी दावत है। आपका इसरार है तो चला आऊँगा, मगर जल्दी रुखसत कर दीजिएगा।'

'आप फ़िक्र न कीजिए, आपका ज्यादा वक्त न लूँगा।' उस्मान भाई फ़ौरन बाज़ार की तरफ़ बढ़ गये। दरअसल घर में ईंधन भी खत्म था। यहाँ तक कि नमक जैसी चीज़ भी नहीं थी। सच तो यह है उस्मान भाई को घर पहुँचते ही बेगम से खूब डाँट पड़ी थी कि गोश्त लाते समय यह क्यों नहीं सोचा कि गोश्त पकाने के लिए चिकनाई है या नहीं। उस्मान भाई ने जेब से बीस का नोट निकाल कर बेगम को दिया तो बेगम शांत हुईं। अब नोन तेल लकड़ी का इन्तजाम करते हुए उस्मान भाई की समझ में आया कि उन्होंने जज़्बात की रौ में बह कर फ़िज़ूल में दावत दे डाली। घर में किसी के पास ऐसे कपड़े न थे कि सिद्दीकी साहब के सामने आ सके। उस्मान भाई ने माथा पीट लिया, मगर कोई चारा न था। साफ़ ज़ाहिर था, दस ग्यारह से पहले खाना तैयार नहीं हो सकता था और सिद्दीकी साहब को डी० एम० साहब के यहाँ जाने की जल्दी थी। सामान खरीद कर उस्मान भाई एक कप चाय पीने के इरादे से अनवर के यहाँ रुक गये। उन्हें लग रहा था सिद्दीकी साहब को दावत देकर उन्होंने अपने लिए बवाल खड़ा कर लिया है। उस्मान ने चाय का पहला घूँट भरा था कि किसी ने इत्तिला दी कि सिद्दीकी साहब उसके यहाँ पहुँच चुके हैं। उस्मान ने चाय की दो-चार चुस्कियाँ लीं और थैला उठाये घर की तरफ़ लपके।

लालटेन के उजाले में उस्मान ने देखा, सिद्दीकी साहब आंगन में बैठे बेगम से बतिया रहे थे। सुल्ताना भी पास ही मोढ़े पर बैठी थी। उस की कमीज़ बगलों से फटी थी। कमर पर से भी फटी थी। मगर सुल्ताना अपने कपड़ों से बेनियाज़ सिद्दीकी साहब से बतिया रही थी। उस्मान को देखते ही सिद्दीकी साहब ने उसे डाँटना शुरू कर दिया 'म्याँ, यह भी क्या तरीका है जीने का कि घर में किसी के पास पहनने लायक कपड़े भी नहीं। यह तो अच्छा हुआ, मैं चला आया। बेगम को तुमने बच्चे पैदा करने की मशीन बना रखा है। सुल्ताना को देखो, यही एक जोड़ी कपड़ा उसके पास है। यह लो सौ का नोट, अभी जाओ और चौक से भाभी जान और सुल्ताना के लिए एक एक जोड़ी कपड़ा खरीद लाओ। मैं तो बेहद शर्मिंदगी महसूस कर रहा हूँ कि मेरे रहते आप लोगों की यह हालत है। अब मुँह क्या ताक रहे हो, चलते हुए नज़र आओ। अल्लाह!' सिद्दीकी साहब ने सिर थाम लिया।

उस्मान ने झोला बेगम के हवाले किया और चौक की तरफ़ रवाना हो गया।

'आप चाय लीजिएगा या कबाब बनाये जायें ?' बेगम ने पूछा।

'आप भी कैसी बात करती हैं भाभी।' सिद्दीकी साहब ने देखा, बेगम ने अपने को एक फटी धोती में लपेट रखा था। पल्लू हटते ही बेगम के शरीर की भरपूर जानकारी उन्हें हो गयी। सिद्दीकी साहब बेकाबू हो रहे थे। उनके सामने एक जिस्म बेनकाब था। उनका मन हो रहा था, ज़ोर से चिल्लाएँ, 'हिन्दुओ, ज़ुल्म खत्म करो।' मगर जब बेगम ने चाय के लिए बहुत अनुरोध किया तो वे खड़े हो गये। बेगम को दोनों कन्धों से पकड़ लिया।

'फिर किसी रोज आऊँगा, मुआफ़ करें।'

सुल्ताना चूल्हा फूंकने चली गयी थी। बेगम ने इस बार पल्लू गिरा रहने दिया। सिद्दीकी साहब ने जेब से एक और नोट निकाला और बेगम के हाथ में दबा दिया, 'सुल्ताना जवान हो रही है। उसे एक जोड़ी कपड़ा और बनवा देना। आज के बाद वह खुले मुँह न दिखायी देनी चाहिए। कल मै एक बुर्का भी भिजवा दूँगा।'

बेगम फौरन सौ का नोट सन्दूक मे रखने चली गयीं। सिद्दीकी साहब चूल्हे की तरफ़ बढ़ गये जहाँ सुल्ताना चूल्हा फूंक रही थी। उसका कुर्ता पीठ के बीचों-बीच कुछ इस अन्दाज से फटा था कि सुल्ताना की पीठ पर लालटेन की मद्धिम रोशनी में एक नन्हा चांद उग आया था। सिद्दीकी साहब की इच्छा हुई, आगे बढ़ कर एक नन्हे बच्चे की तरह चांद को थाम लें।

'परेशान न हो सुल्ताना, हम जा रहे हैं।' सिद्दीकी साहब ने कहा।

अब सुल्ताना उनके सामने खड़ी थी। उस की आँखें नम थी। पैरों की अंगुलियाँ ज़मीन कुरेद रही थीं।

'मुझे नही मालूम था, उस्मान भाई इस कदर गर्दिश में है।' सिद्दीकी साहब ने कहा और सुल्ताना को अपनी आगोश में ले लिया। सिद्दीकी साहब की आगोश में जैसे किसी ने अलाव जला दिया।

सुल्ताना सिर झुकाये उनकी आगोश मे सिसक रही थी। सिद्दीकी साहब की जेब खाली थी। वह अपनी जेबें और दिल उंडेल देना चाहते थे, सुल्ताना के कदमों पर। उनका दिल उतना खाली नही था, जितना उन की जेबें खाली हो गयी थीं। बेगम के कदमों की आहट सुनकर उन्होने एक सिगरेट सुलगाया और लम्बे लम्बे कश भरते हुए वहाँ से रुख्सत हो गये।

• •

जितेन्द्र मोहन शर्मा ने अपने घर अनेक पत्र लिखे, मगर उसके किसी भी पत्र का उत्तर न आया। यहाँ तक कि उसकी वहन ने भी उसके खत का जवाव न दिया। उसे संवादहीनता की इस स्थिति से वहुत कोफ़्त हो रही थी। मगर उसके पास अव कोई दूसरा विकल्प न था। इस वीच विश्वविद्यालय में उसका प्रेम प्रसंग कुछ इस गति से प्रचारित हुआ जैसे जंगल में आग लग गई हो। हर लव पर उसके और गुल के अफ़साने थे। वह जिधर भी निकलता लोगों की निगाहें, अंगुलियां और फब्तियाँ उसका पीछा करतीं। तंग आकर उसने दो माह की छुट्टी ले ले और प्रकाश को तार दिया कि वह फ़ौरन चला आये। शर्मा प्रकाश से वातचीत करके शादी की तिथि तय कर लेना चाहता था ताकि इस वीच किसी दूसरे विश्वविद्यालय में नौकरी प्राप्त कर के इत्मीनान से शिमला चला जाये। वहुत दिनों से उसकी इच्छा चण्डीगढ़ में कुछ वर्ष विताने की थी। वहाँ के अध्यक्ष से उसके अच्छे सम्वन्ध थे, मगर कहा नही जा सकता था कि वे इस विवाह को कैसे लेंगे।

छुट्टी की पहली शाम उसने अजीजन के यहाँ विताने का ही फैसला किया और शाम होते-होते चौक की तरफ़ रवाना हो गया। विश्वविद्यालय के अनेक छात्र नेता शर्मा को वहुत मानते थे। उसे पूर्ण विश्वास था कि इस विवाह को लेकर वे कोई ववाल नहीं करेंगे। छात्र संघ का अध्यक्ष रामधनी उसी के ज़िले का था और शर्मा ने उसे अपने विश्वास में ले रखा था। रामधनी शर्मा के इस निर्णय से प्रसन्न नहीं था, मगर उसने विरोध भी न किया और शाम को जव प्रोफ़ेसर चौक के लिए जा रहा था तो रामधनी उसके साथ हो लिया।

"आओ आज तुम्हें अपनी ससुराल में चाय पिलाएँ।"

"वाद में पिऊँगा।" रामधनी ने कहा, "भूमिहारों की लॉवी आपके विवाह को स्कैण्डलाइज़ करना चाहती है। वे लोग उर्दू विभाग के कुछ मुस्लिम छात्रों को भड़काने में सक्रिय हैं, मगर सफ़ल न होंगे।"

"मेरा तो उन लोगों से परिचय तक नहीं।" शर्मा वोला।

"दरअसल ये लोग वी. सी. को इस विवाह में 'इन्वाल्व' करना चाहते हैं। वी. सी. आपकी जाति के हैं और उन्हें वी. सी. के खिलाफ़ माहौल बनाने से मतलब है।"

वी. सी. से शर्मा के पुराने सम्बन्ध थे। वह उनकी जाति का ही नहीं था, उनका छात्र भी रहा था। वी. सी. ने स्वयं अन्तर्जातीय विवाह किया था, इसलिये वह इस विवाह के खिलाफ़ नहीं थे। शर्मा को याद है, जब वह छात्र था, वह कक्षा में प्रायः कहा करते थे कि यदि सजातीय विवाहों पर प्रतिबन्ध लगा दिया जाए तो दहेज की समस्या, जातीय एकता की समस्या तथा अन्य अनेक सामाजिक समस्याएँ अपने आप हल हो जाएँगी।

"आप फिक्र न कीजिए।" रामधनी ने कहा, "मैं तमाम लोगों से निपट लूँगा। विश्वविद्यालय का पत्ता पत्ता मेरे साथ है।"

शर्मा इस बात को लेकर सचमुच चिन्तित नहीं था। उसके पास चार प्रथम श्रेणी थीं, उसे नौकरी की उतनी चिन्ता नहीं थी। अब उसके पास अनुभव भी था। उसने रास्ते मे एक जगह रामधनी को मसाला दोसा खिलाया और उससे विदा लेकर गली में घुस गया। इस गली में, जाने क्यों, उसका दम घुटता था। यह शायद शहर की सबसे ग़लीज गली थी। जगह-जगह कचरे के ढेर, खिड़कियों पर फटे पुराने टाट के बोसीदा पर्दे, नंग धड़ंग बच्चे, आवारा लड़के, बीड़ी फूंकते बूढ़े साजींदे। अँधेरा। घुटन। हर शख्स के चेहरे पर लाचारी, बेबसी और मनहूसियत। यह मृत प्राय जीवन उसे भीतर तक का झँझोड़ जाता। मगर गुल के यहाँ दूसरा माहौल था, ह्रासोन्मुख सामन्ती माहौल मगर उसमे भी सड़ाँध थी। वह जल्द से जल्द गुल को इस गन्दगी से मुक्ति दिला देना चाहता था। सबसे पहले गुल पर ही प्रोफ़ेसर की निगाह पड़ी। हस्बेमामूल गुल बाल सुखा रही थी।

"क्या बाल रोज शैम्पू करती हो?" प्रोफ़ेसर के मुँह से बेसाख्ता निकल गया।

"जिस रोज आपको आना होता है, जरूर करती हूँ!" गुल ने कहा।

प्रोफ़ेसर निरुत्तर। उसे अच्छा लगता है, गुल से निरुत्तर होना।

"अम्मां कहा हैं?"

"नमाज पढ़ रही होंगी। मैं उन्हे जब देखती हूँ, वह नमाज पढ रही होती हैं।"

"इसका मतलब है, दिन में कम से कम पांच बार उन्हे जरूर देखती हो।"

"चलिए आपको नमाज की कुछ जानकारी तो हुई।" गुल बोली, "चाय

पीजिएगा या कुछ ठंडा।"

"ठण्डा ही पिलाओ। जिगर जल रहा है।" प्रोफ़ेसर ने कहा।

गुल उठती, उससे पहले ही अज़ीज़न हाथ में ट्रे लिये चली आई। शर्मा खड़ा हो गया।

"वैठो वैठो।" अजीजन ने कहा, "आज आपके लिये बहुत नायाब चाय मँगवाई है।"

'ये प्याले कितने खूबसूरत हैं।' शर्मा बोला।

'जापानी हैं,' अज़ीजन ने कहा, 'ये गुल के लिए संभाल कर रखे हैं। गुल के लिए मैंने वहुत-सी चीज़ें रखी हुई हैं। आप देखेंगे तो मेरी अक्ल पर तरस खाएँगे।'

अज़ीजन उठी और बगल के कमरे में चली गयी। लौटी तो उसके हाथ में एक पाज़ेब थी। हीरों से जड़ी पाज़ेब।

'यह पाज़ेब कैसी है?'

शर्मा ने पाज़ेब हाथ में ली और दाम पूछने की इच्छा हुई। उसने मुंह से बेसाख्ता निकल गया, 'इसका दाम पचास हज़ार से कम न होगा।'

'मुझे इसका कुछ ज्ञान नहीं है।' अज़ीजन ने कहा। शर्मा अज़ीजन के आर्थिक पक्ष से अपरिचित था। अचानक वह अपने को बहुत दीन-हीन महसूस करने लगा।

'मेरे पास तो आपकी विटिया को देने के लिए कुछ भी नहीं है। एक छोटा-सा ७००-१६०० का स्केल है।'

अज़ीजन हँसी, 'हम लोग अगर डरती हैं तो असुरक्षा से। इसीलिए इतना जुड़ गया। सरकार तो पेंशन देती नहीं।'

पाज़ेब देख कर शर्मा वहुत सिमट गया था। उसकी कल्पना में भी न था कि बुढ़िया के पास इतनी सम्पत्ति है। उसे अन्दर ही अन्दर गुदगुदी भी हुई। उसे लगा कि वह अपने वावू को अगर बातों-बातों में भी वता देगा कि उनकी समधिन इतनी रईस है तो वे शायद अनुमति दे दें, मगर वह जानता था कि ऊपर से वह यही उत्तर देंगे कि इस हराम की कमाई पर वह थूकते भी नहीं।

'बेटा आप सोच रहे होंगे, यह बुढ़िया अपनी कमाई की धौंस जमा रही है।' अज़ीज़न वोली, 'सच पूछो तो मुझे अगर कोई गुमान है तो अपने गले पर और गले में कितनी शक्ति है, ध्वनि में कितनी शक्ति है, इसका अनुमान आप एक घटना से लगा सकते हैं।'

'अम्मां अब रहिमन बाई का लम्बा बोर किस्सा सुनाने न बैठ जाना।'

गुल ने कहा ।

शर्मा की अभी उठने की इच्छा न थी । गुल थी और चाय । अम्मां भी खूब मूड में थीं ।

'आप सुनाइये, मुझे बड़ी अच्छी लग रही हैं आपकी बातें ।'

'रहिमन बाई का नाम तो आपने सुना होगा ?'

'मैंने आजतक किसी बाई का नाम नहीं सुना था ।'

गुल खिलखिला कर हँस पड़ी ।

'बहरहाल रहीम वाली बाई का नाम कौन नहीं जानता ।'

'अम्मां यह बताना तो भूल ही गयी कि रहिमन बाई आज से लगभग दो सौ साल पहले हुई थी....।' गुल बोली ।

'चुप रहा ।' अजीजन ने बाल झटके और आँखें मूंद लीं, मानो रहिमन बाई के सौन्दर्य का मन ही मन पान कर रही हो, 'तीर्थराज प्रयाग में रहिमन बाई की भेंट एक धनी साहूकार मोनी शाह से हुई । मोनीशाह भी संगीत प्रेमी साहूकार थे । देश के कोने-कोने से नरेश लोग रहिमन बाई की ठुमरी सुनने बाबू साब की कोठी पर आया करते थे ।

'अचानक सेठ जी भयंकर रूप से बीमार पड़ गये । वे ऐसा बीमार पड़े कि वैद्य, हकीम सब हार मान कर रह गये । यहाँ तक कि बाबू जी को जमीन पर लिटा दिया गया । हर सिम्त मातम का माहौल तारी हो गया ।

'अचानक लोगों ने देखा कि मक्खन से सफ़ेद कपड़ों में हाथ में तानपूरा लिये एक देवी प्रकट हुई । उसके बाल बिखरे हुए थे । तानपुरे के स्वर के बीच अचानक उस देवी ने अलाप शुरू किया । ज्योंही स्वर पंचम पर पहुँचा अचेत बाबू साब की अँगुलियाँ थिरकने लगीं । थोड़ी देर में बाबू साब की आँखें भी खुल गयीं । वहाँ उपस्थित सभी नाते रिश्तेदारों और हकीम-वैद्यों ने देवी को प्रणाम किया और बाबू साब की सेवा में जुट गये ।....'

'इस घटना के बाद बाबू साब छः वर्ष और जीवित रहे ।' गुल ने कथा का समापन करते हुए राहत की साँस ली ।

'चुप रह मालजादी ।' अजीजन बोली, 'मैं तो इस लड़की से बेहद परेशान हूँ । इसकी शादी हो तो मैं छुट्टी पाऊँ । मेरी तो जान साँसत में रहती है । पन्द्रह मिनट भी इसे कहीं देर हो जाती है तो मेरी जान निकलने लगती है ।'

'शादी हो जायेगी तो आप इसके बिना कैसे रहेंगी ?' शर्मा खुशामद पर उतर आया था ।

'इसको एक मोटर दे दूँगी ताकि दिन में एक बार अपनी माँ को सूरत दिखा जाया करे ।' अजीजन बोलीं ।

'अम्मां मैं तुमसे एक कौड़ी न लूंगी।'

'मैं अपने बेटे को दे दूंगी।' अज़ीज़न शर्मा के सर पर हाथ फेरने लगी। शर्मा को अपनी मां की बहुत तेज़ याद आयी। बरसों से उसने मां का प्यार नहीं पाया था। उसकी आंखें गीली हो गयीं।

'अम्मां मुझे सिर्फ बिटिया दे दो। और कुछ नहीं चाहिए। मैंने तो बहुत पहले तय कर लिया था कि दहेज में कुछ न लूंगा।'

'हम डेरेवालियां हैं, अपनी इज्जत के लिए मर-मिटती है।' अम्मां बोली,

'आपके लिए एक और किस्सा आ रहा है, जब वायसराय हुजूर ने अम्मां की बुआ का नाच देखा था।' कह कर गुल खिलखिला कर हँस पड़ी।

'यह लड़की तो मुझे बोलने ही नहीं देती।' अचानक अजीजन को गुस्सा आ गया, 'चल, जा कर पढ़ो-लिखो। पढ़ने की इच्छा न हो तो मास्टर जी को बुलवा कर रियाज करो।'

'अब हम न बोलेंगे।' गुल ने कहा और चाय के बर्तन उठा कर चली गयी। शर्मा ने सोचा अब सन्तोष कल के उसे भी लौट जाना चाहिए।

अज़ीज़न ने प्रोफ़ेसर को उखड़ते देखा तो वहीं से आवाज दी, 'ऐ गुलिया, एक गर्म-गर्म चाय तो लाना।'

प्रोफ़ेसर के दम में दम आया। वह छत पर लटकते कांच के फानूस देखने लगा। फिर खिड़की के बाहर। गली में कोई फ़क़ीर दुआएँ लुटाता हुआ गुजर रहा था : यह फ़क़ीर दुआ करते हैं कि खुदा आपको रोज़गार दे।,

"गुल तो अभी नादान लड़की है, चीज़ों को समझने की कोशिश ही नहीं करती। उसे समझना चाहिये हमारे खानदान की क्या इज्ज़त है और संगीत में हमारे खानदान का कितना नाम है। उसे समझना चाहिये या नहीं?"

"जरूर समझना चाहिये।" शर्मा ने कहा, "मगर अब उसकी दुनिया बदल जायेगी।"

"तुम भी लाला उसी की तरह सोचते हो। मगर अपने खानदान को कभी कोई भुला सकता है?"

"अम्मां आप भूल कर रही हैं। अभी इनका और हमारा खानदान अलग-अलग है।" गुल चाय ले आयी थी।

अम्मां ने घूर कर गुल की तरफ़ देखा। गुल कन्धे उचका कर और ज़ुबान बाहर निकाल कर चाय बनाने लगी। गुल की ज़ुबान गोश्त की बोटी की तरह लाल थी। शर्मा ने सोचा, कितना अच्छा है, इसे कब्ज़ नहीं है। गैस की शिकायत भी न होगी। उसकी अपनी मां को हर चीज़ से गैस हो जाती थी और वह घर में चारों तरफ़ बहुत परेशान मुद्रा में घूमा करती थीं। इस

समय वह गुल के साथ बालू पर होता तो कहता, "गुल यह तुम्हारी जुबान है या लाली पॉप । मगर उसने कहा, "अम्मा आपकी दुनिया के बारे में मेरी कोई जानकारी नहीं, हर बात मुझे बहुत नई नई लग रही है ।"

"अच्छा सुनो । एक बार हुजूर वाइसराय साहब एक ऐसी महफ़िल में शरीक हुये, जिनमें हमारी बुआ भी हाजिर थीं । हुजूर वाइसराय साहब ने उनका गाना सुना और नाच देखा । अगले ही रोज मद्रास की हिन्दू सोशल रिफार्म एसोसिएशन ने बीसियों मुमरज्ज नागरिकों से दस्तख़त करवा के एक मेमोरेण्डम वाइसराय और गवर्नर जनरल ऑफ़ इन्डिया के पास भेजा, जिनमें बहुत-सी फ़िजूल बातों के बाद अन्त में दरख्वास्त की गई थी कि वह ऐसे किसी भी जलसे शामिल न हों जिनमें तवायफें भी मौजूद हों । आप जानते हैं हुजूर वाइसराय साहब ने क्या उत्तर दिया ?"

"अब अम्मां आलमारी की चाबी ढूंढेंगी, फिर आलमारी खोलेंगी और कम से कम बीस मिनट में हुजूर वाइसराय साहब के जवाब का उर्दू तर्जुमा निकाल कर लायेंगी जिसकी वसीयत उनकी इन्दौर वाली बुआ ज़मीन के साथ अम्मा के नाम कर गयी थीं ।'

इस बार अम्मां नाराज न हुई । अपनी कमर से चाबी निकाल कर उठ से हुजूर वाइसराय साहब का ख़त, अपनी बुआ की तस्वीर और उनकी 'विल' की मूल प्रति उठा लायीं ।

"तुम उर्दू तो जानते नहीं । मैं ही तर्जुमा करके तुम्हें सुनाती हूँ । जाओ गुल बिना हुज्जत किये मेरा चश्मा उठा लाओ ।'

गुल ने मुस्कराते हुए शर्मा की तरफ़ देखा और अपनी गोद से चश्मा उठा कर अम्मां को थमा दिया, "हमें मालूम था, आज आपको चश्मे की जरूरत पड़ेगी ।'

शर्मा ने तारीफ़ की निगाहों से गुल की तरफ़ देखा । अम्मा ने लाड से । अम्मां ने अभी चश्मा पहना भी नहीं था कि हुजूर वाइसराय साहब का ख़त पढ़ना शुरू किया :

वाइसराय लाज, शिमला,
सेपटेम्बर २३, १८८३

श्रीमान जी !

मुझे हुजूर वाइसराय की आज्ञा हुई है कि मैं आपके उस पत्र की आपको पहुँच दूँ जिसमें आप तथा आपके दूसरे सहयोगियो ने हुजूर वाइसराय से यह प्रार्थना की है कि वह उन सब जलसों में सम्मिलित होने से इन्कार कर दिया करें, जिसमे कि वेश्याओ के नाच का भी प्रोग्राम हो । आप अपनी प्रार्थना का

आधार यह बतलाते हैं कि यह सब नाचने वाली स्त्रियां एकदम बाजारू वेश्याएं हैं, जिनको किसी भी प्रकार से सहायता तथा प्रोत्साहन नहीं मिलना चाहिये। हुजूर वाइसराय ने अपनी ओर से मुझे यह उत्तर देने की आज्ञा दी है कि वह आपके इस पुरुषार्थ को प्रशंसा की दृष्टि से देखते हैं, पर जिस प्रकार की घोषणा करने की आप हुजूर वाइसराय से इच्छा रखते हैं, उस प्रकार की घोषणा करने में हुजूर वाइसराय की सम्मति में कोई लाभ नहीं होगा। भारत वर्ष का भ्रमण करते हुये हुजूर वाइसराय को ऐसे जलसों में शामिल होना पड़ा है, जहां कि वेश्याओं का नृत्य भी प्रोग्राम में था। वहां वेश्याओं का नाच हुजूर वाइसराय ने देखा है। हुजूर वाइसराय को उस नाच में कोई ऐसी बात दिखायी नहीं दी जिससे कि सर्वसाधारण के चरित्र पर बुरा प्रभाव पड़ता हो। इस कारण हुजूर वाइसराय आपकी प्रार्थना स्वीकार करने में असमर्थ हैं।....."

"हुजूर वाइसराय साहब का यह पत्र आपको कहां से मिला? शर्मा ने आश्चर्य से पूछा।

"लीजिए, एक और कहानी।" गुल ने कहा।

अम्मां हँसते-हँसते लोट-पोट हो गयीं।

"बुआ जी को यह पत्र एसोसिएशन का एक सरगरम सदस्य ही दे गया था!" अम्मां बोलीं, 'वह खुद बुआ जी की कला का बहुत प्रशंसक था, मगर नगर का सभासद होने के नाते उसे एसोसिएशन में शामिल किया गया था।'

"बहुत खूब, बहुत खूब!" शर्मा बोला, "आपके पास तो प्रशंसकों का इतना बड़ा खज़ाना है कि आप एक बहुत सुन्दर पुस्तक लिख सकती हैं।"

"न, यह काम मैं कभी न करूंगी। अपने घर आने वाले शख्स के बारे में हम कोई भी बात दूसरों से नहीं कहतीं, लिखना तो दूर की बात है। हम क्या क्या नहीं जानतीं, मगर मजाल है हमारी जुबान पर कोई बात आ जाय।"

"आप ठीक फरमा रही हैं। हर व्यवसाय की अपनी एक आचार-संहिता होती है।" शर्मा बोला, "मगर आप बिना किसी का नाम लिये भी तो लिख सकती हैं।"

"न न, हम अपने उसूलों से कभी नहीं डगमगातीं। रेडियो स्टेशन से कई बार गाने के लिए बुलौवा आता है, मगर हम एक बार भी नहीं गये। हमारा उसूल है, जिसकी संगीत में दिलचस्पी है, हमारे यहां खुद आये। आपने देखा होगा बहुत अच्छी गाने वालियां कभी रेडियो स्टेशन की तरफ़ मुंह नहीं करतीं।"

"ऐसी बात तो नहीं।" शर्मा बोला, "कई अच्छी गानेवालियां रेडियो

पर ग़ज़लें-भजन सुनाती हैं।''

''मगर अम्मां, मैं तो रेडियो पर गाऊँगी।''

''अगर तुम्हारे ख़ाविन्द इजाज़त देंगे।' अम्मां ने पूछा, 'क्यों ठीक बात है न?'

'मैं ख़ुद एक-दो बार रेडियो गया हूँ, तुम्हें क्यों रोकूँगा।' शर्मा बोला।

'यहाँ तक कि हमारे साज़िन्दे भी वहाँ जाना पसन्द नहीं करते। वही लोग गये हैं, जिनकी भूखों मरने की नौबत आ गई थी।' अज़ीज़न बोली, 'मगर ऐसे भी थे जो भूखों मर गये, पर आख़िर तक अपनी ज़िद पर डटे रहे।'

शर्मा खड़ा हो गया, 'आपसे बात करना बहुत अच्छा लगा।'

'हम तो बातों की ही कमाई खाते हैं।' अज़ीज़न बोली, 'आज मैं कुछ ज़्यादा बोल गयी। मगर एक बात बताऊँ, बोलने में मेरी बिटिया [illegible] होगी, उन्नीस नहीं। अभी आपके सामने ही गुमसुम बैठी है।'

गुल से शर्मा की आँखें चार हुईं। गुल की आँखें झुक [illegible] लम्बी पलकों के नीचे जैसे पारा बन्द था। शर्मा के [illegible] अज़ीज़न के दिल पर जैसे पत्थर की भारी सिल हट गयी।

उसने इच्छा प्रकट की कि शर्मा खाना खाकर [illegible] इतनी देर हो गई कि अज़ीज़न ने उसे रुक जाने को कहा। [illegible] गया। वह यही चाहता था।

बगल के कमरे में शर्मा का बिस्तर [illegible] था। नये कपड़ों की एक [illegible] होती है। शर्मा ने देखा [illegible] तस्वीरें इस कमरे की दीवारों पर [illegible] नहीं देखीं। बत्ती बुझा दी [illegible] मूंद लीं।

दूसरे दिन [illegible]

[illegible]

[illegible]

सुस्ता लो उसके बाद हमला बोलो। रात मैं पार्वती के पास ही रह गया था।'

'मेरी तो इच्छा हो रही थी कार से उतरते ही माशूका का नाम इतनी ज़ोर से लूं कि तुम्हारे पड़ोसी बाहर निकल आयें।'

'तुम साले कलेक्टरी कैसे करते हो ?'

'कुर्सी पर एक दूसरा प्रकाश होता है।' वह बोला, 'दोस्तों के बीच जो मजा है वह सचिवालय में नहीं ?'

शर्मा ने जल्दी से चाय बनवायी और कुर्सी पर पसर गया, प्रकाश भी दीवार के सहारे पीठ टिकाकर वहीं उसके पास बैठ गया।

''क्या हुआ भूतनी के !' प्रकाश बोला, 'ताऊजी कुछ नर्म पड़े या वैसे ही ऐंठे हैं ?'

'बेहद तनाव है !' शर्मा बोला, 'अब तो वे लोग मेरे खतों का भी जवाब नहीं देते !'

प्रकाश ने वहीं ताक पर रखा ग़ाज़ियाबाद की श्रीमती गोपी देवी पुत्री ला० नत्यूमल (स्वर्गवासी) सरकारी वकील का लेख उठा लिया। वह लेख का पाठ कर रहा था और दाद दे रहा था। प्रकाश को मनोरंजन की अच्छी सामग्री मिल गई थी। बीच-बीच वह लेख गोद में रखकर हँसते-हँसते लोट-पोट हो जाता।

'वाह-वाह तबीयत खुश कर दी श्रीमती गोपी देवी ने।' प्रकाश ने लेख जहां से उठाया था, वहीं रख दिया।

'मैं अपने माता-पिता के व्यवहार से बेहद दुःखी हूँ।' शर्मा बोला, 'मुझे बेहद तकलीफ़ हो रही है। इस उम्र में मैं उन्हें इस तरह का धक्का भी नहीं देना चाहता था। जाने वे लोग किस धातु के बने हैं कि टस से मस नहीं हो रहे।'

'बूढ़े लोग अक्सर लालची हो जाते हैं और अपने लालच को किसी-न-किसी आदर्श में छिपा दिया करते हैं।'

'जैसे ?'

'जैसे जब मेरी शादी हो रही थी, मेरे पिता लड़की वालों पर ऐसी दो-धारी तलवार भांजते थे कि मैं देखता रह जाता था।'

'प्रकाश अब तुम्हीं बताओ मैं क्या करूँ ?'

'तुम आत्महत्या कर लो।' प्रकाश बोला, 'मगर वह घटिया काम है।' वह अपने पूरे दांत और मसूढ़ों को बेनकाब करता हुआ खूब हँसा और फिर ज़रा गम्भीर होकर बोला, ''अगर वाकई उस लड़की को चाहते हो तो शादी कर लो।'

'तुम साले मेरी समस्या को समझने की कभी कोशिश नहीं करोगे। मेरे प्रति तुम्हारा यही रवैया था तो मेरे बुलाने पर चले क्यों आये ?'

'पहले मुझे लड़की दिखाओ। उसके बाद उसकी मां से मिलवाओ। उसके बाद यार मुझे खुला छोड़ दो। मैं एक फटा-सा कुर्ता पहन कर, नजदीक से वेश्याओं की जिन्दगी देखना चाहता हूँ। यार हमारी पीढ़ी के साथ सरकार ने बहुत ज्यादती की। जब तक हम लोग जवान हुये, बाजार उठ गये। लड़की का दाम इतना बढ़ गया कि हमारे तुम्हारे जैसे लोग प्यासे ही रह गये।'

'तुम अपने पद के नशे में चूर हो। तुम अभी वापिस लौट जाओ। तुम्हें मुझसे हमदर्दी होती तो इस तरह फूहड़पन से पेश न आते।'

प्रकाश ने शर्मा के गले में बाहें डाल दीं और बोला, 'तुम निहायत बेवकूफ आदमी हो और चाहते हो तुम्हारी बेवकूफी का मैं भी भागीदार बनूं। यही न। देख पुत्तर, हिन्दुस्तान में शादी एक बार होती है। कुछ खुशनसीब लोगों की बीवियाँ पहले ही प्रसव में मर जाती हैं, मगर बेटे यह भी तो हो सकता है कि तुम भावुकता में शादी कर लो और बाद में जिन्दगी भर गले में जंजीर डालकर पछताते रहो।'

'मुझे लग रहा है मैं तुम्हारी कोई भी बात समझने के काबिल नहीं रहा।' शर्मा बोला, 'मैंने अमृत को तार दिया होता तो वह मुझे समझने की ज्यादा कोशिश करता।'

'अमृत कहाँ है ?' प्रकाश ने बिना आहत हुए पूछा।

'वह दिल्ली में टीचर है।' शर्मा ने बेदिली से बता दिया।

'तुम उसी के लायक हो। जो आदमी जिन्दगी से [illegible] होकर यह करता है, उसकी क्षमताओं का मैं अन्दाज लगा सकता हूँ। वह [illegible] लड़का था, जा कर मास्टरी के कुएँ में गिरा। देखा जाये तो तुम दोनों का एक ही गोत्र है। तुम्हारी हालत देखकर मुझे लगता है उसने भी तुम्हारी तरह आदर्शवाद में किसी विधवा का ही कल्याण किया होगा।'

'उसकी शादी भी एक टीचर से ही हुई है। दोनों मजे में हैं।'

'अब तक उसके पांच बच्चे हो चुके होंगे।' प्रकाश बोला, '[illegible] एक मकान भी बना लिया होगा और सोच रहा होगा वह [illegible] आदमी है।'

शर्मा दो-तीन वर्ष पहले अमृत से मिला था। तब तक उसकी पत्नी चार बच्चों को सफलतापूर्वक जन्म दे चुकी थी, पांचवां गिर चुका था, जिसे लेकर मियाँ बीवी अक्सर उदास रहते थे। शायद इसी ग़म में उन लोगों ने जमीन खरीद ली थी जमुनापार ही। मकान के लिए ऋण लेने के लिए वह बीमा कम्पनियों

के दफ़्तरोंकी धूल फांक रहा था ।

'औसत हिन्दुस्तानी, हिन्दुस्तान में एक ठो मकान बनाने या दो ठो लड़कियाँ ब्याहने के लिए ही पैदा होता है ।' प्रकाश चिल्लाकर बोला, 'सालो । लड़कियों की शादी करो और मकान बनवाओ ।'

शर्मा को प्रकाश की बातें अच्छी लग रही थीं, मगर वह विरोध का रवैया अपना चुका था । उसने प्रकाश को चोट पहुँचाने के इरादे से कहा, 'अच्छा, सच बताओ । तुम्हारे घर में फ्रिज, स्टीरियो, कुकिंग रेंज और एय्याशी का दूसरा सामान कहाँ से आया ? यह सब चीजें तुम्हारी तनख्वाह से तो नहीं खरीदी जा सकतीं ।'

'ये सब चीजें मैंने दहेज में ले ली थीं ।' प्रकाश ने ताली बजायी और काठ के घोड़े की तरह तीन-चार कदम चल कर कुर्सी पर लौट आया ।

'तुम्हें शर्म नहीं आई दहेज लेते ?' शर्मा ने पूछा ।

'मेरे बाप को आई होगी ।' प्रकाश ने एक बार फिर ताली बजायी और कुर्सी से उठ कर हंसते हुए नीचे फ़र्श पर बिछी दरी पर लेट गया और वहीं लेटे लेटे उसने ड्राइवर को इतनी जोर से आवाज दी कि वह दरवाजा खोल कर तुरन्त हाजिर हो गया ।

'देखो बेटे ।' उसने संयत होते हुए कहा 'दो बियर निकाल लाओ ।'

प्रकाश ने शर्मा के बिस्तर से एक तकिया निकाला और वहीं फर्श पर बिस्तर जमा लिया ।

ड्राइवर होशियार था । बोतल तो लाया ही, दो मग भी उठा लाया । प्रकाश ने उसे हिदायद दी कि होशियारी से दोनों गिलास भर दे । उसके गिलास भरते-भरते शर्मा भी तकिया उठा कर प्रकाश के पास चला आया ।

'साले, तुम मुझको निहायत गैर-जिम्मेदार इन्सान समझ रहे होगे, मगर मैं रास्ते भर सिर्फ़ तुम्हारे बारे में सोचता हुआ आया हूँ । मेरी सिर्फ़ यह ख्वाहिश है कि तुम किसी मास्टरनी से शादी करो या रंडी की औलाद से, मगर खुश रहो ।'

'देखो प्रकाश, मैं ऐसी भाषा सुनने का आदी नहीं हूँ । अगर मैं गुल से शादी करता हूँ तो क्या तुम उसे सिर्फ़ रंडी की औलाद ही मानते रहोगे ?'

'तो क्या किसी राजे-महराजे की औलाद मान लूंगा ?'

'ऐसी रियायत मत करो ।' शर्मा बोला, 'मगर बात करने का शऊर आना चाहिए । किसी को उसकी मां के खसम का बेटा कहने से क्या बात ज्यादा बाअसर हो जाती है ?'

प्रकाश फिर हंसने लगा, उसने तकिया अपनी छाती के नीचे दबा लिया

शहर के विधायक और सांसद ऐसे मौकों की प्रतीक्षा में रहते हैं। डी० एम०, प्रशासक, डी० आई० जी० को मैं अपनी तरफ से दावत दे दूंगा। इससे तुम्हारी जान को भी खतरा न रहेगा। तमाम अफ़सरों की बीवियों को यह बाज़ार भी देखने को मिल जायेगा।'

'मगर मेरे मां-बाप ?'

'देखो शादी करनी है तो मां-बाप को भूल जाओ। मैं उन लोगों को जितना जानता हूं, उसके आधार पर कह सकता हूं कि वे शामिल न होंगे।' प्रकाश बोला, 'बाद में, अब बाद में ही उनसे निपटा जायेगा।'

शर्मा को यह सब सोचना बहुत बुरा लग रहा था। बग़ैर मां-बाप भाई-बहन के शादी की बात सोचना उसे बहुत अश्लील लग रहा था। मगर यह भी तय था कि उसके सामने दो ही रास्ते थे : अपने मां-बाप को मान ले या अपनी पसन्द की लड़की से शादी कर ले। दोनों की खुशियां आपस में टकरा रही थीं।

अगले रोज़ सुबह उठते ही प्रकाश ने शेव बनायी और कपड़े वहीं ड्राइंग रूम में उतार कर तौलिया लपेट गुसलखाने में घुस गया।

'नाश्ता बाईजी के यहां ही लेंगे।' प्रकाश बाथरूम से चिल्लाया। शर्मा ने भी जल्दी से हाथ-मुंह धो लिया और तुरन्त ही वे लोग अज़ीजन बाई के यहां जाने के लिए गाड़ी पर सवार हो गये।

'कार ठीक बाई जी के कोठे के सामने रुकेगी।' प्रकाश बोला।

'गली इतनी संकरी है कि कार का वहां तक जाना मुमकिन नहीं।' शर्मा बोला, 'अगर खुदा-न-ख्वास्ता चली भी गयी तो बैक करना मुश्किल होगा।'

'चिन्ता मत करो यह ड्राइवर का सरदर्द है।' प्रकाश ने कहा।

कार बाईजी के घर के ठीक सामने जाकर रुक गयी। प्रकाश ने ड्राइवर को दो एक बार हार्न बजाने के लिए कहा।। संकरी गली में कार आ जाने से आगे का और पीछे का रास्ता रुक गया। गली के अनेक बच्चे कार के इर्द-गिर्द इकट्ठे हो गये। दोनों तरफ़ रिक्शा, स्कूटर और साइकलों की भीड़ जमा हो गयी।

ड्राइवर ने उतर कर दरवाज़ा खोला। कार का दरवाज़ा बाईजी की दीवार से टकराया और प्रकाश सिकुड़ कर कार के बाहर निकला, उसके पीछे-पीछे शर्मा। ऊपर से किसी ने चिलमन उठा कर देखा। एक गोरी कलाई

देख कर ही प्रकाश की तबीयत बाग-बाग हो गई। उसने आँख के इशारे से अपनी खुशी का इजहार किया और शर्मा के साथ-साथ जीना चढ़ने लगा।

ऊपर पहुँचते ही प्रकाश ने तोता देखा तो बोला, 'कहिए गंगाराम जी खैरियत से तो हैं।' तभी उसकी नजर नफ़ीस पर पड़ी।

'आदाब अर्ज है मियाँ।' प्रकाश बोला, 'अन्दर बाईजी से बोलो कि डी० एम० साहब आये हैं।'

नफ़ीस दोनों मेहमानों को अन्दर बैठक तक ले गया। प्रकाश कमरे में लगी बाई जी की तस्वीरों को ग़ौर से देखने लगा।

'खण्डहर बता रहे हैं इमारत हसीन थी।' प्रकाश शर्मा के कान में धीरे से फुसफुसाया। अन्दर से अजीजन नमूदार हुई तो वह आदाब के लिए झुकते हुए बोला, 'आदाब अर्ज'। खाकसार शर्मा का जिगरी दोस्त है और इसे प्रकाश कहते हैं।'

'तशरीफ़ रखिए।' अजीजन ने सामने बैठने के लिए इशारा करते हुए कहा, 'खुश आमदीद।'

प्रकाश कुर्सी पर पसर गया, 'कल इसका तार मिला तो चला आया।'

'ये बहराइच में डी० एम० रहे है।' शर्मा ने परिचय देते हुए कहा, 'हम दोनों एम०ए० तक साथ साथ पढ़े हैं।'

'बहुत खुशी हुई आपसे मिल कर।' अजीजन ने कहा, 'आप दोनों की मुहब्बत बरकरार रहे।'

'मुआफ़ कीजिए।' प्रकाश ने बायें कूल्हे पर बल देकर बैठते हुए कहा, 'इस वक्त मैं शर्मा जी का बड़ा भाई या पिता बन कर ही हाजिर हुआ हूँ। शर्मा जी ने मुझे आपके बारे में सब कुछ बता रखा है। उसकी तफ़सील में जाने का कोई मौका नहीं है। अगर आप की इच्छा है कि बारात इसी गली में आये तो मुझे जाती तौर पर कोई ऐतराज नहीं। बारात में विधायकों, सांसदों, कलाकारों, मित्रों के अतिरिक्त नगर के जिलाधीश, डी० आई० जी० एस० पी० एस० एस० पी० सपरिवार सम्मिलित होंगे। आप लोग तरीख तय कर लें। मैं और मेरी बीवी इन्तजाम करने के लिए एक हफ्ता पहले आ जायंगे और सारा इंतजाम कर देंगे।'

'आपने बहुत मुख्तसर तरीके से सारी बात समझ ली। मुझे दुख रहेगा कि शर्मा जी के परिवार के लोग शादी में शिरकत नहीं करेंगे।' अजीजन ने एक लम्बी साँस ली।

'शादी किस रीति से होगी ?'

'मिली जुली रीति से।' अजीजन बोली, 'इसको लेकर मेरे मन में कोई आग्रह नहीं है।'

'वाह वाह! आप तो वहुत ही तरक्कीपसन्द खयालात की औरत निकलीं। आसपास टंगी तस्वीरों से भी आपके फ़न की एक झलक मिल जाती है।'

'आपकी ज़रा नवाजी का शुक्रिया।' अजीजन ने कहा।

अन्दर से वहुत ही खूबसूरत टी-सेट में चाय चली आयी। केतली के ऊपर एक खूबसूरत-टी-कोज़ी थी।

प्रकाश हे हे कर हंसा, 'तौर तरीके तो कोई आपके यहाँ सीखे। वताइए, मुझे दस वरस नौकरी करते हो गये, मगर आज तक ऐसी क्रॉकरी नहीं देखी। हम लोग तो आज भी गिलास में चाय पीते हैं। कई वार काँच का गिलास नहीं मिलता तो स्टील के गिलास से ही होंठ जला लेते हैं।'

'आप शर्मिन्दा कर रहे हैं। इस नाचीज की क्या हैसियत है?' अजीजन वोली, 'अपनी जवानी के दिनों में मैं हिन्दुस्तान की हर रियासत में गयी हूँ। ये प्याले जिनमें आप चाय नोश फरमा रहे हैं, नवाव रामपुर ने एक ग़जल सुन कर नजर किये थे। वहीं हमारी मुलाक़ात फैयाज खां साहव से भी हुई थी।'

'आपकी मुलाकात कभी गौहर जान से हुई है?' प्रकाश ने पूछा।

'आप उन्हें कैसे जानते हैं?'

'मेरे पिता उनकी वहुत तारीफ़ किया करते थे।' प्रकाश ने कहा। शर्मा सावधान हो गया कि यह कम्वख्त फिर से गुस्ताखी के मूड में न आ जाये।

'मुझे याद है दसियों वरस पहले प्रयाग में एक नुमायश लगी थी। देश के हर कोने से अनूठी वस्तुएँ उस नुमाइश में रखी गयी थीं। गौहरजान का गायन भी उन अनूठी वस्तुओं में शामिल था। गौहर जान संसार की अनेक भाषाओं में गायन कर सकती थीं। मेरे पिता अक्सर एक शेर गुनगुनाया करते थे।

'अकवर इलाहावादी का शेर?' अजीजन ने पूछा।

'हाँ।' प्रकाश वोला :

आज अकवर कौन है दुनिया में गौहर के सिवा।
सव खुदा ने दे रखा है एक शौहर के सिवा॥

'आप खूव मजेदार आदमी हैं।' अजीजन वोली, 'और किसी गानेवाली का नाम सुना है?'

'क्यों नहीं।' प्रकाश वोला वोला, 'जोहरावाई, रखकुंवर वाई, रामकुंवर वाई, मुन्नीजान, इलाहीजान, जैवुन्निसा, हुस्नावाई, वेनी वाई अजीजन वाई।'

'बस बस।' अपना नाम सुनकर अजीजन के चेहरे पर रौनक आ गयी।

'मगर बाईजी, एक बात बताइए, क्या यह सच है कि अब डेरेदार तवायफ़ों के यहाँ भी पेशा होने लगा है?'

'दरअसल खानदान का बहुत असर पड़ता है।' अजीजन ने बताया, 'हम तो नानी, परनानी की पुश्तों से डेरेदार हैं। पूरी उम्र गुल के पिता की सरपरस्ती में बिता दी। हमारे यहाँ ऐसी ही परम्परा थी। और दूसरे आप ही बताइए, क्या आपके समाज में पेशा नहीं होता। आप जिस कॉलोनी में रहते होंगे वहाँ पर भी अण्डर-ग्राउण्ड कुछ-कुछ जरूर चलता होगा।'

'आप दुरुस्त फर्मा रही हैं।' प्रकाश बोला, 'अब गली-गली में पेशा होने लगा है। एक जमाना था, गाने पर आप लोगों का एकमात्र अधिकार था, अब तो पूरे समाज ने उसे स्वीकार कर लिया है।'

'यह तो खैर एक अच्छी बात है। मैं इसकी दाद देती हूँ।'

'आप क्या गाती रही हैं?'

'मैं क्या नहीं गाती रही हूँ?' अजीजन ने बताया, 'चारों पट की गायकी गा लेती हूँ। होरी और धमार में तो मेरा कोई सानी न था। इसके अलावा ठुमरी, टप्पे, ग़ज़लें, भजन। अब तो दाँत गिरने की उम्र आ गयी है।'

'मुझे तो साबुत नजर आ रहे हैं।' प्रकाश बोला।

'आप अभी बच्चे हैं, क्या समझेंगे एक जमाना था, हम पूरा पूरा दिन रियाज़ में बिताते थे।'

'आपकी आवाज से लगता है।' प्रकाश बोला, 'मगर हम लोगों को अब चलना चाहिए। मैं चाहता था, हम लोग शादी की तारीख तय कर लें, जिससे मैं भी छुट्टी वगैरह ले सकूँ। अगले महीने की बीस तारीख को इतवार है। मैं घर से पञ्चांग देख कर चला था, यह तारीख अगर आपको मंजूर हो तो तैयारियाँ शुरू की जाएँ।'

'आप बहुत कम वक्त दे रहे हैं। मैं चाहती थी, गुल के इम्तिहान हो जाएँ और फिर मुझे रिश्तेदारों को बुलाने के लिए भी वक्त चाहिए। हमारे परिवार में दसियों बरसों बाद यह पहली शादी होगी। गुल के मामा, मौसी सब आएँगे।'

'शर्मा ने अभी से छुट्टी ले ली है। बेचारे की हालत काबिले रहम है। पूरा कैम्पस मज़ा ले रहा है। हमें जल्द से जल्द शादी करके इन दोनों को हनीमून पर रवाना कर देना होगा।'

अज़ीज़न की आंखें भीग आईं। जब से गुल पैदा हुई थी कभी दो दिन के लिए भी उस से अलग न हुई थी। अज़ीज़न के पेट में एक हौल सा उठा और वह रुमाल से आंखें पोंछने लगी।

'तो बीस तारीख तय है।' प्रकाश ने कहा और खड़ा हो गया, 'हम लोगों को अब इजाज़त दीजिए। मैं आज लौट जाऊंगा और दस बारह तारीख तक पहुंच जाऊंगा। सारे इन्तज़ामात मुझे ही करने हैं।'

अज़ीज़न ज़ीने तक उन लोगों को छोड़ने आई। बाद में नफ़ीस उन्हें कार तक छोड़ आया।

• •

मिल का काम हस्बेमामूल चल रहा था। चुनाव स्थगित होते ही लोगों ने रात भर में कपड़े के बैनर उतार लिये। "अपना कीमती वोट हीरालाल को देकर उन्हें विजयी बनायें" के मजदूरों ने जांघिये बनवा लिये थे। "आपका सेवक हीरालाल" की बनियानें सिल गयी थीं। रात को ऐसी लूट मची कि जिसके हाथ कपड़े का जितना टुकड़ा आया, वह लेकर चलता बना। मिल का गेट जो बैनरों से अंटा पड़ा था, एक दम सामान्य हो गया। अगले रोज सेक्योरिटी अफ़सर ने दो-चार मजदूरों की मदद से दीवारों पर चिपके तमाम इश्तिहार उखाड़ फेंके और देखते-देखते दीवारों की पुताई भी हो गयी।

हमेशा की तरह किसी कारण से चुनाव टल गया था। हीरालाल ने स्कूटर खरीद लिया, मगर वह काम पर अपने पुराने साइकल पर ही आता था। उसके घर के दालान में नया स्कूटर गाय की तरह बंधा था। मिल से लौट कर वह कपड़े से एकाध घण्टा उसे जम कर चमकाता। सुरेश भाई और जगदीश बाबू दोनों की आर्थिक स्थिति में भी सुधार हुआ था। दोनों ने अपने बच्चे बेहतर स्कूलों में भर्ती करवा दिये। इस बीच जगदीश बाबू की लड़की का रिश्ता भी तय हो गया था।

बाकी मजदूरों की हालत जस की तस थी। वे ग़रीबी, कर्ज और लाचारी का पेशा ही जीवन बिता रहे थे। उनके मनोरंजन के लिए लतीफ़ और हसीना के किस्से न जाने कौन उछाल रहा था।

मंगरू ने मिल के जमादार से पिछले वर्ष अपनी औरत की बीमारी के सिलसिले में सौ रुपये उधार लिये थे। वह पिछले एक वर्ष से दस रुपये प्रतिमाह उसे दे रहा था, मगर जमादार का कहना था कि उसके दो सौ रुपये बकाया हैं। मंगरू को उसकी चिन्ता न थी। वह जिन्दगी भर दस रुपये प्रति माह देने की मानसिक तैयारी कर चुका था, उसे उसकी चिन्ता ही न थी। उसकी चिन्ता का विषय विचित्र था :

"सुनते हैं हसीना पेशा करती है।" उसने जमादार की आँखों पर इस

रुपये का नोट रखते हुए कहा, "मगर बाबू वह हम-तुम को क्यों पूछेगी। आजकल श्यामजी का विस्तर गर्म करती है। लतीफ़ पर यों ही हज़ारों खर्च नहीं हो रहे।"

जमादार भी एक दिन हस्पताल जाकर हसीना का दीदार कर आया था। वह भी रसिक तबीयत का आदमी था। तनख्वाह से ज़्यादा उसे सूद की आमदनी थी। बोला, "मंगरू यार उसे पटाओ। हम तुम्हारा पूरा पैसा मुआफ़ कर देंगे। बोलो, है दम ?"

मंगरू ने अपने गुलाबी दाँतों को कुरेदते हुए शंका प्रकट की, "हमार पहुँच वहाँ नाही वा! हमइ त ऊ आपन नोकर रख लेई। हम झाडू लगाइ देव, कपड़ा धोइ देव, मालिस कर देइब। जमादार हमार कौनो जुगात बैठाइ द। हम तुम्हारा सूद देत रहब। जिन्नगी भर सूद देत रहब। बोलामंजूर वा ?':

"चूतिया।" जमादार बोला, "अपनी हैसियत देखो। घर में खाने को नहीं और सपने लेता है हसीना के। चूतिया!" जमादार ने कहा और झाड़ू उठा कर दूसरी ओर चल दिया।

मशीन रूम में भी हसीना की चर्चा ज़ोरों पर थी। वह साधूराम को हमेशा बहुत आदर से देखता था। जाने आज साधूराम को क्या हो गया था कि हसीना को लेकर आफ़त मचाये था। उसने दस-बीस लोग आस-पास इकट्ठे कर रहे थे और नाटक कर रहा था :

'हम आज अपने प्राणों की बाजी लगा देंगे। हम आज सूली पर चढ़ जायेंगे, रेल की पटरी के नीचे अपना सर रख देंगे।'

'रेल की पटरी यानी हसीना।' जमादार को देखकर सैकूलाल ने व्याख्या की, 'कह रहा है आमरण अनशन कर देगा।'

'कर लिए देगा, कर चुका है वे।' साधूराम बोला, 'जमादार यह लो मेरी पूरी पगार और जाकर हसीना के कदमों पर रख आओ। कहना, एक दीवाना इस महीने भूखों मर जाएगा। अपनी बीवी को भूखों मार देगा। अपने बच्चों को भूखों मार देगा। जमादार मेरी मदद करो। मैं हसीना के बिना एक मिनट भी नहीं रह सकता।'

साधूराम शायद पिये था। बकते-बकते अचानक गिर पड़ा या गिरने का अभिनय करने लगा।

तभी असिस्टेन्ट मैनेजर रस्तोगी वहाँ से गुज़रे। सब लोग तितर-बितर हो गये। साधूराम उठ कर भागा। जमादार झाड़ू लगाने लगा।

'यह सब क्या हो रहा था ?' रस्तोगी साहब ने जमादार से पूछा।

'साले नौटंकी करते हैं।' जमादार बोला, 'दूसरों की लुगाई पर जान

छिड़क रहे हैं।'

रस्तोगी साहब मूंछों ही मूंछों में मुस्कराये। बात समझने में देर न लगी। उनके अपने विभाग की हालत भी बेहतर न थी। बड़े बाबू दुबे श्यामजी को आज नर्सिंग होम में देख आये थे और लौट कर खूब रंग जमाया था। दरअसल आज सब को वेतन मिला था और हर कोई बिना पैसा खर्च किये अपना मनोरंजन कर रहा था। दुबे ने आते ही घोषणा कर दी, 'श्यामबाबू लतीफ़ को इलाज के लिए लन्दन भेज रहे हैं। कोई बता सकता है कि श्याम बाबू लतीफ़ को इलाज के लिए लन्दन क्यों भेज रहे हैं ?'

चरनदास अपनी फ़ाइल पर से कभी कभार ही सर उठाया करता था। उसके चश्मे के भीतर इतने मोटे कांच लगे हुए थे कि वह सर उठाता तो लगता फ्रेम कांच के वजन से नीचे गिर पड़ेगा। चरनदास ने सर उठाया, दुबे की तरफ़ देखा और बोला, 'भाइयो ! मैं यह कहना चाहता हूँ कि छोटे साब की नज़र हसीना पर है।'

'हाय हसीना, हाय हसीना !' शंकर बाबू छाती पीटने लगा, 'मैनेजमेंट से दरख्वास्त करो मिल के कोने-कोने में हसीना की तस्वीरें लटका दी जाएँ।'

रस्तोगी साहब के कैबिन तक सारे वार्तालाप पहुँच रहे थे। उन्होंने अपना टेपरेकार्डर खोल दिया। अपने मातहत कर्मचारियों की बातचीत वे अक्सर टेप करते रहते थे। पूरे माहौल पर हसीना तारी हो चुकी थी। रस्तोगी ने तय किया कि वह भी जल्द ही लतीफ़ को देखने नर्सिंग होम जायेंगे।

शाम को रस्तोगी नर्सिंग होम गये भी, मगर हसीना वहाँ नहीं थी। उसे उमा अपने साथ ले गयी थी। वे बहुत निराश होकर 'नर्सिंग होम' से लौटे। दूसरे दिन जब उन्होंने दफ़्तर में सुना कि रात को हसीना और श्यामबाबू रात भर एक होटल में रंगरेलियाँ मनाते रहे तो उन्हें सहज ही विश्वास हो गया।

टेपरिकार्डर में दुबे बता रहा था, होटल के बैरे ने बताया है कि हसीना ने इतनी शराब पी ली कि रात देर तक घुंघरू बांध कर नाचती रही। आधी-रात को अचानक सन्नाटा खिंच गया और श्यामबाबू हसीना को लेकर पलंग पर गिर पड़े, सुबह जब लोग उठे तो कमरा खाली था।'

रस्तोगी ने अपना नन्हा-सा टेपरेकार्डर उठाया और ऊपर लक्ष्मीधर के कमरे में जाकर खोल दिया। लक्ष्मीधर ने टेप सुना तो बोला, 'यह बहुत बुरी बात है रस्तोगी जी। श्याम बाबू से तो कल रात ग्यारह बजे मेरी मुलाकात हुई थी। ये बेबुनियाद अफ़वाहें कौन फैला रहा है ?'

रस्तोगी ने मजदूरों की बातचीत का टेप भी सुना दिया।

लक्ष्मीधर ने तय किया कि यह श्याम बाबू को इन . में

आगाह कर देगा। उन्होंने रस्तोगी से कैसेट लेकर अपने ब्रीफ़केस में रख लिया। रस्तोगी के जाने के बाद लक्ष्मीधर ने 'इयर फोन' लगा कर पूरा कैसेट सुना। रस्तोगी एक होशियार अफ़सर था। इस कैसेट पर केवल हसीना से सम्बन्धित वार्तालाप टेपित थे, लक्ष्मीधर कई आवाज़ों को पहचानता था, कई आवाज़ें अपरिचित थीं।

शाम को घर पहुँच कर एक आज्ञाकारी पति की तरह लक्ष्मीधर ने उमा को टेप सुनाया। टेप सुन कर उमा बेहद नाराज़ हो गयी, 'किन जानवरों के बीच तुम लोग काम करते हो।'

'यही जानवर कम्पनी को लाखों का मुनाफ़ा देते हैं।'

'तौबा!' उमा ने कान पकड़ लिए, 'मैं तो ऐसे माहौल में एक दिन काम न कर सकूँ। न जाने हम लोगों के बारे में ये लोग क्या बकते होंगे।'

'रस्तोगी के पास उसका भी टेप होगा।' लक्ष्मीधर हँसा, 'कम्पनी ने रस्तोगी को यह काम भी सौंप रखा है।'

उमा ने तुरन्त श्यामजी से फ़ोन मिलाया।

'तुरन्त आओ।'

'मीटिंग में हूँ।'

'मीटिंग होती रहेगी, तुम आओ।'

'घण्टे भर बाद आ सकता हूँ।'

'नहीं, अभी आओ। ज़रूरी काम है।' उमा ने कहा और रिसीवर पटक दिया। उसे हसीना पर बहुत तरस आ रहा था। न मालूम इस मंज़िल तक पहुँचने के लिए उसे कितना संघर्ष करना पड़ा होगा। बेबुनियाद अफ़वाहें फैलाने वालों को कड़ा दण्ड दिया जाना चाहिए।

'कहिए हुज़ूर।' श्यामजी आते ही हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया।

उमा ने टेपरेकार्डर एम्प्लीफायर से जोड़ रखा था। बटन दबाते हुए बोली, 'लो सुन लो।'

श्यामजी सुन रहा था और ठहाके लगा रहा था।

'तुम तो बिल्कुल बेशर्म हो गये हो।' उमा बोली।

'मैंने बीसियों बार कहा है, मेरी शादी करा दो वरना अफ़वाहें उड़ती रहेंगी।'

'तुम्हें यह सब सुन कर बुरा नहीं लगा?'

'न।' श्यामजी बोला, 'बेहद अच्छा लग रहा है। दरअसल मंहगाई इतनी बढ़ गयी है कि लोगों के पास मनोरंजन का कोई दूसरा साधन ही नहीं बचा। खाकसार मज़दूरों के किसी काम आ रहा है तो इसमें बुरा मानने की क्या बात है।'

'ज़रा हसीना के ऐंगल से सोचो। उसे मालूम होगा तो कितना परेशान होगी।'

'मैंने दूसरों की परेशानी दूर करने का ठेका नहीं ले रखा।' श्यामजी बोला, 'दूसरे कौन नहीं जानता हसीना एक तवायफ़ की बिटिया है। उसकी टाँग के नीचे से अब तक जाने कितने लतीफ़ निकल चुके होंगे!'

'छिः छिः।' उमा ने भड़कते हुए कहा, 'तुमसे तो बात करना ही बेकार है।'

टेप में एक रोचक कार्यक्रम चल रहा था। बाँसुरी की धुन के बीच एक मजदूर बड़ी तन्मयता से गा रहा था—

तेरे बिना मेरी, मेरे बिना तेरी
यह ज़िन्दगी ज़िन्दगी न

तभी बीसियों लोग उसी धुन में सामूहिक गान करने लगे :

सुन लो यह मेरी हसीना
तेरे बिना भी क्या जीना

श्यामजी जैसे भीड़ में घुस गया। वह भी गाने लगा :

तेरे बिना भी क्या जीना।

उमा ने टेपरेकार्डर बन्द कर दिया, 'अजीब पागल आदमी हो। मुझे तो ताज्जुब होता है इतना बड़ा कारोबार कैसे सम्हाल रहे हो।'

'कारोबार सम्हालने के लिए लक्ष्मीधर और रस्तोगी काफ़ी हैं।' श्यामजी ने टेप रेकार्डर खोल दिया और लोगों के साथ-साथ गाने लगा :

तू मुझसे रूठे न
साथ यह छूटे कभी न
तेरे बिना भी क्या जीना
सुन लो यह मेरी हसीना

उमा उठ कर चली गयी। श्यामजी देर तक टेप सुनता रहा। उमा लौट कर आयी तो उसने देखा श्यामजी फ़ोन पर डा० बैनर्जी से कह रहा था, 'बराय मेहरबानी लतीफ को रेडक्रॉस की गाड़ी में डाल कर उसके घर पहुँचा दीजिए। अब वह ठीक है। उसे अपनी लड़ाई खुद लड़नी चाहिए। हमारा जो फ़र्ज था हमने निभा दिया। क्यों डाक्टर? एक महीने की नहीं, आप चाहें तो उसे दो महीने की छुट्टी दे दीजिए, मगर आज अस्पताल से डिस्चार्ज ज़रूर कर दीजिए।'

उमा पीछे खड़ी श्यामजी का वार्तालाप सुन रही थी। श्यामजी अत्यन्त हृदयहीनता से लतीफ़ को खारिज करा रहा था। उससे रहा न गया तो बोली.

'तुम्हारे नज़दीक इस्तेमाल के बाद हर आदमी छिलका रह जाता है। आम खाने के बाद तुम्हारे लिए छिलके का कोई अर्थ नहीं रहता।'

'कुछ लोगों के लिए ज़रूर रहता है।' वह हो हो कर हँसा, 'जैसे कुछ लोग छिलकों से आम-पापड़ बनाने में जुट जाते हैं। वे लोग छिलके के व्यापारी हैं। मैं गूदे का व्यापारी हूँ!'

'आम पापड़ छिलकों से नहीं बनता।'' उमा ने बताया।

'छिलकों से कोई चीज़ ज़रूर बनती होगी। जैसे ईसबगोल का छिलका कितने काम की चीज है।'

'तुम क्या सोच रहे हो, मिल में लतीफ़ का रहना अब मुहाल न हो जायेगा।'

'यही मैं चाहता था।' श्यामजी बोला, 'जो मैं चाहता हूँ, वही होता है। लेकिन भाभी एक तमन्ना रह गयी। हसीना का मुजरा नहीं देखा।'

'उसके लिए आप लोगों ने जो माहौल तैयार कर दिया है, उसमें अब वह मुजरे के अलावा कुछ और कर पायेगी, मुझे शक है।'

'हम लोगों ने माहौल का क्या कर दिया। हमने तो उसे कोठे पर से नहीं उतारा था। जिसने उतारा था, वह भुगते। लाओ टेप फिर से सुना जाये।'

'तुम सैडिस्ट हो।' उमा बोली, 'तुम्हारा कोई ईमान-धर्म नहीं रहा।'

'मैं तुम्हारा धर्म हूँ, तुम मेरा ईमान हो।'

'मैंने देख लिया तुम्हारा ईमान-धर्म। जाओ और जाकर मीना से रास रचाओ। किसी दिन कोई इन्फेक्शन हो गया तो मक्खियाँ उड़ाने के लिए भाभी को बुला लेना। छि: ! मैंने कभी नहीं सोचा था तुम्हारा इस सीमा तक पतन हो चुका है।'

श्यामजी इस हमले के लिए तैयार बैठा था, बोला, 'तुम और भड़कोगी जब तुम्हें मालूम होगा कि मिल की तरफ़ से मीना को हज़ार रुपये महीना दिया जाता है। मीना हमारी 'लायज़न अफ़सर' है। वह एक सफ़ल अफ़सर है। जो काम जी० एम०, लक्ष्मीधर और रस्तोगी नहीं करा पाते हैं मीना वे काम चुटकियों में करा डालती है।'

'तुम्हारे लिए प्यार भी व्यापार है।'

'थोड़ी तरमीम कर लो अपने वाक्य में। तुम्हारे लिए व्यापार ही प्यार है।'

'तो हम दोनों अलग-अलग रास्ते के मुसाफ़िर हैं।'

श्यामजी बहुत ज़ोर से हँसा, 'बुरा न मानो तो एक बात कहूँ ?'

'कहो।' उमा ने होंठों पर जीभ फेरते हुए इजाजत दी।

'हम दोनों एक ही रास्ते के मुसाफिर हैं।'

श्यामजी ने बात ऐसे नाजुक मरहले पर ला पटकी थी कि अब उमा आगे नहीं बढ़ना चाहती थी। आगे खाई थी। एक गहरी खाई। जिसमें कूद कर वह केवल आहत हो सकती थी। उसने संक्षेप में सिर्फ़ इतना कहा, 'तुमने ठीक कहा था, तुम्हारे लिए व्यापार ही प्यार है।'

'और तुम्हारे लिए ?' श्यामजी ने अपने लिए एक पैग तैयार किया। उसे 'नीट' गटक गया। बाद में दो पैग और तैयार किये। एक में सोडा मिलाया और दूसरा नीट पड़ा रहने दिया। उसने उमा से बगैर पूछे, सोडे वाला पैग उसके हाथों में थमा दिया और गिलास टकरा कर बोला', 'चिअर्स।'

'चिअर्स।' उमा ने सिप लिया और बोली, 'मेरी ट्रेजेडी यह है कि मैं तुम्हें एक आसान शख्स समझती थी।'

'तुम्हारी ट्रेजेडी मेरी कामेडी है।'

उमा ने एक ही घूंट में गिलास खाली कर दिया, बोली, 'कामेडी है न ट्रेजेडी। सिर्फ फार्स है। सिर्फ़ फार्स।'

श्यामजी को आनन्द आने लगा। वह झट से दो पैग और बना लाया, बोला, 'आज हम लोग तीन पैग पियेंगे। एक ट्रेजेडी के लिए, जो हम लोग पी चुके। कामेडी के लिए एक मैं पी चुका और तुम पिओगी। तीसरा व अन्तिम फ़ार्स के लिए।'

'तुम तीनों पैग फार्स के लिए पिओ।' उमा ने दूसरा पैग भी एक ही घूंट में यानी दो-तीन चार घूंट में खाली कर दिया और बोली, 'मैं तीनों पैग ट्रेजेडी के लिए पिऊँगी। उस ट्रेजेडी के लिए जिसकी शिकार मैं हूँ। यह भी तो हो सकता है कि, मेरी ट्रेजेडी तुम्हारे लिए फार्स से अधिक अहमियत न रखती हो।'

श्यामजी यकायक दूसरे जगत में पलायन कर गया, बोला, 'माया महा-ठगिनि हम जानी।'

'तुम अपनी उम्र से बड़े हो।' उमा ने हथियार डाल दिये।

'तुम अपनी उम्र से छोटी हो।' श्यामजी बोला, 'लतीफ़ का बोरिया-बिस्तर अब तक उठ चुका होगा। इस समय वह मच्छरों, छिपकलियों, तिलचट्टों की दुनिया में लौट चुका होगा। टेप गवाह है अब मच्छर और तिलचट्टे उसका जीना मुहाल कर देंगे।'

'यह सोच कर तुम बहुत प्रसन्न हो ?'

'हाँ हूँ !' श्यामजी बोला, 'मैं तो श्रीमद्‌भगवद्‌गीता का अन्धभक्त हूँ।

शराब और मजाक मुझे एक ही सन्देश देती हैं :

समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः
शीतोष्णसुखदुःखेषु समः संगविवर्जितः ।

उमा के मुह में शराब घुल गयी थी, बोली, 'हाय ! मजदूरों के लिए गीता शराब है और तुम्हारे लिए शराब गीता ।'

'वाह क्या खूब कहा भाभी ।' श्यामजी फड़क उठा, 'यह पैग न ट्रैजेडी के लिए, न कामेडी के लिए न फार्स के लिए । यह उमा के लिए ।' उसने उमा के जूठे से गिलास टकरा कर चियर्स कहा और गटागट पी गया :

मयिसर्वाणिकर्माणि संन्यस्याध्यात्मचेतसा
निराशीर्निर्ममो भूत्वा युध्यस्वविगतज्वरः ।।

तीसरे पैग के बाद उमा बदल जाया करती है । उसकी भाषा बदल जाया करती है । श्यामजी उसे उसी तरफ़ ला रहा था । वैसे दोनों में एक मूलभूत अन्तर था । एक स्थिति के बाद हर अगला घूंट श्यामजी को अध्यात्म की तरफ़ घसीटने लगता था और उमा को जिस्म की तरफ़ । उमा बाजारू भाषा पर उतर आती और श्याम जी संस्कृत पर ।

भाषा की यह दूरी अन्तिम छोरों पर पहुँच चुकी थी जब लक्ष्मीधर लतीफ़ और हसीना को उनके घर तक पहुँचा कर लौट आया ।

'बहुत बढ़िया स्टेप लिया आपने ।' लक्ष्मीधर ने श्यामजी से कहा, 'लग रहा है मैं नाटक देख कर आ रहा हूँ । घर का दरवाजा खुलते ही खून के प्यासे मच्छर कुछ इस रफ़्तार से रिहा हुए जैसे उम्र कैद के बाद रिहा हो रहे हों । बहरहाल, मैंने लतीफ़ के लिए मच्छरदानी का इन्तजाम कर दिया है ।'

'मच्छर लोग उसकी मच्छरदानी में छेद कर देंगे, लक्ष्मीधर !' श्यामजी बोला, 'तुम इस शहर के मच्छरों को नहीं जानते ।'

'एल० डी०, मच्छर ही मच्छर के स्वभाव को समझता है । तुम श्यामजी की बातों पर न जाओ । यह नशे में है । यह दूसरी बात है कि जब श्यामजी नशे में होता है तो मच्छर से भी ज्यादा कष्ट देता है ।'

'लेकिन काटती तो मादा मच्छर है । नर मच्छर मेरी तरह निरीह होता है ।'

लक्ष्मीधर ने दोनों के पैग गिन लिये । बोला, 'यह है फ्राइड चिकन और यह रोहू ।'

दोनों चिकन को नोचने लगे । लक्ष्मीधर चटनी और प्याज़ के इन्तज़ाम में जुट गया ।

'लक्ष्मीधर।' श्यामजी ने आवाज़ दी, 'स्कॉच के तीन पैग बचे हैं। आज तुम भी एक ले लो। एक-एक हम दोनों के लिए छोड़ कर तुम सो जाओ।'

'लक्ष्मीधर की तुम चिन्ता न करो। अच्छे बच्चे की तरह वह वक्त पर सो जायेगा। वक्त पर उठ भी जायेगा। मगर श्यामजी, तुम बहुत खतरनाक इन्सान हो। तुम्हारी वैल्यूज़ नष्ट हो चुकी है। तुम अपने को तीस मार खाँ समझते हो जबकि तुम मक्खी हो, भुनगा हो, चींटा हो, उल्लू हो। मगर जो भी हो, बहुत प्यारी चीज हो।' उमा बोली, 'एल० डी० श्यामजी ज्यादा पी गया है। इसे घर तक पहुँचा आना।'

श्यामजी पर इस बात की कोई प्रतिक्रिया न हुई। उसने मुर्गमुसल्लम की टाँग उखाड़ ली और चबाने लगा।

'एल० डी० रस्तोगी वाला टेप ऑन कर दो।' श्यामजी गाने लगा :

तेरे बिना भी क्या जीना
सुन लो यह मेरी हसीना।

रेडक्रास की सफ़ेद गाड़ी लतीफ़ के घर के सामने रुकी तो खिड़कियों से कुछ उत्सुक चेहरे झांकने लगे। लक्ष्मीधर के ड्राइवर ने आगे बढ़ कर ताला खोला था। हसीना ने जल्दी से बिस्तर ठीक किया। मोटर से बिस्तर तक का रास्ता लतीफ़ ने बड़ी मुश्किल से तय किया। लक्ष्मीधर ने हसीना को लतीफ़ की पगार का पैकेट, दवाइयों का डिब्बा, मच्छरदानी और दो-एक फलों के छिफाफे भेंट किये ही वहाँ से रुख़सत ले ली।

अब कमरे में एक पीला बीमार बल्ब टिमटिमा रहा था। छत और दीवारों पर जाले लटक रहे थे। कमरे में मच्छरों ने जॉज़ संगीत छेड़ दिया था। लतीफ़ के मिल के बहुत से लोग कालोनी में थे, मगर उस दिन किसी ने आकर उसका हालचाल भी न पूछा। हसीना ने तुरत कमर कस ली और घर की सफ़ाई में जुट गयी। नल में बहुत कम पानी आ रहा था। वह बड़े उत्साह से काम कर रही थी। नर्सिंग होम के माहौल से उसे दहशत होती थी। घर लौट कर उसने सन्तोष की साँस ली।

लतीफ़ के सर में हल्का दर्द हो रहा था। अस्पताल से ही उसने युसुफ से अपने अब्बा को खत लिखवाया था, मगर अब्बा ने कोई जवाब न दिया। उसने अब्बा को हमेशा इज्जत दी थी, अपने अनजाने भी कभी उनके सामने जुबान न लड़ाई थी, उसे लेकर उनकी यह बेफ़िक्री उसे अन्दर तक अकेला छोड़ गयी थी। उसे ताज्जुब हो रहा था कि उसकी मदद भी उन लोगों ने की, जिन्हें वह आज भी 'समाज के शत्रु' समझता है। वह इतना भोला भी नहीं था कि यह

न समझ सके कि अपनी इस मदद से उन्होंने लतीफ़ को पूरे समाज में और अधिक अकेला कर दिया है। सच पूछा जाये तो उसमें अब वह नैतिक बल ही नहीं रह गया कि वह मालिकों से संघर्ष कर सके।

दरवाज़े पर हल्की-सी दस्तक सुनाई दी। लतीफ़ को कई दोस्तों का ख़याल आया। वह खुद जाकर दरवाज़ा खोल देता, मगर हिम्मत न हुई। उसने हसीना को आवाज़ दी। हसीना ने कमर में दुपट्टा बांध रखा था। उसने कमर से दुपट्टा खोलकर सर पर ओढ़ लिया। दरवाज़ा खोल कर देखा तो कुछ बच्चे भागते हुए दिखायी दिये।

'कोई नहीं।' उसने कहा और सर पर से दुपट्टा उतार कर दुबारा कमर कस ली।

लतीफ़ की आँखें नम हो गयीं। हसीना उससे भी अधिक अकेली थी। कितने चाव से घर संवारने में लगी हुई है।

डाक्टर ने लतीफ़ को हरी सब्ज़ी, सूप, जूस आदि खाने की सलाह दी थी। हसीना अस्पताल से चलने से पहले बगल के मार्केट से कुछ ज़रूरी सामान ले आयी थी। वह लौकी काट रही थी कि उसे पिछवाड़े की तरफ़ खुलने वाली खिड़की के पास कोई आकृति दिखायी दी। बाहर अंधेरा हो चुका था, वह दुबारा काम में जुट गयी। वह लौकी काट रही थी कि खिड़की के पास आकर कोई फुसफुसाया :

"सुन लो यह मेरी हसीना।'

हसीना ने लतीफ़ को आगाह करना मुनासिब न समझा। उसने झट से खिड़की बन्द कर दी। रसोई में पहले ही बहुत घुटन थी। वह पसीने से तर-बतर हो रही थी। खिड़की बन्द करने से उमस बढ़ गयी, मगर वह अपने काम में जुटी रही।

हसीना स्टोव जला रही थी कि खिड़की पर हल्की सी दस्तक सुनायी दी। उसे समझते देर न लगी, वही दुष्ट आदमी होगा। वह अपने काम में लगी रही। खिड़की पर देर तक दस्तक होती रही। उसने उसकी तरफ़ ध्यान न दिया। अन्दर गर्मी का यह आलम था कि साँस लेना मुश्किल हो रहा था। स्टोव के जलने ही उसका सर जैसे फटने लगा। स्टोव पर तरकारी चढ़ा कर वह लतीफ़ के पास जा बैठी।

'बहुत गर्मी है।' लतीफ़ बोला, 'दरवाज़ा खोल दो तो ज़रा हवा आये।'

हसीना ने उठ कर दरवाज़ा खोल दिया। थोड़ी ही देर बाद वह आकृति दरवाज़े के आस-पास मंडराने लगी।

'तेरे बिना भी क्या जीना।' लतीफ़ बोला, 'कौन गा रहा है?

'अगली लाइन सुनोगे तो बहुत बुरा लगेगा। अभी मैं रसोई में तरकारी काट रही थी तो कोई कह रहा था :

'सुन लो यह मेरी हसीना।'

लतीफ़ चिन्तित हो गया, बोला, 'तुम मानोगी नहीं, ये तमाम लोग मालिकों के गुर्गे हैं। हमें परेशान करने के लिए छोड़े गये हैं।'

'वे लोग ऐसा क्यों करेंगे?'

लतीफ़ ने जवाब में हसीना का हाथ चूम लिया, 'तुम अभी बच्ची हो, न समझ पाओगी। जाने क्यों मुझे लग रहा है, हमारे तमाम दोस्त वैरी हो गये हैं। या कर दिये गये हैं। ये लोग हमारा जीना मुहाल कर देंगे।'

'मैं उमाजी से कहूँगी।' हसीना को उमा जी पर बेहद भरोसा था। उसे लगता था उनके पास कोई जादू की छड़ी है जिससे सब तकलीफ़ें दूर हो सकती है।

उमा का जिक्र हो रहा था और अचानक दरवाज़े पर एक कार रुकी। उमा, महकती हुई उमा, हाथ में एक जापानी पंखा लिये हुए कमरे में दाखिल हुई।

'आपकी बहुत लम्बी उम्र है।' हसीना बोली, 'मैं आपकी ही बात कर रही थी।'

घर में बैठने के लिए खटिया के अलावा और कोई जगह न थी। लतीफ़ भी बैठ गया। उमा उसके सिरहाने बैठ गयी और लतीफ़ को छू कर बोली, 'कैसी तबीयत है भाई।'

'आपकी इनायत है।'' लतीफ बोला, 'वरना अब दुनिया मे मेरे लिए कुछ नहीं रखा।'

'आप ऐसा न सोचें।' उमा ने कहा, 'जब भी मुझे याद करोगे, मैं हाज़िर हो जाऊँगी।'

लतीफ का सर दर्द बढ रहा था। उसने इशारे से हसीना को बताया कि अभी हाल की घटना बयान कर दे। हसीना ने लगभग रोते हुए बताया कि कैसे उसने खिड़की बन्द करके लौकी स्टोव पर चढ़ाई और कैसे कोई खिडकी पर दस्तक देता रहा।

उमा ने एक लम्बी सांस ली और बोली, 'सुनो, तुम लोग यहाँ नहीं रहोगे।'

'कहाँ रहेंगे?' हसीना की आँखें नम हो गयी, 'ये कौन लोग हैं जो हमारे पीछे पड गये हैं। हमने इनका क्या बिगाड़ा है?' कहते-कहते हसीना फूट पड़ी और उमा की गोद में लुढ़क गयी, 'अब आप ही हमारी रक्षा कर सकती है।'

'सोचता हूँ किसी दूसरे शहर चला जाऊँ कोई दूसरी नौकरी तलाश लूँ। यहाँ परदेस में जी घबराता है।'

'तुम जहाँ रहोगे; मैं तुम्हारे साथ जाऊँगी।' हसीना बोली, 'फिलहाल बंगले में जाना कैसा होगा?'

'ठीक रहेगा!' लतीफ़ बोला, 'अगर किसी दिन रात को श्यामजी या उसका कुत्ता शराब पीकर आ गया तो तुम अपनी रक्षा कर लोगी?'

'वहाँ दरबान है।'

'वह उसी का दरबान है।'

'तुम फिक्र न करो। उन लोगों के मन में मोह ममता न होती तो तुम्हारे लिए यों पैसा न बहाते। तुम्हें उन लोगों ने नयी जिन्दगी दी है।'

'यहाँ से तो अच्छा ही रहेगा। खुली हवा में सांस लेंगे। नदी किनारे बैठ कर तुमसे 'दमादम मस्त कलन्दर' सुना करूँगा।'

'मैं रोज सुनाया करूँगी।'

'जो सामान ले जाना हो तैयार कर लो।'

हसीना ने तुरन्त एक गठरी तैयार कर ली। कुछ कपड़े, जरूरी बर्तन, दवाइयाँ आदि। फिर वे दोनों देर तक मोटर का इन्तजार करते रहे, मगर मोटर नहीं आई। अगले रोज भी यही हुआ। सुबह, दोपहर, शाम इन्तजार में बीत गयी।

'जरूर श्यामजी ने मना किया होगा।'

'मगर उमाजी वायदा करके गयी हैं।'

हसीना को पूरा भरोसा था, वे आएंगी। मगर वह नहीं आई। रात ग्यारह बजे के करीब मिल की एक स्टेशन वैगन घर के सामने रुकी और किसी ने दरवाजा खटखटाया। निज़ाम था। हसीना उसे पहचानती थी।

'उमाजी ने यह रुक्का भेजा है।' उमा ने वक्त पर गाड़ी न भेज पाने के लिए अफ़सोस जाहिर किया था और लिखा था कि आज निजाम के पास वक्त है, वह अभी बंगले तक छोड़ आयेगा। वहाँ कोई तकलीफ़ नहीं होगी। उन्होंने अपना फोन नम्बर भी दिया था कि बंगले पर पहुँचकर फ़ोन से बात कर लें।

निजाम ने बहुत एहतियात से लतीफ़ को उठाया और गाड़ी तक ले गया। गाड़ी इतनी बड़ी थी कि लतीफ़ आराम से लेटते हुए जा सकता था।

गाड़ी एक बंगले में घुसती ही चली गयी। दो चार फर्लांग के बाद इमारत नजर आयी। बाहर दरबान तैनात था। उसने निज़ाम को

'बहुत खूबसूरत जगह है।' हसीना ने जिन्दगी में पहली वार एक साथ इतने पक्षियों की आवाज़ सुनी थी। उसका बचपन और जवानी अँधेरी संकरी गलियों में ही गुज़रा था। उस दमघोंटू वातावरण के अलावा भी दुनिया में कोई जगह है, उसे इसका पहली वार एहसास हुआ।

'पहाड़ ऐसे ही होते होंगे।' हसीना ने लतीफ़ से पूछा।

'लगता है किसी दिन तुम्हारी उमाजी पहाड़ भी दिखा देंगी।'

'मेरे रोएँ रोएँ से उनके लिए दुआएँ निकल रही हैं।' उमा ने कहा, 'मैं अभी नदी देख कर आती हूँ।'

काटेज के बाईं ओर से नदी की आवाज़ आ रही थी। वह पेड़ों में झूमती हुई सी उधर बढ़ गयी। छोटी सी चारदीवारी थी और उसके पार नीचे नदी बह रही थी। पानी, बहता हुआ पानी, नीला गहरा पानी, सूरज की रोशनी में चमकता पानी। उसकी इच्छा हुई भागकर नदी को छू ले और किनारे बैठ कर पानी में पाँव लटका दे।

पानी में कोई मरा हुआ जानवर बहकर आ रहा था। उसके ऊपर दो कौवे बैठे थे। जानवर शव के साथ-साथ नौका विहार कर रहे थे। हसीना लतीफ़ को यह सब दिखाने के लिए बेताब हो उठी और भागती हुई लतीफ तक पहुँची। तब तक खानसामा चाय ले आया था। लतीफ़ उसी से बतिया रहा था। बतिया क्या रहा था, एक पुलिस आफीसर की तरह तफ़तीश कर रहा था, 'यहाँ कौन रहता है, क्यों रहता है। मालिक लोग कभी आते हैं तो किसके साथ आते हैं।'

हसीना को ये सवाल बहुत अटपटे लगे बोली, 'हमें इन सब बातों से कोई मतलब नहीं। नदी का बहुत अच्छा किनारा है। थोड़ी देर में चलेंगे।'

'आप लोग गोश्त खा लेते हैं?' खानासामा ने पूछा।

'खा लेते हैं मगर नसीब नहीं होता।' लतीफ़ बोला, 'शहर से सामान कैसे आता है?'

लतीफ़ की यही एक आदत थी कि पूछताछ बहुत करता था, 'वेतन तो मिल से मिलता होगा?' वह पूछ रहा था।

खानसामा चला गया तो हसीना लतीफ़ पर बिगड़ गयी, 'यह क्या पूछ-ताछ करने लगते हो?'

'इसमें क्या बुराई है?'

'वह सब बातें बतायेगा।'

'बताने दो, मैंने कोई गलत बात तो की नहीं।' लतीफ़ बोला, 'मालूम नहीं ये लोग कब तक मुझे दामाद की तरह रखेंगे।'

'मेरा तो मन है जिन्दगी भर यहीं रहूँ।'

लतीफ़ ने एक लम्बी साँस ली। वह जिन्दगी की तल्खियाँ देख चुका था, बोला, 'अगर यह सोचकर यहाँ रहोगी कि दुबारा उसी जहन्नुम में लौटना है तो सुखी रहोगी।'

'जन्नत में हम जहन्नुम के बारे में नहीं सोचेंगे।' हसीना ने दोनों बाहें लतीफ़ के इर्द-गिर्द फैला दी, 'तुम्हारा साथ मुझे कितना अच्छा लगता है।'

सचमुच यह एक नयी जिन्दगी थी। वक्त पर नाश्ता, चाय, भोजन। हसीना रोगनजोश खाते हुए पूछती, 'बोलो अब मिल में हड़ताल करवाओगे?'

'अगर तमाम मजदूरों को ये सहूलियतें मिलें तो हड़ताल क्यों कर हो। मजदूरों का मेहनताना काट कर ही ये तमाम चीजें मालिक लोग जुटाते हैं।'

'तुम्हारे यही मजदूर दोस्त जब मुझ पर आवाज कसते हैं तो तुम्हें कैसा लगता है?'

'जाहिर है, अच्छा नहीं लगता।' लतीफ़ बोला, 'उन्हें तालीम भी तो नहीं मिलती। उनके पास तफ़रीह के लिए सिर्फ एक चीज है—औरत।'

'तो तुम तालीम क्यों नहीं देते?'

'ट्रेड यूनियन से हम तालीम ही तो देते हैं, अपने श्रम का मूल्य समझो, शोषण का विरोध करो।'

'और दुनिया भर के मजदूरो एक हो जाओ।' हसीना ने वाक्य पूरा किया। उसे यह वाक्य बहुत पसन्द था।

इस बीच उमा का कई बार फोन आया कि दो एक दिन में वे लोग आएंगे, मगर हर बार कार्यक्रम टलता रहा।

रविवार को सुबह कुछ देर के लिए वे लोग आये थे। उमा ने स्विमिंग कास्ट्यूम पहना और नदी में कूद गयी। नदी में लक्ष्मीधर उसकी तस्वीर उतारता रहा। बाद में अपनी लम्बी सी गाड़ी में श्यामजी भी आया। उसके आते ही वे लोग मोटर बोट में बैठकर नदी में दूर निकल गये। हसीना और लतीफ़ देखते रह गये। थोड़ी देर में कार भी चली गयी। जाने कहाँ वे नाव से उतर कर कार में सवार हो गये होंगे। श्यामजी अपने साथ बन्दूक भी लाया था। देखते ही देखते उसने कई पक्षी गिरा दिये थे। खानसामा 'शिकार' उठा लाया और उस दिन दोनों वक्त 'शिकार' ही बना।

लतीफ़ अब स्वस्थ था। टानिक की कई शीशियाँ खाली करने के बाद वह देखते-देखते पहले से भी स्वस्थ हो गया। उसने कई बार घर लौटने की ख्वाहिश जाहिर की, हसीना से फोन भी कराया, मगर वहाँ से एक ही जवाब मिलता; 'छुट्टियाँ यहीं बिताओ।'

छुट्टियां ख़त्म होने को आयीं तो इस बार लतीफ़ ने खुद फ़ोन किया। लक्ष्मीधर बोल रहे थे। उन्होंने कहा, 'यह तुम्हारी भाभी का महकमा है। लो उसी से बात करो।'

'कैसे हो, लतीफ़ भाई ?'

'पहले से भी मोटा-ताजा हो गया हूं।' लतीफ़ बोला, 'मैं आप लोगों का एहसानमन्द हूं।'

'आप कहिए तो छुट्टी बढ़वा दूं।'

'बहुत हो गया। मैंने शायद जिन्दगी में पहली बार छुट्टी मनायी है।'

'तो ऐसा करो', उमा उधर से चहकी, 'अब हनीमून मनाओ।'

लतीफ़ बेहद झेंप गया। चुप रहा।

'लगता है आपको सुझाव पसन्द नहीं आया।' उमा बोली।

लतीफ़ थोड़ा खुला, बोला, 'आजकल वही मना रहा हूं।'

उमा फ़ोन पर लोट-पोट हो गयी, बोली, 'जरा हसीना को फ़ोन दो।'

लतीफ़ ने चोंगा हसीना को थमा दिया, 'जी ?'

'मुबारक।' उमा बोली।

'शुक्रिया।' हसीना ने कहा।

'यह तो पूछो यह मुबारकबाद क्यों ?'

'बताइए।'

'उमा हँसते-हँसते बेहाल हो गयी, 'कैसी गुज़र रही है।'

'बहुत अच्छी। जैसे जन्नत मिल गयी।'

'मुबारक।' उमा ने फिर कहा।

'शुक्रिया।' हसीना ने दोहराया, 'आप जब हँसती हैं तो बहुत खूबसूरत लगती हैं।'

'मगर मैं दूसरी बात कहना चाहती हूं।'

'कहिए।'

'तो सुनो।' उमा बोली, 'तुम बहुत दबे पांव आयी थीं। आई थी कि नहीं ?'

'आप पहेलियां बुझा रही हैं।'

'अच्छा मेरी पहेली को समझने को कोशिश करो। तुम बहुत दबे पांव, सकुचाती सहमी आयी थीं।'

'आप दुरुस्त फरमा रही हैं।'

'तो मेरी एक बात मानो।'

'कहिए।'

'अब भारी पांव से लौटना।' उमा ने अपनी बात और स्पष्ट कर दी, 'मेरा कहने का मतलब यह है 'गुड़िया रानी कि जब तक पांव भारी न हो जाएँ, लौटना मत।'

हसीना खामोश।

'बोलो मंजूर है?'

हसीना खामोश।

'बोलो भाई।'

'आप ज्योतिषी तो नहीं हैं?' हसीना ने सकुचाते हुए कहा, 'आपको कैसे मालूम?'

'लतीफ़ साहब बता रहे थे।' उमा ने कहा, 'बधाई।'

'शुक्रिया।' हसीना बोली, 'अब हम घर लौटेंगे। घर की हालत बहुत खराब होगी।'

'कल सुबह चौकीदार को घर की चाबी दे देना। हम सफ़ाई करवा देंगे।'

'आप इतनी अच्छी क्यों हैं?' हसीना ने पूछा, 'मुझे रोना आ जाता है। ऐसा लगता है आपके अलावा हर कोई मेरा दुश्मन है।'

'तो सुनो। कल चाबी भिजवा देना। सफ़ाई हो जाने तो फिर फ़ोन करूंगी। ठीक?'

'बहुत ठीक।'

'इतवार को हम लोग आयेंगे। हमारे साथ ही लौट आना।'

'शुक्रिया।'

उमा ने रिसीवर रख दिया।

'बहुत लम्बी बात की?' लतीफ़ ने पूछा।

'हम नहीं बोलेंगे।' हसीना बोली, 'तुमने क्यों बताया?'

'मैंने क्या बताया?'

'बहुत बनते हो।' हसीना बोली, 'तुम्हीं ने कोई इशारा किया होगा।'

'देखो मालिक लोगों की बीवियों से मैं इशारेबाज़ी नहीं करता।'

'तो इन्हें किसने बताया?'

'उन्हें किसी ने क्या बता दिया?'

'कि मेरे पाँव भारी हैं।'

'यह तो कुदरत का खेल है।' लतीफ़ बोला, 'हम लोगों ने कोई तीर नहीं मारा। कुदरत तो तीर चलाती ही रहती है।'

हसीना दुनिया के शिखर पर थी।

'मैंने कभी न सोचा था कि इतनी खुशनसीब हूँ।'

'मैंने सोचा था, जिस रोज़ तुमसे निकाह किया था।'

टहलते-टहलते वे दोनों नदी की तरफ़ चल दिये।

'अगर लड़का हुआ तो हम उसका नाम नसीब रखेंगे।' लतीफ़ बोला।

'अगर लड़की हुई ?'

'तो उसका नाम नसीबन रख देंगे।'

'वाह' लतीफ़ बोला, 'देखो नदी में चांद तैर रहा है।'

'मुझे लग रहा है, हम लोग तैर रहे हैं।'

लतीफ़ ने हसीना के कन्धों के गिर्द बाहें फैला दीं और उसे अपने नज़दीक सरका लिया।

'तुम्हारे होठों में बहुत रस है।' वह बोला।

'छोड़ो।' हसीना ने होठों पर जीभ फेरते हुए कहा, 'लगता है पूरा रस आज ही चूस लोगे।'

पास ही किसी पेड़ से एक पक्षी बोला।

'कस्तूरी है।' लतीफ़ ने बताया, 'सुबह दिखाऊँगा।'

'हम अभी देखेंगे।'

'तो अभी दिखा देंगे।' लतीफ़ बोला, 'जल्दी चलो, मेज़ पर खाना लग चुका होगा।'

वे लोग एक दूसरे से सट कर चल दिये।

'चांद अच्छा तैराक नहीं।' हसीना बोली, 'देखो कब से तैर रहा है और कितनी कम मन्ज़िल तय की है।'

इतवार के रोज़ सुबह उठते ही लतीफ़ ने शेव बना ली। स्नान कर लिया। हसीना ने पूरा सामान समेट लिया। खानसामा सुबह-सुबह दरिया से मछली पकड़ कर लाया था। वर्षों बाद उसके जाल में मछली फँसी थी। वह भी इन लोगों की तरह ही उत्साहित था। उमा आती है तो दस-बीस बख्शीश ज़रूर दे जाती है। मछली के पकौड़े पसन्द आ गये तो ज़्यादा मिलने की भी उम्मीद थी। श्याम बाबू का आना इतना उत्साहवर्धक नहीं होता। जाने वह जेब में पैसा क्यों नहीं रखते। बस ड्राइवर से बोल देंगे और ये ड्राइवर लोग अव्वल दर्जे के उस्ताद होते हैं। दस कहेंगे तो बड़ी मुश्किल से दो निकालेंगे जैसे अपनी टेंट से जा रहा हो।

उम्मीद की जा रही थी कि वे लोग नाश्ते पर आएंगे, मगर वे इतने

बेमुरव्वत कि लंच के बाद आए। मछली के पकौड़े और मछली की कढ़ी दोनों का लुत्फ़ न उठा सके।

उमा ने आते ही हसीना की ढूँढ़ मचवा दी। हसीना उस समय गुस्ल में कै कर रही थी। निकलते-निकलते जितना वक्त लगा, उमा को वह भी मन्जूर न था। हसीना गुस्ल से निकली तो आँखों से पानी बह रहा था, बाल बिखर रहे थे, कदम डगमगा रहे थे। बाहर आई तो दरवाजे के पास उमा खड़ी थी, 'आदाब अर्ज़ है।'

हसीना सकपका गयी, 'हम लोग कई रोज से सिर्फ़ आपका इन्तजार कर रहे थे।'

'हम हाजिर हैं।' उमा ने कहा, 'मगर तुमसे इतना खूबसूरत होने को किसने कहा था ?'

'कुदरत ने।' हसीना ने लतीफ़ की बात दुहरा दी।

उमा ने हसीना को बाहों में ले लिया, 'देखो तुम्हारे लिए कौन आया है ?'

'मेरे लिए।'

'हाँ तुम्हारे लिए ही।'

कमरे में जाकर हसीना ने देखा, लक्ष्मीधर, श्यामजी और एक वृद्ध महिला बैठी थी।

'यह हैं तुम्हारी डाक्टर। डाक्टर सिंह। आज मुआइना करेंगी। हर महीने मुआइना करेंगी। अब आप डाक्टर साहब के साथ अन्दर चली जाइए।'

हसीना की समझ में कुछ न आया। मगर वह डाक्टर के पीछे-पीछे चल दी। श्यामजी ने उमा के कान में धीरे से कहा, 'मुझे लड़की पसन्द है।'

श्यामजी ने लक्ष्मीधर की तरफ़ ऐसे देखा जैसे उस के बारे में कुछ कह रहा हो। लतीफ़ चुपचाप एक आज्ञाकारी बच्चे की तरह बैठा था।

'मुझे भी।' उमा ने धीरे से कहा, 'मुझे लतीफ़ बना दो।'

श्यामजी फिर उमा के कान पर झुक गया, 'मैं बच्चे को भी गोद ले लूँगा।'

'शट-अप।' उमा ने कहा, 'तुम्हारी शादी जहाँ भी होगी, दहेज में सिर्फ़ बच्चे ही मिलेंगे।'

श्यामजी इस बात से बहुत खुश हुआ, बोला, 'मैं तो लोगों के लिए दहेज जुटाते-जुटाते आजिज आ गया हूँ।'

'बेहद बदमाश हो।' उमा ने कहा, 'अब तुम्हारी शादी कर देनी चाहिए।'

डा० सिंह ने लौट कर एक पर्चा उमा को थमा दिया। उमा ने पर्चा पढ़ा। केवल कैल्शियम की टिकिया दरकार थीं। उमा ने पर्चा लक्ष्मीधर को थमा दिया।

श्यामजी खड़ा हो गया, घड़ी की ओर देखा और बोला, 'अब चला जाये।'

'बस एक मिनट।' हसीना ने कहा और अपनी गठरी उठा लायी।

'यह यहीं छोड़ जाओ।' उमा ने कहा, 'ऐसे ही चल दो। फिर कभी तो आओगी।'

हसीना ने गठरी अलमारी में रख दी। लतीफ़ और हसीना सब के पीछे-पीछे चल दिये।

आज बहुत बड़ी गाड़ी थी। सब उसमें समा गये। गाड़ी ने सबसे पहले श्यामजी को उतारा, उसके बाद डाक्टर को। उमा और लक्ष्मीधर को उतारते हुए गाड़ी लतीफ़ के घर के आगे जा खड़ी हुई। पति-पत्नी दोनों खाली हाथ उतर गये। ड्राइवर ने बढ़ कर ताला खोला और चाबी लतीफ़ को थमा कर चलता बना।

लतीफ़ ने बत्ती जलाई। यह एक बदला हुआ घर था। पुताई हो चुकी थी, जाले छूट चुके थे और कमरे में चार कुर्सियां एक मेज जाने कौन रख गया था। छत पर एक पंखा सूली पर लटक रहा था। हसीना ने पंखा खोल दिया और ठीक उसके नीचे आराम कुर्सी पर पांव फैला कर बैठ गयी, 'देख रहे हो। यह सब दीदी का कमाल है।'

'कितना अच्छा होता, सब मजदूरों को ऐसी सहूलियत मिल जाती।'

'उन्हीं में कोई खामी होगी।'

'तुम निहायत खूबसूरत, निहायत बेवकूफ़ और निहायत नादान लड़की हो।' लतीफ़ बोला, 'मेरा मतलब निहायत नादान औरत हो। तुम्हें शायद मालूम नहीं, तुम अब लड़की नहीं रहीं।'

'लड़की से औरत होना कितना लाजवाब होता है।' हसीना बोली।

घर पहले से बहुत आरामदेह हो गया था। स्टोव की जगह कुकिंग गैस ने ले ली थी। खिड़कियों पर मोटे पर्दे लटक रहे थे, छत पर पंखा चल रहा था, बैठने के लिए सादी मगर खूबसूरत कुर्सियां थी।

'मालिक लोगों ने मुझे जिन्स की तरह खरीद लिया।' लतीफ़ पंखे की

ठण्डी हवा लेते हुए बोला, 'मगर मैं बिकाऊ नहीं था, न हूं, न बिकाऊ रहूँगा।'

'तुम जिन्दगी से क्या चाहते हो ?' हसीना ने गुस्से से कहा, 'तुम सब चौपट कर दोगे। तुम एहसानफ़रामोश हो। तुम आखिर जिन्दगी से क्या चाहते हो ?'

'इश्तिराक़ीयत।'

'यानी।'

'समानता।'

'क्या सब मज़दूर एक से कुशल होते हैं।'

'हो सकते हैं।'

'कैसे हो सकते हैं ?'

'समान वेतन से। समान सुविधाओं से।'

'तुम्हारा दिमाग़ चलने लगता है।' हसीना बोली, 'ज़िन्दगी में कभी एहसानफ़रामोश नहीं होना चाहिए। तुम सड़क पर कराहते रहते, शायद ख़त्म हो जाते अगर लक्ष्मीधर उधर से न गुज़रते। तुम जिन्हें अपना दुश्मन मान रहे हो मेरे लिए वे देवता हैं।'

'तुम एक ज़ाहिला औरत हो।' लतीफ़ बोला, 'तुमसे बहस भी तो नहीं की जा सकती।'

'तुम मर्दों की तरह बात करते हो या मज़दूरों की तरह।'

'मैं मर्द हूँ और मज़दूर भी। क्या मज़दूर मर्द नहीं होता ?

'अगर तुम मज़दूर हो तो मैं कहूँगी, मज़दूर ही मर्द होता है।'

'और मैनेजर क्या होता है ?' लतीफ़ हँसा, 'नामर्द होता है।'

'तुम लक्ष्मीधर का मज़ाक़ उड़ा रहे हो न ?' हसीना आहत हो गयी, 'तुम ज़िन्दगी से आखिर चाहते क्या हो ?'

'इश्तिराक़ीयत।'

'यानी ?'

'समानता।'

हसीना का जी मितलाने लगा। वह नाली की तरफ़ लपकी। लतीफ़ ने उसे थाम लिया और वह कै करने लगी। सुबह की मतली कै में तब्दील हो गयी थी।

लतीफ़ को सोमवार से काम पर जाना था। शनिवार वह वे सोच इतना

ऊब गये कि लतीफ़ ने रात को खाना खाने के बाद हसीना से पूछा, 'चलो आज सिनेमा चलें। मुग़ले आज़म एक बार फिर देख आयें।'

हसीना की तबीयत बहुत अच्छी न थी, फिर भी वह एकदम उछल पड़ी; 'हाय तुम कितने अच्छे हो।'

दोनों खाना खाकर तुरत घर से निकल दिये। हसीना को शक था कि टिकट न मिलेगा, मगर बहुत आसानी से टिकट मिल गया। वे लोग यह मान कर घर से निकले थे कि देर हो चुकी है, हाल में पहुँचे तो प्रादेशिक समाचारों पर आधारित न्यूज़रील चल रही थी। उसके बाद फ़िल्म्स डिवीजन ने भी जी भर कर समय लिया। कबड्डी से लेकर वालीवाल• तक के मुर्दा चित्र पेश किये। फिल्म शुरू हुई तो दोनों ने राहत की साँस ली।

दोनों दूसरी बार फ़िल्म देख रहे थे। फ़िल्म समाप्त ·हुई तो दोनों के गालों पर आंसू तैर रहे थे।

भीड़ के साथ-साथ दोनों हॉल से बाहर निकले। अभी वे लोग बाहर गेट तक नहीं पहुँचे थे कि एक नौजवान ने हसीना की बाँह थाम ली। हसीना ने अपनी बाँह झटकनी चाही, मगर नौजवान की गरिफ़्त इस्पात की तरह मज़बूत थी। लतीफ़ ने यह देखा तो गुस्से से तमतमा उठा। उसने एक ज़ोरदार तमाचा नौजवान के चेहरे पर जड़ दिया। नौजवान ने हसीना को छोड़ दिया और नेफ़े से चाकू निकाल लिया। चाकू देख कर हसीना चिल्लायी—'बचाओ! बचाओ!!"

लतीफ़ ने भी मदद के लिए इधर-उधर•देखा। लोग जैसे इस काण्ड से बचना चाहते थे। उनकी रफ़्तार तेज़ हो गयी। स्त्री-पुरुष तमाम लोग उन लोगों से हट कर चलने लगे। नौजवान ने देखते ही देखते चाकू लतीफ़ के पेट में घोंप दिया। हसीना ने बहुत कारुणिक चीत्कार किया। पुलिस का एक सिपाही नज़र आया, मगर वह फ़ौरन दृश्य से अदृश्य हो गया।

सब लोगों के सामने, सब लोगों के बीच लतीफ़ एक कटे पेड़ की तरह गिर गया। हसीना दोनों हाथों से सर पीटने लगी। मगर गुण्डे की तसल्ली न हुई। उसने गिरे हुए लतीफ़ को पैर से पलट दिया। खून से ज़मीन लाल हो गयी। देखते-देखते वहाँ सन्नाटा खिंच गया।

गुण्डे ने हसीना को बाँह से उसी जगह पकड़ा और लगभग घसीटते हुए हाल के अन्दर ले गया। हसीना को चक्कर आ गया। इसके बाद क्या हुआ, उसे नहीं मालूम। अस्पताल में उसे होश आया तो देखा उसकी शलवार खून से तर थी।

'लतीफ़ कहां है?' उसने पास खड़े हुए लोगों से पूछा।

सब चुप थे। पोस्ट मार्टम के बाद लतीफ़ की लाश 'मॉर्च्यूरी' की तरफ़ जा रही थी।

अगले रोज अखबारों के मुखपृष्ठ पर कत्ल और बलात्कार की ख़बर मोटे अक्षरों में छपी हुई थी। श्यामजी ने अख़बार देखा तो विश्वास न किया। स्वस्तिक काटन मिल के फोरमैन की दर्दनाक मौत। गर्भवती पत्नी के साथ अमानवीय बलात्कार!

उसने लक्ष्मीधर को फ़ोन मिलाया, 'अखबार देखा?'

'अभी नहीं।'

'लतीफ़ का कत्ल हो गया है।' वह बोला, 'हसीना भी अस्पताल में है। फौरन सिविल अस्पताल पहुँचो।'

अस्पताल के सामने मजदूरों का हुजूम इकट्ठा हो गया था। वे लोग बेहद तैश में थे। श्यामजी और लक्ष्मीधर भागे हुए अन्दर गये। खेल खत्म हो चुका था। हसीना को नींद का इन्जेक्शन दिया गया था। वह बिस्तर पर बेसुध और निश्चेष्ट पड़ी थी।

• •

ज़रूरत से ज़्यादा पी लेने से प्रेम जौनपुरी की आँखों में लाल डोरे तैर रहे थे। कदम डगमगा रहे थे। बाल बिखरे थे और होंठों के छोरों पर सफ़ेद झाग के बुलबुले जम गये थे। वह ज़ीने पर बँधे रस्से के सहारे झूमता हुआ अज़ीज़न का ज़ीना चढ़ रहा था।

इधर बेग़म अख़्तर ने प्रेम जौनपुरी की लिखी एक ग़ज़ल गाई थी और उसका रिकार्ड भी छप गया था, जिस से शहर में प्रेम जौनपुरी की मकबूलियत आसमान छू रही थी। उसकी ग़ज़ल इतनी लोकप्रिय हुई कि गलियों बाज़ारों में अक्सर सुनाई देती। प्रेम जौनपुरी अपनी इस सफलता से प्रभावित हो बम्बई जा कर फिल्मों में अपना भाग्य आज़माने का फैसला कर चुका था। यह उस की लोकप्रियता का ही कारनामा था कि नफ़ीस उसे बाअदब अज़ीज़न के पास ले गया।

''अख़्तरीबी ने मेरी ग़ज़ल गाकर मेरे ऊपर बहुत एहसान किया है अज़ीज़न बी।'' प्रेम जौनपुरी अपनी लड़खड़ाती आवाज़ में बोला, 'मगर आपने मेरी चन्द ग़ज़लें जिस ख़ूबसूरती से गायी थीं, उन को मैं ताज़िन्दगी नहीं भूल सकता। मुझे वे आज भी हांट करती हैं। सोते में जगा देती हैं।'

''अख़्तरी के लिए ऐसे न कहो। उसने ग़ज़ल की बारीकियों को पकड़ा है और उसकी अदायगी की मैं हमेशा से मद्दाह रही हूँ। कभी मिलूँगी तो बधाई दूँगी।''

''मैं अब उन्हीं के पास जा रहा हूँ। आज कल वे बम्बई में हैं। सोचता हूँ, मरने से पहले बम्बई में भी किस्मत आज़मा कर देख लूँ।'' जौनपुरी की ज़ुबान लड़खड़ा रही थी, ''मगर आपके यहाँ आज मैं दूसरे काम से आया हूँ। एक निहायत ज़रूरी काम से। हो सकता है मेरी आपसे यह आख़िरी मुलाकात हो। गुल की शादी की ख़बर सुन कर मुबारकबाद देने चला आया।'' जौनपुरी ने जेब से पौवा निकाला और मुँह से लगा लिया।

''इस तरह पिओगे तो बहुत जल्द ख़ुदा को प्यारे हो जाओगे।'' अज़ीज़न

ने कहा, "यह क्या सलीका है।"

"साकी नहीं है! अब दुनिया में साकी नहीं है।" जौनपुरी बोला, ज्यादा जीना भी नहीं चाहता। मरने से पहले एक बार बम्बई में अपनी किस्मत जरूर आजमा लेना चाहता हूँ। आपके यहाँ आज आखिरी बार पी रहा हूँ, नमकीन हो तो दीजिए।"

अज़ीज़न ने पास खड़े नफीस को इशारे से बताया कि कुछ कबाब पड़े हों तो ले आए।

"मगर आज मैं दूसरे काम से आया हूँ। दो काम से आया था। बधाई वाला काम हो गया। बधाई मुबारक, कांग्रेचुलेशंस। दूसरा काम भी बहुत जरूरी है।" जौनपुरी ने जेब से दुबारा पौवा निकाला और मुँह की कड़वाहट को काटने के लिए साबुत कबाब जीभ पर लिया, "यह काम नहीं, गुज़ारिश है, इल्तिजा है, दरख्वास्त है। मगर इससे पहले मैं शर्मा की तारीफ़ में चन्द लफ्ज़ पेश करना चाहूँगा। शर्मा भी मेरा शागिर्द है। मेरा बेटा है। निहायत शरीफ़ और काबिल इन्सान है। जिम्मेदार आदमी है।" जौनपुरी ने पौवे का आखिरी घूंट लिया और खाली पौवा जेब में रखते हुए बोला, "मेरी इल्तिजा यह है कि यह शादी फिलहाल मुल्तवी कर दीजिए। आप ने शादी मुल्तवी न की तो शहर में दंगा हो जाएगा। यह दूसरी बात है कि शहर में दंगा तब भी होगा, अगर आप शादी मुल्तवी कर देंगी। बस आगाह करने चला आया। अब चलता हूँ।"

प्रेम जौनपुरी ने उठने की कोशिश की मगर धम्म से कुर्सी पर गिर पड़ा, "बस आगाह करने चला आया। शादी मुल्तवी कर दीजिए।"

जौनपुरी की आवाज में इतनी आत्मीयता थी, साथ ही साथ उसकी नशीली आँखों में इतनी माज़िरत कि अज़ीज़न चिन्तित हो उठी। ऐसा नहीं लग रहा था कि वह महज़ अड़ंगा लगाने की गर्ज़ से यह सब कह रहा है।

"मुझे एक पौवा मंगवा दें। आखिरी बार। मुझे यकीन है, बम्बई से मैं जिन्दा नहीं लौटूंगा यानी कि लौटूंगा ही नहीं। इसलिए मुझे एक पौवा मंगवा दीजिए।"

'तुम्हारी हालत देखकर तो लगता है कि तुम बम्बई तक पहुँच ही न पाओगे।' अज़ीज़न बोली, 'यह क्या तमाशा बना लिया है तुमने अपनी शख़्सीयत का।'

'बस आप एक पौवा मँगवा दीजिए और शादी मुल्तवी कर दीजिए।'

'क्यों मुल्तवी कर दूँ? जुबान से दुबारा दे नज़र फिर सकता नहीं, यह शादी होगी और तय शुदा तारीखों में ही होगी।'

जौनपुरी ने पैर मेज़ पर रख दिये। पैरों पर मैल की पपड़ियाँ जम गयी थीं और बू आ रही थी।

'कितने दिन हुए हैं तुम्हें नहाये ?'

'मैं नहाने में यकीन नहीं रखता। मैं खुदा में यकीन नहीं रखता। बस आप मेरी एक बात मान लीजिए और शादी मुल्तवी कर दीजिए।'

'मैंने कहा न कि यह शादी मुल्तवी नहीं होगी ?'

'बाईजान, मैं आप की इज्जत करता हूँ। आगाह करने चला आया कि शादी मुल्तवी कर दीजिए। वरना मैं भी तमाशाई बना रह सकता था।'

अज़ीज़न बी बेहद घबरा गयीं। तलुए गीले हो गये और हाथ ठण्डे। शादी के कार्ड छप चुके थे, गनीमत यही थी कि सबके सब अभी डाक में नहीं छोड़े थे। वह सिर थाम कर बैठ गयी। शहर अफ़वाहों से गूंज रहा था। यह कोई नयी बात न थी। शहर के लोग अफ़वाहों के बीच जीना सीख चुके थे।

'आपने शादी के लिए बीस तारीख मुकर्रिर की है। यही तारीख दंगे के लिए मुकर्रिर हुई है।'

'दंगे की तारीख क्या तुम से पूछ कर मुकर्रिर की जाती है ?'

'एक बढ़िया सिगरेट पिलवा दो। बाईजान सुलगा कर मेरे हाथ में दे दो। मेरा सिगरेट निहायत घटिया है। एक उम्दा सिगरेट सुलगा दो। अपने लबों में ले कर मुझे दे दो।'

अज़ीज़न ने मेज़ पर से पैकेट उठाया। पहला सिगरेट सुलगा कर प्रेम जौनपुरी को दे दिया और दूसरा स्वयं पीने लगी। अचानक उसे लगा कि जौनपुरी शराब के नशे में अनाप शनाप बोले जा रहा है। उसने कहा, 'तुम्हारा कार्ड रखा है। शादी के बाद ही बम्बई जाना।''

'इस का मतलब यही निकलता है कि आप शादी मुल्तवी नहीं करेंगी।'

'नहीं।' अज़ीज़न बोली, 'यह तो मैं पहली बार सुन रही हूँ कि दंगों की तारीख पहले से तय होती है।'

'यह जरूरी तो नहीं, जो बात आप पहली बार सुन रही हों, वह ग़लत ही हो। यह जरूरी तो नहीं।' जौनपुरी बुदबुदाया, 'यह जरूरी तो नहीं।'

'तुम कैसे जानते हो ? क्या तुम्हीं दंगा कराना चाहते हो ?'

'अज़ीम शायर कभी दंगा नहीं कराते। मगर दंगे के तौर तरीकों को समझते हैं। दंगों का भी एक तौर तरीका होता है।'

'यह तौर तरीके तुम कैसे जानते हो।'

'जानता हूँ। अच्छी तरह से जानता हूँ।

'अगर तुम्हारे दिल में मेरे लिए कोई इज्जत है तो तुम्हें बताना होगा, तुम

कैसे जानते हो।'

'मेरे दिल में आप के अलावा कुछ नहीं। एक सुनसान घाटी है मेरा दिल आप के बग़ैर। आप के साथ एक समुन्दर है मेरा दिल। इस समुन्दर की तह पे मैं ही जा सकता हूँ। आप शादी मुल्तवी कर दीजिए।'

'अजीब अहमक शायर हो।' अज़ीज़न बोली, 'इस के पीछे जरूर तुम्हारी ही कोई साजिश होगी।'

'यह कह कर मेरा दिल न तोड़िए बाई जी। मैं तो जल्द ही बम्बई के लिए रवाना हो जाऊँगा और मुझे यकीन है वहाँ से जिन्दा या मुर्दा किसी भी सूरत में नहीं लौटूंगा। मैं क्यों कर आप से झूठ बोलूँगा। आप अगर मुझे अपना दोस्त मानती हैं तो मेरी बात पर यकीन कर लीजिए। मेरी बात पर क्यों नहीं यकीन कर लेतीं आप?'

'मेरी ज़िद।'

'यह तो दीवाने की ज़िद हो गयी।'

अज़ीज़न का चेहरा उतर गया था। वह खिड़की के रास्ते आकाश की ओर देखने लगी। आकाश पर बादल छाये थे। लग रहा था, आँधी आने को है।

'आप परेशान नज़र आ रही हैं। बताये देता हूँ। आप जानती हैं शहर के बीड़ी किंग का बेटा काज़िम मेरा शागिर्द है।'

'जानती हूँ।'

'दंगा बीड़ी मजदूरों की मजदूरी को लेकर होगा। जब से एक हिन्दू उद्योग-पति बीड़ी के धंधे में कूदा है, दोनों फिरकों में तनाव बढ़ रहा है। दोनों बीड़ी उद्योगपति मजदूरों को अपने अपने तरीके से अपनी तरफ़ खींच रहे हैं।'

'क्या बक रहे हो प्रेम जी।' अज़ीज़न को सारी बात बेसिर पैर की लग रही थी, 'तुम सही बात पर क्यों नहीं आते कि दंगा क्यों होगा।'

'सही बात यही है कि बीड़ी मजदूरों को जीतने की जंग चल रही है। एक पैसे से खरीदना चाहता है दूसरा मजहब से। दंगे के लिए इस से बेहतर माहौल नहीं मिल सकता। मुझे कपिल ने भी बताया है कि फ़िरकापरस्त पार्टियाँ इस सिचुएशन का फायदा उठाना चाहती हैं। चुनाव सर पर हैं। रूलिंग पार्टी को शिकस्त देने के लिए दंगा कराना जरूरी है। इन लोगों ने दंगे के लिए बीस तारीख मुकर्रिर की है। शहर में अफ़वाह और गुण्डे भरे जा रहे हैं।'

'यह तारीख किसने तय की है?'

'तारीख यहाँ तय नहीं होती। पूना में तय होती है या हैदराबाद में।'

जौनपुरी बोला, 'कभी कभी दिल्ली में भी दोनों फिरके मिल बैठकर तारीखें तय कर लेते हैं।'

'मेरा सर घूम रहा है प्रेम जी। मुझे अकेला छोड़ दो।'

'मेरा सर आप से ज़्यादा घूम रहा है। आप शादी मुल्तवी कर दीजिए, ताकि दंगई इसका फायदा न उठा पायें।'

'क्या वे इस शादी को भी मुद्दा बना सकते हैं?

'दंगा हो गया तो मुद्दा अपने आप बन जाएगा।' प्रेम जौनपुरी ने आंखें मूंद लीं।

'चुनाव के बाद कीजिए शादी। मुझे दावतनामा भेजेंगी तो मैं बम्बई से दौड़ा आऊँगा। मैं आऊँगा। जरूर आऊँगा।'

प्रेम जौनपुरी कुर्सी पर ही खुर्राटे भरने लगा। अज़ीज़न जा कर खाट पर लेट गयी। देश भर की कई डेरेदारनियों को चिट्ठियां जा चुकी थी। वह इस शादी को अपने जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि मान रही थी। शादी के स्थगन की बात सुनकर सब उसका मज़ाक उड़ायेंगी। हर कोई यही सोचेगा कि ऐन मौके पर लड़का भाग निकला।

अज़ीज़न को गहरी चिन्ता में डाल प्रेम जौनपुरी कुर्सी पर सो गया। उसकी दाढ़ी बढ़ी थी, पैरों पर मैल की पर्तें चमक रही थीं। आंखों में कीच चिपक चुकी थी। अज़ीज़न कमरे में से उठ गयी। वह जानती थी, प्रेम जौनपुरी अब देर तक सोयेगा। उसने कमरे में जा कर नफ़ीस को बुलवाया और सिद्दीकी साहब के यहां रुक्का भिजवा दिया। वह इस विषय पर सिद्दीकी साहब से मश्वरः कर लेना चाहती थी। मालूम हुआ, सिद्दीकी साहब घर में नहीं हैं। अज़ीज़न पलंग पर लेट गयी। उसे लग रहा था, छत घूम रही है, दीवारें घूम रही हैं, पूरी कायनात घूम रही है। उसने आंखें मूंद लीं। वह बारबार करवटें बदल रही थी

सिद्दीकी साहब ख्वाजा अली बख्श के फार्म पर गये हुए थे। ख्वाजा का फार्म शहर से पन्द्रह बीस किलोमीटर दूर था। सिद्दीकी साहब के लिए गाड़ी आई थी और उन्हें लिवाकर चली गयी। ख्वाजा ईद अथवा कोई दूसरा मुबारक मौका निकाल कर अपने मुलाकातियों को साल में दो-तीन बार डिनर दिया करते थे।

बाहर खुले लॉन पर खाने का इन्तजाम था। फार्म के ठाठ निराले थे। नये फैशन की अल्युमिनियम की कुर्सियाँ थीं। दूर एक 'गार्डन अम्ब्रेला' लगा था। तरह तरह के कुत्ते ख्वाजा ने पाल रखे थे। सिद्दीकी साहब ने यहाँ ख्वाजा का एक दूसरा ही रूप देखा। बावर्ची थे, खानसामा थे और शौक के इतने पकवान थे कि सिद्दीकी साहब ने किसी रेस्तराँ में न देखे होंगे। एक स्टील की लम्बी तश्तरी थी, जिसमें बकरे की पूरी की पूरी टाँग पड़ी थी। बीसियों तरह के हलुवे थे, लाल, पीले, हरे, मक्खन स्वाद। मगर ख्वाजा वही के वही थे, अपनी पुरानी शेरवानी में। वे हाथ में छड़ी लिए मेहमानों का इस्तकबाल करते घूम रहे थे। सिद्दीकी साहब को देखते ही प्रसन्न हो गये, 'कहो बरखुरदार, खैरियत तो है। बड़ा अच्छा काम कर रहे हो। फार्म से मिले बगैर मत जाना, निहायत जरूरी काम है और इन से मिलो, यह हैं हमारे वजीर कमाल साहब। फीरोजाबाद में एस० पी० हैं। ए० डी० एम० नसीम से तो तुम्हारा पुराना तआरुफ है, मैं जानता हूँ।' ख्वाजा ने वजीर साहब से सिद्दीकी साहब का हाथ मिलाते देखा तो बोले, 'जल्दी सिद्दीकी साहब को असेम्बली में भेजना है।'

इस भीड़ में सिद्दीकी साहब को अपने कई मुलाकाती मिल गये। इन्कम-टैक्स, सेल्स-टैक्स, चकबन्दी, पुलिस, आबकारी के अफसरान के अलावा सार्वजनिक निर्माण विभाग, विद्युत विभाग के अनेक अभियन्ताओं से उनका परिचय हो गया। ख्वाजा तमाम अफसरान से सिद्दीकी साहब का बहुत अच्छा तआरुफ करवा रहे थे। सिद्दीकी साहब को और क्या चाहिए था। इन

अफ़सरान की बदौलत ही उनकी गाड़ी खिंच रही थी। वह बार-बार जेब से डायरी निकालते और टेलीफ़ोन नम्बर वगैरह दर्ज कर के दुबारा जेब में रख लेते।

तभी जीप से दो नौजवान उतरे। दोनों ने टीशर्ट पहन रखी थी और बेल्ट में चश्मा खोंस रखा था। देखकर लग रहा था, दोनों ने अभी-अभी कंघी से बाल सँवारे हैं। एक भी बाल बेतरतीब नहीं था। उन्हें देखते ही ख्वाजा उनकी तरफ़ लपके, 'आओ आओ बरख़ुरदार, मैं तुम लोगों की ही राह देख रहा था।' ख्वाजा छड़ी टेकते हुए नौजवानों की तरफ़ बढ़े। दोनों ने ख्वाजा को आते देख सिगरेट जूतों के नीचे मसल दिये।

'आओ आओ।' कहते हुए ख्वाजा उनके साथ ही एक तरफ़ बढ़ गये। वे लोग देर तक गुफ़्तगू करते रहे, फिर सिद्दीकी साहब को बुलवा भेजा।

'आइए, इन नौजवानों से भी आपका तआरुफ़ करवा दूँ। यह हैं सिद्दीकी साहब। उभरते हुए नौजवान नेता। आजकल दिन भर अपनी कौम के मसलों को लेकर परेशान रहते हैं। क्यों न रहेंगे भाई, चुनाव यों ही तो न जीत जाएँगे। सिद्दीकी साहब इन लोगों से मिलिए। चुनाव में ये लोग ही मदद करेंगे, रुपये-पैसे से भी और जीपों का इन्तज़ाम भी करेंगे। यह नौजवान बम्बई में हैं। एक्सपोर्ट-इम्पोर्ट के धंधे में हैं। मनज़र साहब का बचपन यहीं इकबाल-गंज में बीता है और खुदा के फ़ज़ल से इस वक़्त दो-दो ट्रक हैं, भारती में शराब का ठेका है। पारसाल एक दुकान इकबालगंज में भी ली, मगर आपने सुना होगा कि बड़ी मछली छोटी मछली पर घात लगाये रहती है। मैं तफ़सील से ज़िक्र करूँगा। दोनों काम के आदमी हैं। इनसे तो मैं मिलाना ही भूल गया, यह हैं साहिल साहब।'

सिद्दीकी साहब ने साहिल की तरफ़ गौर से देखा, कहीं यह चमेली का साहिल तो नहीं। सिद्दीकी साहब को असमंजस में देखकर साहिल मुस्करा दिया और मुस्कराते ही सिद्दीकी साहब की पहचान में आ गया।

'इनका तआरुफ़ आप क्या देंगे।' सिद्दीकी साहब साहिल से बग़लगीर हो गये, 'यह तो मेरा बच्चा है, क्यों बेटा?'

'माशाअल्लाह!' ख्वाजा ने राहत की लम्बी साँस ली, 'अब आप लोग बतियाइए, मैं ज़रा दूसरे मेहमानों की ख़बर लूँ। ज़हीर, देखो ए० डी० एम० साहब की प्लेट खाली है। लीजिए चिकन लीजिए। कबाब लीजिए। आप तो बहुत तकल्लुफ़ कर रहे हैं। मियाँ यह सब सामान आप लोगों को ही ख़त्म करना है।' ख्वाजा अभी बदल मेहमानों में मसरूफ़ होते चले गये।

'साहिल के बच्चे । तुम्हारी अम्माँ का इन्तकाल हो गया, तुम नही आये ।'

'मैं आया था नेताजी । माँ की कब्र पर फातिहा पढ़कर फौरन वापिस हो गया । मैंने तय किया था अब इकबालगंज तभी आऊँगा, जब अपने पैरो पर खड़ा हो जाऊँगा । मैंने बहुत मुसीबतें झेलीं और आज अल्लाह का फजल है कि यह डीजल की जो जीप आप देख रहे हैं, इसी खाकसार की है। मसऊद मियाँ ने अपना इधर का कारोबार मेरे ऊपर छोड़ रखा है । मगर इधर कुछ ऐसे अनासर उभर रहे हैं, जो हमें पनपते हुए नहीं देखना चाहते ।''

मसऊद ने जेब से विदेशी सिगरेट का पैकेट निकाला और सिद्दीकी साहब को सिगरेट पेश किया । अपने खूबसूरत जापानी लाइटर से सुलगा भी दिया ।

'बेहद खूबसूरत लाइटर है ।'

'आपको पसन्द है तो आप रखिए ।'

'अरे, मैं लाइटर लेने के लिए तारीफ नहीं कर रहा था ।'

'मेरी तरफ से एक नाचीज तोहफा समझकर कुबूल कर लीजिए ।'

सिद्दीकी साहब घुमा फिराकर लाइटर देखते रहे । मसऊद ने उन से मना करते-करते सिगरेट का पैकेट भी उनकी नजर कर दिया ।

'हसीना कैसी है ?''

'सच पूछिए, नेताजी, मैं अपने जद्दोजहद मे इतना मशगूल रहा कि उसकी भी खबर न ले पाया । अक्सर उसका खयाल आता है । अब जाऊँगा, उसके यहाँ । लतीफ से भी बरसो से मुलाकात नही है ।'

'और क्या रंग-ढंग हैं ?'

'आपकी इनायत है ।' साहिल ने नेताजी के कन्धे पर हाथ रखा और उन्हें जीप की तरफ ले गया, 'ख्वाजा ने आपका जिक्र किया था । बात दर-असल यह है कि कुछ लोग हमें परेशान करने पर आमादा हैं । अभी गोरखपुर के पास एक गाड़ी पकड़ी गयी, जिसमे स्मगल किया हुआ बहुत सा सामान था । जाने किसकी गाडी थी और किसका सामान था, मगर ड्राइवर ने बयान दिया कि वह मसऊद साहब का आदमी है। अब एक्साइज के अफसरान मसऊद साहब को परेशान कर रहे हैं, जबकि मसऊद साहब जानते हैं कि सामान व गाड़ी भैरुलाल की थी ।'

'क्या भैरुलाल स्मगलिंग भी कराता है ?'

'कौन नही जानता ? स्मगलिंग का पैसा सफेद करने के लिए उसने बीड़ी का धंधा शुरू किया है । श्यामसुन्दर से उसकी दोस्ती है, कोई अफसर उसे छूने की हिम्मत नहीं कर सकता ।'

'हूँ, तो यह बात है।' सिद्दीकी साहब ने पूछा, 'क्या ख्वाजा को यह किस्सा मालूम है?'

'ख्वाजा बखूबी जानते हैं उसके किरदार को।' साहिल ने कहा, 'ख्वाजा ने ही बताया था कि सेंट्रल एक्साइज़ में आपकी कुछ जान पहचान है।'

'गोरखपुर जाना पड़ेगा इस काम के लिए,' नेताजी ने बताया, 'मगर इधर मेरी इक्तसादी हालत ठीक नहीं। अब्बा की बीमारी ने मुझे चौपट कर दिया।'

'उसकी आप फ़िक्र न करें।' साहिल की बात सुनकर मसऊद ने जेब से सौ-सौ के दसेक नोट निकाल कर साहिल को थमा दिये। साहिल ने नेताजी की जेब में रख दिये। नेता जी ने इस तरफ ध्यान ही न दिया, वे कहे जा रहे थे, 'यह हिन्दू सरमायादारी की साज़िश है। इस मुल्क में मुसलमान का जीना हराम हो गया है। ख्वाजा जैसे दो चार लोग न हों तो मुसलमान भूखों मरने लगें।'

'यही वजह है कि मसऊद साहब ने अपने इतने बड़े कारोबार में एक भी हिन्दू को नहीं रखा। मसऊद साहब के पास ऐसे-ऐसे लोग हैं कि मसऊद साहब के इशारे से भैरूलाल का काम तमाम कर दें। शहर में आग लगा दें, मगर मसऊद साहब एक शरीफ इन्सान की तरह जीना चाहते हैं।'

'मैं गोरखपुर जाऊँगा। गाँगुली साहब वहीं है। मेरे मुलाकाती हैं। मैं बात करूँगा।'

'आपके लिए गाड़ी का इन्तज़ाम हो जाएगा। आप जब कहें गाड़ी आपके यहाँ भिजवा दें।'

'जुम्मे को रखो। गोरखपुर जाएँगे तो बगल में नेपाल है। वहाँ भी घूम आएँगे।'

'जुम्मे को गाड़ी आपके यहाँ पहुँच जाएगी।' मसऊद ने कहा, 'भैरूलाल को इस गुस्ताखी की भारी कीमत चुकानी पड़ेगी।'

तभी ख्वाजा छड़ी टेकते हुए नमूदार हो गये, 'क्यों बरखुरदार, ठीक आदमी से मुलाकात कराने का शुक्रिया भी अदा नहीं करोगे।'

'ख्वाजा आप शर्मिन्दा करने में उस्ताद हैं।' मसऊद ने कहा, 'सिद्दीकी साहब से मिलकर बहुत मुसर्रत हुई।'

'मसऊद हमारा चेला है। वक्त ने साथ दिया तो एक दिन शहर के तमाम ठेके हथिया लेगा। यह सच है कि ट्रक ड्राइवर सिर्फ इसलिए मसऊद को फँसा रहा है कि यह शराब के धन्धे से भाग निकले।' ख्वाजा ने जोरदार ठहाका

लगाया, 'जो काम भैरूलाल मेरे लिए कर रहा है, वही काम मसऊद के लिए कर रहा है। मसऊद सेल्फमेड आदमी है। आज इसकी जो हैसियत है, इसने अपनी मेहनत से कमाई है। यह किसी का मुहताज रहा है, न रहेगा।'

'आपकी ज़र्रानवाज़ी है ख्वाजा, वरना हम किस खेत की मूली है।'

'आओ आओ, अब आप लोग खाना खाइए।' ख्वाजा छड़ी टेकते हुए मेज की तरफ बढ़ गये। पीछे-पीछे ख्वाजा के तीनों शागिर्द। ख्वाजा खुद इन लोगों के लिए खाना परोसने लगे तो सिद्दीकी साहब ने आगे बढ़कर उनके हाथ से तश्तरी ले ली और मसऊद के लिए अपने हाथ से प्लेट सजाने लगे। सिद्दीकी साहब ने मसऊद के हाथ में प्लेट थमाई तो ख्वाजा मसऊद की तरफ देखकर मुस्कराये, 'यह शख्स इलेक्शन में जीतेगा, यकीनन जीतेगा।'

'इसमें कोई शुबह नहीं।' मसऊद बोला और उन्हें साहिल के लिए प्लेट तैयार करते देख बोला, 'साहिल तुम नेता जी के लिए प्लेट तैयार करो। क्या मुँह बाये खड़े हो।'

साहिल ने नेताजी को प्लेट दी और खुद भी खाने में जुट गया।

'हसीना से कब से नहीं मिले?'

'जब से हसीना गयी है, नहीं मिला। अब जल्द ही उसकी खोज खबर लूँगा।'

'अपना मकान क्यों नहीं ठीक करवाते?'

'उस मकान में नहीं रह सकता। वहाँ ज़र्रे-ज़र्रे में अम्माँ है। वहाँ रहकर मैं सिर्फ रो सकता हूँ। और फिर शहर में आता ही कितने दिन के लिए हूँ। यहाँ मसऊद साहब का गेस्ट हाउस है।'

'मैं इस से मुत्तफिक नहीं। अपना घर कोई नहीं छोड़ता। यह तो मैं मुहल्ले में हूँ कि किसी ने अभी तक कब्ज़ा नहीं किया, वरना कोई न कोई काबिज हो गया होता।'

खाना खत्म होते ही लोग रवाना होने लगे। हर दूसरे क्षण कार, जीप *अथवा मोटर साइकल चालू होने की आवाज़ आ रही थी।*

सन्नाटा होते ही ख्वाजा नेताजी के पास चले आये, 'बरखुरदार, कैसा रहा आज का डिनर।'

'सुबान अल्लाह। बहुत बढ़िया। मैं तो आपका मदाह हो गया हूँ।'

'ज़िन्दगी में रखा है ही क्या है, अपने दोस्तों और अपने मज़हब के अलावा।'

'आप दुरुस्त फरमा रहे हैं। मेरे काम की रिपोर्ट आपको मिली होगी।'

'बहुत अच्छा काम कर रहे हो भाई। मैंने तय किया है, इस्माइलगंज में

सरकार जो प्लाट नीलाम कर रही है, एक आपके नाम पर भी ले लूँ। मसऊद और साहिल भी दस पाँच प्लाट खरीदेंगे। इस्माइलगंज तो आपने देखा होगा, पूरी रिंग रोड जैसा है। मैंने तय किया है, कुछ जरूरतमंद मुसलमानों को भी प्लाट के लिए बगैर सूद के रुपया उधार दूँ। ताकि मुसलमान शहर के घुटन भरे माहौल से निकल कर ताजी हवा में साँस ले सकें।'

'बड़ी अच्छी प्लानिंग है।'

'मगर इसकी खबर कानोंकान किसी को न हो। वरना काफ़िर बोली इतनी बढ़ा देंगे कि हम लोगों के हाथ से ये प्लाट निकल जाएँगे। इस तरह की बोलियों में गुण्डई भी होती है। बन्दूक की नोक पर बोली होती है।'

'कई गद्दी लोग मेरे शागिर्द हैं। बुलवा लूँगा।'

'मैंने मसऊद से ज़िक्र किया था, उसके पास बहुत अच्छे-अच्छे लठैत हैं। बीसियों लाइसेंसधारी हैं। कोई प्राब्लम न होगी। मैं चाहता हूँ, मुसलमान ज्यादा से ज्यादा तादाद में प्लाट खरीदें। आप ऐसे कुछ लोगों को जरूर जानते होंगे, जिनके बच्चे गल्फ़ देशों में है। उनके पास रकम होगी, उन्हें भी यह प्लानिंग बतायी जा सकती है।'

'वाह-वाह क्या प्लानिंग है। आज तक हिन्दुओं ने मुसलमान को घेर रखा था, इस्माइलगंज बस गया तो हिन्दू छटपटायेंगे।' सिद्दीकी साहब ने पूछा, 'आजकल भैंरूलाल के क्या समाचार हैं?'

'भैंरूलाल कोशिश कर रहा था कि इस्माइलगंज इंडस्ट्रीयल एरिया घोषित हो जाए। मगर सरकार में मेरी भी पैठ है, मैंने उसके इरादे जमीन दोश कर दिये हैं। सुनते हैं आजकल वह अपनी फैक्टरी के मजदूरों के लिए कॉलोनी बनाने के लिए जमीन खरीदने की योजना बना रहा है। मैं उसकी यह प्लानिंग भी मिट्टी में मिला दूँगा।'

'ख्वाजा आपको तो पॉलिटिक्स में आ जाना चाहिए।'

'मैं हूँ, मैं पालिटिक्स में हूँ।'

'तो राजसभा-लोकसभा में जाइए।'

'वहाँ तो मैं अपने आदमी भेजता हूँ। इस बार आपको असेम्बली में भेजना है।'

सिद्दीकी साहब बाग बाग हो गये। उन्हें लग रहा था, ख्वाजा से पहले परिचय हो गया होता तो वे अब तक एम० एल० ए० हो गये होते। वे यह सोचकर सन्तोष कर रहे थे कि 'देर आइद दुरुस्त आइद'।

'आप नेपाल कब जा रहे हैं?'

'इसी जुम्मे को जाने का इरादा है।'

'जरूर जाओ।' ख्वाजा ने कहा और दस दस के नये नोटों की एक गड्डी सिद्दीकी साहब की नजर कर दी, 'नेपाल जा रहे हो तो क्या खाली हाथ लौटोगे ? घरवालों के लिए कुछ सामान लेते आना।'

'शुक्रिया।' नेताजी ने गड्डी जेब के हवाले की और सिगरेट निकाल लिया। मगर ख्वाजा की उपस्थिति में उनकी सिगरेट सुलगाने की हिम्मत न पड़ रही थी।

'सिगरेट पीना चाहो तो पिओ। मैं एतराज नहीं करता।'

नेताजी ने सिगरेट नहीं सुलगाया, वापिस पैकेट में रख लिया।

'गाड़ी में पी लेना !' ख्वाजा ने ठहका लगाया।

ख्वाजा की गाड़ी सिद्दीकी साहब के लिए तैयार खड़ी थी। सिद्दीकी साहब गाड़ी में सवार हो गये। दरअसल उन्हें घर पहुँचने की जल्दी नहीं रह गयी थी। वे जानते थे, बाजार अब तक बन्द हो चुके होंगे। वे नेपाल में की जाने वाली शापिंग हिन्दुस्तान में ही कर लेना चाहते थे। चना, गेहूँ, चावल सब्जी और हरा पुदीना कोई नेपाल से क्यों लायेगा। वे कल दोपहर से रोगन जोश, पुदीने की चटनी और हरी मिर्च खाना चाहते थे, मगर दूकानें बन्द हो चुकी थीं। आखिर उन्हें एक सिनेमा हाल के बाहर सन्तरे का ताजा रस पीकर ही सन्तोष कर लेना पड़ा।

सुबह उठते ही सिद्दीकी साहब के पास अजीजन का बुलौआ आया। वे फौरन गुसल में घुस गये। कपड़े पहन कर बाहर आए तो अचानक नज़रें कुर्ते की आस्तीन पर गयी। आस्तीन पर से कुर्ता तार-तार हो रहा था, चप्पलें भी बेकार हो चुकी थीं। उन्होंने तय किया, एक जोड़ी चप्पल और तीन जोड़ी कुर्ता पायजामा आज ही खरीदेंगे। बहरहाल, नेताजी ने कंघी की, बाल सँवारे और तेजी से सफेद हो रहे बालों को कोसते हुए अजीजन बी का जीना चढ़ गये।

अजीजन भी बहुत परेशान नजर आ रही थी। सिद्दीकी साहब ने आज पहली बार उसे बगैर किसी साज सिंगार के देखा था। वह बहुत बूढ़ी नजर आ रही थी।

'खैरियत तो है अजीजन बी ?' सिद्दीकी साहब ने बैठते हुये पूछा, 'आप इस कदर परेशान क्यों नज़र आ रही हैं ? बन्दा आपकी क्या खिदमत कर सकता है ?'

'आप से क्या छिपाना नेताजी। बिटिया की शादी तय हुई है।'

'किस खुशनसीब से ?' सिद्दीकी साहब ने एक गहरी साँस ली। गुल का ताज़ा शफ़्फ़ाफ चेहरा और साँचें में ढला बदन उनके दिल पर बैठ गया था।

'आपने प्रोफेसर जितेन्द्र मोहन का नाम सुना होगा ?'

'तो क्या आप एक हिन्दू काफिर से अपनी बिटिया की शादी करेंगी ?'

'खुदा को यही मंजूर था, सिद्दीकी साहब।' अजीज़न ने कहा, 'बिटिया की भी यही राय थी।'

'यह तो बहुत बुरी खबर दी आपने।' नेताजी का चेहरे पर तनाव के तअस्सुरा दिखायी दिये। उन्होंने सिगरेट सुलगाया और बोले,'किसी तरकीब से यह शादी रुक नहीं सकती ?'

अज़ीज़न ने सिर हिलाया, जिसका मतलब था नहीं।

'नतीजा अच्छा न निकलेगा। शहर पहले ही सुलग रहा है। यह शादी आग में घी का काम करेगी। मुसलमान अपनी इज्ज़त की हिफाज़त के लिए कट मरेंगे। कहाँ है गुल बिटिया, मैं समझाता हूँ उसे।'

'अब आप क्या समझाइएगा। खानदानी मुसलमान बहुत परहेज़ कर रहे थे एक तवायफ़ की बिटिया से शादी करने में।'

'यह सरासर ग़लत है। आप झूठ बोल रही हैं। मैं यह शादी नहीं होने दूँगा। मुसलमान उस हिन्दू प्रोफेसर की खाल नोच लेंगे, जिसने मुसलमानों की इज्ज़त पर हाथ उठाया है। यह बेहद नाज़ुक मामला है।'

अज़ीज़न ने कुर्सी का हत्था मज़बूती से थाम लिया था। उसके दिल की धड़कने तेज़ हो गयी थीं। अज़ीज़न को उम्मीद थी कि सिद्दीकी उसका ज़रूर साथ देगा, मगर सिद्दीकी के भीतर एक कट्टर फ़िरकापरस्त बैठ चुका था। अज़ीज़न ने कहा, 'मुझे आप से बहुत उम्मीद थी।'

'मुझे आप से कतअन ऐसी उम्मीद न थी कि आप मुझे अपनी ही कौम से गद्दारी करने को कहेंगी।'

अज़ीज़न को भी गुस्सा आ गया, गाली सुनकर वह तमतमा कर खड़ी हो गयी, 'तो आप चले जाइए यहाँ से ।'

'आपके बुलाने पर ही आया था । आप कहती हैं तो चला जाता हूँ, वरना मैं आपको इस्माइलगंज मे एक प्लॉट दिलाना चाहता था ।'

'मुझे नहीं चाहिए कोई प्लॉट ब्लॉट, आप चलते नज़र आइए ।'

'.खुदा हाफिज़ ।' सिद्दीकी साहब ने कहा और जीना उतर गये । कुछ अर्सा पहले अजीजन ने मदद माँगी होती तो सिद्दीकी साहब इस शादी के लिए ज़मीन आसमान एक कर देते । मगर अब वह एक बदले हुये इन्सान थे । उन्हे खुद ताज्जुब हो रहा था, वे इतनी जल्दी कैसे बदल गये । उनके चेहरे पर से पसीना चू रहा था । अन्दर ही अन्दर उन्हे ग्लानि भी हो रही थी कि उन्होने तैश में कुछ अशोभनीय बातें कह दी । वे घर से तो यह सोचकर निकले थे कि अज़ीज़न के यहाँ बढ़िया नाश्ता नोश फरमाएँगे, मगर वहाँ चाय तक नसीब न हुई । वे सीधा अनवर के यहाँ चले आए ।

अनवर के यहाँ उस्मान भाई ने पहले ही मोर्चा ले रखा था, 'नई बस्ती की दो लड़कियों को हिन्दुओं ने अगवा कर लिया है । मैं अभी वहीं से आ रहा हूँ । सुनते हैं कल नाइट शो मे एक खातून का रेप हुआ । पुलिस सामने खडी देखती रही ।'

'क्या बकवास कर रहे हो ।' नवाब साहब ने कहा, 'तुम्हारे इरादे क्या है ?'

'आप के इरादे क्या हैं नवाब साहब ?' सिद्दीकी साहब ने आते ही मोर्चा सम्भाल लिया, 'आप अपनी कौम के दुश्मन हैं । मुसलमानों की लड़कियाँ अगवा की जा रही हैं, उनके साथ रेप हो रहा है, उनकी लडकियाँ को हिन्दू ब्याह कर लिए जा रहे हैं, आप कैसे मुसलमान हैं कि आप की रूह फना नहीं हो रही !'

'किस मुसलमान लडकी की हिन्दू से शादी हो गयी ?'

'आप ही के मुहल्ले मे हो रही है ।'

'हमारे मुहल्ले मे ?'

'जी हाँ, आप के पडोस मे ! गुल हिन्दू से शादी कर रही है ।'

'अजीजन बी की बिटिया ?'

'जी हाँ !' सिद्दीकी साहब ने कहा, 'ज़रा जल्दी से दो अडो का आमलेट

तो बना दो अनवर भाई। आप बैठे किस दुनिया में हैं नवाब साहब ?'

नवाब साहब को कंपकपी छिड़ गयी। गुल की देखा देखी उन्होंने भी अपनी बिटिया को युनिवर्सिटी में दाखिला दिला दिया था। उन्हें लगा, उनकी बिटिया का भी यही हश्र होगा। कोई हिन्दू, उनकी बिटिया को भी भगा ले जाएगा। उनकी आँखें मूंदने और टांगें कांपने लगीं। सिद्दीकी साहब ने देखा तो उठकर उनकी आँखों में पानी के छींटे दिये। देखते देखते नवाब साहब के दांत जुड़ गये। पड़ोस से हकीम साहब को बुलाया गया। उन्होंने किसी तरह नवाब साहब की बेहोशी दूर की। कुछ लोग नवाब साहब को खटिया पर डालकर उनके घर पहुँचा आये। नवाब साहब ने तय कर लिया था, वे फ़ौरन बिटिया का युनिवर्सिटी जाना बन्द करा देंगे।

● ●

जितेन्द्र मोहन शर्मा विश्वविद्यालय से छुट्टी पर था। वह दिन भर ऊँघता और कल्पना में गुल की गोद मे सिर रखकर सो जाता। बीच-बीच मे इच्छा होती तो तलत महमूद का रिकार्ड सुनता : बल्यू मूड। शादी से पहले बहुत कम लोगों का मूड 'बल्यू' होता होगा, वह अक्सर मोचता और मजाज की गजल सुनता।

ऐ गमे दिल क्या करूँ,

ऐ वहशते दिल क्या करूँ ?

आज दोपहर को उसने दो बोतल बीयर मँगवायी और देर तक सपने बुनता रहा। उसने दिन में प्रकाश को एक खत लिखा, एक खत गुल के नाम लिखा। प्रकाश का खत उसने पोस्ट करवा दिया और गुल के नाम लिखा खत तहाकर रख लिया। शादी के बाद घर आने पर गुल को पढ़वायेगा।

खत लिखकर वह सो गया। बड़ी अच्छी नींद आई। नींद मे उसने देखा, वह चुपचाप गुल के साथ मसनद का सहारा लिए बैठा है। लाल कपड़े से दोनों का सर बँधा था। गुल उठती है और उसके गले मे जयमाला पहना देती है। शर्मा गुल का नर्म और गुदाज हाथ अपने हाथ मे ले लेता है और उसे निकाह की अँगूठी पहना देता है। प्रकाश को सचमुच पिता की भूमिका निभानी पड़ रही है। वह और उसकी पत्नी बेहद व्यस्त है। प्रकाश के प्रयत्न से ही ऐसी बारात का गठन हो सकता था। नगर मे कम ही ऐसी बारातें देखी गयी होंगी। इस बारात मे तीन सांसद, दो केन्द्रीय मंत्री, हिन्दी-उर्दू के दो महत्त्वपूर्ण कवि, डी० एम०, प्रशासक, डी० आई० जी०, एस०, पी०, एस० एस० पी० न्यायाधीश, विश्वविद्यालय के उपकुलपति, अध्यक्ष, रीडर, लेक्चरर कौन नहीं है।

'बारात देख रही हो !' वह कुहनी से गुल को छूते हुए कहता है। गुल नजरें उठाती है और झुका लेती है।

बारात गली मे घुसती है तो शर्मा की आँखे खुली की खुली रह जाती है। लगभग एक फर्लांग लम्बी सड़क के ऊपर कागज के फूलों की बेहद मोह छत

है। दिन भर गन्दगी से सड़ांध छोड़ने वाली गली आज इत्र-फुलेल से इस तरह महक रही है जैसे गली में इत्र-फुलेल का कारखाना लगा हो। छोटे-छोटे बच्चे नये-नये कपड़े और टोपियाँ पहने इतने उत्साह से घूम रहे हैं कि शर्मा को उन पर अनायास लाड़ आ जाता है। मंत्री जी ने तो ऐसे ही एक गोल-मटोल बच्चे को गोद में उठा लिया, जो उनके कुर्ते पर इत्र लगा रहा था।

'कोई नहीं जानता ये किसके बच्चे हैं। इनकी माताओं को भी शायद न पता हो।' प्रकाश सहसा हें-हें करते हुए मंत्री जी के बगल में आते हुए कहता है।

'बच्चे भगवान का रूप होते हैं। इनके लिए कुछ करना चाहिए। सरकार इतने लोगों को वजीफा देती है, सुविधाएँ देती है, इन अभागों के लिए अभी तक इस देश में कुछ नहीं हुआ।'

एक प्रेस रिपोर्टर न जाने कहाँ से घुस आया और चलते-चलते ही मंत्री जी का इंटरव्यू करने लगा।

पुलिस के बैण्ड की तेज आवाज़ के बीच मंत्री जी अत्यन्त क्रान्तिकारी इंटरव्यू देने लगे। मंत्री जी के हटते ही जब वह पत्रकार लौट रहा था तो शर्मा ने देखा, प्रकाश ने उसकी बाँह थाम ली है और कह रहा है, 'कहो गुरू, ऐसा नहीं लगता कि मंत्री जी भी इस मुहल्ले में कुछ संतान छोड़ चुके हैं?'

पत्रकार जल्दी में था और 'क्यों नहीं, क्यों नहीं' कहता हुआ भीड़ में समा गया। शर्मा ने करवट बदली और एक नया दृश्य देखता है, आज बाज़ार बन्द है। हर कोठरी में अँधेरा है। मगर हर कोठरी के बाहर होंठ रँगे और अपनी औकात के मुताबिक अच्छे से अच्छे कपड़े पहने कोई-न-कोई तवायफ़ खड़ी है। निश्चल। पत्थर की मूर्ति की तरह। जैसे ड्यूटी दे रही हो। हर आँख में एक चमक है, ऐसी चमक जो किसी मोटे गाहक को पाकर भी नहीं आ सकती। सब स्त्रियाँ बड़े कौतूहल और अविश्वास से बारात की तरफ़ देख रही हैं और उनकी संतानें मारे उत्साह के एक-एक बाराती को दो-दो बार इत्र से सुवासित कर रही हैं।

'इन स्त्रियों को देखकर मेरा कलेजा फट रहा है।' प्रदेश का एक मंत्री जड़वत् खड़ी तवायफ़ों की तरफ़ गौर से देखते हुए बोला, 'सचमुच आज से पहले मैंने इस समस्या को जाना ही नहीं था।'

मंत्री जी के कई चमचे एक साथ मंत्री जी की बात तोते की तरह दोहराने लगते हैं 'सचमुच मंत्री जी, सचमुच।'

पूरी बारात ताक-झांक में व्यस्त हो गयी और तवायफ़ों के नारकीय जीवन के प्रति बहुत आर्द्र हो आयी।

कोठरियों के बाहर सज-धज कर खड़ी लड़कियों को देख कर शर्मा को नींद में ही बहुत उलझन हो रही थी। उसे लग रहा था बारात के तमाम लोग यही सोच रहे होंगे कि वह ऐसी ही किसी लौंडिया से शादी करने जा रहा है। उसकी इच्छा हो रही थी कि सजी-सँवरी सड़क के बीच खड़ा हो जाय और डेरेदार वेश्याओं के जीवन चरित्र और इतिहास पर एक संक्षिप्त भाषण दे डाले, मगर मौके का तकाजा ऐसा नहीं था। शर्मा के कानों और कलाइयों में बच्चे लोग इतना इतर पोत गये थे कि उसे अब उबकाई आने लगी। वह चुपचाप यह सब बर्दाश्त करता रहा और मन ही मन में उसे यह सोच कर बहुत ग्लानि हो रही थी कि बारात में प्रकाश की पत्नी के साथ कुछ और महिलायें भी हैं। उसे खेद हो रहा था कि वह उन महिलाओं को क्यों ले आया। यह सब प्रकाश का ही अतिरिक्त उत्साह था कि सबसे सपत्नीक आने का अनुरोध करता रहा। अब महिलाएँ थीं कि हर कोठरी के बाहर सज-धज कर खड़ी वेश्याओं को बड़े कौतुक से देख रही थीं, जैसे चिड़ियाघर में घूम रही हों। बीच-बीच में एक दूसरे को कुहनियाँ मार कर कुछ बता रही थीं। औरतों को इस प्रकार दिलचस्पी लेते देख उनके प्रति तवायफों की भी दिलचस्पी बढ़ी। वे भी उनके पहनावे और फूहड़ चाल पर अपनी-अपनी पड़ोसिनों से बात करने लगीं।

'उस मोटी को देख रही हो।' नवाबन ने बगल की कोठरी की तरफ़ झाँकते हुए सोनमो से कहा, 'पेटीकोट लम्बा है और साड़ी छोटी।'

सोनमी आज बाजार बन्द किये जाने से बहुत परेशान थी, बोली, 'ये सब डेरेदारनियों के चोंचले हैं। शादी रचाने चली हैं यह नहीं जानतीं कि चार-छह महीनों में ही चूतड़ पर लात मार कर निकाल दी जायेगी।'

'हाँ-हाँ क्यों नहीं।' नवाबन को यह सुन कर बड़ी तसल्ली मिली, बोली, 'लौट के यहीं क्यों आयेगी। काल गर्ल बन जायेगी।'

पूर्व की कोठरी में शकीला थक कर बैठ गयी थी, बोली, 'कलमुहियो सदियों बाद इस गली में बारात आयी है, कुछ तो अल्लाह परवर का शुक्रिया अदा करो।'

'तू सोच रही होगी वह दर्जी भी बारात लेकर आयेगा।' नवाबन ने कहा, 'मगर यह मत भूल काम निकलते ही वह चुटिया पकड़ कर यहीं छोड़ जायेगा।'

'तेरे कीड़े पड़ें, तू भूखो मरे।' दर्जी के नाम से शकीला बहुत आहत हो गयी और जाकर चुपचाप कोठरी में लेट गयी।

बातचीत कटु लगी तो शर्मा ने करवट बदल ली। दृश्य बदल गया।

बारात के आगे-आगे शहनाई बज रही थी। चारों ओर छुहारे और पैसे

लुटाये जा रहे थे। नोननी का बच्चा कुछ पैसे और छुहारे बटोर लाया तो उसका गुस्सा कुछ शान्त हुआ।

बारात अज़ीजन के दरवाज़े तक पहुँची तो पटाखे छुड़ाये जाने लगे। मुहल्ले के लौण्डे आतिशबाजी छोड़ रहे थे। धूम-धड़ाका सुन कर गन्दे पेशेवालियाँ भी झुण्ड बना कर जमा होने लगीं। नफ़ीस एक डण्डा लिये सिर्फ़ उन औरतों को ही खदेड़ने का काम कर रहा था। जहाँ भी दो-चार इकट्ठी हो जातीं वह डण्डे का इशारा करता। उससे सब डरती थीं, इधर-उधर खिसक जातीं। शर्मा नफ़ीस से मन ही मन बहुत प्रसन्न हो रहा था।

'यह हमारे मुल्क की पुलिस का भी कोई जवाब नहीं।' नसीबन कह रही थी, 'कभी हम लोगों को सताने के लिए छापे मारती है और कभी हमारी गलियों में दुल्हा लेकर चली आती है।'

'धीरे बोल खसमखानी।' शकीला बोली, 'एस० पी० से भी बड़े अफ़सर आये हैं। अज़ीजन ने पुलिस पर जाने क्या जादू फेरा है।'

'पैसा खिलाया होगा।' नसीबन बोली, 'पैसे से कुछ भी खरीद लो। पुलिस, नेता, दूल्हा।'

'बकवास बन्द करो।' शर्मा के होंठ बुदबुदाये।

शकीला ने पूछा, 'कितने में खरीदा होगा, अज़ीजन ने यह दूल्हा ?'

'एक लाख का तो लगता है।' नसीबन बोली, 'साले की किस्मत खुल गयी। अज़ीजन की पूरी जायदाद डकारने के बाद यह भी वही करेगा, जो लोग तवायफों के साथ करते हैं। इस लौंडिया को रहने के लिए कोठरी भी नसीब न होगी। मुझे तो लगता है चूस कर गुठली की तरह दरवाजे के बाहर फेंक देगा।'

शकीला की आत्मा को बहुत शान्ति मिली। बोली, 'सामनेवाली कह रही थी कि आज सबको खाना मिलेगा।'

'जरूर मिलेगा।' नसीबन ने कहा, 'डेरेदारनी नहीं चाहती होंगी कि उसका दामाद हम लोगों को जांघ खुजाते हुए देखे।'

'हाय अल्लाह, कब तो बारात खाना खायेगी और कब हम लोगों को नसीब होगा।' शकीला ने लम्बी आह भरते हुए कहा और बगल में तली जा रही पूड़ियों की खुशबू लेने लगी।

शर्मा कुढ़ते हुए बारात के साथ साथ जीना चढ़ जाता है। कमरे में एक शायर स्टूल पर खड़ा होकर सेहरा पढ़ रहा है। शर्मा को देखते ही अज़ीजन की बहनें और इन्दौर, भोपाल, उज्जैन आदि से आयी दूसरी रिश्तेदारनियाँ उसे घेर लेती हैं और आशीर्वाद देने लगती हैं। अचानक शर्मा को लगा, वह

कमरे में नहीं, नीचे खड़ा है। बारात घर के सामने लगी कुर्सियों पर बैठ गयी। मंत्री जी को बैठने की आदत नहीं थी। उनकी कोशिश थी कि वे किसी तरह भाषण देकर विदा ले लें, मगर वहाँ उनको पूछने वाला कोई नहीं था। प्रकाश था, वह बारात के साथ आयी औरतों को लतीफे सुना रहा था, जिससे तमाम औरतें हँसते हुए झुकती जा रही थीं।

ऊपर छत पर से दूसरी डेरेदारनियों की जवान लड़कियाँ और गुल की सहेलियाँ गा रही थीं

कोठे से बड़ा लम्बा हमारा बन्ना
दुलहन की बहनें रेल की लाइनें
बहनोई है रेल डिब्बा
कोठे से बडा लम्बा हमारा बन्ना।

कुछ देर बाद शर्मा को लगा, लडकियाँ नहीं, लता मंगेशकर बन्ना गा रही है।

गुल बहुत ही कीमती कुर्ता और गरारा पहने, फूलों और गहनों से लदी वेदी के नीचे शर्मा के साथ मसनद पर बैठी है। मसनद पर शर्मा के लिए भी जगह है। गुल की मौसियो, सहेलियों ने उसे घेर रखा है, मगर गुल गठरी बनती जा रही है। बीच-बीच में उसके कानों मे अम्माँ की आवाज पडती तो उसे रुलाई-सी आ जाती। अम्मा को अकेले छोड कर चले जाने के विचार मात्र से वह सिहर उठती है। पुरानी सहेलियों से लगातार बतियाते अम्मा की आवाज़ बैठ गयी थी। जब प्रकाश ने आकर बताया कि मंत्री जी ने कन्या-दान करने का निर्णय किया है तो वह मंत्री जी की तरफ लपकी और बोली, 'मुझे तो इतने वर्षों बाद मंत्री जी आज पहली बार एहसास हुआ है कि हिन्दुस्तान आजाद हुआ है।'

शादी की रस्में अदा हो रही है। एक तरफ फेरे हो रहे हैं, दूसरी तरफ़ निकाहनामा भी पढा जा रहा है। लग रहा है जैसे दो संस्कृतियाँ मिल रही है। दुल्हन के मुँह में पेडी और मिसरी दी जा रही थी। स्त्रियाँ सदका उतार रही है और अज़ीजन ने उसके पास जाकर उसके सर पर हाथ फेरा और बोली, 'बेटी अब हम तुम्हारे फर्ज से अदा हुए।' मगर तभी मंच पर मंत्री जी उपस्थित हो गये। उन्होने विधिवत् कन्यादान किया और एक मुख्तसर-सा भाषण, जिसका अभिप्राय था कि यह शादी कई मानों मे एक शुरुआत है। गंगा और यमुना के संगम की तरह पवित्र है और आने वाले वक्त की एक हल्की-सी झलक भी दे रही है। अब जात-पाँत और संकीर्णताओं से ऊपर उठ कर हमारा समाज राष्ट्रीय एकता की जिन्दा तस्वीर में बदल जायेगा।

मंत्री जी का भाषण खत्म होते ही तालियाँ बजीं और कारों का क़ाफ़िल

लौटने लगा। वी०आई०पी० लोगों के जाते ही बारात आधी रह गयी। मगर अभी कुछ विधायक बैठे हैं। भूख से व्याकुल तवायफों ने कारों को विदा होते देख सोचा कि अब खाना परोसा ही जाता होगा, मगर खाने में अभी देर थी। बारात के शेष लोग वेदी के इर्द-गिर्द कुर्सियाँ डाल कर बैठ गये थे।

शर्मा ने देखा, प्रकाश की बगल में एक मोटी तन्दुरुस्त महिला आकर बैठ गयी। वह इत्र से नहीं, किसी विदेशी सेन्ट से महक रही है।

'यह शादी किस रीति से हो रही है ?' उसने प्रकाश के कन्धे बेतकुल्लुफी से थपथपाते हुए पूछा।

प्रकाश ने पलट कर उस महिला की तरफ देखा और पूछा, 'आपका तआरुफ़ ?'

'हे हे हे ! आप बाहर से आये हैं, ऐसा लगता है।' वह स्त्री बोली, 'हमारे वो यहाँ के एम०पी० हैं।'

'एम०पी० ? वी०सी० तिवारी ?' प्रकाश ने अपने को सन्तुलित करते हुए कहा, 'मुझे लगता है शादी दोनों रीतियों से हो रही है और इसी में से एक तीसरी रीति निकलेगी। वैसे मुझे ज्यादा फ़र्क नहीं लग रहा है। जयमाल और अंगूठी एक ही चीज़ है। वेदी का सामान भी एक-सा है। एक तरफ नथ है दूसरी तरफ़ तिलक। बरी में सुहाग, चोया, कलावा सब कुछ है। मिलनी है तो सलामकराई भी। आप दुलहिन को इमामबाड़े ले जाते हैं, हम मंदिर।' एकाएक प्रकाश को लगा कि वह मिसेज तिवारी को अपनी जाति के बाहर मान कर बात कर रहा है। उसने इतने अरसे में जो देखा था, सब उगल दिया।

प्रकाश से दूर, गुल की बगल में बैठा शर्मा तमाम बातें सुन रहा है।

'आप किस जगह काम करते हैं ?' मिसेज़ तिवारी पूछती हैं।'

'इससे पहले एक छोटे से जिले का कलक्टर था, आज कल आपकी इनायत से होम में ज्वाइंट सेक्रेटरी हूँ।'

'आप दूल्हे की तरफ़ से आये होंगे।'

'जी हाँ, उसके बाप की भूमिका निभा रहा हूँ। वैसे उसका बचपन का दोस्त हूँ।'

यह बात मिसेज़ तिवारी को अच्छी नहीं लगी, बोली, 'जाने क्या जमाना आ गया है। हर कोई हर किसी का बाप बनने पर आमादा है।'

'आप ग़लत समझ रही हैं। दरअसल शर्मा के पिता इस शादी के लिए राज़ी न थे, आख़िर मुझे ही यह फ़र्ज सरअंजाम देना पड़ा।'

'आप तो यह फर्ज बखूबी निभा रहे हैं। मगर एक हमारे तिवारी जी हैं,

ठीक मौके पर चूक जाते हैं। इसी गुल को हम लोगों ने अपनी बिटिया की तरह पाल-पोस कर बड़ा किया और कन्यादान मंत्री जी कर गये।'

'मगर मंत्री जी का नाम तो तिवारी जी ही ने पेश किया था।'

'तिवारी जी की मति मारी गई है।' मिसेज तिवारी गुस्से में बोली, 'तिवारी जी का ऐसा स्वभाव न होता तो आज खुद मंत्री होते।'

'गुल को आप बचपन से ही जानती हैं ?'

'पाँचवीं छठी में थी, जब से हमारी बिटिया कमलेश के साथ पढ़ी है। एक हमारा ही घर था, जहाँ इसकी अम्मा बेखटके जाने देती थी।' मिसेज तिवारी ने प्रकाश के कान के पास झुकते हुए कहा, 'तिवारी जी को तो लड़की इतनी पसन्द थी कि वीरेन्द्र से शादी कर देते, मगर आप तो समझदार आदमी है, जानते ही होंगे, कल रिश्तेदार उँगली उठाते कि तिवारी जी ने लालच में आकर तवायफ के यहाँ लड़का बेच दिया।'

'गुल को शर्मा जैसे ही लडके की ही जरूरत थी।' प्रकाश बोला, 'उसे तो यह भी नहीं मालूम कि उसकी माँ की क्या हैसियत है।'

'शाबाश, बेटा।' शर्मा सपने मे बुदबुदाया।

'नही मालूम ?' मिसेज तिवारी प्रकाश के और पास झुक आयीं, 'छह तो मकान ही हैं। जेवरात की गिनती नहीं। भोपाल मे जो जमीन है वह अलग। लड़का तो रातोंरात लखपती हो गया।'

'मगर उसने तो एक भी पैसा दहेज में न लेने का फैसला किया है।' प्रकाश बोला। अन्दर ही अन्दर प्रकाश को भी शर्मा से ईर्ष्या होने लगी थी, जो पगड़ बाँधे मसनद पर बैठा था।

'अरे तुम भी भोली बातें करते हो!' मिसेज तिवारी एकाएक तुम पर उतर आयीं और प्रकाश की रान पर धौल जमाते हुए बोली, 'बुढ़िया अपने साथ तो ले नहीं जायेगी।'

'देखने में इतनी बुढ़िया भी नहीं लगती।' प्रकाश बोला 'औसत औरत तो इस उम्र में चलने-फिरने लायक नहीं रहती।'

मिसेज तिवारी ने गहनों से लदी-फंदी गुल को देखा तो बरबस बोल उठीं, 'बडी किस्मत वाली लडकी है। हमारे यहाँ तो लडका ढूँढ़ना जी का जंजाल है।'

शर्मा देख रहा था, बारात ऊपर भोजन के लिए सीढियाँ चढ रही है। प्रकाश उठने लगा तो उसके दूसरी ओर बैठी एक महिला ने बहुत सकोच से कहा, 'एक बात बतायेंगे भाई।'

प्रकाश पलट कर देखता है। महिला काफी अच्छी साडी पहने बैठी है।

कोई भी उस महिला को देखकर कह सकता है, ऐसे कपड़े शायद उसने आज ही पहने हैं। गौर से देखने पर प्रकाश महसूस करता है, महिला शायद नेत्रहीन है। प्रकाश कुछ पूछता इससे पहले ही मिसेज तिवारी ने कहा, 'यह गुल की मौसी हैं। बेचारी बिल्कुल बेसहारा औरत है। इसके तो प्राण ही गुल में बसते हैं।'

प्रकाश ने हाथ जोड़ दिये। बाद में शायद महसूस किया, यह तो उसने देखा न होगा, बोला, 'मैं हाथ जोड़ कर प्रणाम करता हूँ। मैं दूल्हे का मित्र हूँ।'

'इधर आओ ज़रा।' उस महिला ने कहा और प्रकाश के सर पर हाथ फेरने लगी। प्रकाश को वे हाथ बहुत ममतामय लगे। उसने सर उठाया तो एक गर्म आँसू उसके गाल पर टपक पड़ा।

'अरे आप रो रही हैं। आज तो बहुत खुशी का दिन है।' प्रकाश बोला।

मौसी ने अपनी उँगली से अपना गीला गाल तुरन्त पोंछ लिया। जैसे उससे भीषण गलती हो गयी हो। प्रकाश ने अपनी जेब से रूमाल निकाला और मौसी के गाल पोंछ दिये।

'नाटकक्कार।' शर्मा सपने में बुदबुदाया।

'ये तुम्हारा दोस्त है, बड़ी अच्छी बात है।' मौसी कहती है, 'तुम लोग खुश रहो। आँखों से जिन्दगी भर देखो।'

'बेचारी!' मिसेज तिवारी उठती हुई बोलीं, 'यह हमेशा यही आशीष देती है।'

'बहुत अच्छी आशीष है यह।' प्रकाश कहता है, 'इनके हाथों में जो ममता है वह एक माँ के ही हाथों में हो सकती है।'

मौसी की पलकें भीग गयीं। टप्-टप् आँसू झरने लगते हैं।

प्रकाश पर उन आँसुओं की तीव्र प्रतिक्रिया हुई। उसे लगा, इस पूरे माहौल में सब मौसी की ओर से उदासीन हैं। उसे एकाएक लगा, उसे मौसी के लिए कुछ करना चाहिए।

'मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ?' प्रकाश पूछता है।

'आप यह बताइये दूल्हा कैसा दिखता है।'

'बहुत सुन्दर है।' प्रकाश कहता है। शर्मा दाद देता है, वाह बेटे।

'उसका क़द कितना है?'

'पौने छह फीट।'

'रंग?'

'गंदमी।'

'बाल ?'

'काले और लम्बे।'

'चश्मा पहनता है ?'

'न। 'प्रकाश बोला, 'अंडा भी नहीं खाता।'

'प्रोफेसर है ? पढ़ाता है ?'

'हाँ।'

'कितना कमाता है ?'

'नौ सौ।'

'उसके माँ-बाप क्यों नहीं आये ?'

'उन्हें नहीं आना था। मैं जो आ गया हूँ उसका बाप बन कर।'

मौसी हँसी। बोली, 'आप बहुत अच्छे दोस्त हैं।'

'बेशक।'

'एक काम करेंगे आप ?'

'जरूर करूँगा।'

'मैं दूल्हे को देखूंगी।'

प्रकाश को बहुत आश्चर्य हुआ कि यह अन्धी औरत कैसे देखेगी शर्मा को। उसने पूछा, 'उसे बुलवाऊँ ?'

'हूँ'।

प्रकाश उठा और शर्मा को गोद में उठा लाया। सब लोग स्तम्भित रह गये कि प्रकाश क्या करने जा रहा है, मगर उसने शर्मा को गठरी की तरह उसी कुर्सी पर रख दिया जहाँ वह स्वयं बैठा था।

'मौसी दूल्हे को उठा लाया हूँ।'

'दूल्हा खूब महक रहा है।' मौसी बोली, 'जरा मेरे पास आओ बेटा।'

शर्मा मौसी की तरफ झुकता है। मौसी ने अपना दाहिना हाथ शर्मा के सर के पीछे टिका दिया और बायें हाथ से शर्मा के मुँह पर हाथ फेरने लगी। मौसी ने शर्मा का माथा, नाक, कान, होंठ, गाल, गर्दन सब धीरे-धीरे सहलाये, शर्मा को कँपकपी सी होने लगी।

प्रकाश देख रहा था शर्मा को टोहते हुए मौसी का चेहरा एक फूल की तरह खिलता जा रहा था। धीरे-धीरे। उसने कभी इस तरह किसी फूल को खिलते नहीं देखा था।

आखिर मौसी ने शर्मा के माथे को चूम लिया और उसके बाल सहलाने लगी। सहलाते-सहलाते वह मासूमियत से उसके बाल नोचने लगी तो प्रकाश ताली बजाते हुए लोट-पोट हो गया, 'असली हैं, मौसी, असली हैं।'

मौसी का चेहरा और खिल गया। लंबी आँखों वाले चेहरे पर प्रसन्नता का एक ऐसा भाव आ गया कि प्रकाश देखता ही रह गया। प्रकाश शर्मा को लेकर जीना चढ़ गया। जीना तंग था। शायद भोजन की व्यवस्था ऊपर ही रखी गयी थी। यह जीना प्रकाश का पहचाना हुआ था, मगर आज रोशनी से जगमगा रहा था। जीने पर कारपेट बिछा दिया गया था। ऊपर एक फानूस लटक रहा था। बायीं ओर गुल के कमरे पर चाक से 'प्रवेश निषिद्ध' लिखा हुआ था। दायीं ओर वाले कमरे में उम्दा कालीन बिछे थे और कुछ बूढ़े बड़ी दिलचस्पी से कमरे में टँगी अज़ीज़न की तस्वीरें देख रहे थे। उनमें एक सांसद, एक विधायक, एक उर्दू के मशहूर शायर और एक हिन्दी के व्यंग्य लेखक थे।

शर्मा उनके पीछे जा कर खड़ा हो जाता है।

'एक ज़माने में बाई जी का ऐसा रुतबा था, बिना विज़िटिंग कार्ड भेजे अन्दर घुसना मुश्किल था।" सांसद ने कोई पुरानी याद कुरेदते हुए कहा, 'मगर साहब हमारे ज़माने में जो रुतबा अज़ीज़न बाई ने पैदा किया वह और किसी तवायफ़ को नसीब न हुआ।'

'आपने अज़ीज़न से जयदेव का गीत गोविन्द सुना होगा तो भूले न होंगे।' शायर साहब ने कहा।

'अरे साहब, हम आपकी ग़ज़लें भी बाई जी से सुन चुके हैं, ग्वालियर में।' हिन्दी के सुप्रसिद्ध व्यंग्य लेखक पीछे से बोले, "सन् ५० के आस-पास मैं एक युनिवर्सिटी के अध्यक्ष जी को बाई जी के यहाँ ले गया था। वे दो-एक पैग लगाये थे, वहीं पसर गये, मैं तो बाई जी से शादी करूँगा।'

हल्का-सा ठहाका उठा। प्रकाश अपने आस-पास देखता है और शर्मा का हाथ दबाता है। छत पर बेशकीमती झाड़फानूस ज़रूर लटक रहे हैं, मगर पुताई कराते समय भी धूल साफ़ नहीं की गयी। तिपाई पर इत्रदान और पान की तश्तरी रखी है। तस्वीरों के फ्रेम बहुत पुराने स्टाइल के हैं। लोग बाग तस्वीरों में अपना अतीत ढूँढ रहे हैं।

'मगर बड़ी खुशी की बात है अब ये तवायफें अपनी लड़कियों से गवाती नहीं, उनकी शादी कर देती हैं।' सांसद महोदय ने कहा, 'मगर गुल तो पढ़ने में भी बहुत तेज है। मैंने इतनी ज़हीन और वेल बिहेव्ड लड़की नहीं देखी। मैं तो अपने लड़के की शादी करने को तैयार था, मगर पड़ाइन को मंज़ूर न हुआ।'

'आपके एक चुनाव का पूरा खर्चा आपकी समधिन ही उठा लेती।' व्यंग्य लेखक महोदय बोले।

'मगर मुझे एक चीज में बहुत कोफ्त होती है। अब यही देख लीजिए। बाई जी बारात को यहाँ तक लाने के लिए अन्त तक अड़ी रहीं और खाने का इन्तजाम भी बाहर का न करने दिया। अब ये तवायफें खाना क्या पकायेंगी। मगर बाई जी जिद पकड़े हुए हैं।"

'तो क्या भोजन भी तवायफे ही बना रही है ?' उर्दू के शायर महोदय ने अद्धा निकाला और मुँह पर लगा कर पीने लगे। फिर उन्होंने इलायची का एक टुकड़ा उठाया और कुर्सी पर पसर कर शेर गुनगुनाने लगे।

'मेरे चेहरे मे गम आशकारा नहीं
यह न समझो कि मैं गम का मारा नही।'

प्रकाश की अचानक खाने में दिलचस्पी जगी। वह तुरन्त छत की सीढ़ियाँ चढ़ गया। शर्मा उसके पीछे सीटी चढ जाता है। कोई उसे पहचान नहीं रहा कि वह दूल्हा है। छत पर अलग-अलग साइज की दस-पन्द्रह मेज-कुर्सी लगी है। उनके ऊपर तरह-तरह के मेजपोश बिछे हैं। मेजो पर तरह-तरह की क्राकरी सजी है। शायद क्राकरी भी बाहर से नही मगवायी गयी। अचानक शर्मा को अज़ीज़न बी पर बहुत क्रोध और बहुत प्यार एक साथ आ गया।

छत खुली थी मगर इसके बावजूद धुएँ के मारे बुरा हाल है। चूल्हे, चौके मे लगी बूढ़ी तवायफें आग फूंक-फूंक कर बेहाल हो रही है। अचानक इतनी मशक्कत उठाने से उनके बाल बिखर गये है, आँखों मे पानी भर आया है। एक स्त्री ने तलने के लिए ज्यों ही पूड़ी कड़ाही मे फेंकी तेल के छींटे उसके हाथ पर पड़ गये और वह वहीं जमीन पर लेट कर छटपटाने लगी। दूसरी स्त्रियाँ मदद के लिए आगे बढ़ीं कि पता चला सब्ज़ी मे नमक दोबारा पड़ गया है। शर्मा एक कोने में खड़ा यह सब देख कर मज़ा ले रहा है। अचानक प्रकाश को एक तरकीब सूझी और उसने चार सौ रुपये देकर नफीस को क्वालिटी से कुछ बख्शा लाने ड्राइवर के साथ भेज दिया। उसे समझते देर न लगी कि यह भोजन आधी रात के पहले तैयार न होगा। दूसरे, बूढ़े लोग अगर पूड़ी खाने का प्रयत्न भी करेंगे तो एकाध दाँत खो बैठेंगे।

तभी धड़धड़ाती हुई अज़ीज़न चली आयी। ऊपर फैला हुआ काम देख कर आगबबूला हो गयी, 'तुम लोगों ने क्बाड़ा कर ही दिया। हजरीबी, मैं कब से कह रही थी कि हलवाई बुला लो।'

'घबड़ाओ नहीं,' हजरी बी ने दाँत निपोरते हुए कहा, 'साव भी तो कोई

चीज़ होती है बेगम साहिबा। इन बेचारियों को खाना पकाने का इस ज़िन्दगी में मौका मिलेगा या नहीं अल्लाह को ही मालूम होगा।'

'यह अच्छी रही।' अज़ीज़न बिगड़ गयी, 'यह तजुर्बा मेरे साथ ही करना था। और ये पूड़ियाँ हैं या चमड़ा।' उसने एक पूड़ी को हाथ से तोड़ने की कोशिश की, 'इसमें लेई मिला दी गयी है या सीमेन्ट। बताओ इस वक्त मैं क्या इन्तजाम करूँ?'

'घबराइये नहीं, हो जायेगा सब इंतज़ाम।' प्रकाश आगे बढ़ते हुए बोला, 'ये सब जितने चाव से काम कर रही हैं, उसके सामने बाकी सब चीज़ें झूठी हैं।'

अज़ीज़न ने प्रकाश को दोनों हाथों से सर पर से थाम लिया और उसके सर पर हाथ फेरते हुए बोली, 'आज वे होते तो यहाँ का माहौल ही दूसरा होता। यह कहीं औरतों के करने का काम है?'

'सब ठीक हो जायेगा।' प्रकाश बोला, 'मुझे यह सब बहुत अच्छा लग रहा है।'

अजीज़न औरतों को कुछ समझा कर नीचे उतर गयी। प्रकाश ने दो गिलास मँगवाये और एक अंधेरे कोने में खड़ा होकर शर्मा के साथ ह्विस्की पीने लगा। ऊपर से पूरा बाज़ार दूर-दूर तक दिखायी दे रहा है। पूरी गली जगमगा रही है। गर्दन पर रूमाल बाँधे बहुत से नौजवान नीचे बारात के लिए रखी हुई कुर्सियों पर पसर गये हैं। भूले-भटके गाहक लोगों की आमद-रफ़्त भी शुरू हो गयी है। कोई-कोई तवायफ़ धीरे से दरवाज़ा खोलती है और ग्राहक के साथ कमरे में चली जाती है। क्षणभर के लिए ढिबरी की रोशनी उभरती फिर दरवाज़ा बन्द हो जाता। आस पास बैठी दूसरी औरतें आवाज़ें कसने लगतीं।

यह एक ऐसी सड़क है जहाँ कोई भी सवारी आती-जाती दिखायी न दे रही है, न कार, न स्कूटर, न टैक्सी। एक रिक्शा काफी देर बाद दिखायी देता है, उसमें एक आदमी गठरी बना-सा बैठा है। शायद ज्यादा पी गया है। रिक्शा वाले की समझ में नहीं आ रहा था, इस सवारी के साथ क्या सुलूक करे।

नफीस लौट आया तो प्रकाश ने पूरा सामान मेज़ पर लगा दिया। तवायफों का मन रखने के लिए उसने थोड़ी सब्जियाँ, रायता, दाल, दहीबड़े

वगैरह भी मेज पर सजा दिये और होटल के सामान के सब डिब्बे पिछवाड़े से सडक पर फेंक दिये। इतमीनान से अपना गिलास खत्म कर वह नीचे जाकर मुअज्जिज मेहमानों को बुला लाया। शायर साहब प्रकाश का बाजू पकड़ कर बोले, एक शेर इरशाद है :

यों दिखाता है आँखें हमें बागबान
जैसे गुलशन पर कुछ हक हमारा नहीं।

सब लोग बैठ गये तो एक सोलह-सत्रह साल की लड़की न जाने कहाँ से नमूदार हो गयी और आदाब अर्ज करने के बाद अचानक कमर मटकाते हुए सस्ते फिल्मी गाने गाने लगी। तमाम लोग अब तक काफी ऊब चुके हैं। लड़की को देखकर विशेष कर बूढ़े लोग काफी सक्रिय हो जाते है। लड़की सुन्दर है, जवान है और आवाज़ मे भी कशिश है। अपने से बड़े साइज़ का पिशवाज पहने है। गाते हुए वह ज्योंही कमर मटकाती है बूढ़े लोग कुछ ज्यादा ही आनन्दित हो जाते है।

शायर साहब तो खाना भूल गये। बोले, 'इधर आओ बिटिया।' उत्तर में लड़की ने आँख मार कर कमर मटका दी।

'इधर आओ बिटिया।' शायर साहब बोले, 'एक गजल भी सुना दो।'

'आप प्रेम जौनपुरी साहब हैं न।' वह बोली, 'मैं आपकी ही गज़ल सुनाती हूँ।' और उसने शुरू किया

नीली नज़रों के वार ने मारा
जीत बन बन के हार ने मारा।

प्रेम जौनपुरी साहब ने दिमाग पर बहुत दबाव डाला कि उसने यह गजल *कब लिखी थी, लिखी भी थी या नहीं।* मगर पहला ही शेर इतना जम गया और विधायक जी ने प्रेम जौनपुरी की रान पर हाथ मारा तो प्रेम जौनपुरी ने मान लिया कि जरूर उसने बचपन में ऐसा कुछ लिखा होगा :

उनके इनकार से जिया लेकिन
उनके कौलो करार ने मारा

प्रेम जौनपुरी पर इस शेर का कुछ ऐसा असर हुआ कि उसने अपने कुर्ते के तमाम बटन खोल दिये। दरअसल दारू भी जरूरत से ज्यादा अन्दर जा चुकी थी और जब लड़की ने अन्तिम शेर पढ़ा तो उसे विश्वास हो गया कि गजल उसी की है। अन्तिम शेर था —

उनका वादा न था मगर जौनपुरी
फिर भी आज इन्तजार ने मारा

देखते-देखते प्रेम जौनपुरी साहब ने अपना कुर्ता तार-तार कर दिया। गिरेबान से पकड़ कर खुद ही चीर दिया। जितना आसानी से कुर्ता फटता चला गया, उससे यह भी लग रहा था, कपड़ा बहुत बोसीदा हो चुका है। कुछ इस बात का भी प्रेम जौनपुरी साहब ने फ़ायदा उठाया। आस्तीन भी फाड़ दी। इस सब के बाद वे एक बहुत मैली बनियान पहने आलू मटर खाने लगे।

प्रेम जौनपुरी साहब की कुर्बानी से महफ़िल में उत्तेजना आ गयी। ग़ज़ल का असर देख कर लड़की प्रेम जौनपुरी की दूसरी ग़ज़ल गाने लगी। मगर प्रेम जौनपुरी ग़ज़ल से बेनियाज चुपचाप खाने पर पिल गये थे। फाल्गुन के दिन थे। प्रेम जौनपुरी की बाँहों और छाती पर सफेद बाल रोंगटों की तरह खड़े हो रहे थे। सांसद जी ने अपना शाल उनके कन्धों पर डाल दिया और बहुत ही मधुर मुस्कराहट फेंक कर विदा हो गये। उनके जाते ही उनके चमचे तथा उनकी गाड़ी में लिफ़्ट पाने वाले दूसरे लोग जल्दी-जल्दी हाथ धोने लगे।

प्रेम जौनपुरी खाना खा कर उठा और नीम के चौतरे की तरफ़ चल दिया। चकैया नीम के चौतरे पर एक आदमी लगातार कै कर रहा है। वह और कोई नहीं, प्रेम जौनपुरी का शागिर्द कपिल ही है। कपिल के पिता बारात में आये हैं। वह खुद बारात के स्वागत के लिए नहीं आया था और चौतरे पर बैठा देर से अपने उस्ताद का इन्तजार करता रहा था। जुनूने इश्क में वह बार-बार, रह-रह कर मिर्ज़ा गालिब का शेर पढ़ रहा था :

ज़िन्दगी यों ही गुज़र ही जाती
फिर तेरा, फिर तेरा फिर तेरा
रहगुजर याद आया। रहगुज़र····

'दरवाज़े पर दस्तक हुई तो शर्मा हड़बड़ा कर नींद से उठ बैठा। उसे समझते देर न लगी कि उसने एक खूबसूरत सपना देखा है। शर्मा ने उठकर दरवाज़ा खोला तो सामने एक छात्र खड़ा था। उसने खबर दी कि युनिवर्सिटी में बहुत उत्तेजना फैली हुई है कि कल रात एक लड़की का रेप हो गया। नव दम्पति सिनेमा देखकर लौट रहे थे कि कुछ मुसलमानों ने औरत को रिक्शा से जबरन उतार लिया। बलात्कार के बाद लड़की का शव सरस्वती घाट पर फेंक आए। शर्मा बहुत अच्छा सपना देखकर उठा था। सपना क्या था, शादी का वीडियो कैसेट था। उसका मन खिन्न हो गया। शहर की फ़िज़ा लगातार बिगड़ती जा रही थी। उसने अखबार देखा, उसमें ऐसी कोई खबर न थी।

शर्मा का अखबार में मन न लगा तो वह चाय पीने के इरादे से ढावे पर चला गया। ढावे में एक नयी खबर सुनने को मिली कि कल कोट किशन चन्द के तीन बच्चे स्कूल से घर नहीं पहुँचे। शर्मा का माथा ठनका। उसने कहा, 'अखबार में तो ऐसी खबर नहीं छपी।'

ढावे पर लोई ओढ़े एक आदमी बैठा चाय पी रहा था। वह भाषण की मुद्रा में कह रहा था, 'मुल्क में नये औरंगजेब पैदा हो गये हैं। अलाउद्दीन खिल्जी का जमाना आ गया है। अब हमारे बच्चे, हमारी बहू बेटियाँ सुरक्षित नहीं। कल सरेआम सड़क पर रेप हो गया। रेप के बाद मियाँ लोगों ने शव फेंक दिया सरस्वती घाट पर और पुलिस कह रही है लड़की को उसके ससुराल वालों ने मार कर फेंक दिया।'

शर्मा एक कोने में बैठ गया। वह सिगरेट का आदी नहीं था, मगर उसने महज समय काटने के लिए एक पैकेट सिगरेट भी खरीद लिया।

'देश के दो टुकड़े भी हो गये, मगर फिरकापरस्ती की समस्या जस की तस है। इस कौम की दाद देनी पड़ेगी, अपना अलग मुल्क भी बना लिया और हिन्दुस्तान में पहले से भी अधिक संख्या में हो गये।'

'हिन्दुओं को भी चार शादियों का मौका दीजिए तो देखिये हिन्दू किस रफ्तार से बढ़ते हैं।' शाल वाले व्यक्ति की बगल में ही एक मसखरा किस्म का लड़का चाय पी रहा था, आँखें मिचमिचाते हुए बोला, 'अपने यहाँ तो एक शादी भी दुश्वार होती जा रही है।'

'यही हाल है भैया जी।' लोई वाला बोला, 'हिन्दू को नसबन्दी का शौक चर्राया है और इधर मुसलमान चार-चार औरतों से बच्चे पैदा कर रहा है। अगर यही हाल रहा तो वह दिन दूर नहीं, जब हिन्दू अपने ही देश में अपने ही गौरवमय देश में अल्पसंख्यक हो जायेगा।'

'आप सुबह-सुबह फ़िज़ा में ज़हर घोल रहे हैं।' शर्मा झुँझला कर बोला, 'आपका ज़ेहन सड़ गया है। आप जिस देश के गौरव की बात कर रहे थे, उसने आपको यही सिखाया है कि औरतों का, सम्पूर्ण नारी जाति का अपमान करो। आपके लिए औरत सिर्फ एक मादा है।'

'ग्यारह-ग्यारह बच्चे पैदा करें और हम उन्हें महान कहें?' लोई वाला व्यक्ति तैश में आ गया, 'एक औरत से ग्यारह, चार औरतों से चवालीस। पैंतालीस, छियालीस, जितना आप में दम हो।'

'छि।' शर्मा ने मुँह बिचकाया, 'मुझे बहुत अफसोस है, आप कितनी गन्दी भाषा में बोलते हैं। पहले यह बताइये कि क्या मुसलमान औरतों की संख्या मुसलमान मर्दों से चार गुना है? मुआफ कीजिए, मुसलमान औरतों की गर्द,

मुसलमान मर्दों से कम है। अगर एक मुसलमान चार शादी करेगा तो बताइये कितने मुसलमान अविवाहित रह जाएँगे ? अगर गणित के तर्क से भी देखा जाय तो प्रत्येक मुसलमान की एक भी शादी नहीं हो सकती।'
'इसीलिए तलाक के बहाने रोटेशन चलता रहता है।' लोई वाले आदमी ने जोरदार ठहाका लगाया।

इस बहस को सुनने के लिए ढाबे में बैठे दूसरे लोग, जिनमें अधिकांश छात्र थे, पास सरकने लगे। जितेन्द्र मोहन की बात से माहौल बदला। प्रोफेसर ने कहा, 'हमारी संस्कृति में कहीं घृणा को स्थान नहीं मिला। आप ऐसी बातें कर के सिर्फ अपनी संस्कृति का उपहास उड़ा रहे हैं।'

लोईधारी सज्जन जो इत्मीनान से चाय पीते हुए लोगों पर अपनी मान्यताएँ आरोपित कर रहे थे, सहसा तन कर खड़े हो गये, 'मुआफ़ कीजिए आप के कितने बच्चे हैं ?'

'मैं अभी अविवाहित हूँ।' शर्मा ने कहा।

'आपकी उम्र का मुसलमान अब तक आधा दर्जन बच्चे पैदा कर चुका होता।' लोईधारी सज्जन ने एक और चाय का आदेश दिया और जितेन्द्र मोहन के सामने बैठ गया, 'आप रह किस दुनिया में रहे हैं ? '

'आप ही की दुनिया में रहने को मजबूर हूँ।' प्रोफेसर ने कहा, 'आप कभी गये हैं किसी मुस्लिम बस्ती में ? कभी देखा है वे लोग किन हालात में रह रहे हैं ?'

'गया हूँ न जाऊँगा। इतना ज़रूर जानता हूँ कि हर मुसलमान क्रिकेट की टीम पैदा करता है, उससे कम नहीं। आप लोग शतरंज की टीम पैदा करते हैं। मुसलमान को अपनी कौम की चिन्ता है और आपको अपने रहन-सहन की। आपके यहाँ तो औरतों ने अपने बच्चों को स्तन का दूध पिलाना छोड़ दिया, कहीं फिगर न बिगड़ जाये।'

लोईधारी ने अपने आसपास बैठे लोगों की तरफ एक विजेता की तरह देखा, 'आप लोग 'फिगर' का सौन्दर्य देखते रह जाएँगे। ट्रेजिडी यही है कि हिन्दू आज बहुत स्वार्थी हो गया है, बीवी की फिगर की चिन्ता में अधमुआ होता जा रहा है या परिवार की सुख सुविधाओं की चिन्ता में डूबा हुआ है। मैं मुसलमानों की दाद दूँगा कि प्रत्येक मुसलमान अपनी कौम के बारे में पहले सोचता है, परिवार के बारे में बाद में। यही फर्क है एक हिन्दू और एक मुसलमान में। हिन्दू निरोधवादी हैं, मुसलमान विरोधवादी। विस्तार वादी। आपके एक बच्चे के जवाब में वह देश को एक दर्जन बच्चे दे रहा है। आप रह किस दुनिया में रहे हैं श्रीमान ?'

छोटी नौकरी के लिए मुहताज हो जाएँगे। सरकार उनकी होगी, आप उनकी प्रजा हो कर रह जाएँगे। जिस रफ्तार से वे बढ़ रहे हैं, उसी रफ्तार से आप कम हो रहे हैं।'

'आप का सोचने का दायरा बहुत संकुचित है।' शर्मा बोला, 'इतने वर्षों में मुस्लिम जनसंख्या में एक प्रतिशत भी सानुपातिक वृद्धि नहीं हुई। क्या लाभ हुआ चार शादियों का और ग्यारह बच्चे पैदा करने का? ग्यारह मे आधा दर्जन तो पाँच की उम्र तक नहीं पहुँच पाते। जो किसी तरह मौत को चकमा दे जाते हैं, टी० बी०, पोलियो और दूसरी बीमारियों के शिकार हो जाते हैं।'

'जाइए उनका इलाज कीजिए।' लोईधारी सज्जन बोला, 'वे भी खुदा को प्यारे हो गये तो आप को वोट कौन देगा?'

'मुझे उनका वोट नहीं चाहिए। वे भी देश के उसी प्रकार नागरिक हैं जैसे आप। आपके संविधान ने उन्हें वे तमाम अधिकार दिये हैं, जो आप को दिये हैं। अशिक्षा ने उन्हें दबोच रखा है। मुस्लिम बस्तियों का एक चक्कर लगाइए तो आप को मालूम होगा, वे 'सब-ह्यूमन' स्तर पर जी रहे हैं। अनेक घरों के दालान में आपको पोलियो से ग्रस्त मासूम बच्चे दिखायी देगें, और तपेदिक से छटपटाते नौजवान।'

जनपक्ष शर्मा की तरफ हो रहा था। लोई धारी सज्जन परेशान हो उठे। वे बार-बार मेज़ पटकते, पैर पटकते। आखिर उसने तरकश से अन्तिम तीर निकाल लिया, 'लगता है आप कम्युनिस्ट हैं। मेरी नज़र में यह एक गद्दार कौम है। सन् बयालीस में उनकी क्या भूमिका थी, मालूम होगा आपको।'

प्रोफेसर हँसा, 'जाइए किसी दूसरे ढाबे पर और समाज में ज़हर फैलाइए। यहाँ आपकी दाल न गलेगी। यह विश्वविद्यालय का क्षेत्र है। आप जैसे बीसियों भाड़े के टट्टू यहाँ से पिट कर निकले हैं। जाइए अपना रास्ता नापिए, वरना पछताइएगा। समाज में विष फैलाने के लिए आप जैसे देशद्रोही बहुत सस्ते में मिल जाते हैं। किसकी दलाली करने आए हैं आप?'

लोईधारी आप से बाहर हो गया। उसने प्रोफेसर का गिरेबान थाम लिया, 'साले, हरामज़ादे, मुसलमानों के दलाल।' उसने देखते-देखते प्रोफेसर के मुँह पर एक मुक्का जड़ दिया। प्रोफेसर सम्भलता इससे पहले ही एक दूसरे आदमी ने उठकर शर्मा की छाती पर घूँसों की बौछार कर दी। शर्मा का होंठ कट गया। नाक से खून बहने लगा।

छात्रावास के कुछ लड़के ढाबे की तरफ आ रहे थे। उन्होंने अजनबी लोगों से शर्मा को पिटते देखा तो शर्मा के बचाव के लिए भागे। लड़कों को देख

कर लोईधारी और उसका साथी भाग लिए। लड़के उनके पीछे भागे, मगर वे कट्टा दिखाते हुए भागने में सफल हो गये।

विश्वविद्यालय में यह खबर फैलते देर न लगी कि कुछ गुण्डे शर्मा को पीट कर भाग निकले। फैलते–फैलते इस खबर में यह भी जुड़ गया कि शर्मा के ऊपर गोली भी चली, मगर वह बच गया। शाम तक इस खबर का अंतिम मसौदा भी तैयार हो गया कि मुसलमानों ने प्रोफेसर पर कातिलाना हमला किया।

प्रोफेसर अस्पताल से पट्टी करवा के लौटा तो उसके घर पर पत्रकारों, मित्रों और छात्रों की भीड़ लगी थी। उसे ज्यादा चोट नहीं आई थी। होंठ कट जाने से और नाक में चोट आने से चेहरे पर पट्टियाँ बँधी थीं। वह एक छात्र के साथ रिक्शा से उतरा तो घर पर इतनी भीड़ देख कर घबरा गया।

'जितेन्द्र मोहन शर्मा !' एक छात्र ने आवाज उठाई।

'जिन्दाबाद ! जिन्दाबाद !'

'पैट्रो डालर।'

'हाय हाय।'

'भारत माता।'

'जिन्दाबाद !'

शर्मा ने ये नारे सुने तो चकित रह गया। उसे लगा, जो लोग उसे पीट कर भाग गये थे, वे दोबारा उसके घर पर चले आये हैं। इस भीड़ में कई अजनबी चेहरे थे, मगर उसके छात्र भी थे। वह सीधा घर में घुस गया और साथी प्रोफेसरों के साथ अन्दर चला आया। बाहर नये-नये नारों की टकसाल खुल गयी थी।

प्रोफेसर के सर में हलका दर्द था। उसने साथियों से मुक्त होते ही नींद की गोली ली और सो गया।

सुबह दरवाजे भड़भड़ाये जाने की आवाज से उसकी नींद खुली। कोई आदमी बेसब्री से घंटी बजा रहा था और दरवाजा पीट रहा था। शर्मा हड़बड़ा कर उठा, देखा सामने शुक्ला दम्पती खड़े थे। उनके हाथ में ताजा समाचार पत्र था।

'बधाई शर्मा जी।' मिसेज शुक्ला ने प्रोफेसर के सामने अखबार फैलाते हुए कहा, 'आपकी तस्वीर छपी है।

शर्मा ने देखा मुख पृष्ठ पर उस की तस्वीर थी। चेहरे पर पट्टियाँ बँधी थीं। नीचे शीर्षक था, विश्वविद्यालय में दो सम्प्रदायों के बीच झगड़ा। प्रो०

शर्मा पर गुण्डों का कातिलाना हमला।

प्रोफ़ेसर मुस्कराया, "मगर यह झगड़ा तो एक ही सम्प्रदाय के लोगों के बीच हुआ था।'

शुक्ला दम्पती एक दूसरे की तरफ़ देखकर मुस्कराये और शर्मा को अपने यहाँ नाश्ता करने का निमन्त्रण दिया, "आप अकेले नहीं हैं। सारा अध्यापक समुदाय आप के साथ है। आप घबराइए नहीं।" शुक्ला जी ने शर्मा के कंधे थपथपाते हुए कहा, "यहाँ डर लगता हो तो हमारे यहाँ शिफ़्ट कर जाइए।"

"मैं तो एक दम नार्मल हूँ।" शर्मा ने कहा, "यह जो पट्टियाँ बँधी हैं, यह तो कम्पनी की मशहूरी के लिए हैं।"

अगल बगल से दूसरे अध्यापक भी आ गये। सब लोग तफ़सील से जानना चाह रहे थे कि झगड़ा कैसे हुआ। कोई भी शख्स यह मानने को तैयार नहीं था कि प्रोफ़ेसर के समुदाय के लोगों ने ही उसकी पिटाई की थी।

"हिन्दू भला आप पर क्यों हमला करेंगे?" श्रीवास्तव जी ने शंका प्रकट की।

"दरअसल यह हमला भी नहीं था। बहस करते करते कुछ लोग उत्तेजित हो गये और मारामारी हो गयी।"

"आप कुछ छिपा रहे हैं।" श्रीवास्तव जी ने कहा, "जब सारा शहर साम्प्रदायिकता से सुलग रहा है, हिन्दू भाई आप से क्यों उलझेंगे?"

प्रोफ़ेसर तफ़सील में नहीं जाना चाहता था। वह समझ रहा था, तमाम लोग गुल का मसला उठाना चाहते हैं, वह गुल के बारे में कुछ भी कहने की मनःस्थिति में नहीं था।

शुक्लाजी के यहाँ भी यही माहौल रहा। मिसेज शुक्ला, ने जो स्वयं प्राध्यापिका थीं, बहुत परिश्रम से नाश्ता तैयार किया था। इस बीच वे लोग नहा धोकर तैयार हो गये थे, जबकि शर्मा वैसे ही मुँह धोकर चला आया था। शर्मा ने सुना था, इन लोगों ने भी प्रेम विवाह किया था। मगर दोनों एक ही जाति के थे, इसलिए कोई बवाल न हुआ। दोनों ने कुछ ही वर्षों में घर बना लिया था। सुख सुविधा के तमाम सामान जुटा लिए थे। बातचीत में श्रीमती शुक्ला बहुत उन्मुक्त थीं, बोलीं, "शुक्ला जी तो आपकी उमर में साँड की तरह व्यवहार किया करते थे।'

शुक्लाजी जो गैया की तरह शांत और सन्तुष्ट भाव से टोस्ट खा रहे थे, अचानक वाचाल हो गये, "जैसा व्यवहार मैं शादी से पहले किया करता था, शुक्लाइन शादी के बाद करती हैं।"

शुक्लाइन ने लज्जा का अभिनय करते हुए मुँह फेर लिया, "यह ऊपर से सीधे लगते हैं। हा हा हा।"

"दरअसल आप से आज एक जरूरी बात करनी है।" शुक्ला जी ने शर्मा के लिए चाय उंडेलते हुए कहा, "मिसेज शुक्ला की छोटी बहन है सुनीता। इसी वर्ष दिल्ली से अंग्रेजी में एम० ए० किया है।"

"मगर मैं तो कमिटेड हूँ।" शर्मा बोला, "आप ने कैम्पस में सुना ही होगा।"

"मगर मैंने यह भी सुना है, मुसलमान यह शादी नहीं होने देंगे। आप नाहक बवाल में पड़ रहे हैं। एक दोस्त के नाते मैं यह राय आप को न दूँगा। अभी तो मामूली चोटें आयी हैं, कल कुछ गम्भीर वारदात भी हो सकती है।"

शर्मा ने ऊपर के होंठ पर जमा हो गया पसीना पोंछा और बोला, "मैं पहले ही अर्ज कर चुका हूँ, ये चोटें तो अपनी बिरादरी की वजह से आई हैं।"

"आप जैसा सोचते हों। मैं दूसरी तरह से सोचती हूँ। सुनीता ने फर्स्ट क्लास में एम० ए० किया है। देखने में, व्यवहार में, सुरुचि में वह बीस ही बैठेगी। इस्माइलगंज में हम लोग एक बढ़िया प्लाट ले रहे हैं, बगल में आप भी ले लीजिए। मकान न भी बना, मात्र दो साल में प्लाट का दाम दुगुना हो जाएगा।"

"मगर मैं तो शादी के बाद यह शहर छोड़ दूँगा।"

"क्यों छोड़ देंगे। इससे बेहतर युनिवर्सिटी कौन सी है? आप के माता पिता भी प्रसन्न रहेंगे।" श्रीमती शुक्ला कह रही थी। वह कुर्सी पर झुककर बैठी थी, उनका वक्ष डाइनिंग टेबल पर गिलास की तरह पड़ा था और ब्लाउज में से दोनों गोलार्द्धों के बीच की खाई भरी हुई नजर आ रही थी। शर्मा छत की तरफ़ देखने लगा!

"आप इस प्रस्ताव पर विचार कर लीजिए। विचार करने में क्या बुराई है।" शुक्ला जी ने कहा।

"कोई बुराई नहीं है। मैं विचार करूँगा।" शर्मा ने पीछा छुड़ाते हुए कहा।

"शर्मा जी; एक बात पूछना चाहती हूँ, अगर आप बुरा न माने।" श्रीमती शुक्ला ने पूछा, "इतनी लड़कियाँ हैं हिन्दुओं की, आपको एक भी पसन्द न आयी। यह अपनी कौम के साथ धोखा नहीं है क्या? अगर तमाम पढ़े लिखे लोग यही सब करने लगे तो हिन्दुओं की लड़कियाँ कहाँ जाएँगी?"

"आपने बड़ा अच्छा सवाल किया है। पहली बात तो यह है कि मुझे अपनी जात की अनेक लड़कियाँ पसन्द हैं। वे योग्य भी हैं सुन्दर भी। मगर

इसे संयोग ही कह लीजिए कि मुझे एक विजातीय लड़की से प्रेम हो गया।"

"विजातीय नहीं मुसलमान कहिए। मुसलमानों ने हिन्दुस्तान को जितना लूटा है आप उसे नज़रअन्दाज़ नहीं कर सकते। महमूद गज़नवी ने जिस क्रूरता के साथ सोमनाथ के मन्दिर को लूटा उसे कोई भी हिन्दू कैसे भूल सकता है। उसने हमारे धर्म, हमारी संस्कृति और सभ्यता को कुचल डाला।"

'मुआफ़ कीजिए, मैं इतिहास का छात्र नहीं रहा, मगर इतना विश्वास-पूर्वक कह सकता हूँ कि महमूद गज़नवी की रुचि हमारे धर्म को नष्ट करने में नहीं थी। उसकी दिलचस्पी सोमनाथ मन्दिर के हीरे जवाहरात में थी। वह दौलत का भूखा था। कोई भी बादशाह दौलत का भूखा होता है। आप अकबर का ज़िक्र क्यों नहीं करते, जिसने साम्प्रदायिक सद्भाव स्थापित करने के लिए एड़ी चोटी का ज़ोर लगाया ?"

"तो आप का हीरो अकबर है, अशोक नहीं।" शुक्लाइन बोली।

"सचाई तो यह है, मैं न अकबर के बारे में ज्यादा जानता हूँ न अशोक के बारे में। इतना कह सकता हूँ कि हम लोग जिस साम्प्रदायिक एकता की बात करते हैं वह धर्म और जाति की किलेबन्दी समाप्त करके ही कायम की जा सकती है।"

"हम दोनों में थोड़ा ही फर्क है। आप को राष्ट्रीय एकता की चिन्ता है और हमें राष्ट्र की।'

शर्मा मुस्कराया। उसको नाश्ते में दिलचस्पी न रह गयी थी। शुक्ला लोगों की गृहस्थी जो उसे कुछ समय पहले एक आदर्श गृहस्थी लग रही थी, अचानक खोखली लगने लगी। उसे लगा ये लोग अत्यन्त छोटी और संकुचित दुनिया में जी रहे हैं।

"आप नये ज़माने के आदमी ठहरे।" शुक्ला जी ने कहा, "हम लोगों ने आपके लिए एक दूसरी दुनिया की कल्पना की थी। युनिवर्सिटी के अनेक अध्यापक इस्माइलगंज में प्लॉट ले रहे हैं। हमें खुशी होती आप भी लेते। पढ़े लिखे लोगों की एक अलग कालोनी बनने वाली है। दूसरे इससे मुसल-मानों के इरादे ढह जाते कि वे इस्माइलगंज में मकान बनवा कर हिन्दुओं की बस्तियों को इस बार बाहर से घेर लेंगे।"

शर्मा खड़ा हो गया। उसका सर दर्द करने लगा था। उसने निहायत सादगी से हाथ जोड़ दिये, "आप लोगों ने बहुत अच्छा नाश्ता करवाया।"

"फिर आइएगा।"

'ज़रूर ज़रूर आऊँगा।" शर्मा ने कहा और 'कभी नहीं आऊँगा, कभी नहीं आऊँगा' बुदबुदाते हुए फाटक से बाहर हो गया।

● ●

"रोने से अब वह वापिस न आयेगा।" उमा ने हसीना के बालों पर हाथ फेरते हुए कहा।

हसीना थी कि सिर्फ़ रो रही थी, न खा रही थी, न पी रही थी। दुनिया मे उसका कोई नही रह गया था। मां पहले ही चल बसी थी, भाई गायब था। पूरा शहर जैसे उसे काटने को दौड़ रहा था।

"मैं ज़िन्दा नहीं रह सकती। मैं लतीफ़ के बग़ैर ज़िन्दा न रहूँगी।" वह कहती।

हसीना अस्पताल से निकली तो उमा उसे अपने घर ले आयी थी।

"तुम इसे अपना घर समझो और यही रहो।' उमा कहती, 'तुम चाहोगी तो मिल की तरफ से वजीफ़ा भी दिलवा दूँगी।'

हसीना कोई जवाब न देती। टुकुर-टुकुर देखती रहती।

'मैं वापिस घर जाऊँगी।' हसीना कहते हुए फफक कर रो पड़ी, 'वहाँ भी कुछ नही बचा।'

उमा ने बहुत प्यार से उसके बाल सहलाये, 'जी छोटा न करो। कभी-कभी ज़िन्दगी बहुत क्रूर हो जाती है। कितनी मुश्किल से तो ठीक हुआ था। ठीक हुआ तो यों एक झटके मे चल बसा।'

'मैं पिक्चर न जाती, मेरा बिल्कुल मन नहीं था।' हसीना बोली, 'उनकी एक निशानी थी, वह भी ख़त्म हो गयी।'

हसीना की आँखें भर आयी।

'श्याम बाबू से कहूँगी, तुम्हें ट्रस्ट की तरफ़ से दो सौ रुपये माहवार दिलवा दें।'

वह चुप रही। उसके दिमाग मे लतीफ़ ने बसेरा बना लिया था। हर चीज़ उसे लतीफ़ की याद दिलाती थी। हर ख़ूबसूरत याद लतीफ़ से वाबस्ता थी।

'मैं अब किसके लिए ज़िन्दा हूँ?' वह सोचती और चुपके से नींद की गोली खा लेती। उस रात की घटना याद आ जाती तो उसके रोंगटे खड़े हो

जाते। लाचारी, अपमान और असुरक्षा की भावना उसके भीतर तूफ़ान खड़ा कर देती। ज़रा-सी आवाज़ से वह चौंक उठती।

'इन लोगों ने बहुत किया, बहुत कर रहे हैं।' हसीना सोचती, 'ये लोग कब तक करेंगे। मैंने जाने क्या गुनाह किया था जो इस तरह इतनी बड़ी सज़ा मिल रही है।'

उमा का किसी शिष्ट मंडल में विदेश जाने का कार्यक्रम बन रहा था। वह उसी में व्यस्त हो गयी तो एक दिन हसीना ने सकुचाते हुए कहा, 'मुझे वापिस इकबालगंज पहुँचा दीजिए। जितने रुपये मिल की तरफ़ से मिले हैं, रहने लायक कोठरी बन जायेगी। बाद में मुझे ज़िन्दा रखने के लिए दो सौ रुपये बहुत हैं।'

उमा ने अन्ततः यह सुझाव स्वीकार कर लिया। लक्ष्मीधर ने बताया, मिल में बहुत अफ़वाहें उड़ रही हैं कि हसीना लक्ष्मीधर के साथ बैठ गयी है। उमा को अफ़वाहों की इतनी चिन्ता न थी, मगर हसीना की उदासी, परेशानी और मासूमियत उसके दिमाग़ पर बहुत भारी पड़ रही थी।

वीसा के लिए दिल्ली रवाना होने से पहले उमा ने रोते हुए हसीना को विदा कर दिया। साथ में राघू को कर दिया। राघू घर का बहुत विश्वसनीय खानसामा था। इधर अशक्त हो गया था, मगर घर में उसकी राय के बग़ैर कुछ न हो सकता था। तमाम नौकर लोग उससे बेहद चिढ़ते थे। हसीना को पिछले कई रोज़ से वही संभाल रहा था। उसकी पत्नी की बहुत पहले मृत्यु हो गयी थी। वह भी हसीना की तरह तनहा था।

'हसीना को कोई तकलीफ़ न हो। जब यह इजाज़त दे, तभी लौटना।' उमा बोली, 'कोई भी परेशानी हो तो फ़ौरन फ़ोन करना।'

हसीना उमा से लिपट कर बहुत रोयी। लक्ष्मीधर की आँखें भी नम हो गयीं। उमा तो हसीना से भी ज्यादा बेहाल हो रही थी। यों ही बिसूरते हुए हसीना कार की पिछली सीट पर बैठ गयी।

हसीना को कुछ पता नहीं चला कि कार कब चली, कहां के लिए चली। वह एक सामान की तरह कार में पड़ी थी। निःशब्द। निश्चेष्ट। राघू ने दो-एक बार बात करने की कोशिश की मगर हसीना ने सुना ही नहीं कि राघू क्या कह रहा है। वह खिड़की के बाहर शून्य में देख रही थी। पेड़ों, सड़कों, लोगों और बाहर की दुनिया से उसे कोई सरोकार नहीं था।

ज्यों-ज्यों घर पास आ रहा था, उसकी घबराहट बढ़ रही थी। सड़कें

हजरी बी ने सुना तो पागलों की तरह बदहवास भागती हुई आयी। अज़ीजन ने नफ़ीस को भेजा कि वह हसीना को फौरन ऊपर ले आये।

रोती-चिल्लाती हसीना अज़ीजन का जीना चढ़ने लगी। उसके पीछे राधू आ रहा था। कार में से सामान उतार कर इस्माइल की दुकान के पास रखा जा रहा था। जरूरी सामान हसीना के साथ कर दिया गया था। बाकी सामान बाद में आने की बात थी।

अज़ीज़न बी का ज़ीना हुजूम से नीचे तक भर गया था। कमरे में भी घुटन हो गयी थी।

'थोड़ी देर बिटिया को आराम करने दीजिए। ऐसे तो वह मर जायेगी।'

लोगों के मन में बहुत जिज्ञासाएँ थीं। वह अपनी जगह से थोड़ा-सा हिले और फिर वहीं जम कर खड़े हो गये। अज़ीज़न ने बारादरी का दरवाज़ा खोल कर हसीना को अन्दर किया और भीतर से सिटकनी लगा दी।

'अज़ीजन बी।' हसीना ने कहा और उनसे लिपट गयी।

अजीजन बहुत स्नेह से उसकी पीठ थपथपा रही थी, 'लो एक गिलास पानी पिओ।'

नवाबन ने सुना कि हसीना लौट आई है तो शकीला से बोली, 'उस कल-मुँही नोननी ने ठीक ही कहा था, चार-छह महीने में लड़कियाँ लौट आती हैं।'

'उसकी ज़ुबान बहुत काली है।' शकीला ने कहा।

'उस दिन साहिल की शान देख रही थी कोट-पतलून में? किसी से बात नहीं कर रहा था।' जाने नोननी कहाँ से चली आयी, 'स्मगलिंग करता है, स्मगलिंग! सुनते हैं रात अज़रा के यहाँ रुका था।'

'अब उसकी बहन लौट आयी है, वही कुछ समझा सकती है। मसऊद का साथ साहिल के लिए अच्छा नहीं।' शकीला ने अहा, 'अभी धन्धे का वक्त नहीं हुआ, चलो जाकर अफ़सोस कर आयें।'

नोननी, शकीला, नवाबन, नसीबन सब अज़ीज़न के घर की तरफ़ चल दीं। नफ़ीस डंडा लिये जीने के पास खड़ा था। वह ज़मीन पर डंडा पटकते हुए ऐसे गुर्राया कि सब वापिस लौट आयीं।

गली में गहमागहमी बढ़ गयी थी।

घण्टे भर में साहिल को खबर हो गयी कि लतीफ़ नहीं रहा और हसीना लौट आयी है। वह तुरन्त जीप में मसऊद के साथ अज़ीजन के यहाँ पहुँच

गया। हसीना अजीजन की गोद में सिर रखे अपनी दास्तान सुना रही थी। पास ही जमीन पर हजरी बी बैठी थी।

'अस्सलाम अलैकुम अजीजन बी।' साहिल ने कमरे में घुसते ही आदाब अर्ज की। उसके पीछे ममऊद और नफीस खड़े थे। साहिल की आवाज पहचानने में हसीना को एक क्षण न लगा, वह अजीजन की गोद से सर उठा कर साहिल से लिपट गयी और बिलख कर रोने लगी। साहिल ने देखा, हसीना अब मासूम लड़की नहीं रह गयी थी, बल्कि एक भरी पुरी खातून लग रही थी। जिस्म भर गया था। ममऊद ने आगे बढ़ कर हसीना की पीठ थपथपाई, 'अल्लाह ताला को यही मंजूर था। अब रोने से लतीफ़ वापिस न आएगा।'

'देखो हसीना, यह हैं मेरे दोस्त मसऊद। बहुत बड़े आदमी हैं। तुम परेशान न हो, मैं अभी जिन्दा हूँ।'

हजरी ने उठ कर साहिल के कान उमेठ दिए, 'शैतान की औलाद, तू कहाँ भाग गया था। तुम्हारी अम्मां तुम्हें खोजते-खोजते अल्लाह को प्यारी हो गयी।'

'आदाब हजरी बी।' साहिल ने कहा, 'घर से भाग न गया होता तो आज यही गली में डिब्बे बनाते या कपड़ों पर इस्त्री फेरते दिखायी देता। मैं रहता तो अम्मां को मरने न देता। फरिश्तों से उलझ जाता। अब मैं एक दूसरा साहिल हूँ।'

न जाने साहिल को क्या सूझा कि उसने कमीज के अन्दर से पिस्तौल निकाल कर छत की तरफ़ तान दी, 'मैं अब एक दूसरा इन्सान हूँ हजरी बी। कहाँ हैं तुम्हारे खैरी साहब?'

अजीजन एक नाटक की तरह यह सब देख रही थी। साहिल के पास पिस्तौल देख कर उसे तसल्ली हुई। वह भीतर से बहुत असुरक्षित महसूस कर रही थी। वह साहिल और मसऊद से इतना प्रभावित हो रही थी कि तुरन्त गुल की शादी की बात करना चाहती थी, मगर यह सोच कर शांत हो गयी कि कहीं ये लोग भी सिद्दीकी साहब की तरह न भड़क जाएँ। उसने दोनों को बैठने के लिए कहा और शर्बत लाने का आदेश दिया। मसऊद जेब से आयातित सिगरेट निकाल कर पी रहा था। वह बीच-बीच में हसीना की तरफ़ देखता और मुँह उठा कर हवा में धुएँ का एक छल्ला छोड़ देता।

'मसऊद साहब का तआरुफ़ नहीं दोगे?' अजीजन ने आखिर सन्नाटा तोड़ा।

'मसऊद के तआरुफ़ में यह कहना कि यह हैदरी बी का बेटा है, म

को समझने में मदद न देगा। मसऊद का बम्बई में एक्सपोर्ट का कारोबार है। दासियों लोग इनकी खिदमत में रहते है, चार छह गाड़ियाँ हैं और लगभग इतने ही बँगले। आजकल अम्मां से मिलने आए हुए हैं। इनका इधर का बिजनेस मैं देखता हूँ। दिल्ली से गोरखपुर तक।"

'वाह !' अज़ीज़न के मुँह से बेसाख्ता निकल गया, 'बहुत खुशी हुई आप से मिलकर।'

अज़ीज़न मसऊद से इतना प्रभावित हुई कि उसने गुल को बुलवा भेजा। गुल आकर हसीना से लिपट गयी। उसने अम्मां के उस तारीफ़ के पुल को भी मसऊद की तरफ़ एक उड़ती नज़र डाल कर नज़र अन्दाज़ कर दिया जो अम्मां देर तक बाँधती रही। वह हसीना को अपने कमरे में ले गयी, 'लगता है तुम्हारा भाई अच्छी कम्पनी में नहीं।'

'मुझे कुछ मालूम नहीं।' हसीना बोली, 'मुझे भी स्कूल में दाखिल करवा दीजिए।'

'मैं तुम्हें पढ़ाऊँगी।' गुल ने कहा और देखा कमर पर दोनों हाथ धरे सामने साहिल खड़ा था।

'हसीना मेरे साथ रहेगी !'

'कहाँ ?'

'खुदा के फ़ज़ल से मेरे पास अच्छा खासा बंगला है।'

हसीना ने हैरत से साहिल की तरफ़ देखा। हसीना के सामने वह पहले का दब्बू, कमज़ोर और बेसहारा साहिल नहीं, बल्कि आत्मविश्वास से भरपूर एक नौजवान खड़ा था। उसने मन ही मन परवर दिगार का शुक्रिया अदा किया।

'कब चलोगे ?'

'अभी चलो। कल फिर आ जाना। चलकर अपना कमरा ठीक ठाक कर लो।'

'ठीक है हसीना, तुम कल ज़रूर आना।' गुल ने एक बार फिर हसीना को आगोश में भर लिया। गुल को विश्वास ही न हो रहा था, यह लड़की इसी गली की पैदावार है।

हसीना ने बैठक में जाकर अज़ीज़न बी को आदाब किया। अज़ीज़न बी दंगे की सम्भावनाओं पर मसऊद साहब के ख़यालात बड़ी एकाग्रता से सुन रही थीं। उसके चेहरे से स्पष्ट झलक रहा था कि अज़ीज़न बी बेहद घबरायी हुई हैं। साहिल ने फसाद का ज़िक्र सुना तो एक बार दुबारा पिस्तौल छत की तरफ़ तान दी, 'जब तक हमलोग हैं अज़ीज़न बी, आप को किसी तरह की

फ़िक्र न करना चाहिए।'

अजीज़न ने फीकी-सी मुस्कराहट से साहिल की तरफ़ देखा। अपने मन की बात न कह पाने का उसे बेहद अफ़सोस हो रहा था, मगर वह बग़ैर इन लोगों को परखे, मुँह से कोई भी बात न निकालना चाहती थी। उन लोगों को विदा करके उसने गुल को आवाज़ दी।

'इसे कहते हैं किस्मत।' अजीज़न बी ने कहा, 'कल तक यही लड़का यतीमों की तरह गली में घूमा करता था।'

'मुझे तो आज भी यतीम ही लगा। यतीम नहीं गुण्डा। जाने किस जरायम पेशे में है।'

'तुम्हें तो हर शख्स गुण्डा नज़र आता है।'

'ऐसी बात नहीं। उसके साथ जो दूसरा आदमी था, वह तो एकदम छँटा हुआ बदमाश लग रहा था। सच पूछो तो मुझे हसीना का उन लोगों के साथ जाना ठीक नहीं लगा।'

अजीज़न सोच में पड़ गयी। बिटिया शायद ठीक ही कह रही थी। कोई जरायम पेशा आदमी ही इतनी जल्द इतनी दौलत बटोर सकता है। हसीना स्वयं साहिल के इस कायाकल्प से चकित थी। लतीफ के साथ रहने से जीवन के प्रति उसका दृष्टिकोण बदल चुका था! हसीना ने हराम की कमाई को हमेशा घृणा और वितृष्णा से देखा था।

'यह जीप किसकी है? हसीना ने पूछा।

'अपनी ही है।'

'अपनी कैसे हो गयी?' कहीं से उठा लाए हो क्या?'

मसऊद ने ज़ोरदार ठहाका लगाया। हसीना साहिल और मसऊद के बीच बैठी थी और साहिल ड्राइव कर रहा था। हसीना ने महसूस किया मसऊद उससे सटता जा रहा है। वह साहिल की तरफ खिसक गयी। मसऊद भी। हसीना से और बर्दाश्त न हुआ तो मसऊद की तरफ देख कर बोली, 'मैं पीछे चली जाती हूँ, जगह कम है।' साहिल ने जीप ड्राइव करते हुए हसीना की तरफ़ देखा और बोला, 'तुम मोटी हो गयी हो।'

मसऊद ने ठहाका लगाया, 'यह हसीना के साथ सरासर अन्याय है। हसीना मोटी है न दुबली। लगता है अल्लाह मियाँ ने खुद अपने हाथ से इसका जिस्म तराशा है।'

'आप लोग कैसी बेहूदा बातें करते हैं?' हसीना ने कहा, 'मुझे इकबालगंज छोड़ दो।'

'वहाँ अब साँप रहते हैं और चमगादड़।' साहिल बोला, 'मेरा

देखोगी तो कभी जाने का नाम न लोगी।'

कुछ ही देर में जीप एक फाटक में घुस गयी। साहिल बड़ी लापरवाही से उतरा। उसके साथ मसऊद। मसऊद ने उतरते ही चौकीदार को डाँट पिलाई कि पोर्च में बल्ब क्यों नहीं जल रहा। फिर वह ड्राइंगरूम का दरवाज़ा खोल कर खड़ा हो गया, 'तशरीफ़ लाइए।'

हसीना अन्दर चली आई। अच्छा खासा कमरा था। सोफ़ासेट, कालीन और खूबसूरत पर्दे। किसी भी सूरत में कमरा लक्ष्मीधर के बंगले से कम नहीं था। वह एक काउच पर सिमट कर बैठ गयी।

'चलो हाथ मुँह धो लो। बगल में तुम्हारा कमरा है। बाथ रूम अटैच्ड। मन ऊबे तो यह रहा वीडियो।' साहिल ने वीडियो ऑन कर दिया।

'मुझे यकीन नहीं हो रहा, यह तुम्हारा घर है।'

'मसऊद साहब के पास हर बड़े शहर में ऐसे बंगले हैं। इनका बम्बई का फ़्लैट देखो तो मस्त हो जाओ।'

हसीना अपने कमरे में गयी। पंखा चला कर वह बिस्तर पर औंधी लेट गयी। उसे लग रहा था, यह घर उसका नहीं है। साहिल का भी नहीं है। उसे अपनी अम्मां के घर की याद आयी, जहाँ लालटेन के प्रकाश में वह अम्माँ के साथ रात भर बीड़ी बनाया करती थी। अम्माँ के ख़यालात में वह ऐसी डूब गयी कि दुनिया जहाँ को भूल गयी।

कुछ ही देर में शहर के सबसे बढ़िया रेस्तराँ से हसीना के लिए खाना चला आया। हसीना महसूस कर रही थी, साहिल को अपनी बहन के बेवा होने का ख़ास दुःख नहीं था, उसने लतीफ़ के कत्ल की बात सुनकर सिगरेट सुलगाया था और मुँह से धुएँ का गहरा खंजर छोड़ते हुए बोला था, 'एक हफ़्ते के भीतर लतीफ़ का क़ातिल लतीफ़ के पास पहुँच जाएगा।'

हसीना ने अविश्वास से अपने भाई की तरफ देखा।

'दुनिया फ़ानी है।' साहिल बोला, 'वक्त ने मुझे हाथ पर कलेजा लेकर चलना सिखा दिया है। मैं अब ख़ुदा के अलावा किसी से नहीं डरता।'

'तुम बहुत बदल गये हो।'

'हालात ने बदल दिया है। मैंने गर्दिश के जो दिन देखे हैं, अल्लाह ताला किसी को न दिखाये। हफ़्तों भूखों सोया हूँ। मैंने जाड़े की लम्बी रातें बग़ैर चादर के काटी हैं, लोगों का फेंका हुआ दोना उठा कर चाटा है। मगर

जिन्दगी उसी की है जो मरते दम तक शिकस्त कुबूल नहीं करता, बल्कि बैल की तरह जूझता रहता है।'

हसीना की आँखें भर आईं, अपने भाई की तकलीफ़ें सुन कर।

'मैं जानता हूँ जिन्दगी ने तुम्हारे साथ भी खिलवाड़ किया है। तुम्हे गहरा धक्का लगा है, मगर जिन्दगी का दुस्तूर यही है कि जिन्दगी के आगे हार मानने की बजाये, नये सिरे से जिन्दगी शुरू कर दो। अभी तुम्हारा घाव हरा है, मैं तुम्हें कोई राय न दूँगा, मगर बेहतर यही होगा कि तुम नये सिरे से जिन्दगी का नक्शा बनाओ। अभी तुम्हारी उम्र ही क्या है? पढ़ाई करना चाहो तो मैं कल से ही किसी टीचर का इन्तजाम कर दूँगा जो दो घण्टा तुम्हे रोज पढाये। तुम चाहोगी तो साल भर में हाई स्कूल पास कर लोगी, मैं जानता हूँ तुम जहीन लड़की हो। बग़ैर पढे लिखे सर्टिफिकेट लेना चाहो तो उसका भी इन्तजाम हो जाएगा। मगर मेरी दिली तमन्ना है, तुम पढ़ लिख कर इतनी दूर निकल जाओ कि मुझे तुम्हारे ऊपर नाज हो। बोलो तुम क्या चाहती हो?'

'फिलहाल मैं यो ही पड़े रहना चाहती हूँ। मैं लतीफ़ की याद से उभर नहीं पा रही। वह मेरी हर सास में जिन्दा है।'

'ठीक है, तुम आराम करो। तुम्हें यहाँ किसी चीज की कमी महसूस न होगी। रेकार्ड हैं, जी भर कर सुनो। फ़िल्म देखना चाहो तो घर में वीडियो है। किसी सहेली से मिलना चाहो तो जीप हाजिर है।'

'भाई।' हसीना ने कहा और उसकी हिचकियाँ बँध गयी, 'मुझे कुछ रोज के लिए अजीजन बी के यहाँ छोड आओ। मैं उनके यहाँ रहूँगी, मुझे गुल के साथ रहना अच्छा लगेगा।'

'कल छोड आऊँगा। आज तुम आराम करो। गाड़ी और राघू को वापिस भेज दो। अब उनकी जरूरत नहीं हैं।'

अगले रोज दोपहर को साहिल हसीना को अजीजन बी के यहाँ छोड़ आया। अजीजन साहिल की राह ही देख रही थी। उसके सीने पर हसीना की शादी का एक वजनी पत्थर रखा था, वह चाहती थी साहिल उसे उठाने की जिम्मेदारी ले ले।

साहिल दुआ सलाम के बाद जाने लगा तो अजीजन ने उसे रोका और बोली, 'कुछ हमारी मुश्कलात को भी हल करोगे या नहीं।'

'आप हुक्म करें! मैं हर चन्द कोशिश करूँगा। आप को भी मुश्कलात पेश आएँगी, इसका तसव्वुर ही नहीं कर सकता।'

'ऐसी ही कुछ उलझनें हैं।' अजीजन ने कहा, 'तुम्हारे पास वक़्त हो तो बात करूँ।'

'वक़्त ही वक़्त है। वक़्त का संमुदर है अज़ीज़न बी ! मेरे पास और किसी चीज़ की भी कमी हो सकती है, वक़्त की कमी नहीं।'

'तो आओ दूसरे कमरे में।' अज़ीज़न खड़ी हो गयी और उसी झटके में साहिल। हसीना गुल के कमरे की तरफ बढ़ गयी तो वे लोग वहीं बैठ गये।

'फरमाइए।'

'मैं गुल की शादी करना चाहती हूँ।'

'मुबारकबाद।'

'हो सकता है तुम्हें भी अच्छा न लगे यह सुनना कि गुल एक हिन्दू से शादी करना चाहती है।'

'सचमुच अच्छा नहीं लग रहा।'

'मगर यह एक मजबूरी है। कोई रास्ता नहीं इससे निकलने का। वैसे लड़का मुझे पसन्द है। यहीं युनिवर्सिटी में लेक्चरार है।'

'क्या मुस्लमान लड़के युनिवर्सिटी में लेक्चरार नहीं हैं ?'

'होंगें। ज़रूर होंगे। बेहतर होगा हम लोग इसकी तफ़सील में न जाएँ और हालात में से कोई रास्ता निकालने की तजवीज करें।'

'रास्ता तो गुल ने निकाल ही लिया है।'

'सुनते हैं शहर में बहुत तनाव चल रहा है।'

'क्या आप बहुत जल्दी में शादी बनाने की सोच रही हैं ?'

साहिल ने सोचा, गुल हामला है, अज़ीज़न बी को शादी के अलावा और कोई दूसरा रास्ता नहीं मिल रहा मगर उसने कोई भ्रष्ट और नादान सवाल नहीं किया। उसने सादगी से पूछा, 'मैं आपकी क्या मदद कर सकता हूँ ?'

'मुझे तुम्हारी सलाह चाहिए।'

'बहरहाल मैं इस पर ग़ौर करूँगा। अपने दोस्त से मश्विरा करूँगा। मगर इस वक़्त यह सवाल न उठायें। कुछ अर्से के लिए शादी मुल्तवी कर दें।'

'मुझे इसी लफ़्ज की इन्तजार थी। मुल्तवी कर दें। हर शख्स यही कह रहा है। शादी मुल्तवी कर दो। और अगर अज़ीज़न बी यह शादी मुल्वती नहीं करतीं तो क्या होगा ?'

'दंगे में नयी जान आ जायेगी।' साहिल मुस्कराया, 'दंगा शहर के दरवाज़े खटखटा रहा है। तेरह को इस्माइलगंज के प्लॉटों की नीलामी होगी, दंगा उसी रोज हो जाएगा। आज क्या तारीख है।'

'आज दो तारीख है।

'बहरहाल मैं तो यही राय दूँगा कि फिलहाल शादी मुल्तवी कर दीजिए।'

'मैंने जो कार्ड भेज दिए हैं। सब क्या सोचेंगे ?'

'जान है तो जहान है।' साहिल बोला,'दोनो फिरकों में तैयारियाँ चल रही हैं। हिन्दू लोग तो बम असलाह के लिए चन्दा कर रहे हैं। मेरा एक दोस्त एल आई यू में है, उसने इस खबर की ताईद की है।'

अज़ीज़न बी सर थाम कर बैठ गयीं। कुछ देर बाद सिसकियाँ उठने लगीं। साहिल सिगरेट के कश खींचता रहा, फिर बोला, 'आप चलिए बम्बई। वहीं जाकर शादी कर देते हैं।'

'शादी इसी गली से होगी। यह मेरी बहुत पुरानी तमन्ना है।'

'यह एक टेढ़ी तमन्ना है। गली में खून खराबा हो जाएगा। यह गली तबाह हो जाएगी।'

अज़ीज़न बी साड़ी के पल्लू से आँसू पोंछने लगी तो साहिल को रहम आ गया, बोला, 'आप इस बीच और किसी को शादी की इत्तिला न दीजिए। मैं कोशिश करूँगा, कोई रास्ता निकल सके।'

अज़ीज़न बी ने जवाब नहीं दिया। साहिल देर तक इस इन्तज़ार में बैठा रहा कि अज़ीज़न बी मुखातिब हों तो वह इजाज़त लेकर रुख़सत हो। उसकी हिम्मत नहीं पड रही थी कि अन्दर जाकर हसीना का हालचाल ले आये।

अज़ीज़न बी ने सिर ऊपर उठाया तो आँखों में लाल डोरे तैर रहे थे। साहिल को अपने सामने बैठा देख उन्हें ताज्जुब हुआ।

'मैं अब इजाज़त लूँगा अज़ीज़न बी।' साहिल बगैर एक भी पल खोये खड़ा हो गया।

'हसीना कुछ रोज़ गुल के साथ रहेगी। गुल के उस्ताद आते हैं उसे कत्थक सिखाने। हसीना का जी सम्भल जाए तो उसे भी सिखाने के लिए कहूँगी। खुदा हाफ़िज़।' अज़ीज़न ने कहा।

'खुदा हाफ़िज़।' कहते कहते साहिल ज़ीना उतर गया।

हसीना गुल को लतीफ़ के साथ बिताया एक एक क्षण बयान कर रही थी। बयान कर रही थी या याद कर रही थी, यह कहना मुश्किल है। उसे लग रहा था, वह जैसे किसी स्वप्न लोक से लौट कर आई है। नीचे गली से 'लइया दाल पट्टी' बेचने वाले की आवाज़ सुनाई दे रही थी। यह आवाज़ वह बचपन से सुनती आ रही थी। उसे याद है वह अम्मा से दस नया माँग कर चड्ढी पहने ही लईया खरीद लाती थी। सब कुछ तो वही था। सिर्फ़ अम्मा नहीं रही थीं। अज़ीज़न बी के यहाँ हर कमरे मे पुराने ज़माने की घड़ियाँ

टँगी थीं। हर कमरे में घड़ी की नयी तरह की टिकटिक थी। ये घड़ियाँ ज़रूरत से ज्यादा मुखर थीं और हर घड़ी अलग-अलग समय बता रही थी। किसी न किसी कमरे से घण्टे की आवाज़ उठती ही रहती थी।

'तुम्हारे पास प्रोफ़ेसर साहब का कोई चित्र है?'' हसीना ने पूछा।

'ऊँ हूँ।'' गुल ने एक लम्बी साँस भरी और दुपट्टा उठा कर सीने की तरफ़ देखा, 'बस यहीं है। मेरे अलावा कोई नहीं देख सकता।'

दोनों सहेलियाँ घण्टों से एक ही बिस्तर पर लेटी बतिया रही थीं। पलंग इतना बड़ा था कि दो चार सहेलियों के लेटने की और जगह थी। कुछ देर बाद चाय के लिए कह कर अज़ीज़न भी वहीं चली आई, 'तुम लोग लेटी ही रहोगी या कोई काम धाम भी करोगी।'

'अम्मा जाओ हमें बात करने दो।'

'दर्ज़ी के आने का वक्त हो रहा है। जाने कितने कपड़े ले कर सुसराल जाएगी।'

'मुझे नहीं चाहिए तुम्हारे कपड़े। मैं तो ऐसे ही उठ कर चली जाऊँगी।'

नीचे चाट वाले ने आवाज़ दी तो अज़ीज़न ने पूछा, 'लड़कियो चाट खाओगी?'

'' खूब मिर्ची वाली चाट खाऊँगी।' गुल ने कहा, 'गोल गप्पे, आलू की टिकिया, दही बड़ा, सब खाऊँगी।'

अज़ीज़न ने दारजे पर खड़े हो कर नफ़ीस को आवाज़ दी।

तीसरे दिन शाम को साहिल अचानक नमूदार हुआ। शहर के हालात नाज़ुक होती जा रही थी। सुबह शाम शहर में नयी नयी अफ़वाहें सुनने में आ रही थीं। साहिल चाहता था, हसीना को इस इलाके में न रखे। यह शहर का सबसे तनावपूर्ण इलाका था। चारों तरफ़ हिन्दुओं की बस्तियाँ थीं। उसने अज़ीज़न से भी आग्रह किया कि वे लोग भी कुछ दिनों के लिए उसके यहाँ चली आयें, अगर अज़ीज़न न मानी। सच तो यह है बरसों से वह कहीं नहीं गयी थी और अब कहीं और रहना उसके तसव्वुर में ही नहीं आ सकता था।

'अगर मरना ही है तो मैं यहीं अपने घर में मरना चाहूँगी। तुम नाहक घबरा रहे हो। कुछ नहीं होगा।' वह बुदबुदायी, 'तुम लोग सिर्फ़ मेरी बिटिया की शादी मुल्तवी कराना चाहते हो।'

'हवा का रुख देख लीजिए। आज नहीं तो कल गुल का निकाह ज़रूर होगा।'

तरफ़ बढ़ गयी। उसकी अनुपस्थिति में कमरा सजा दिया गया था। नये काउच आ गये थे और बैडरूम के बीचोंबीच नया डब्ल बेड पड़ा था, हसीना ने गद्दों पर बैठ कर देखा तो धँसती चली गयी। रेशम के बेड कवर पर रंग-बिरंगे फूलों की क्यारी खिली हुई थी।

हसीना ने मन ही मन भाई की लम्बी उम्र की दुआ की और वार्ड रोब खोल कर देखा। उसकी साड़ियाँ करीने से टंगी थीं। वार्ड रोब में दो एक नयी साड़ियाँ भी नज़र आईं। हसीना के मन में नयी साड़ियाँ देखकर कोई उत्साह नहीं जगा। उसने छू कर भी न देखीं। वह कुछ देर कुर्सी पर चुपचाप बैठी अपनी अम्माँ, अपने बचपन और लतीफ़ की याद करती रही। सहसा वह उठ कर खड़ी हो गयी। इस बंगले में जहाँ चिरई का पूत भी नजर नहीं आ रहा, वह अपना समय कैसे काटेगी। साहिल ने बताया था कि वह भी हफ़्ते में दो एक दिन ही इकबाल गंज में रहता है।

'कैसा लगा तुम्हें अपना कमरा?'

'बेहद खूबसूरत है। मैं कुछ दिनों बाद उमाजी को यहाँ बुलाऊँगी। वे बहुत खुश होंगी।'

'जरूर बुलाना, उन लोगों ने तुम्हारा इतना खयाल किया।'

हसीना उमा लोगों के एहसानात के बारे में एक एक तफ़सील बताने लगी।

'आज रात मैं सिद्दीकी साहब के साथ गोरखपुर के लिए रवाना हो जाऊँगा। वहाँ का काम हो गया तो मसऊद साहब मेरी तरक्की कर देंगे।'

'मसऊद साहब हैं कौन?'

'सब पता चल जायेगा तुम्हें। बड़े-बड़े अफ़सरान और नेता मसऊद साहब के मुलाकाती हैं।'

हसीना की समझ में कुछ भी न आ रहा था। वह साहिल का रुतबा देख कर स्तम्भित थी। उसे एक ही अफ़सोस था, अम्माँ ये सब देखे बग़ैर अल्लाह ताला को प्यारी हो गयी।

शाम को एक चमचमाती हुई गाड़ी बंगले में घुसी। ड्राइवर ने पुलिस जैसी वर्दी पहनी हुई थी। उसने उतर कर साहिल के लिए दरवाज़ा खोला। साहिल के साथ-साथ सिद्दीकी साहब पिछली सीटों पर बैठ गये। हसीना अपने कमरे की खिड़की से देख रही थी। कार की डिक्की में बक्से भरे जा रहे थे। मालूम नहीं ये खूबसूरत पेटियाँ किसके लिए रखी जा रही थीं। मसऊद ने झुक कर साहिल से दो एक मिनट बात की और ड्राइवर ने मसऊद को सेल्यूट मारा और गाड़ी एक झटके के साथ आँखों से ओझल हो गयी।

हसीना अपने कमरे से बाहर निकल आई। वह जिस जीप में आई थी, वह अभी तक खड़ी थी।

'मसऊद भाई, हमें अजीजन बी के यहाँ पहुँचा दीजिए।'

'अजीजन बी को यहाँ बुलवा दें ?'

'वह न आएँगी।'

'हम चाह लेंगे तो दौड़ी हुई आएँगी।' मसऊद की आवाज़ में [illegible] आत्मविश्वास देखकर हसीना फिर भीतर तक हिल गयी।

'उन्हें क्यों तकलीफ़ दीजिएगा।' हसीना ने कहा।

'यही हम सोच रहे थे।' मसऊद पृथ्वीराज कपूर के अन्दाज़ से [illegible] 'आप अन्दर जाकर आराम कीजिए। किसी चीज़ की ज़रूरत हो [illegible] लगी घण्टी बजा दीजिए, ख़ानसामा फ़ौरन हाज़िर होगा।'

'कहाँ लगी है घण्टी ?'

'आप के बिस्तर के पास। आइए दिखाता हूँ।' [illegible] उदाता कंधे पर हाथ रखा और हसीना के साथ-साथ चल दि[illegible] रह

कमरे में घुसते ही मसऊद ने घण्टी बजायी। [illegible] पहुँचा।

मसऊद उठा और उसने एक बिलकुल नयी फिल्म लगा दी। फिल्म में दिलीप कुमार और सायरा बानो थे। हसीना कुर्सी पर बैठकर फिल्म देखने लगी। जाने से पहले मसऊद एक बार फिर कैसेट बन्द करना और नया कैसेट लगाना सिखा गया।

फिल्म में हसीना का मन नहीं लग रहा था, मगर फिल्म देखने के अलावा उसके पास कोई विकल्प नहीं था। वह यन्त्रवत पिक्चर देखती रही। इसी बीच शाकिर अली एक खूबसूरत ट्रे में बड़ी तश्तरी पर हसीना के लिए तरह-तरह के कबाब रख गया। कबाब बेहद लजीज थे। हसीना ने सामने मेज पर टाँगें फैला लीं और फिल्म देखते हुए बीच-बीच में कबाब खाती रही।

फिल्म में हसीना का मन नहीं लगा तो उसने नीचे ड्राअर से कैसेट निकाल कर नया कैसेट लगाया वह अभी कुर्सी पर जाकर बैठी भी न थी कि स्क्रीन पर एक निर्वसन पुरुष नमूदार हुआ, दूसरी ओर से निर्वसन स्त्री। हसीना ने जल्दी से वीडियो बंद कर दिया और कैसेट यथास्थान रख दिया। वह कपड़े तब्दील कर अपने बिस्तर पर जा लेटी।

नौ बजे के करीब किवाड़ पर दस्तक हुई। हसीना ने उठकर दरवाजा खोला। सामने मसऊद खड़ा था।

'खाना नहीं खाओगी?'

'कबाब से ही पेट भर गया।'

'कबाब आए तो मुद्दत हो चुकी है।'

'मैं अभी तक खा रही थी।'

हसीना ने देखा, मसऊद की आँखें चढ़ी हुई थीं। वह शायद दही खा कर आया था, ओठों के कोरों पर दही लगी थी।

'मैं अन्दर आ सकता हूँ?'

'तशरीफ़ लाइए।'

हसीना एक तरफ़ सिमट कर बैठ गयी। उसने नाइटी पहनी हुई थी, न जाने किस बेवकूफ़ी में नाइटी पहन ली थी। शायद गुल को देख कर। गुल दिन भर मैक्सी पहन कर घूमती थी।

'बहुत हसीन लग रही हो।'

'शुक्रिया।'

'मैं एक खास मकसद से तुम्हारे पास आया हूँ।'

'फरमाइए।'

'मैं तुम से निकाह करना चाहता हूँ।'

हसीना ने सिर झुका लिया। उसे पीड़ा हुई कि उसका जख्म अभी इतना

हरा है और इस शख्स को उसकी भावनाओं की कोई कद्र नहीं।

'मैंने साहिल से भी अपनी ख्वाहिश जाहिर की थी। वह खुश हो जाता करेगा।' मसऊद ने हाथ बढ़ा कर हसीना को अपनी आगोश में भींच लिया। हसीना छिटक कर दूर जा खड़ी हुई और रोने लगी।

'तुम्हारी इन्हीं अदाओं पर मैं फिदा हूँ।' मसऊद बोला, 'वरना मेरे लिए औरत कभी कोई मसला नहीं रही।'

हसीने ने आस्तीन में मुँह छिपा लिया और सिसकियाँ भरने लगी।

रहम करना मसऊद के स्वभाव में नहीं था, मगर उस वक्त वह अचानक मुआफी माँगने लगा। हसीना के पैरों पर गिर पड़ा, 'मुझे मुआफ कर दो हसीना। मैंने तुम्हारा दिल दुखाया है। मैं एक कमीना आदमी हूँ। मैं अपनी ही नजरों से गिर चुका हूँ और आज तुम्हारी नजरों से भी गिर गया, जबकि मैं तुम्हारी नजरों में ऊँचा उठना चाहता था।'

धीरे धीरे मसऊद की आवाज धीमी होती गयी, वह देर तक बुदबुदाता रहा और कुछ ही देर बाद गलीचे पर खर्राटे भरने लगा। हसीना हतप्रभ रह गयी। मसऊद को उठाकर बिस्तर तक ले जाना उसके लिए नामुमकिन था, उसने उसके सिर के नीचे तकिया लगा दिया और चादर ओढ़ा दी।

हसीना बाहर आंगन में आ कर कुर्सी पर बैठ गयी और अन्धेरे में चुप खड़े पेड़ों की तरफ़ देखने लगी। बगल के बंगले में स्टीरियो पर कोई अंग्रेजी का रेकॉर्ड बज रहा था। बीच बीच में किसी कार का हार्न सुनाई पड़ता और दूसरी तरफ़ पड़ोस से कहकहे उठ रहे थे। तश्तरियों की खनक सुनाई दे रही थी, शायद वे लोग खाना खा रहे थे। हसीना को मसऊद की शख्सियत से जो डर लग रहा था, वह अचानक गायब हो गया। उसकी समझ में नहीं आ रहा था, वह उस पर क्रोध करे या लाड़। उसे लगा, बाहर से खूँख्वार दिखने वाला यह आदमी भीतर से उतना खूँख्वार नहीं है। उसे हल्की सी खुशी हो रही थी कि उसने अपने व्यक्तित्व की रक्षा कर ली।

तभी किसी ने बरामदे की बत्ती जला दी। हसीना ने देखा, शाकिर अली था।

'साहब कहाँ हैं? और आप यहाँ क्यों बैठी हैं?'

'वे अन्दर कालीन पर सो रहे हैं।'

'क्या बताएँ, इनका रोज का यही हाल रहता है। आज तो गनीमत है कि कालीन पर सो रहे हैं, वरना बरामदे में भी सो सकते हैं। खुदा ने सब नियामतें अता की हैं, मगर मैं देख रहा हूँ सूरज ढलते ही इनकी हालत बिगड़ने लगती है। आज तीसरा दिन है और खाते ही सो गये हैं। इन्हें डिप्रिक्शन

भेज कर बटर चिकेन मँगवाया। सुबह यही चिकेन कुत्तों को खिला देंगे।'

हसीना को साहिल की चिन्ता हुई, 'क्या साहिल भी इसी अन्दाज़ में जी रहा है?'

'नहीं बेगम साहिबा! साहिल भाई ही सारा कारोबार सम्हाले हुए हैं।'

'क्या कारोबार कर रहे हैं ये लोग?'

शाकिर अली ने हाथ जोड़ दिए, 'मैं ठहरा अनपढ़ गँवार, मैं क्या जानूं ये लोग काहे का कारोबार करते हैं। आप का खाना परोस दूँ?'

'हमें भूख नहीं है। अभी तुम्हारे कबाब ही हज़म नहीं हुए हैं।'

'आप चाहे एक फुलका खा लीजिए, वरना मेरी सारी मेहनत बेकार चली जाएगी।'

'ऐसी बात है तो दो कौर खा लूंगी।' हसीना ने पूछा, 'साहिल कब तक लौटेंगे?'

'उनका कुछ ठीक नहीं रहता। कल भी लौट सकते हैं और हफ़्ते भर बाद भी। अभी साहब को बिस्तर पर लेटा कर हाज़िर होता हूँ।'

शाकिर अली अपनी बीवी को बुलवा लाया। दोनों ने मिलकर मसऊद को उस के कमरे में लिटा दिया। शाकिर अली की बीवी ने मसऊद की दोनों टाँगें इस बेरहमी से पकड़ी हुई थीं कि लग रहा था, वह किसी आदमी को नहीं स्ट्रेचर को पकड़े हुए है। हसीना ने आगे बढ़ कर कमर पर सहारा दिया और मसऊद को उसके बेडरूम तक पहुँचा दिया। बेडरूम में एयर कंडीशनर चल रहा था मगर दीवार पर चारों तरफ़ औरतों की नंगी तस्वीरें लगी थीं। हसीना फौरन कमरे से बाहर निकल आई। उसे लगा, मसऊद कहीं एक बीमार इन्सान है!

• •

प्रोफ़ेसर जितेन्द्र मोहन सुबह बाहर धूप में अखबार पढ़ा करता था। यह उस की पुरानी आदत थी। सुबह सुबह अपने पड़ोसी शुक्लाजी से उसकी दुआ सलाम हो जाया करती थी। शुक्लाजी घर के बाहर टहलते हुए देर तक दातौन किया करते थे और अक्सर फेंस के दूसरी तरफ से किसी न किसी मसले पर अपने विचार प्रकट किया करते थे।

'सुबह मैं दो काम करता हूँ, दातौन और चिन्तन। कुछ लोग सिगरेट पीते हुए सोचते है, मैं दातौन करते हुए।' शुक्लाजी अक्सर कहा करते।

आज शुक्लाजी बहुत तेज़ी से दातौन चबा रहे थे, जैसे कुत्ता हड्डी चबाता है। वे दो तीन बार फेंस के पास आए और लौट गये। शर्मा से बात नहीं की। आखिर शर्मा ने ही पूछा, 'खैरियत तो है शुक्लाजी? लगता है आज चिन्तन की प्रक्रिया तेज़ है।'

शुक्लाजी ने खांसते हुए गला साफ़ किया, ढेर सा बलगम थूका, 'इस देश में अब हिन्दुओं का कोई भविष्य नहीं। मुसलमानो ने इस बीच कितना पैसा कमाया है, यह कल की नीलामी से स्पष्ट हो गया। ऐन मौके पर नीलामी रद्द न कर दी जाती तो अस्सी प्रतिशत प्लाट मुसलमानों के पास चले गये थे।'

'मुसलमानों के पास पैसा कहाँ से आएगा, नौकरियों में उन का प्रतिशत नगण्य है। प्रशासनिक सेवाओं में कितने मुसलमान हैं? अपने जिले को ही देख लीजिए, कमिश्नर, डी० एम०, एस० एस० पी० तमाम हिन्दू हैं। मुसलिम दारोगा भी आपने ज्यादा न देखे होंगे।'

'मुसलमान इन सेवाओं में जाना ही नहीं चाहते। वे खाड़ी देशों मे जाते हैं और वहाँ से प्रति वर्ष लाखो रुपये भेजते हैं।'

'इससे तो देश मे विदेशी मुद्रा ही बढ़ रही है। इस मुद्रा से आप तेल आयात कर सकते है, नयी औद्योगिक तकनीक का देश में विकास कर सकते हैं, प्रतिरक्षा के लिए अत्याधुनिक साज-सामान खरीद सकते हैं।'

'एक मुसलिम लौंडिया ने आपका दिमाग विषाक्त कर दिया है। आपको इस बात का कोई अफ़सोस नहीं कि इस्माइलगंज हिन्दू बस्तियों के लिए एक स्थायी खतरा बन जाएगा।'

'शहर में बीस प्रतिशत भी मुसलमान नहीं हैं। न मालूम सुबह-सुबह आप को खतरे का आभास क्यों हो रहा है?'

'बीस प्रतिशत जनसंख्या अस्सी प्रतिशत पर हावी हो रही है। कौन नहीं जानता, ख्वाजा अली बख्श ने प्लाट खरीदने के लिए मुसलमानों के बीच लाखों के ऋण बाँटे हैं। हिन्दू पूँजीपतियों ने हिन्दुओं के लिए क्या किया?'

'वाह! बहुत काम किया है। बड़े बड़े मन्दिर बनवाए है, धर्मशालाएँ बनवाई हैं, धर्मार्थ दवाखाने खोले, गरीब छात्रों को छात्रवृत्तियाँ दीं, आपकी विचारधारा वाली पार्टियों को चन्दे दिये। आखिर आप उनसे और क्या चाहते हैं?'

शुक्लाजी लम्बे लम्बे डग भरते हुए अपने लॉन की लम्बाई चौड़ाई नापते रहे। कुछ देर बाद फेंस के ऊपर से गर्दन निकालते हुए बोले, 'शर्माजी, मुसलमानों की ये हरकतें शहर में दंगा करा देंगी।'

शुक्लाजी मुँह में च्युंगम की तरह दातौन चला रहे थे। शुक्लाजी से बात करके शर्मा को भी दंगा बहुत नज़दीक दिखायी दे रहा था।

शाम को शर्मा घर से निकला तो बग़ल से प्रोफ़ेसर सारस्वत निकल आए, 'आज आप चौक की तरफ़ न जाइएगा। सुनते हैं, चौक में बहुत तनाव है। अभी अभी मेरी बीबी लौटी है, कह रही थी कि अचानक इतनी भगदड़ मची कि दुकानों के शटर गिर गये। सुनते हैं मुसलमानों ने हिन्दुओं की दूकानें लूट लीं और वे लोग आज रात हिन्दू बस्तियों पर हमला करेंगे।'

प्रोफ़ेसर शर्मा के कदम थम गये, 'लगता है, दंगा होने वाला है।'

'दंगा अब तक हो चुका होगा।' सारस्वत ने कहा, 'मेरी बीबी बहादुर औरत है, किसी तरह लौट आई। मैंने बीसियों बार समझाया है कि कटरा से ही शॉपिंग किया करे, मगर वह कहती है चौक में सामान सस्ता मिलता है।'

शर्मा अपने कमरे में जा कर बैठ गया। उसकी हिम्मत जवाब दे रही थी। कोई ऐसा दोस्त भी न था जो साथ चलने को तैयार हो जाता। ले दे कर कुलश्रेष्ठ था, वह शर्मा से भी अधिक डरपोक था। कुलश्रेष्ठ शर्मा के प्रेम-प्रसंग से आदि से अन्त तक अवगत था। कुलश्रेष्ठ की पत्नी को पता चला कि शर्मा उसे चौक की तरफ़ ले जाना चाहता है तो वह हाहाकार मचा देगी। शर्मा ने तय किया, वह अकेला ही जाएगा। वह दिल कड़ा कर के घर से

निकला और रिक्शा स्टैण्ड की तरफ चल दिया।

स्टैण्ड पर दो चार रिक्शे खड़े थे। वह एक रिक्शे में बैठ गया और बोला, 'चौक !'

'चौक न चलब।'

'क्यों चौक में क्या है ?'

'हम गाँधी चौक जाब।' उसने कहा।

शर्मा उतर कर दूसरे रिक्शे मे बैठ गया। एक अन्य रिक्शा वाला पास बैठा बीड़ी फूँक रहा था, बोला, 'साहब रिक्शा खाली नही है।'

शर्मा ने दो एक अन्य रिक्शा वालो से पूछताछ की। कोई भी चौक की तरफ़ जाने को राज़ी न हुआ। शर्मा ने तय किया वह पैदल ही जाएगा। चौक मे उसके विभाग के एक अध्यापक मनमोहन सरन रहते थे, कोई गड़बड़ हुई तो रात उन्हीं के यहाँ रुक जाएगा।

सड़कों पर सन्नाटा था। खूबसूरत चाँदनी रात थी। आसमान पर चाँद तैरते हुए पेड़ों के भीतर से आँख मिचौनी कर रहा था। सड़कों पर दूधिया चाँदनी फैली थी। चौराहे पर पुलिस की एक टुकड़ी बैठी थी। शर्मा आश्वस्त हुआ, उन लोगों के बगल से गुज़रते हुए बोला, 'आज चौक के लिए कोई रिक्शा ही नहीं मिल रहा।'

'सब ठीक है। आप चलते जाइए। दोपहर में कुछ बदमाशों ने भगदड़ मचायी थी। कोई दुर्घटना नहीं हुई।'

शर्मा आश्वस्त हुआ। मगर आगे एक फर्लांग का रास्ता सुनसान था। सामान्य दिनों में भी यहाँ 'चेन स्नैचिंग' और लूट की घटनाएँ होती थी। यह सोच कर कि कुछ ही फासले पर पुलिस की टुकडी तैनात है, वह आसमान की तरफ़ देखते हुए आगे बढ़ता गया। दोनो तरफ घने पेड़ थे। पेड़ो में कुछ सरसराहट हुई तो शर्मा दौड़ने लगा। पुलिस की सीटी शान्त वातावरण में गूँज गयी। शर्मा सड़क के बीचोबीच खड़ा हो गया। न जाने एक पुलिस का सिपाही कहाँ से नमूदार हुआ और उसे कलाई से पकड़ लिया, 'कौन हो तुम ?'

'विश्वविद्यालय में अध्यापक हूँ। ज़रूरी काम से चौक जा रहा था। कोई रिक्शा नही मिला।'

सिपाही को विश्वास न हुआ, बोला, 'मेरे साथ थाने चलिए। आप दौड़ क्यों रहे थे ?'

'पेड़ों मे सरसराहट हुई तो डर गया।'

सिपाही ने टार्च की रोशनी चारों तरफ़ घुमा दी। पेड़ शान्त थे। पत्तियाँ शांत थी। कहीं कोई हलचल न थी। पूरा वातावरण एक नवविवाहिता की

तरह जैसे आत्मसमर्पण की चिर प्रतीक्षा में घड़ियाँ गिन रहा था।

'आप को थाने तक चलना होगा।'

'चलिए, कौन से थाने चलिएगा ?'

'कैन्टूनमेंट।' सिपाही ने कहा और उसकी कलाई पकड़ ली।

शर्मा कलाई पर से सिपाही का हाथ झटक देता कि सिपाही ने खुद ही कलाई छोड़ दी। उसके कंधे पर बन्दूक लटक रही थी। शायद बन्दूक थामने से चलने में दिक्कत हो रही थी।

शर्मा चुपचाप उसके साथ चलता रहा। उसे अनायास ही पुलिस का संरक्षण प्राप्त हो गया था। वह चाहता था, सिपाही इसी प्रकार उसके साथ चलता रहे।

'आज सड़कें इतनी सुनसान क्यों हैं ?' शर्मा ने पूछा।

'थाने पहुँच कर बताऊँगा।' सिपाही बोला।

'अभी बताने से क्या हो जाएगा ?' शर्मा ने लापरवाही से पूछा। उस की आवाज़ में लापरवाही के भाव देख कर सिपाही को शक हुआ कि हो न हो इस आदमी के पास ज़रूर कोई हथियार है।

'रुकिए। पहले तलाशी लूँगा।' सिपाही ने कहा।

शर्मा ने दोनों हाथ ऊपर उठा दिये। सिपाही उस की कमर वग़ैरह टटोल कर आश्वस्त हो गया तो बोला, 'चौक आप क्या करने जा रहे हैं ?'

'एक ज़रूरी काम से जा रहा हूँ। कितना अच्छा हो आप छोड़ आएँ या अपने प्रभाव से एक रिक्शा ठीक कर दें।'

सिपाही ने शर्मा की बात का जवाब नहीं दिया। कुछ दूर तक चुपचाप उसके साथ चलता रहा, पूछा, 'आप के पास सिगरेट है ?'

'आप सिगरेट पियेंगे ?' शर्मा ने पैकेट और माचिस उसे थमा दी, 'मैं सिगरेट नहीं पीता। आज रास्ता काटने के लिए ले लिए थे।'

सिपाही ने सिगरेट सुलगाया। मन्दिर के पास दो रिक्शे खड़े थे। उसने वहीं से सीटी बजायी। दोनों रिक्शा वाले सहम कर खड़े हो गये।

'साहब को चौक तक छोड़ आओ।' सिपाही ने कहा और प्रोफ़ेसर की पीठ थपथपा दी, 'गुस्ताख़ी मुआफ़ कीजिएगा। मगर हमारी ड्यूटी ही ऐसी है।'

रिक्शा चौक की तरफ़ चल पड़ा तो शर्मा ने राहत की साँस ली। ज्यों ज्यों चौक निकट आ रहा था, जीवन सामान्य होता जा रहा था। ठीक चौक में तो जैसे कोई तनाव ही नहीं था। शर्मा ने रिक्शा अज़ीज़न के घर तक ले

जाना उचित समझा। सड़क पर हार गजरे और खजूर बिक रहे थे। लोगबाग हलवाइयों के पटरों पर बैठे इत्मीनान से मलाई खा रहे थे। पुलिस बन्दोबस्त कुछ अधिक था, मगर लोग सामान्य रूप से टहल रहे थे। रोज़ की तरह घंटियाँ टनटनाते रिक्शे आ जा रहे थे।

गली के बाहर ही उसे नफ़ीस दिख गया। नफ़ीस रिक्शा के साथ साथ तेज कदम बढ़ाता हुआ चलने लगा। शर्मा ने रिक्शा वहीं छोड़ दिया।

दो साये चिलमन से सड़क की तरफ़ झाँक रहे थे। शर्मा की इच्छा हुई, बच्चों की तरह भाग कर जीना चढ़ जाये और गुल को अपने कलेजे से सटा ले। चाँदनी रात में चिकों के साये सामने की इमारत पर एक सुन्दर कलाकृति से चित्रित हो गये थे।

प्रोफ़ेसर को देखते ही अज़ीज़न ने उसे आगोश में ले लिया, 'मैं तब से आपकी इन्तज़ार में छज्जे पर खड़ी हूँ। नफ़ीस को बहुत डाँटा कि वह साथ ले कर क्यों नहीं आया।'

'पैदल आ रहा हूँ। आज कोई रिक्शा ही चौक की तरफ़ आने को तैयार न था।'

'इसी से मुझे चिन्ता हो रही थी।' अज़ीज़न ने पूछा, 'शहर में क्या सचमुच तनाव है?'

'शहर में तो उतना तनाव नज़र न आया, मगर शहर के बाहर बेहद तनाव है। जगह जगह पुलिस तैनात है। बीच में तो एक सिपाही मुझे थाने ले जा रहा था।'

'हालात ठीक नहीं हैं।'

'अफ़वाहों का बाजार गर्म है। जगह जगह अजनबी लोग ढाबों पर लोगों को उत्तेजित कर रहे हैं।'

'यहाँ भी यही हाल है। अभी कुछ देर पहले उस्मान भाई ने उड़ा दिया कि रात बारह बजे हिन्दू हमला करेंगे। अभी मुहल्ले वालों की मीटिंग हो रही है कि कौन लोग रात भर पहरा देंगे। हफ़्ते भर की ड्यूटियाँ आज तय हो जाएँगी। हर आदमी चाहता है नफ़ीस के साथ ड्यूटी करना। वह भी आखिर इन्सान है। एक दिन दो दिन पहरा दे देगा। रोज़ तो मुमकिन नहीं।'

गुल चाय बना लाई। शर्मा ने नज़र उठा कर उसकी तरफ़ देखा। अज़ीज़न भी 'अभी आती हूँ' कहते हुए दूसरे कमरे में चली गयी।

'आप के बिखरे बिखरे बाल बेहद अच्छे लग रहे हैं।' वह बोली, 'आप को देख कर जान में जान आई। आप न आते तो अम्माँ का तो हार्ट फ़ेल हो जाता।'

'और तुम्हारा?'

'मेरा तो फेल हो चुका है।' गुल ने कहा।

शर्मा को अपने मा बाप के व्यवहार से क्षोभ हो रहा था। कम से कम देख तो लेते लड़की कितनी प्यारी है।

'अगर रास्ते में मेरा क़त्ल हो जाता ?'

'नहीं हो सकता था। कभी नहीं हो सकता। जिस शख़्स को कोई इतनी शिद्दत से चाहे, उसका क़त्ल नहीं हो सकता।'

शर्मा को गुल पर लाड आ गया। उसने जल्दी से एक हवाई चुम्बन लिया। वह रास्ते का पूरा तनाव भूल गया। उसकी शिराओं में रक्त की गति तेज़ होने लगी।

'मेरे लिए एक एक दिन भारी पड़ रहा है।'

'मेरे लिए एक एक घड़ी।' गुल ने कहा, 'मगर लग रहा है शादी मुल्तवी होगी।''

शर्मा ने एक लम्बी आह भरी। उसने ऊपर से नीचे तक गुल की तरफ़ देखा। ऊपर से नीचे तक, दायें से बायें तक, जहाँ तक भी गुल का वजूद था, शर्मा का वजूद उतने हिस्से में सिमट गया। उसे लग रहा था, उसी के बदन का एक हिस्सा उससे कट कर अलग खड़ा है।

तभी अजीजन पान चबाते हुए कमरे में दाखिल हुई। इस बीच वह साड़ी तबदील कर आई थी। हल्का सा मेकअप भी नजर आ रहा था। शर्मा ने अजीज़न की तरफ़ देखा तो झेंप गया। गुल ने कहा, 'अम्माँ यह होंठ क्यों रंग लिए हैं ?'

'हम अपने बेटे को बताएँगे। बरसों से इसी तरह तैयार होती आई हूँ। शाम घिरते ही नहाने की इच्छा होती है। नहा लेती हूँ तो गाने की।'

'अच्छा, बहुत हुआ अम्माँ। मुझे तो सजने से इतनी नफ़रत है कि कभी लिपस्टिक न लगाऊँगी।'

'तुम्हारे होंठों की रँगत देख कर कम्पनियाँ लिपस्टिक बनाएँगी।' अज़ीज़न कहा।

गुल को यह बात भी नागवार गुजरी। उसने कहा, 'अम्माँ सोचती है, दुनिया में उनकी बिटिया से सुन्दर कुछ नहीं।'

'अम्माँ ठीक सोचती है।' शर्मा कहना चाहता था, मगर उसने कहा, 'तुम जैसी हो। मैं तुम्हें इसी शक्ल में देखना चाहता हूँ।'

'लोग तो शादी मुल्तवी करने को कह रहे हैं।' अज़ीज़न ने कहा।

'शादी मुल्तवी नहीं होगी ज्यादा से ज्यादा यह हो सकता है कि हम लोग कचहरी में जा कर शादी कर लें या मैरिज अफ़िसर को बुला कर शादी कर लें।'

'कोर्ट कचहरी मैं नहीं जाऊँगी। न ही कोई अफ़सर आयेगा। गुल मेरी बिटिया है। मेरी मर्जी से शादी होगी।' अज़ीज़न ने कहा। शर्मा निरुत्तर हो गया। उसके पिता ने यह बात कही होती तो फौरन प्रतिवाद कर देता। गुल की अम्माँ बोल रही थी। वह चुप रहा। कुछ देर बाद बोला, 'मुझे डर लग रहा है कि कहीं आप शादी मुल्तवी करने तो नहीं जा रहीं?'

'गुल तुम जाओ। हम तन्हाई में बात करेंगे।' गुल वहाँ से अप्रकट हो गयी तो अज़ीज़न ने कहा, 'शादी तो मुल्तवी होगी ही। हालात ऐसे हैं।'

शर्मा निढाल हो गया। अज़ीज़न परेशान।

'मगर मैं कोर्ट कचहरी न जाऊँगी। यह तय है। मेरी आखिरी तमन्ना है कि इस गली मे एक दिन बारात आए। इस गली में सदियों से बारात नहीं आई। ऐन मौके पर हालात संगीन हो गये। दिन भर यही सब सोचती रहती हूँ। अब इस नतीजे पर पहुँची हूँ कि शादी मुल्तवी करना ही बेहतर है।'

'अच्छा मैं जाता हूँ। हो सकता है, बाद में रिक्शा न मिले।' शर्मा बेहद निढाल हो रहा था। अब उसे कई रोज तक तनाव में जीना होगा।

'आज आप यहीं रह जाइए। मैं जाने भी न दूँगी। रात को हमला हुआ तो आप बचा ही लेंगे।'

'मुझे जाना होगा। हालात ठीक हो जाएँ तो दोबारा आऊँगा।' शर्मा ने कहा। उसका मन उखड़ रहा था। सामने गुल खड़ी थी। काले गरारे में वह एक परी लग रही थी। शर्मा अपलक उस की तरफ़ देख रहा था।

शर्मा ने हाथ हिलाया और 'खुदा हाफ़िज़' कहकर जीने की तरफ़ बढ़ गया। मगर तभी गली में लोगों के भागने की आवाज़ आई! गुल और अज़ीज़न बारजे की तरफ़ दौड़ीं। शर्मा ने सुना कि चौक मे भयंकर आग लगी है तो बजाए नीचे उतरने के जायज़ा लेने ऊपर छत पर चढ़ गया। कुछ देर बाद सुनने मे आया कि हौली मे कोई वारदात हो गयी है।

दरअसल हौली में ऐसी घटनाएं रोज़ ही होती थी। गाली गलौज, मारपीट और कभी कभार छुरेबाज़ी भी। दो-चार लोग आपस मे लड़ते झगड़ते रहते और हौली के अन्दर का माहौल जस का तस बना रहता।

'साले ज्यादा पी गये हैं।' कोई कहता और अंडा छीलने लगता।

'कोई नया मुसलमान है।' सुनाई देता और शराबी गिलास के अन्दर गिरा मच्छर निकालकर फेंक देता।

मगर आज की घटना विचित्र थी । दो अजनबी बहुत देर से साथ-साथ पी रहे थे । लगता था, वे लोग इस हौली में नये थे, क्योंकि किसी बैरे का नाम या किसी पैग का दाम उन्हें मालूम नहीं था । उन्हें किसी चीज़ की ज़रूरत महसूस होती तो वे मेज़ थपथपाते या उठ कर खुद ही बाहर से सिगरेट खरीद लाते । दोनों के हुलिए से यह भी नहीं जाना जा सकता था कि वे किस सम्प्रदाय के हैं ।

एक आदमी सिगरेट लेने बाहर गया तो उसने हौली के बाहर एक सन्तरी को ऊँघते हुए देखा ।

'दारोगा जी सिगरेट नोश फरमाइए ।' उसने कहा, 'आप की भी ड्यूटी कैसी-कैसी जगह लग जाती है ।'

दारोगा को ऊँघाई आ रही थी । उसने सिगरेट लिया । उसी आदमी ने तत्परता से सुलगा भी दिया ।

अन्दर आकर कुछ देर बाद उसने अपने साथी के कान में कुछ कहा और अचानक उसका गिरेबान पकड़ लिया । दूसरे हाथ से उसकी गर्दन पर दो चार झापड़ रसीद कर दिए।

'कुछ मज़ा नहीं आया ।' पास की मेज़ से एक आवाज़ आई ।

अब पिटने वाले ने दूसरे आदमी के बाल पकड़ लिए और तड़-तड़ पीटने लगा । हौली में शराबियों की दिलचस्पी और बढ़ी ।

'हैं तो बराबर के, मगर दूसरा कुछ दब रहा है ।'

'उसकी शराब पिए होगा ।'

'तेरी माँ की...' दूसरे को भी जोश आ गया । उसने अधभरा गिलास उठाया और पिलाने वाले के ऊपर फैला दिया ।

हौली में अब भी विशेष उत्साह न आया था । दारोगा जी ने बाहर से अन्दर झांक कर देखा मगर दखल देने लायक उन्हें वहाँ कुछ न लगा और वे सर पर हाथ फेरते हुए दुबारा स्टूल पर जा बैठे ।

हौली के प्रबन्धक लोग भी ज्यादा चिन्तित न हुए थे । हौली की अधिकांश कुर्सियाँ और मेज़ ऐसे बहुत से हादसात में लँगड़े हो चुके थे ।

इतने में दो छुरे हौली के नीम अँधेरे में चमके और घुप्प । दोनों अजनबियों ने रामपुरी छुरे निकाल लिए थे । लगभग एक ही समय घुप्प से दोनों के पेट में छुरे घुस गये । 'हाय अल्लाह' 'हाय ईश्वर' ये दोनों आवाज़े साथ-साथ उठीं और दोनों शराबी लंगड़ाते हुए दो अलग-अलग दिशाओं में दौड़ गये ।

एक हिन्दू आबादी की तरफ़ भाग रहा था, दूसरा मुस्लिम आबादी की तरफ़ । दोनों आबादियों के ठीक बीच यह हौली थी । दोनों लोगों को अपने

अपने गंतव्य तक पहुँचने में लगभग एक सा समय लगा होगा।

देखते-देखते दोनों आबादियों में भगदड़ मच गयी। दुकानें बन्द होने का ही समय था। मगर जब लोगों ने 'हाय अल्लाह' और 'हाय ईश्वर' की आवाज़ें सुनी तो दुकानों के शटर जल्दी-जल्दी गिरा दिये। उसी समय एक तरफ़ से 'अल्लाह हो अकबर' और दूसरी तरफ़ से 'हर हर महादेव' की आवाज़ें बुलन्द होने लगी जैसे रिहर्सल के बाद यकायक नाटक शुरू हो गया हो। यह सब कुछ इतनी जल्दी हुआ था कि लोगों की समझ में कुछ नहीं आ रहा था। लोग अपने-अपने घरों की तरफ़ भाग रहे थे। भीड़ में स्कूटर, रिक्शा, साइकल एक दूसरों को रौंदते टकराते भागने लगे। बाज़ार बन्द हो जाने से एकाएक अँधेरा हो गया। थोड़ी देर में सड़क की बत्ती भी किसी ने काट दी। अँधेरे में पुलिस की सीटियाँ बजने लगी। मगर अँधेरा ज्यादा देर तक न रहा। थोड़ी देर में दो अलग-अलग दिशाओं में दो ऊँची इमारतें जलने लगी।

मगर हौली शान्त थी। दारोगा जी इत्मीनान से बैठे पान की जुगाली कर रहे थे। सब लोगों का यही ख़याल था कि दो बदमाश शराब का पैसा मारने की नीयत से झगड़े का नाटक करके चम्पत हो गये हैं।

'मगर यहाँ तो खून भी बहा है।'

'कोई नहीं जानता, यह बकरे का खून है या इन्सान का।'

'मगर मैंने तो खुद दोनों को खून से लथपथ देखा।'

'हो सकता है, सालों ने गुब्बारों में खून भरके पेट पर बाँध रखा हो।' एक शराबी ने कहा, 'छुरेबाज़ी हुई होती तो दोनों इस तरह गायब न हो जाते।'

हौली के सामने से लोगों को इस तरह भागते देखकर दारोगाजी ने एक आदमी को रोका और पूछा, 'भाई क्या हो गया है। यह भगदड़ क्यों मची है?'

'दंगा हो गया है सन्तरी जी।' एक रिक्शा वाला बोला, 'उधर चौक की तरफ़ कर्फ्यू लग गया है।'

सन्तरीजी की समझ में कुछ न आया। दो अलग-अलग बस्तियों की ऊँची इमारतों से आग की गहरी सुर्ख़ लपटें देख कर बाज़ार खाली हो गये थे। लोग बाग अपने अपने घरों की छतों पर चढ़ गये थे और दहशत के बीच शहर को दो तरफ़ से घेरने वाली आग की तरफ़ लाचारी से देख रहे थे। जिन लोगों के घर के सदस्य अभी तक नहीं लौटे थे, वे खौफ़ज़दा से दूर सुनसान सड़कों की तरफ़ टकटकी लगा कर देख रहे थे। दूर से चारों तरफ़ मुनादी की आवाज़ गूँज रही थी, जो थोड़ी देर बाद इत्मीनान

में स्पष्ट सुनायी देने लगी : साहेबान ! शहर में दंगा होने के कारण सुबह सात बजे तक कर्फ़्यू लगा दिया गया है। अगर किसी फ़र्द को किसी ज़रूरी काम से निकलना हो तो उसे पहले कोतवाली जाकर पास बनवाना होगा। इस आज्ञा का उल्लंघन करने वाले को गिरफ्तार कर लिया जायेगा।

शहर को जैसे पाला मार गया। चारों तरफ़ पुलिस के जवान थे, पी० ए० सी० के जवान थे, बी०एस० एफ़० के जवान थे। ये जवान हर गली और बाजार में टिड्डियों की तरह छा गये थे। शहर में सिर्फ़ पुलिस की जीपें दौड़ रही थीं, पुलिस के घुड़सवार जवान दौड़ रहे थे, फायर बिग्रेड की घंटियाँ और पुलिस की सीटी सुनायी दे रही थी। लोगों ने जल्दी-जल्दी अपने अपने रेडियो खोल दिये थे। खबरें आने में अभी देर थी। लता मंगेशकर हर मुहल्ले में गा रही थी :

बिन्दिया चमकेगी।

शर्मा ने देखा, पूरा शहर छतों पर नजर आ रहा था। शहर की कई इमारतों से आग की लपलपाती लपटें उठ रही थीं। कहीं गोली चल रही थी कहीं बम फट रहे थे।

चारों तरफ़ खुशनुमा चाँदनी फैली थी। ऐसी खूबसूरत रात में चारों तरफ़ सन्नाटा खिंचा था। 'हर हर महादेव' और 'अल्लाह हो अकबर' के स्वर हवा के झोंकों के साथ शहर के मुंडेरों के ऊपर से उन्हें चूमते हुए निकल जाते।

छत पर जाकर शर्मा की सिगरेट पीने की इच्छा हुई। ज्यों ही उसने सिगरेट मुँह में दाब कर माचिस जलाई, एक गोली उस के सीने के आरपार निकल गयी। दूसरी गोली कील की तरह ठीक उसके माथे पर ठुक गयी। प्रोफ़ेसर शर्मा लड़खड़ा कर वहीं गिर गया।

किसी ने झुक कर प्रोफ़ेसर के हाथ से गिरा सिगरेट उठाया, सुलगाया और धीरे से छत का दरवाज़ा बन्द कर के नीचे उतर गया।

गोली की आवाज़ सुन कर अजीज़न और हसीना छत की तरफ़ लपकीं मगर सामने नफ़ीस को इत्मीनान से सिगरेट फूँकते देखकर आश्वस्त हो गयीं।

'प्रोफ़ेसर साहब कहाँ हैं ?'

नफ़ीस ने गली की तरफ़ उतरने वाले ज़ीने की ओर इशारा किया और नृत्य की मुद्रा में बताया, शायद भाग खड़े हुए।

'नहीं नहीं, यह नहीं हो सकता !' गुल बोली।

नफीस ने गर्दन हिलायी और संकेत से बताया कि पुलिस की जीप में गये है। माँ बेटी ने राहत की सांस ली। हो सकता है कोई परिचित अफ़सर मिल गया हो।

कर्फ़्यू की रात बहुत डरावनी रात होती है। अमावस्या की रात से भी अधिक काली, जिसमें साम्प्रदायिकता के सियार रात भर रोते हैं। इस अँधेरी रात में कही बम फटता है, कही गोलियों की तड़तड़ सुनाई देती है, कहीं 'हर हर महादेव' और 'अल्लाह हो अकबर' के नारो के बीच अचानक किसी इमारत से आग की लपटें आसमान छूने लगती है। शहर सहम जाता है। बन्द दरवाज़ों के अन्दर से देखा और सुना जा सकता है, सड़क पर घुड़सवार पुलिस गश्त लगा रही है।

इस गली का माहौल भी भिन्न नही था। लोग डरे हुए कबूतरों की तरह अपने अपने घर में दुबके थे। लग रहा था, 'हर हर महादेव' के नारे प्रतिक्षण नजदीक आ रहे हैं, मगर पास ही कहीं से उठता 'अल्लाह हो अकबर' का नारा आश्वस्त कर जाता।

इस दहशत और सन्नाटे के बीच हजरी बी की निर्भीक गालियाँ दूर दूर तक पूरे मुहल्ले मे सुनाई दे रही थी! वह पंडित की कोठरी मे अड्डा जमाए थी। कर्फ़्यू लगने के घण्टे आध घण्टे के बीच गली के तमाम लोग लौट आए थे, मगर पंडित शिवनारायण नही लौटा था। अब तक आधी से ज्यादा रात बीत चुकी थी।

आज सुबह ही पंडित अपने किसी यजमान के यहाँ से अंगोछे में ज़रूरत से ज्यादा मिठाई बटोर लाया था। पंडिताइन ने एक सेठाइन की तरह बड़े बड़प्पन से हजरी को इतना सामान दे दिया था कि वह दिन भर केले, अमरूद, बताशे और लइया बाँटती रही थी। इमामबाड़े जा कर उसने फ़कीरों के बीच खूब सामान बाँटा था।

पंडिताइन बच्ची को चिपकाये, बिस्तर पर लेटी थी कि मालूम हुआ, शहर में दंगा हो गया है। वह भागी भागी हजरी बी के यहाँ पहुँची। यह जान कर कि पंडित अभी नहीं लौटा, हजरी का माथा ठनका।

'सुनते हैं होली मे दो शराबियों में छुरेबाजी हो गयी और अब दोनों फिरके एक दूसरे को ललकार रहे हैं। मै तो कल से सुन रही थी कि शहर में अजनबी लोग घूम रहे हैं। अजनबी लोग शहर में दिखायी दें तो समझ लेना चाहिए कोई आफ़त आने वाली है।'

ताहिर ने कर्फ़्यू के कारण आहाते में अपना ठेला खड़ा किया था। वह मूँगफली चबाते हुए बोला, 'हजरी बी, बाहर से गुण्डों का एक ट्रक आया है और सुना जा रहा है, एक एक मुसलमान को खत्म कर डालेंगे। एक लौंडा मुझे चाकू दिखा रहा था, मैं ठेला लेकर भाग निकला।'

'पंडित जी की खबर लो भैया। वह जाने किस मुसीबत में है।'

'अपनी कोठरी में लेटा होगा। उसकी ड्यूटी तो शहर के बाहर है। वहाँ दंगे का कोई आसार नहीं।'

'मुसलमान भी तो कम बकवास नहीं करते' हजरी बी बोली, 'वह उस्मान की औलाद कई दिनों से चिल्ला रहा है कि एक एक हिन्दू को काट डालेंगे। पंडिताइन तुम घबराओ नहीं। मैं सब संभाल लूँगी। अल्लाह मियाँ ऊपर से सब देखा करते हैं। पंडित तो मेरा बेटा है। जाड़े में कह रहा था, एक बार पलमामेंट हो जाऊँ तो तुम्हें गर्म मोजे ला कर दूँगा।'

पंडिताइन भूख से पहले ही निढाल हो रही थी। वह पंडित का इन्तज़ार करते-करते लेट गयी थी, पंडित कुछ लाए तो खाना पकाये। हजरी की बात सुनकर उसका सर घूमने लगा।

'इन उल्लू के पट्ठों को कैसे समझाऊँ गरीबों की एक ही बिरादरी होती है। पिछली बार कर्फ़्यू लगा था कि चार ही दिन में नानी याद आ गयी थी। गुलाब देई का खोमचा नहीं लगा, बच्चे के साथ भूखी प्यासी पड़ी रही और वह गुब्बारे बेचने वाला गफ़ूर तो ऐसा खटिया पर पड़ा कि फिर कभी नहीं उठा।'

पंडिताइन दीवार के सहारे बैठी थी, देखते-देखते उसकी गर्दन वहीं एक ओर लुढ़क गई। हजरी बी अपनी धुन में बोले जा रही थी, 'मरता गरीब ही है, वह हिन्दू हो या मुसलमान! आज तो मुसलमान इतना तैश दिखा रहे हैं, कल दीवाली आने पर यही पटाखे बेचेंगे और होली आने पर पिचकारियाँ बनाएँगे और रंग बेचेंगे। भला पूछो इनसे, अल्लाह मियाँ की आँखों में भी कहीं धूल झोंकी जा सकती है। वह, वे लोग इसे फसाद कहते हैं, मैं कहती हूँ यह गरीबों को गरीबों से लड़ाने की साजिश है। हाय अल्लाह, इस जहाँ में मेरी कोई नहीं सुनता। लोग कहते हैं, हजरी बी का दिमाग फिर गया है।'

हजरी बड़े प्यार से पंडिताइन को सहलाने लगी, 'तुम घबराओ नहीं, बेटी! ये लौंडे लोग कभी-कभी मुझे चिढ़ाने की गर्ज से भी झूठ बका करते हैं। पंडित जी सुबह तक जरूर लौट आएँगे।'

पंडिताइन को छूते ही हजरी बी की चीख निकल गई। पंडिताइन नीचे लुढ़क गई थी और उसके मुँह से फेन बह रहा था।

दारोगाजी आहत हो गये। उन्होंने बन्दूक में कारतूस भरा और हजरी बी के सीने पर बन्दूक तान दी।

'ज़्यादा बकवास की तो अभी उड़ा दूँगा।'

'हिम्मत हो तो उड़ा दे। उड़ा दे अगर हिम्मत है।'

दो सिपाही आगे बढ़े और हजरी बी की कलाइयाँ थाम लीं, 'उठो, चलो थाने, वहीं जा कर तुम्हारा इलाज होगा।'

हजरी बी ने कलाइयाँ छुड़ाने के लिए बहुत संघर्ष किया, मगर कलाइयाँ बूढ़ी हो चुकी थीं। वह ज़मीन पर लेट गयी और सिपाहियों पर गालियों की बौछार करती रही। वे लोग उसे मरे हुए कुत्ते की तरह घसीटते हुए थाने की तरफ़ ले चले। पूरा मुहल्ला हजरी की आवाज़ सुन रहा था, मगर दहशत के मारे उसके लिए कोई खिड़की, कोई दरवाजा न खुला।

दरअसल पिछले दंगे में गश्त करती पुलिस की टुकड़ी पर किसी ने ढेला फेंक दिया था, जवाब में पुलिस ने गोली चला दी। ढेला फेंकने वाला तो छतें फलांगता हुआ भाग निकला मगर पुलिस की गोली से घर के एक नौजवान लड़के को जान से हाथ धोना पड़ा, जो आँगन में बैठा बीड़ी बना रहा था। महीने भर के भीतर उस घर के तमाम सदस्य झूठे मुकदमों में फँस गये।

'सालो! ये शैतान तुम्हारी हजरी को घसीटते हुए ले जा रहे हैं। न करो मदद, मगर अपनी हजरी को देख भर लो।'

हजरी का पक्ष लेने कोई बाहर नहीं निकला। लोग झिरी में से हजरी की दुर्दशा देख रहे थे।

हजरी सिद्दीकी साहब के चबूतरे तक पहुँची तो सिद्दीकी साहब को गाली बकने लगी, 'लानत है तुम्हारी नेतागीरी पर। कहाँ दुबके पड़े हो नेता की औलाद! बाहर आ,तेरे चेहरे पर थोड़ी सी कालिख पोत दूँ। नेता है तो दरवाज़े क्यों बंद कर रखे हैं। ऐ नेता! बाहर निकल, तेरी मैया को देखूं।'

सिपाहियों ने हजरी की कलाइयों पर गिरफ़्त ढीली कर दी थी। हजरी बी नेताओं को धुआँदार गालियाँ दे रही थी। पुलिसकर्मियों को आनन्द आ रहा था। सिगरेट पीने के बहाने उन्होंने हजरी को कुछ क्षण खुला छोड़ दिया।

'साले डूब मरो चुल्लू भर पानी में। नेता बनता है। तुम से बाहर आ के मा को कुत्तों की चंगुल से नहीं छुड़ाये बन रहा। अब तू ने कभी शकल दिखायी तो नोच डालूंगी। तुम्हारी नेतागीरी तुम्हारी ही टाँग में घुसेड़ दूँगी। तुमने हजरी बी का कमाल नहीं देखा। थू है तुम पर। थू है। थू है।'

एक गुस्ताख़ सिपाही ने यह सोच कर हजरी बी की कमर पर डंडा जड़ दिया कि कहीं नेताजी सुन न रहे हों। वे लोग हजरी बी को घसीटते हुए गली के बाहर ले गये। हजरी बी घिसटते हुए जिस किसी के घर के सामने से गुजरती उसी का नाम ले कर पुकारती, मगर किसी भी किवाड में कम्पन न हुआ। हजरी बी की कुहनियाँ, उसके घुटने बुरी तरह से छिल गये थे। उसके पीछे पीछे उसी के खून की लकीर चल रही थी, जैसे कह रही हो, अपना खून ही मुसीबत में साथ देता है। हजरी बी की धोती जगह जगह से फट गयी थी, मगर पुलिस वालों पर जैसे जुनून सवार हो गया था। वे कुछ इस मुद्रा में हजरी को थाने की तरफ़ घसीटे लिए जा रहे थे, जैसे दंगे का असली मुलजिम अनायास ही उनके हाथ आ गया हो। चौराहे तक पहुँचते पहुँचते हजरी की आवाज बन्द हो गयी। पुलिस वालों को शायद मालूम नही था, हजरी की जान उसकी जुबान में ही बसती है। वे उसी निर्दयता से उसे सुनसान सड़क पर घसीटते हुए थाने तक ले गये। उन्हें मालूम पड़ता कि हजरी की जुबान रुकने का मतलब है कि हजरी अब नही रही तो शायद उसे बीच सड़क लावारिस छोड़ कर चम्पत हो जाते। उन्हें इस बात का एहसास थाने पहुँच कर ही हुआ।

● ● ●

शफ़ी कबाड़ी का एकालाप

अलस्सुबह मास्टर जी मुनादी सुनकर अपने घर से बाहर निकल आए। कर्फ़्यू की अवधि छत्तीस घण्टे बढ़ा दी गयी थी। आशंका और भय से वे सिहर रहे थी। मास्टरजी ने देखा एक बुड्ढा भागते हुए आया और उन्हें देखकर चौतरे पर चढ़ आया। वह बेतरह काँप रहा था। ड्योढ़ी में एक खटिया पड़ी थी, वह दिल पर हाथ रख उस पर लेट गया। मास्टर जी के प्राण ही निकल जाते, अगर वह बुड्ढा न होता। बुड्ढे के कहना शुरू किया :

मुझे देख कर घबड़ाइए नहीं। दो घड़ी के लिए पनाह माँग रहा हूँ, दे दीजिए। मैं ज़िन्दगी भर आपका एहसान न भूलूंगा। मैं कोई चोर डकैत या लुटेरा नहीं हूँ। आप ही की तरह इस मुल्क का बाशिंदा हूँ। इस वक्त तकलीफ़ में हूँ। मेरी साँस फूल रही है, टाँगें काँप रही हैं। लगता है, बदन से पूरी ताकत निकल गयी है। यह देखिए मेरा रूमाल; पसीने से लथपथ हो रहा है और यह देखिए मेरी टोपी; कैसे चारों तरफ से भीग गयी है। आप तो बहुत रहमदिल इन्सान मालूम देते हैं। मैं आप के इस पुरखुलूस बर्ताव को कभी नहीं भूल पाऊँगा कि आपने एक मुसीबतजद: आदमी को पनाह ही नहीं दी, उसे ठंडे पानी का एक गिलास भी पिलाएँगे। मै आपका ज्यादा वक्त नहीं लूंगा, बस जरा दम संभलते ही आपसे रुखसत ले लूँगा। यह तो आपका फाटक खुला नजर आ गया, वरना मैं भागते भागते सड़क पर ही गिर जाता। बीमार हूँ, अस्पताल की दवा हो रही है। गिर जाता तो लावारिसों की तरह न जाने कब तक पड़ा रहता। दुनिया इतनी बेमुरव्वत हो गयी है कि मरते के मुँह में पानी की एक बूंद डालने में भी झिझकती है। बहरहाल, अब मैं तन्दुरुस्त महसूस कर रहा हूँ, यह दूसरी बात है कि भागते भागते बवासीर का एकाध मस्सा फट गया है। आप सूरत से रहमदिल इन्सान नजर आते हैं। हमारे वालिद साहब रहमदिल इन्सानों के बहुत किस्से सुनाया करते थे। अपनी जवानी के दिनों में वे एक बार लाहौर गये थे और उनकी बाकी तमाम जिन्दगी लाहौर का बयान करते ही बीत गयी। उनका इरादा था कि लाहौर में भी एक मकान बनवा लें मगर कुदरत को यह मंजूर नहीं था। वालिद साहब को यह भी नहीं मालूम

था कि उनके वफात पाते ही उनकी औलाद यके-बाद-दीगरे उन के तमाम मकान बरस भर में ही बेच खायेगी। आपको यकीन नही आयेगा हुज़ूर, मगर यह सच है कि मैंने बम्बई मे ग्राटरोड वाला मकान महज़ नौ हजार रुपये में बेच डाला। आज इस बुढ़ापे में उनमें से एक आदमी की भी सूरत दिखाई नही देती, जिनके साथ मिलकर मैंने वे नौ हजार रुपये महीने भर मे फूंक डाले थे। आप मुस्करा रहे है, आपका मुस्कराना जायज़ है। आप मेरी कहानी सुन लेंगे तो ताज्जुब करेंगे कि यह वही इन्सान हैं जिसने पूरी जवानी तो नादानी और एय्याशी मे बितायी और अब बुढ़ापे में एक एक पैसे के लिए मुहताज है,जिसकी दो दो बेटियां तपेदिक से चल बसी,जिसका इकलौता बेटा आज जेल की हवा खा रहा है। बेगुनाह हो जेल की हवा खा रहा है। उसकी अम्मां ने उस दिन से अनाज नहीं छुआ। वह जानती है कि उसका लड़का बेगुनाह है और वह उसके लिए कुछ नहीं कर सकती। उसकी ज़मानत तक करवाने की हमारी हैसियत नही है। पड़ोसियों से बहुत मिन्नत-समाजत की, मगर कोई ज़मानत लेने के लिए तैयार न हुआ। आप पूछेंगे उसका गुनाह क्या था? दरअसल उसे मालूम तक नहीं था कि शहर मे दंगे की फिज़ा है। वह इत्मीनान से घर के बाहर नाली मे पेशाब कर रहा था कि उसे कुछ लोग भागते हुए नज़र आये। वह भी नाड़ा बांधते हुए भागा। उससे यही गलती हो गयी। उसे पी० ए० सी० को देखकर भागना नही चाहिए था। उसे चाहिए था, वहीं नाली पर चुपचाप बैठा रहता। पेशाब उतरता या न उतरता। लगता है वह पी० ए० सी० को देख कर घबरा गया। पुलिस को देखकर मेरी भी सिट्टी पिट्टी गुम हो जाती है, जबकि मैं अपने को बीसियों बार समझा चुका हूँ कि पुलिस तो हमारी हिफ़ाज़त के लिए होती है। अंग्रेज चले गये पुलिस को छोड़ गये। कितना अच्छा होता अपने साथ ही विलायत ले जाते! मेरा बेटा ज़रूर घबरा गया होगा। आखिर बेटा तो मेरा ही है। मैं भी तो आज बेतहाशा भाग निकला। मगर मैं पुलिस को देख कर नही भागा था। दरअसल शहर का माहौल देख कर ही मेरे अन्दर दहशत भर गयी थी। मुझे लग रहा था आसमां पर गिद्ध ही गिद्ध मँडरा रहे है। पेडो की हर शाख पर उल्लू और शहर के हर चौराहे पर पी० ए० सी० के जवान डट गये है। हर इमारत के बाहर चमगादड़ लटक रहे हैं और या अल्लाह! पुलिस से लदी ये जीपें। भागती हुई जीप के अन्दर से पुलिस की सीटी की आवाज़ कितनी ख़ौफ़नाक और डरावनी होती है। और फिर ये जगह जगह खड़े दमकल। मैं चुपचाप अल्लाह मियां की याद में सिर झुकाये धीरे-धीरे चल रहा था कि फिर वही आवाज़ें। लड़ो! लड़ो!! किससे लड़ें भाई? डांटो! डांटो!! किसको डांटें?

फँसाओ ! फँसाओ !! किसे फँसायें ? मैं एकदम होशोहवास खो बैठा। कर्फ्यू की रात एक ठेले के नीचे बिता कर आ रहा हूँ। मैं तो कभी ऐसे माहौल में घर की दहलीज के बाहर कदम भी न रखता था, मगर बिटिया को पेचिश की शिकायत थी। सोचा, मस्जिद में जा कर नमाज़ पढ़ आऊँगा और लौटते हुए बिटिया के लिए बेल का मुरब्बा भी लेता आऊँगा। भागने में दस आने का बेल का मुरब्बा भी हाथ से गिर गया। लगता है, उनसे यह भी नहीं देखा गया कि मैं बिटिया के लिए बेल का मुरब्बा ले जा रहा हूँ। वे चाहते हैं कि हमारे सामने आकर गिड़गिड़ाओ। नाक रगड़ो। हम घर का खर्चा ही पूरा नहीं कर सकते हैं। क्या तुम्हारे पास आयें ? अपने ही ख़यालात में मशगूल था कि अचानक एक-झटके से दमकल हिला और पागलों की तरह घंटियाँ बजाते हुए, शैतान की तरह अपने नथुने फैलाये मेरी बगल से एक तूफान की तरह निकल गया। देखते ही देखते टिड्डियों की तरह पी० ए० सी० न जाने कहाँ से नमूदार हो गयी। जवानों के कंधे पर बंदूकें लैस थीं। मुझे बन्दूक से हमेशा डर लगता है। दरअसल मुझे हर खूनी चीज से डर लगता है। खूनी चीज से नहीं, खून देखकर ही मैं सहम जाता हूँ। सच पूछिए मुझ से खून देखा ही नहीं जाता। खून हिन्दू का हो या मुसलमान का। खून बदन में चुपचाप बहता रहे, इससे बड़ी नियामत क्या हो सकती है। सड़क पर जब कोई ट्रक या कार किसी इन्सान को कुचल जाती है तो सड़क पर ईंटों की चहारदीवारी के अन्दर खून का वह धब्बा मुझे अन्दर तक हिला जाता है। आप के चेहरे पर सवालिया निशान बन रहे हैं। मगर बकरे के खून से मुझे रश्क होता है। इसलिए रश्क होता है कि बकरे का खून कुर्बानी से जुड़ जाता है। वह अल्लाह के नाम पर कुरबान किया जाता है। यह एक तरह से अल्लाह को अपनी जान नजर करने का मुज़ाहिरा है। वरना, इतना तो मैं भी जानता हूँ कि न तो उस का माँस अल्लाह तक पहुँचता है और न उस का खून। इतना तय है कि आपका तक़वा उस तक जरूर पहुँच जाता है। इससे कुर्बानी का जज्बा जरूर पैदा होता है। अब आपका वक्त ले ही रहा हूँ तो एक और दिलचस्प वाक़याबयान कर दूँ। अब मेरा रूमाल भी सूख चुका है और टोपी भी। अब दिल की धड़कनें भी मुझे परेशां नहीं कर रहीं। ईद का वाक़या है। उस बरस धंधा अच्छा हो गया था। घर भर के कपड़े सिलाने लायक पैसे मैंने जमा कर लिये थे। यह जो टोपी आप देख रहे हैं, उसी बरस रामपुर से लाया था। उस रोज़ मैं बेहद खुश था। अल्लाह मियाँ ने उस बरस कमाई में बहुत बरक्कत पैदा कर दी थी। मगर वे मेरा पीछा नहीं छोड़ रहे थे। आप ही की तरह

सब पूछते हैं कि कौन हैं वे जो तुम्हारे पीछे पड़े हैं ? हम क्या बतावें ? कोई सामने आवे तो बतावें। बस छिप छिप कर इशारे करते हैं और जीना मुहाल किये हैं। किसी ने किसी का कान भरा हो तो वही जाने। मेरी जिन्दगी का तो फलसफा है कि इन्सान बन के जिओ और दूसरों को जीने दो। चन्दरोज़ा जिन्दगी को यों ही बर्बाद न होने दो। मुनि-दरवेश और फ़क़ीर की कीमत कोई ही समझ सकता है। जाहिल इन्सान यह सब नहीं जानता। मैं इसे उनकी जहालत ही कहूँगा जो बेसबब अपना वक्त ज़ाया कर रहे हैं। मुझ जैसे मुफ़लिस से उन्हें क्या हासिल होगा ? कोई उन को सामने लाकर खड़ा कर दे तो हम बता दें कि हर इन्सान का एक मय्यार होता है। गलती भी न बताओ, उसके पीछे पड़े रहो, यह कहाँ का दस्तूर है ? दिन भर इन्हीं खयालात में डूबा रहता हूँ कि उनका मकसद क्या है ? क्या उनका मकसद है कि मैं तरक्की न करूँ ? अब आप ही बताइए, इस उम्र में मैं चाहूँ भी तो क्या तरक्की कर सकता हूँ। क्या वे चाहते हैं कि मैं अपने बच्चों को भूखा मार दूँ या अपने बड़े भाई की तरह पाकिस्तान चला जाऊँ ? वे शायद यही चाहते हैं। अगर यही चाहते है तो सामने क्यों नहीं आते, छिप छिप कर पीछा क्यों करते है ? मगर यह तय है कि मैं पाकिस्तान नहीं जाऊँगा। मुझे अपने वतन से बेपनाह मुहब्बत है। और फिर हिन्दुस्तान में पैदा होकर मैं पाकिस्तान क्यों जाऊँ ? मरने के लिए ? मैं हिन्दुस्तान में ही दम तोड़ूँगा। अब बाकी रह ही कितनी गयी है ? अभी उस दिन रसूल मिस्त्री के यहाँ बैठा था कि दो आदमी मिर्ज़ापुर से मोटर का रेडिएटर बनवाने आये। इत्तिफाक की बात, उसी वक्त शहर में कहीं हिन्दू मुस्लिम दंगा हो गया। मैंने पास बैठे लोगों की आँखों मे खून उतरते देखा तो सहम गया। हाँ, खाली वक्त में मैं रसूल मिस्त्री के यहाँ ही बैठ जाया करता हूँ। दो तीन दिन से दंगे की अफवाहें उड़ रही थीं। दोनों तरफ मन्सूबे बाँधे जा रहे थे। हमने उन कारीगरों से कहा—घबराओ नही। उन्हें उठा कर घर ले आया। उनकी मौत यकीनी थी। मगर मैंने पुलिस को इत्तिला करके उन्हें बचा लिया। हमने कहा, इनका क्या कुसूर ? ये बेचारे काम कराने आये हैं। वे तो बचकर अपने घर लौट गये, मगर अब आपस के आदमी ही कान भर रहे हैं। यह नहीं समझते दुनिया आगे जा चुकी है। कुछ टुकड़ों के लिए इन्सान को मार डालते हो। सालो, मेहनत करो। दूसरों को मारने के चक्कर में क्यों रहते हो ? अब आज नयी धमकी सुनायी दी कि ले जायेंगे। कहाँ ले जाओगे भाई। खुदा के पास तो सभी को जाना है। मगर सामने कोई नहीं आता। और कुछ नहीं तो स्कूटर पर जाते हुए कुछ बक जायेंगे। दरअसल, अल्लाह ताला ज़ालिम को ढील देता जाता है, ढील देता जाता है और मज़लूम को मगर

कर देता है कि तुम खामोश रहे। आखिर एक दिन अल्लाह ताला ज़ालिम को फँसा ही देता है। और कुछ नहीं तो एक्सीडेंट ही करा देता है। कहता है, अब चलो। बहुत सता लिया तुमने। अब जाओ। दोज़ख़ में तुम्हारा इन्तजार हो रहा है। इसी लिए कहा गया है कि डरो उस मालिक से, जिसने पैदा किया है। अगर ज़ालिम ताकतवर है और तुम भी तो डट कर उसका मुकाबला करो। अगर तुम कमज़ोर पड़ते हो तो सब्र कर लो। मगर सब्र की भी इन्तिहा होती है। जिन्दगी की राह में आप जैसे भलेमानुस मिल जाते हैं तो जीने की तमन्ना पैदा होती है। मैं आपको ईद का किस्सा सुना रहा था। उस बरस आप जैसे ही कुछ मेहरबान मुझे मिले थे। मैं बेहद खुश था और हर जान पहचान के आदमी से गले मिल रहा था। लोग बाग मिल रहे थे और जा रहे थे। नीचे सड़क पर आया तो देखा पी० ए० सी० के दो जवान सड़क पर से गुजर रहे थे। मुझे देख कर ठिठक गये। अल्लाह कसम मेरे अन्दर से अवाज आई क्यों नहीं इनसे गले मिलते? मैं उसी धुन में उनकी तरफ बढ़ा। वे बहुत प्यार से मिले। अब आप ही बताइए, पी० ए०सी० के जवानों से मिल कर हमारा क्या बिगड़ गया? सबसे मिल रहा था, उनसे भी मिल लिया। नमाज पढ़ कर मैं इतना पाक-साफ हो गया था कि यह भी महसूस न हुआ कि वे हिन्दू हैं या मुसलमान। उन के पास बन्दूक है या नहीं। गलत नहीं बोल रहा। साफ तबीयत का आदमी हूँ। हमारी खुशी में आप शामिल होना चाहते हैं, जरूर होइए। छुआछूत का मामला न होता तो मैं उन्हें ले जाकर सवैयाँ भी खिलाता। मेरी ज़मीर साफ है, उसमें खोट नहीं। हम न तो हुकूमत के बागी हैं और न किसी से कोई अदावत है। कोई तो वजह समझ में आनी चाहिए। अल्लाह कसम, कभी हुकूमत का टैक्स नहीं रोका। एक ही मकान बचा है। उसका छब्बीस रुपये सालाना टैक्स है। मैं खुद नगर महापालिका जा कर हर साल वह टैक्स जमा कर आता हूँ। टैक्स की एक एक रसीद मेरे बक्से में महफूज है। एक पुराना रेडियो है, हमेशा उसका टैक्स वक्त पर जमा किया है। एक टुटही सायकल है, उसके टैक्स का टोकन मैंने सायकल में ही कसवा दिया है। अब सरकार मुझसे क्या चाहती है? हुजूर आप ही बताइए, जो शख्स बिना हुज्जत के सरकार का पूरा टैक्स अदा कर देता है, जिसकी किसी से कोई अदावत नहीं, जो सिर्फ अपने काम से काम रखता है और गर्दन झुकाये उसी अल्लाह मियाँ को याद करके चुपचाप चलता रहता है, वह क्यों इतना परेशां है? जिधर निकलता हूँ, वही आवाजें आने लगती हैं—मारो! मारो!! क्यों मारोगे भाई? मैंने क्या गुनाह किया है, किस जुर्म की सजा मुझे देना चाहते

हो। इस घर से आवाज आ रही है, उस घर से भी यही आवाज आ रही है। बाज वक्त कान लगा कर सुनता हूँ तो यकीन हो जाता है कि किसी इन्सान की ही आवाज है। आप तो पढ़े लिखे आदमी हैं हुजूर, क्या मुझे बता सकते हैं कि हुकूमत क्यों खामोश है? लगता है आप हुकूमत की बात से ऊब रहे हैं। दरअसल मैं शुरू से ही बहुत बातूनी हूँ। कोई दूसरी बात की जा सकती थी मगर मैं अब आप को ज्यादा परेशान नहीं करूंगा। आप का खाने का वक्त हो रहा होगा, आप जाइए। मैं भी दो मिनट के लिए सुस्ता लूंगा और कस्बूं की नजरों से बचते हुए खरामा खरामा चल दूंगा। एक छोटी-सी गुजारिश है। एक शेर सुनते जाइए। शायर के जज्बात से लगता है कि वह भी मेरी ही तरह कोई सिरफिरा है—

मैं जमाने से बुरा हूँ तो बुरा रहने दो
यानी जिस हाल में हूँ, मुझको पड़ा रहने दो!
तुम तो अब अपनी नजर से न गिराओ अल्लाह!
सबकी नजर से गिरा हूँ, गिरा रहने दो!

□□